प्रकाशक
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण
सन् १९६१
मूल्य ३) ५० नया पैसा

मुद्रक
संगीत प्रेस हाथरस (उ० प्र०)

अनुक्रमणिका

परिशिष्ट

दो शब्द

भारतीय लोक-जीवन में व्रत और अनुष्ठान का अपना एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ ऐसा कोई घर नहीं मिलेगा, जहाँ किसी न किसी प्रकार का व्रत अथवा अनुष्ठान विधिवत् सम्पन्न न होता हो। वैदिक संहिता ब्राह्मण गृह्यसूत्र पुराण आदि तो इस विषय में विशेष उल्लेखनीय हैं। पौराणिककाल में ये व्रत और अनुष्ठान बड़े ही लोकप्रिय एवं अधिक महत्त्व प्राप्त करने लगे थे। प्रत्येक पुराण में प्रायः इनका विशद् वर्णन हमें देखने एवं पढ़ने को मिलता है।

* व्रत शब्द का अर्थ होता है—'किसी बात का पक्का संकल्प प्रतिज्ञा आराधना भक्ति, पुण्य के साधन उपवासादि नियम विशेष व्यवस्था-विधि विहित अनुष्ठान-पद्धति यज्ञ अनुष्ठान एवं कर्म।

वैसे व्रत शब्द का अर्थ भोजन करना भी होता है। किसी पुण्य तिथि आदि के उपलक्ष्य में अथवा किसी निश्चित कामना के वशीभूत होकर स्वेच्छापूर्वक सुख-सम्पत्ति, पुत्र, संतान आदि की प्राप्ति के लिए नियमित रूप से पूर्ण विधान के साथ उपवास या भोजन करना व्रत कहलाता है। निर्जल निराहार, केवल फलाहार दुग्ध-पान एकान्न भोजन, एक ही समय का भोजन आदि अनेक प्रकार के नियम इन व्रत एवं अनुष्ठानों में हमें देखने को मिलते हैं। इस प्रकार के व्रत एक दिन के लिए या अनेक दिनों के लिए भी होते हैं।

संस्कृत-शब्दार्थ-कौस्तुभ पृ १ ८४

व्रत का निरुक्त में सामान्य अर्थ 'कर्म' बतलाया गया है। यह कर्ता को शुभ अथवा अशुभ कर्मों से बाँध लेता है, अतः इसे व्रत कहा गया है। वैसे यदि देखा जाय तो व्रत का प्रधान उद्देश्य आत्मशुद्धि तथा परमात्म चिन्तन से है। संसार में नाना-प्रकार के झंझटों में फँसे रहने के कारण परमात्मा का चिन्तन एवं भगवद्-भजन का अवसर हमें नहीं के बराबर ही मिलता है। व्रत के दिन यह इस प्रकार का अवसर आप से आप सुलभ हो जाता है। व्रत में उपवास का विधान रखा जाता है। केवल अन्न आदि के परित्याग से ही उपवास की पूर्ति नहीं हो जाती। उपवास का शाब्दिक अर्थ है 'उप समीपे वास' समीप में रहना अर्थात् अपने इष्टदेव के पास रहना। क्योंकि सच्चा उपवास तो परमात्मा का चिन्तन करते हुए उनके साथ तन्मय होकर रहना है। इसके लिए अन्न-पान का त्याग भी आवश्यक बतलाया गया है। कारण निराहार रहने से प्राणी विशेष की विषय-वासनायें स्वयं अपने आप ही निवृत्त हो जाती हैं।

भारतवर्ष का संसार के देशों में अपनी निजी संस्कृति एवं सभ्यता को लेकर विशेष स्थान रहा है। यह देश मूल में धर्म-भीरु रहता आ रहा है। यहाँ के लगभग सभी कार्यों में धर्म का पुट अथवा यों कह सकते हैं कि धर्म की यहाँ प्रधानता रही है। अतः ऐसी स्थिति में यहाँ के उत्सव उपनिषदों त्यौहार व्रत, अनुष्ठान आदि सभी का धार्मिक स्वरूप ग्रहण कर लेना कोई आश्चर्यजनक नहीं माना जा सकता। व्रत विशेष रूप से धार्मिक अनुष्ठान की कोटि में ठहराए जा सकते हैं। अतः इनके लिए कुछ विधि-विधान नियम भी पालने होते हैं।

व्रत करने का वैसे तो स्त्री-पुरुष तथा सभी प्रकार के वर्णाश्रम वालों को अधिकार है। फिर भी बालिकाओं के लिए

भिन्न प्रकार के व्रत बतलाए गए हैं, तो सौभाग्यवती युवतियों के लिए विशेष प्रकार के एवं विधवाओं के लिए विशेष नियमों से आचरण करने की व्यवस्था वाले व्रत बतलाए गए हैं। कुछ व्रत ऐसे भी हैं जिन्हें बालिकाएँ, सौभाग्यवतियाँ एवं विधवाएँ आदि सभी को एक-सा करने का अधिकार है।

यह हम पूर्व ही उल्लेख कर चुके हैं कि हमारा देश धर्म-प्रधान देश रहा है। धर्म और व्रत का सम्बन्ध बड़ा ही गहरा है। ऐसा शायद ही कोई धर्म होगा जिसमें व्रत के आचरण को लेकर उसके महत्त्व पर प्रकाश न डाला गया हो। व्रत का ठीक ठीक निर्णय करने के लिए जितना आग्रह हमारे धर्म में दिखाया गया है उतना हम समझते हैं किसी अन्य धर्म में शायद ही होगा। अतः ये व्रत और अनुष्ठान हमारे धर्म शास्त्र के शाश्वत अंग प्रायः बन गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक राजस्थानी व्रतकथाओं को लेकर है।

प्रथम सोलह कथाओं का हिन्दी में अनुवाद किया गया है शेष कथाओं का अनुवाद समयाभाव के कारण नहीं हो सका। पाठक देखेंगे हमने अपनी ओर से हर प्रकार का प्रयास किया है कि सभी प्रकार की व्रतकथाएँ इस संग्रह में स्थान पा सकें। इसी दृष्टिकोण से हमने जैन-समाज की भी व्रतकथाओं को नमूने के तौर पर यहाँ स्थान देना अपना कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व समझा है।

राजस्थान में प्रचलित सात वारों की व्रत-कथाएँ भी हमने इसमें ली हैं। इस विषय में हमारे कुछ साथियों का ऐसा आग्रह रहा—ये कथाएँ हिन्दी भाषा में रहें तो ठीक रहेगा। अपने विद्वान् साथियों के आग्रह को टालना हमने किसी भी प्रकार से उचित

नहीं समझा । अतः 'सात वारों' की कथायें हमने हिन्दी रूपान्तर में दी हैं । अतिरिक्त कुछ प्रसिद्ध व्रतकथायें हमने श्रद्धेय पं. श्री मनोहरलाल जी शर्मा द्वारा सम्पादित भी की हैं । श्री पंडित जी के हम बड़े ही आभारी हैं ।

राजस्थानी संस्कृति,भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है । पाठक देखेंगे, हमारी इन व्रत कथाओं में भी भारतीय व्रतकथाओं के सभी तत्त्व विद्यमान हैं फिर भी राजस्थान की अपनी विशेषता उसके भौगोलिक, ऐतिहासिक सामाजिक, राजनीतिक कारणों को लेकर रही है । अतः भाषा की दृष्टि से एवं स्थानीय विशेषताओं के कारण ये व्रत-कथायें भारतीय लोकसाहित्य के एक विशेष अध्ययन एवं पठन-पाठन का विषय बन जाती हैं । अभिप्रायों का जहाँ तक प्रश्न है, वे तो राजस्थानी व्रतकथाओं के बड़े ही अनोखे एवं विचित्र हैं । मेरा अपना ऐसा ख्याल है, कुछ अभिप्राय तो ऐसे हैं जिन्हें अपने ही किस्म के कारण 'टाइप' की संज्ञा दी जा सकती है ।

व्रत एवं त्योहार क्यों हैं ? इनका उद्‌गम कैसे रहा । आज हमारी सभी सभ्य किंवा असभ्य कहलाने वाली जातियों में, यहाँ तक कि आदिवासियों में भी किसी न किसी रूप में व्रत अथवा त्योहार इतनी लोकप्रियता और आदर से क्यों देखा जा रहा है ? यह सब एक शोध के विद्यार्थी के लिए विचारणीय प्रश्न है । हम यहाँ इस विषय में इतनी गहराई में न जाकर उन्हीं विद्वानों पर इसे छोड़ देते हैं । फिर भी यह तो निर्विवाद सत्य है कि प्रत्येक जाति के व्रत और त्योहार उस समाज और जाति विशेष का इतिहास उसकी सभ्यता, संस्कृति के दर्पण और उसकी परम्परा के परिचायक हैं । व्रतों और त्योहारों को देखकर हम बात का सहज ही में अनुमान लगाया जा सकता है कि उस जाति में कितना ओज भार शौर्य है । इनके आधार पर

ऐतिहासिक स्मृति तो बनी रहती है साथ ही ये जीवन के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होते हुए प्रतीत होते हैं।

राजस्थान के निवासी अपनी संस्कृति, प्राचीन सभ्यता और आचार-विचार को इतनी शताब्दियों के परिवर्तन के उपरान्त भी आज तक क्यों कायम रख सके? इस पर गहराई से विचार करने पर हमें इसके मूल में व्रतों और त्योहारों का तत्त्व छिपा हुआ दृष्टिगोचर होता है। अस्तु

अंत में इतना और निवेदन करना चाहते हैं कि इस संग्रह को प्रस्तुत करने में भिन्न-भिन्न विद्वान् साथियों का सहयोग हमें प्राप्त रहा है-हम उन सभी के प्रति कृतज्ञ हैं। श्रद्धेय श्री अगरचंद जी नाहटा के हम बड़े ही आभारी हैं। लेखक ने श्री अभय जैन ग्रंथालय एवं श्री नाहटा जी के व्यक्तिगत संग्रह का हृदय खोलकर उपयोग किया है। श्री अनूप संस्कृत लाइब्रेरी एवं वहाँ के विशेष अधिकारी महोदय श्री बाबूराम जी सक्सेना के अमूल्य सहयोग को लेखक नहीं भूल सकता। आपने अपना अमूल्य समय देकर हमारे कार्य को आगे बढ़ाया है। भाई श्री मुरलीधर जी व्यास तो विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। आपके अमूल्य सुझाव एवं सहयोग के बिना इस संग्रह का प्रस्तुत होना भी सम्भव नहीं हो सकता था।

इस पुस्तक की भाषा का जहाँ तक प्रश्न है, कथाएँ सम्भवतः सभी इलाकों की ली गई हैं। अतः भाषा का एकीकरण उसकी वरतनी, उसकी शैली आदि में हमने किसी भी प्रकार का हेर-फेर अपनी ओर से नहीं किया है-उसे मूल रूप में रखना उचित समझा है।

मोहनलाल पुरोहित

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १६४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मंत्री श्री के. एम. पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है ।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१ विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं । कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं । यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा ।

२ विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है । अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरों का हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३ आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ वरस गांठ, मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कविताएं, कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और बृहत् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्त्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८ पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्त्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की बृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्त्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्त्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां और लगभग ७०० लोक कथायें संग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१०. बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ जसवन्त उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२ जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३ जैसलमेर के अप्रकाशित १ शिलालेखों और भट्टि वंश प्रशस्ति आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४ बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५ इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ टैसिटोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि का भी समय समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६ बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू. एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम ए विशारद और पं श्रीलालजी मिश्र एम॰ ए हुडलोद के।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में संलग्न, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्ताओं ने 'राजस्थान भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अन्तर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु॰ १५) इस मद में राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु॰ ३) तीस हजार की सहायता राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ११ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१ राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२ राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा. शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४ हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५ पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,,
६ दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल गीत—	,, ,,
८ पंवार वंश दर्पण—	डा. दशरथ शर्मा
९ पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१ हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११ पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२ महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३ सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४ जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा. हरिवल्लभ भायाणी
१५ सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो. मंजुलाल मजूमदार
१६ जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७ विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,,
१८ कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९ राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२ वीर रस रा दूहा—	,, ,,
२१ राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२ राजस्थान व्रत कथाएं—	,,
२३ राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,,
२४ चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ महुली— — श्री अगरचन्द नाहटा, म. विनय सागर
२६ जिनहर्ष ग्रंथावली — श्री अगरचन्द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का विवरण — ,,
२८ दम्पति विनोद — ,, ,,
२९ हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य
३० समयसुन्दर रासत्रय — श्री भंवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढा ग्रंथावली — श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा डा दशरथ शर्मा) ईसरदास ग्रंथावली (संपा बदरीप्रसाद साकरिया) रामरासो (प्रो गोवर्द्धन शर्मा) राजस्थानी जैन साहित्य (ले श्री अगरचन्द नाहटा) नागदमण (संपा बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रंथो का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी -जिससे उपरोक्त सम्पादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविभाग सचिवालय के आभारी हैं जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्राण्ट-इन एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रकट करते हैं।

राजस्थान के प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया जिससे हम इस बृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव आभारी रहेगी।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व. पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान-भंडार बीकानेर, मोतीचंद खजांची ग्रन्थालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भंडार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री व हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का सम्पादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनक्वापि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मा भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाञ्जलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक

बीकानेर
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं २०१७
दिसम्बर १९६१

लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

राजस्थानी व्रतकथाएँ

राजस्थानी व्रत कथाएँ

१—अथ बैसाख महातम री कथा लिखते

श्री नारद उवाच—श्री नारद जी नै राजा अंबरीक पूछै है नै नारद जी कहै छै—थी सारीखो राजा धर्मात्मा कोई नहीं। था धर्मकथा तूं ठीक पूछै। और तौ कथा अनेक धर्म-अधर्म री छै पण घोमळ। एक कथा थीनै धर्म कहूं राजा तूं सुण। थोनै बैसाख महातमरी कथा कहूं हूं। श्री नारद उवाच—एक सतयुग मध्यै एक ब्राह्मण हुतो सो श्री परमेसर परायण हुतो। तिण ब्राह्मण फिर फिर तीर्थ यात्रा कीधी। ब्रह्मचारी थको तपस्या करै छै—सो तिण री तेज तपस्या रै बळ करनै शीकरी कांति सूर्य सारीखी छै। एकण दिन तीरथां नूं जावतो थी सो पछै रोही-उजाड़ आई,

---

बैशाख के महात्म्य की कथा

नारद जी से राजा अंबरीक पूछते हैं और नारद जी कहते हैं तुम्हारे समान धर्मात्मा राजा और कोई नहीं। यह धर्म-कथा तुम ही पूछते हो। और तो धर्म और अधर्म की अनेकों कथाएँ हैं लेकिन सुनो। एक कथा तुम्हें फिर और कहता हूं हे राजन तुम सुनो। तुम्हें बैशाख महात्म्य की कथा कहता हूं। श्री नारद जी कहते हैं—सतयुग में एक ब्राह्मण था वह श्री भगवान् का बड़ा भक्त था। उस ब्राह्मण ने घूम-घूम कर तीर्थ-यात्राएँ की। ब्रह्मचारी होकर तपस्या करता है—उसका तेज तपस्या के बल से महान् है और शरीर की कांति सूर्य के तेज के समान है।

एक दिन (वह) तीर्थों को जा रहा था तो वहीं (रास्ते में) बयाबान जंगल आ गया। उस घनघोर जंगल में एक बड़ का पेड़ है,

तिण रोही में एक बदरी वृक्ष छै। तिण नीचे पांच प्रेत बैठा छै।
सो कवे किसड़ा छै, सीस मां कम्प मूत छै, दांत तो मोटा छै,
केस तो ऊभा छै, बास भूंडी मुँह मांह आवै छै। पेट छै सो
वांसै सूं लाग रह्यौ छै। भूख प्यास रा मारिया पड़िया छै।
तिण समै ब्राह्मण चलायो आवै छै। प्रेत, आदमी आवतो देखनै
साम्हो आवै, दौड़िया। तरै ब्राह्मण प्रेता साम्हो जोयौ। तरै प्रेत
साम्हो दौड़ता देख्या। तरै ब्राह्मण ऊभो रहियौ, देखतै प्रेत
थोड़ रह्या। ब्राह्मण री तपस्या रौ तेज सबल छै। तरै अळगो
ऊभो रह्यो। तरै वर्वे पांचे जणा बोलाया, थे कुण छौ ? तरै
ब्राह्मण बोलियौ, हूँ ब्राह्मण। तीर्थ गमन करन जाऊं छूं। पण थे
कुण छौ ? थांहरी काई विरतांत छै ? तरै प्रेतां कह्यौ—म्हें पिसाच
योनि प्रेत छां। म्हौ भूंडी कमाई कीधी छै तिण सूं म्हैं भूख,
तिरस री संकट सहां छां। संकट मांहे मरां छां म्हांरी गत

उसके नीचे पांच प्रेत (भूत) बैठे हैं। वे कैसे थे? कांप—शरीर में
काले-काले। उनके दांत बड़े-बड़े केश (बाल) उनके खड़े हैं और
मुंह में से उनके बड़ी बुरी तरह की दुर्गन्ध आती है। उनका जो पेट
है वह पीठ से लग रहा है। वे भूख-प्यास के मारे पड़े हैं। उस
समय ब्राह्मण चला आ रहा है। प्रेतों ने आदमी को आता देखकर
उसके सामने आये, दौड़े। तब ब्राह्मण ने प्रेतों के सामने देखा। उसने
प्रेतों को दौड़ते हुए देखा। तब ब्राह्मण को वहीं खड़ा देखकर प्रेत खड़े
देखते रहे। ब्राह्मण की तपस्या का तेज बड़ा प्रबल है। अतः वह अलग
दूर खड़ा रहा। तब वे पांचों बोले—आप कौन हैं? तब ब्राह्मण बोला—
'मैं ब्राह्मण हूं तीर्थ यात्रा करने जाता हूं लेकिन आप लोग कौन हैं?
आपका क्या परिचय है?' तब प्रेतों ने कहा—हम पिशाच योनि के
प्रेत हैं। हमने बुरे कर्म किए हैं, इसलिए हम भूख-प्यास का संकट
सहन करते हैं। संकट से मर रहे हैं—हमारी कोई गति नहीं है। आप

थई न छै। सो आज म्हें राज री दरसण पायो छै सो म्हारी निसतारी आज थें करी। म्हें बहुत राजी हुआ। म्हानूं सुख हुवो। आपा म्हारी बाम्णी थी, सो सुख हुवो। म्हांरी मत भली हुई छै। म्हानूं सारी खबर पड्ण लूक गई। सो ब्राह्मण परमेश्वर छै, मैं म्हें भलाई दरसण थांहरो पायो। सो म्हांरो उद्धार हुसी। तरै ब्राह्मण बोलियो—थें किसा पाप कीधा, जिण सूं थे प्रेत जोन पाई, सो थे बतावो। तरै पहलो प्रेत बोलियो, म्हें पंचा देशमें पूर्व जन्म ब्राह्मण मारियो, एक ब्राह्मण री हित्या लागी, जिण सूं प्रेत जोनि पाई। पछै दूसरो प्रेत बोलियो, म्हें गुरू मारियो थो, सो गुरु-हत्या लागी, जिण सूं प्रेत जोनि पाई। पछै तीसरो प्रेत बोलियो—हूं पारकी निंदा हमेस करतो झूठ बोलतो, कूडा कलंक देतो, झूठी साख भरतो लोकांरी मन भांजतो, सो जिण पाप थी जोनि प्रेतरी पाई। पछै चोथो प्रेत बोलियो, हूं गुरुणी

हमने आपके दर्शन लाभ किए हैं अतः हमारी मुक्ति आप करें। हमें (आपके दर्शनों से) बड़ी खुशी हुई। हमें बहुत सुख हुआ। हमारी आत्मा जल रही थी उसे सुख मिला। हमारी बुद्धि स्वच्छ हुई। हमें सब प्रकार का ज्ञान होने लगा है। आप ब्राह्मण परमेश्वर का रूप हैं हमारा सौभाग्य है जो हमने आपके दर्शन किए। अतः हमारा (अब) उद्धार होगा।

ब्राह्मण तब बोला—आपने कौन से पाप किए थे जिससे प्रेत योनि आपने प्राप्त की वह मुझे बतावें। तब पहला प्रेत बोला मैंने पंचाल देश में पूर्व जन्म में एक ब्राह्मण को मारा था—उस ब्राह्मण की हत्या मुझे लगी उसी कारण प्रेत योनि मुझे प्राप्त हुई। पीछे दूसरा प्रेत बोला—मैंने गुरू को मारा था सो गुरु हत्या मुझे लगी, उसी कारण प्रेत योनि प्राप्त हो गयी। फिर तीसरा प्रेत बोला—मैं दूसरे व्यक्तियों की निन्दा ही किया करता था झूठ बोला करता था झूठे कलंक दिया करता झूठी

सू मूंडी हासती, कुकरम कीधौ, तिण सूं प्रेत जोनि पाई। पछे पाचसौ प्रेत छै सो बोलियौ म्हे अरणी हत्या कीधी, आ अरणी मुई, तिण सूं प्रेत जोनि पाई। तरै ब्राह्मण बोलियौ, दया कर ने कहे छै–थे साच बोलिया, आपरी दुरत कही। तरै विचारियौ–इणां रो उद्धार करणो। तरै ब्राह्मण है। छै प्रेतां थे म्हैं साथै आवो। तरै प्रेत ब्राह्मण रै साथै हुवा चालिया जाय छै। रोही उद्यान पड़ी छै। घठै रोही रै मांहि चालिया जाय छै। तठै प्रेत आठ जर्ण उठिया, सो ब्राह्मण नू खांण नू दौड़िया। पछे नैडा आया, तरै ब्राह्मण कह्यौ थे कुण छौ? तरै प्रेत कह्यौ, "म्हैं प्रेत छां।" म्हैं थां नू मारण नू आया था, पण थांरी तपस्या रो तेज छै, इसी सूरज री ही तेज न छै तिणसूं म्हैं मिकठ मौन हुआ छां। थाहरी दरसण सूं म्हांरा पाप मूचित होय गया। दृष्टि निरमल हुई छै म्हांरी दुरम दूर होय गई छै। हाथ जोड़

पछाड़ी किया करता लोगों का मन तोड़ा करता (हतोत्साह करता) सो उसी पाप के कारण प्रेत की योनि प्राप्त की। फिर चौथा प्रेत बोला मैं गुरु पत्नी से दुर्व्यवहार करता कुकर्म किए, इस कारण प्रेत की योनि प्राप्त की। फिर पांचवाँ जो प्रेत है वह बोला मैंने स्त्री हत्या की थी। वह भी मर गई, इस कारण प्रेत की योनि प्राप्त की।

ब्राह्मण तब दया करके बोला। कहता है–आप लोग सत्य बोले अपना दुख कहा। तब सोचा–इनका उद्धार करना चाहिए। तब ब्राह्मण कहता है–प्रेत लोग! आप मेरे साथ आवें। तब प्रेत ब्राह्मण के साथ होकर चले जा रहे हैं। बयाबान जंगल पड़ा है। वहाँ उस जंगल मे चले जा रहे हैं। वहाँ आठ प्रेत और फिर उठे। वे ब्राह्मण को खाने को दौड़े। जब नजदीक आए, तब ब्राह्मण ने कहा आप कौन हैं? तब प्रेतों ने कहा हम प्रेत हैं। हम लोग आपको खाने के लिए आये थे, लेकिन आपकी तपस्या का तेज है–ऐसा तेज तो सूर्य का भी नहीं। हम

आगै ऊभारहि कहै छै, 'सामी, नारायण ! थांहरौ दरसण कियां म्हें निरमळ हुआ छां। म्हांनै भली बुद्धि ऊपनी। तरै ब्राह्मण कहै, थे प्रेत केन प्रकार करन हुआ ?

पहिली तौ प्रेत जाति कही, पछै आपरा नाम कह्या, पछै आपरा पापरा नाम कह्या सो ब्राह्मण सुणिया। हिवै आपरा पाप कहै छै, ब्राह्मण सुणै छै। प्रेत कहै छै। एक प्रेत कहै म्हं पहलै-जन्म अधर्म कियौ, गरीब नै गीमतौ लड़तौ अतीत अभ्यागत सूं लड़तौ करतौ घर मैं आवण न देतौ, तरै प्रेत की जोनि पाई। पाछै दूजा कहै छै हूं चोरी जारी करतौ-पाछा न हुतौ तिण सूं प्रेत जन्म पायो। पछै तीजो प्रेत कहै छै हूं समरण-भजन, कथा कीरतन करता तिणनूं उथापता तिण सूं प्रेत जन्म पायो। तरै चोथो प्रेत बोलिया हूं निंदक छो आगलारी निंदा करतो, तिणसूं कर प्रेत जानि पाई। पछै पांचमो प्रेत बोलियो, हूं पहली

उन्हें देखकर चकित मौन हो रहे। आपके दर्शनों से हमारे पाप छूट गये। हमारी दृष्टि निर्मल हुई-हम बहुत दूर की देख सकते हैं (हमें भविष्य आदि का ज्ञान हो गया है) हाथ जोड़कर आगे खड़े होकर कहते हैं- हे स्वामी ! हे नारायण !! आपके दर्शन करने से हम निर्मल हुए हैं। हमें अच्छी बुद्धि उत्पन्न हुई।

तब ब्राह्मण ने कहा आप प्रेत किस कारण से हुए। पहले तो प्रेतों ने अपनी जाति बतलाई फिर अपने नाम बताये जो सभी ब्राह्मण ने सुने। अब अपने पाप कहते हैं। एक प्रेत कहता है मैंने पहले जन्म में अधर्म किए-गरीबों को लूटा-खसोटा करता उनसे लड़ता अतिथि अभ्यागतों से लड़ता रहता उन्हें घर में नहीं आने देता इसलिए प्रेत योनि प्राप्त की। तब दूसरा कहता है-मैं चोरी-जारी किया करता इस कार्य से कभी मुंह नहीं मोड़ा इसलिए प्रेत का जन्म पाया। तब तीसरा प्रेत कहता है—मैं उन व्यक्ति की चुगली किया करता जो भगवद्

जन्म नास्तीक हतो। कोई भली बुरी बात करतो तिण नूं हूँ नास्तीक करतो। तिणसूं–म्हैं प्रेत जन्म पायो। पछै छठो प्रेत कहै छै–म्हैं घर किण ही रो भलो न चाहतो, बुरो चितवतो, तिण सूं प्रेत जोनि पाई। पछै सातमों प्रेत कहै छै म्हैं भलो काम कोई कीन्हो नहीं तिणसूं प्रेत जन्म पायो। पछै आठवों प्रेत कहै छै–म्हैं पूर्व जन्म ब्राह्मण संताया, तिण पाप सूं प्रेत जन्म पायो।

तरै ब्राह्मण कह्यो, थे कठै रहो छो ? थे १० रोई में रहो छो, किण भांति जीवो छो, पग उमरांणा छो, थंटा पणा, सो थे उमरांणा फिरो छो। तरै प्रेत बोलिया म्हैं खाणा–पीणा सो आप आगै कसूं कहा हां, पण कही रीत चाहिजै।

तरै प्रेत कह्यो छै–जिणरा घर में बुहारी मझी न रहै, चोखो पोतो न दीजै, पाणी न छांणै, दोपहर हांडी चढ़ावै, तिण रै घरमें भोजन म्हैं करां हां। जिण री हांडी अथवा हाण्डी कांठी होवै,

---

भजन कीर्तन कथा आदि किया करता। इसी कारण प्रेत का जन्म पाया। तब चौथा प्रेत बोला–मैं निंदक था। हर किसी की निंदा करता इस कारण प्रेत की योनि पाई है। इसके बाद पांचवां प्रेत बोला–मैं पहले जन्म का नास्तिक था। कोई (व्यक्ति) अच्छी अथवा बुरी बात करता तो उसे मैं नास्तिक कहकर काट दिया करता। इस कारण मैंने प्रेत का जन्म पाया। इसके बाद छठा प्रेत कहता है–मैं किसी के भी घर का भला नहीं चाहता था बुरा ही सोचा करता इस कारण प्रेत की योनि पाई है। फिर सातवां प्रेत कहता है–मैंने अच्छा कोई काम किया नहीं इस कारण प्रेत का जन्म पाया इसके बाद आठवां प्रेत कहता है–मैंने पूर्व जन्म में ब्राह्मणों को सताया इस पाप के कारण प्रेत जन्म पाया।

तब ब्राह्मण ने कहा–आप लोग कहां रहते हैं ? आप लोग जंगल में रहते हैं, किस प्रकार जीवित रहते हैं। आपके पैरों में जूती तक नहीं है

तिण रै घरां री म्हे खावां पीवां हा। जिण रा घर में देवता न पूजै, सिनान करै न करै, मांचो बिछायो राख देवै, भामण मांई बिछायो राख नै उठावै नहीं, तिणरै घर में म्हे खाणा-पीणा हां। वणांरै घरां म्हे रहां हां, उठै म्हांरी आमोद्रम छै। ब्राह्मण इसणक न पीवै, यू ही खावै, यू हीज पीवै, महा-असुभ असुभ स्थान मांहे म्हे रहां हा। सो इसी बात म्हे खाय मरां हां। मिठ म्हांरो खाणो पीणो मिठ छै। इसरी बात कही प्रेत हाथ जोड़ने ऊभा रह्या, पछै प्रेत कहै छै-म्हारी उधार थां सू होसी, तरै प्रेत पणौ छूट सी।

तरै ब्राह्मण कहै-ह वैशाख री मास आयो छै, सो हूं रेवा जी में स्नान करन जाऊं सू सा थे इठैहीज ऊभा रहो, उधार कर सू। थे आपरी बात साची कही थोहरो नाम जाणु छू सो थांहरी बीनती मधुसूदन जी सू कर सू। तरै पछै प्रेत आठेई उठै ऊभा

यहां काटे बहुत है आप बिना पूछी के उपाये ऐसी कैसे अवज्ञा करते है। तब प्रेत बोले-हम लोग जो कुछ खाते-पीते है वह आपके सामने किस प्रकार वर्णन कर सकते है ? लेकिन फिर भी आप से तो कहना ही चाहिए।

तब प्रेत कहते है-जिस घर मे अच्छु भांति न लिया जाय (पूजे) को लीपा-पोता न जाय पानी कहां छानकर नहीं पीया जाय दुपहर को बाहर रसोई बनावे-हम उन्हीं के घरों में जाकर भोजन करते है। जिसकी हांडी अथवा उसकी ढकनी (भोजन बनाने का मिट्टी का पात्र) कांडा (थोड़ी बहुत टूटी हो) तो उसके घर में हम खाते पीते है। जिसके घर में देवताओं की पूजा न हो, स्नान घर के व्यक्ति कभी भी न करते हों खाट जहां हर समय बिछाई ही रहे, तथा उस बिछौना बिछा रहे, उसे उठावे नहीं उसके घर में हम खाते पीते है। उन्हीं लोगों के घर मे रहते है-वहीं हमारा निवास स्थान रहता है। उन्होंनें जो पीते

राजा नै पाच, प्रेत साथै हालिया। पछै रेवाजी गया। वैशाष मैं रेवाजी न्हाया–सूर्य मैं परास छै, ब्राह्मण टामरा पूतला आठ बणाया, स्तोत्र भणनै उर्णा प्रेतांरा नाम ले श्री रेवाजी में स्नान कराया उणांरी प्रेत देह छूटी ने बैकुंठ प्राप्ति हुवा। नारद जी कहै–राजा अमरीषनै–वैशाख मास इसड़ो छै, प्रेतांनी देह छूटी भागौजी मधुसूदन जी स्तोत्र भणे, कथा सौमळै नै सांभळावै, तिवरा पापरो क्षय होवै नै बैकुंठ प्राप्ति हुवै। नारद जी राजा अमरीषनै स्तोत्र सुणावै छै, कहै–हे राजा मासा मांहि वैसाख बडो मास छै तिणरो व्रत करै। तिको श्री मधुसूदन जी मूरति री सेवा करै नै सनान-संपाडो कीजै पछै दान–पुन कीजै, तिण वैसाख रा महातम सू पूर्वला भवरा पाप मुक्ति होय, तिण सू संसारा पाप छूटै उन वैसाख सू परम पद पावै, तिण न्हाया प्रेत देह छूटी

जाते नहीं जैसे ही भोजन करते वैसे ही पानी पीते बुरा और अपवित्र स्थान को है, वहीं हम रहते हैं। तो इस बात से हम लाज मरते हैं। हमारा खाना पीना भ्रष्ट है। इतनी बात कहकर प्रेत हाथ जोड़ कर खड़े रहे। फिर प्रेत कहते हैं–हमारा उद्धार आप से ही होगा तभी हमारी प्रेत–योनि छूट सकेगी।

ब्राह्मण तब कहता है–वैशाख का महीना आया है अतः मैं रेवाजी में स्नान करने जाता हूँ आप लोग यहीं ठहरे रहें मैं आपका उद्धार करूँगा। आप लोगों ने पाप की बात (मुझे) इस रूप से कही आपका नाम जानता हूँ अतः आपकी विनती मधुसूदन जी से करूँगा। तब वे आठो प्रेत वहीं ठहरे रहे और पांच प्रेत साथ चले। इसके बाद रेवाजी गए। वैशाख में रेवाजी में नहाए–सूर्य में तेज है–ब्राह्मण ने कुश के आठ पुतले बनाये मन पढ़, उन प्रेतों का नाम ले उन्हें रेवाजी में स्नान करवाये इससे उनकी प्रेत देह छूटी और वे बैकुण्ठ को प्राप्त हुए। नारद कहता है–राजा अमरीष को वैशाख मास ऐसा है, प्रेत की देह छूटी

नै देव योनि पाई, सो इसो वैसाख मास छे, जिण पुन्य सूं वैकुण्ठ प्राप्ति होवै।

इति श्री पद्म पुराणे वैसाख महात्मे पंचमोध्याय।

(२)

राजा आ कथा सुण नारद जी नै पूछतो हुओ—महाराज हूं पूर्व रो जन्म कुण थो सो विरतांत कहो। तरे श्री नारद जी बोलियो-हे राजा पूछसी बात पूछि थे नहीं कोई भली मांनै, कोई बुरी मांनै।

तरे राजा कहे छे—महाराज, बुरे मांनण रो किसो काम छे। राज-मोनु कही हूं पुन्य किसै सु राजा हुओ, इतरी लिखमी रो धणी हुओ छु। तरे नारद बोलियो-राजा तु पूर्वले भव जात रो सोनार थो। थारी असतरी वेस्या थी। सो तु सो अति सरूप थी। तु सोनार था। थारै माया घणी थी, अर उठा वेस्या बडी

माधव जी मधुसूदन जी का स्तोत्र पढ़े कथा सुने व कथा सुनाए, उससे ही पापों का क्षय हो बैकुण्ठ की प्राप्ति हो। राजा अम्बरीक को नारद जी स्तोत्र सुनाते हैं। कहते हैं—महीनों में बैसाख का महीमा सबसे बड़ा है, उसका व्रत किया करो। इसलिए श्री मधुसूदन जी की मूर्ति की सेवा करे, एव स्नान आदि करे, पीछे दान पुण्य करे, इस बयाख के महात्म्य से पूर्वजन्म के पाप छूट जायें इससे संसार के पापो से छुटकारा पावे (मिले) इसी बयाख से परमपद को प्राप्त हो जिसके नहाने से प्रेत देह से छुटकारा हो देव योनि प्राप्त हुई, सो इस प्रकार का बयाख का महीमा है—उस पुण्य से बैकुण्ठ की प्राप्ति हो।

इस प्रकार श्री पद्म पुराण की बैसाख महात्म का पाँचवाँ अध्याय समाप्त—

राजा बोला। राजा यह कथा सुनी, (राजा) नारद जी से यह कथा सुनता हुआ कहने लगा—महाराज मैं पूर्वजन्म में कौन था यह वृत्तान्त

धर्मात्मा थी। सो वेस्या देह रै भागवती कथा एक चित होय नै सुण ती, दाण-पुन्य करती गरीब गुरबा नू पइसौ देती, नै धरमरी ईंछ्या करती। यूं करता वैसाख री मास आयौ। तरै ब्राह्मण री मतौ कियौ। तरै वेस्या सोनार बोलायौ सोनार रौ नाम देवा हुतौ। वेस्या पचास मुहर सौंपी कह्यौ तू श्री ठाकुरां री मूरत मधुसूदन जी री पधस्याय मधु हूं वैसाख म्हासु। ठाकुरां री पूजा करू पछै पूनिम रै दिन ब्राह्मण नू दांन देसु। तरै सोनार ठाकुरां री मूरत घड़ी। घणी फूटरी घड़ ल्यायौ, चोरी न कीधी। मूरत घड़तां मन डांम डाखियौ, जितरी सुंपियौ, तितरी तोल ले आयौ। वेस्या रै जद वैसाख पूनिम आई, तद मूरत ले आयौ। तरै वेस्या घरी छीपी-लेनै रेवाजी मैं स्नान करण नू गई। तरै सोनार कह्यौ, कै कहो तो

कहे। तब श्री नारद जी बोले—हे राजन् पूर्वजन्म की बात नहीं पूछनी चाहिए किसी को भला लगे और किसी को बुरा लगे। तब राजा कहते हैं—महाराज इसमे बुरा मानने जैसी क्या बात है? आप मुझे कहे—मैं कौनसे पुण्य से राजा बना इतनी लक्ष्मी का मालिक बना। तब नारद मुनि बोला—राजा तू पूर्वजन्म मे जाति का सुनार था। तुम्हारी स्त्री वेस्या थी वह तुम से कहीं अधिक सुन्दर थी। तुम सुनार थे तुम्हारे पास धनदौलत बहुत था और वह वेस्या बड़ी धर्मात्मा थी। अत वेस्या मन्दिर मे जाती कथा (भगवत्-कथा) एकचित् होकर सुना करती दान-पुण्य किया करती गरीबो को पैसा दिया करती और धर्म की नीति पर चलती।

ऐसा करते-करते वैसाख का महीना आया। तब वेस्या ने सुनार को बुलाया—उस सुनार का नाम देवा था। वेस्या ने उसे पचास मुहरें दी और कहा—तुम श्री भगवान मधुसूदन जी की मूर्ति बनाकर लाओ,

स्नान नूं हूं आवूं । वरै वेस्या कयौ, साथै आव । तद सोनार साथै गयौ । नदी में स्नान कीधौ । वेस्या रै घरै आयौ, नै सेवा पूजा प्रभात री कीन्ही । कथा सांभळ नै ठाकुरां रौ दरसण करयौ । एक मन करनै ठाकुरां मधुसूदन जी री सेवा कीन्ही । वे घणा दिन पछै ठीक रह्या । अंतकाळ वेस्या री नै सोनार री सरीर छूटौ, सो वे वैसाख रा पुन्य करने राज पायौ, अर वेस्या-राजा थारै भारजा हुई । सो वैसाख री महातम छै । इसो वैसाख रो महीनो छै-जिण सूं पुन्य-अखोगत न आवै । इतरौ राजा नै विरतंत सुणायो पछै नारद जी उठ गंगा सिनान करण नै गया । राजा पण वैसाख री महातम सुण गंगा जी असनान करियौ—वैसाख *राज धरमिसी वैसाख री महिमा सुण राजा सबलोक में वैसाख* मनायौ । जिण सूं राजा अयोध्या समेत वैकुंठ प्राप्ति हुयौ ।

मैं वैसाख नहाऊँगी भगवान की पूजा करने के उपरान्त पूर्णिमा के दिन ब्राह्मणों को दान दूंगी । तब सुनार ने भगवान की मूर्ति बनाई । बड़ी ही सुन्दर बनाकर (घड़कर) लाया उसने (सोना नहीं चोरा) चोरी नहीं की । मूर्ति बनाते समय मन एकचित रखा जितना (सोना) सौंपा गया था उतना ही तोल म लेकर आया । वह वेश्या के पास जब पूर्णिमा आई, तब मूर्ति लेकर आया । तब वेश्या ने उसे अपने पास रखी लेकर रेवा जी मे स्नान करने गई । तब सुनार ने कहा—आप कह तो मैं भी स्नान करने चलूं ? तब वेश्या ने कहा मेरे साथ ही चले चलो । तब सुनार साथ गया । नदी मे स्नान की । वेश्या के घर आया और सुबह की सेवा पूजा की । कथा सुनकर भगवान का दर्शन किया । एक-चित से भगवान मधुसूदन जी की सेवा की । वह कई दिनों तक वहीं (वेश्या के यहाँ) रहा । अन्त मे वेश्या और सुनार का शरीर समाप्त हो गया (दोनों मर गए) । उनने वैसाख के पुण्य करने के कारण राज्य पाया और यह वेश्या राजन, तुम्हारी स्त्री बनी ।

धन दै, महिमा दै, भली सुन्दर मिलै। भली न्हावै तौ मनकामना पावै-सही।

इति पदम पुराणे वैसाख महातमे अष्टमोध्याय।

इण ऊपरा बात छै—

नारद जी, ब्रह्माजी नै इतिहास कहै छै। एक नगरी सोवन नामे तठे देवीदास राजा राज्य करै छै। तिणरै एक पुत्री छै, सो रूपवंत छै। तिणरी सगाई कीधी। तिणरै बीद चंवरी माहि बैसै नै मर जावै। बीद इक्कीस-मूवा। तरां स्वयंवर परण नू कीधी। तठे उणरी रूप देखनै भली घणूं छता मूवा। पछै एक ऋषि कर्दम नाम तिण कन्या री पूर्व जन्म कह्यौ, सो कहै छै। साहूकार री बस्त्री हुंती, घर रा धणी रै कहै में न हालती, घर ई माडी तिण करनै पाप लागी। तिण सू मरै नै पछै ब्राह्मण सावै

यह वैशाख का ही महात्मय है। इस प्रकार का वैशाख का महीना है—जिसका पुण्य व्यर्थ नहीं जाता।

इसका वृत्तान्त राजा को सुनाया—फिर नारद जी उठकर गंगा स्नान करने गये। राजा ने भी वैशाख का महात्मय सुनकर गंगा जी की स्नान की वैशाख राज को धारण किया वैशाख की महिमा सुनकर तमाम लोगों को वैशाख करने का आदेश दिया। इस कारण राजा अयोध्या सहित बैकुण्ठ को प्राप्त हुआ। (यह वैशाख) धनदौलत देने वाला है श्री सुख देने वाला है (इसके करने) स्त्री सुन्दर प्राप्त होती है। और यदि कोई स्त्री वैशाख नहावे तो उसकी निश्चय ही मनो-कामना सफल हो।

पद्म पुराण के वैशाख महात्मय का आठवां अध्याय समाप्त।

इसी पर एक और कथा है—नारद जी ब्रह्मा जी को इतिहास कहते हैं। एक नगरी जिसका नाम सोवन वहां देवीदास राजा राज करता है। उसके एक लड़की है वह बड़ी ही सुन्दर है। उसकी सगाई

नरबदा री सिनान करण गी। तिणसूं राजा रै पुत्री हुई। तिण सूं वैसाख रो व्रत री सिनान करै नै वैसाख ऊजमै तो बीन मरता रहै। तरै कन्या वैसाख री सिनान संभायो, व्रत संभायो, बरस बारै व्रत कीधो, सिनान कीधो, तिण सूं कर कन्या रै मनकामना सिद्ध हुई। वैसाख ऊजवण री विध बारै घड़ा लीजै, बारै सिकोरी, बारै कथारी बारै पोथी ब्राह्मण नूं जीमावै। बतीस जीमावै। ममता मोखम देणो। पीपळ तथा तुळसी सींचणी। तुळसी सींचणी। एक टक पाळणा बार गेहूं, साळि, चणा, ज्वार, मग, घृत पईसा आठ देणो। सिनान प्रात करणो। मध्यान सिनान करणो। संध्या सिनान करणी। मधुसूदन जी री मूरती री सेवा करणी। पाटम्बर दान देणा। महीनो तांई धर्मेश्वरै री रोटी करणी, जिम ही ब्राह्मण तथा अभ्यागत नै देणी। पहिली

की गई। उसका पति जैसे ही भाँवर के समय विवाह वेदि पर बैठता मर जाता। इक्कीस पति (इस प्रकार) मर गए। तब विवाह के लिए स्वयंवर रचा। तब उसके सौन्दर्य को देखकर बत्तीस (वर) फिर लड़-झगड़कर मर गए। फिर एक परम नाम के ऋषि ने उसका पूर्वजन्म बताया। वह कहता है—(पूर्वजन्म में वह) साहूकार की स्त्री थी अपने पति के कहने के अनुसार नहीं चला करती घर से (घर छोड़कर) भाग गई थी उसी कारण पाप लगा है। इस कारण (इसके पति) मरते हैं। इसके उपरान्त ब्राह्मण के साथ नर्मदा स्नान करने के लिए गई इसी कारण राजा के यहाँ पुत्री होकर जन्मी है। अब तू वैसाख के व्रत करे और उद्यापन का उजमना करे, तो तुम्हारे पति जो मर रहे हैं—बच सकते हैं।

कन्या ने तब वैसाख का स्नान करने का प्रण धारण किया बारह वर्ष तक (इस प्रकार उद्यापन का) प्रण किया स्नान की इस कारण कन्या की मनोकामना सिद्ध हुई।

रोटी देने पछै कथा सुणणी। इसी तरै उत्तमाई राखणी, तो
बैसाख री मास बैकुंठ बाता मे। इतरा तीर्थ गया रो पुन्य होवे,
गंगाजी गया जी, जगन्नाथ, बदरी जी, कुरुक्षेत्र पिरागजी,
नेमसार मीसरू, अयोध्या, मथुरा, जमुना, द्वारिका जी, नर्बदा,
गोदावरी ग्रहण कासी री एहा एक-अनेक तीर्थ गया रो पुन्य होय।
अनेक व्रत कीयां री पुन्य एक बैसाख न्हायां बहुत पुन्य होवे।
गर्दभ री जोनि स्वान, काग, एवी जोनि न पावै। प्रथम तो
आवागमण न आवै तो उत्तम कुल पावै, धन पावै अच्छी सरूप

बैसाख के नहाने की विधि – बारह घड़े भेजे चाहिए, बारह दुन्के
पिछोरी (लट्ठा-कपड़ा) बारह जो कथा की पुस्तकें ब्राह्मणों को देनी
चाहिए। पतीतो को भोजन करावे। उनको उनकी इच्छा अनुसार
भोजन देना। पीपल और तुलसी के पेड़ को नियमित रूप से पानी
सींचना। एक ही समय चार पैसी के तोल के गेहूं चावल चने ज्वार
जौ और भी मेवा मेवा आठ (भर तोल का) लेना। स्नान सुबह
करनी। दुपहर का भी स्नान करनी संध्या को भी स्नान करनी।
मधुसूदन जी की मूर्ति की सेवा करना। पाटंबर दान में देना। महीने
भर तक धर्म के नाम पर रोटी निकालना किसी ब्राह्मण अथवा
गरीब को देना। पहले रोटी देना फिर यह कथा सुनना। इस प्रकार
उत्तमता रखते रहना तो यह बैसाख का महीना बैकुण्ठ को देने वाला
है। इसके करने से इतने तीर्थों का पुण्य होता है—गया जी का पुण्य
जी का पुण्य जगन्नाथ जी का पुण्य बदरीनाथ जी का पुण्य कुरुक्षेत्र का
पुण्य प्रयाग जी का पुण्य नेमरवार मीसरू का पुण्य अयोध्या मथुरा
जमुना द्वारिका का पुण्य। गोदावरी नर्बदा में ग्रहण में नहाने
का पुण्य तथा काशी में ग्रहण में नहाने का पुण्य
इस प्रकार अनेकों तीर्थों में जाने अथवा नहाने का पुण्य मात्र बैसाख
में एक मास नहाने से होता है। अनेकों व्रतों के करने का पुण्य बैसाख

पावै। भरता-भरतार सुन्दर पावै भरती री मनकामना सिद्ध होवै, पुत्र मिलै, सुख मिलै। पछै देवलोक प्राप्ति हुवै। इसी कथा ब्रह्माजी नारद जी सूं कही, नै नारद जी राजा अंबरीक नै सुणाई। सुण नै राजा वैसाख नाहियौ, वैसाख रै पुन्य सूं अयोध्या समेत वैकुंठ पुहतौ। आ कथा सुणनै वैसाख न्हावै तिकै देव परायण होय वैकुंठ देवै स्वर्गलोक वासो करै, आवागमण न आवै।

श्लोक वैसाख कथा—

देव नारदो ब्रह्म सम्भिर्य अमलोके भवे नास्ते।
हरि लोके च प्राप्तिर्य ॥१॥

एक वैसाख के नहाने से पुण्य होता है।

इसके नहाने से गधे की कुत्ते की और कौवे की योनि नही पावे। पहले तो आवागमन ही न हो और यदि हो तो उत्तम कुल की प्राप्ति हो धन-दौलत पावे सुन्दर स्त्री प्राप्त हो स्त्री को सुन्दर पति मिले स्त्री की मनोकामना सिद्ध हो उसे पुत्र प्राप्ति हो सुख प्राप्त हो और फिर देवलोक को प्राप्त हो। इस प्रकार ऐसी कथा ब्रह्मा जी ने नारद से कही और नारद जी ने राजा अम्बरीक से कही। कथा सुनकर राजा ने वैसाख नहाने का व्रत आरम्भ किया। वैसाख के पुण्य से अयोध्या सहित वैकुण्ठ में पहुँचा। इस कथा को सुनकर जो वैसाख नहाता है वह देवताओं में लीन होकर वैकुण्ठ को प्राप्त हो और उसका स्वर्ग में ही निवास हो। उसका आवागमन फिर कभी न हो।

देव नारदो ब्रह्म सम्भिर्य अमलोके भवे नास्ते।
हरि लोके च प्राप्तिर्य ॥१॥

२-अथ श्री नृसिंह चवदश व्रतरी कथा

हेमाचल परवत री गुफा मांई हीरणकुसब तपस्या कीवी, अन पांण छोडि दियो। सो ईसी तपस्या कीवी सु सारा देवता नु अमर कीया। देवता मरती रा समस्त देवलोक गया। दैतरी तपस्या बल सु अगनि प्रगट हुई, तिण अग्न सु तिनलोक तपण लागा। सु सबै देवता आपरा ठीकाणा छोड गया। सु आगनै श्री ब्रह्मा जी कनै जाय पुकारया। पुकार नै कयो हीरण्यकसिप ईसडो नेहचौकर तपस्या कीवी छै नैं कहै छै—जनम जनम ईसडी तपस्या कर श्री परम पदवी लेऊं नै और भांति री और नवी सीसट बणाऊं। सु इण बात रो श्री ब्रह्माजी सु बीनती कीनी। सु देवता सगला सु साथे लेर आया। तठे, उपर उदेही मांय भरागई। ओदेही गोदी मांहि देखै तो मांस हाडरी दीसे।

श्री नृसिंह चवदश व्रत की कथा

हिमालय पहाड़ की गुफा में हिरण्यकशिपु ने तपस्या की—उसने अन्न-जल छोड़ दिया। उसने ऐसी (कठोर) तपस्या की—जिससे तमाम देवताओं को कष्ट दिया। सभी पृथ्वी के देवता देवलोक को गए। दैत्य की तपस्या के बल से अग्नि प्रकट हुई—उस अग्नि से तीनों लोक तप्तायमान होने लगे। इसलिए सभी देवताओं ने अपने-अपने स्थान छोड़ दिए। उपरान्त जाकर श्री ब्रह्माजी से पुकार की। पुकार कर उन्होंने कहा—हिरण्यकशिपु ने इस प्रकार जमकर तपस्या की है और वह कहता है कि मैं जन्म जन्मान्तर ऐसी-ऐसी ही तपस्या करके उत्तम पद को प्राप्त करके नई सृष्टि का निर्माण करूंगा। इस बात की ब्रह्मा जी को बड़ी ही चिन्ता हुई। वे सभी देवताओं को साथ लेकर वहां गए। देखा तो ऊपर की देह को कीड़े-मकोड़े खाकर लायक हैं। उस देह को

तदे श्री ब्रह्मा जी कमंडल रा जल सु छड़क्यो तब सावचेत हुवो। ऊंचो जोय देखे तो ब्रह्मा जी ऊभा है। श्री ब्रह्मोवाच। श्री ब्रह्माजी कह्यो—रे पुत्तर थु मांगे सु देवा तो थु प्रसन्न हुवा थे बड़ी तपस्या कीधी। तदे हीरण्यकसीप बोल्यो, पिताजी! थे त्रुठीमान्नो तो मोनु इसड़ो वर देवो—अस्तर सस्त्र सु मरू नहीं। रात्र दिन थाहरी सीसट सु मरू नहीं। तदे श्री ब्रह्मा जी वरदांन दीधो। वर देकर ब्रह्मलोक पधारीया। हीरण्यकस्यप आपरे लोक आयो। आपने इन्द्र जी सु जीतने इन्द्रासण उरो लीयो ने देवता नु दुख दीयो—मैं क्यो थारो ठाकुर कठै है, बोहोत जोरे चाले। सु कीताक दीनां पाछे हीरणकस्यप के पुत्र श्री प्रल्हाद जी हुवा, सु प्रल्हाद जी नु पोसाल गुरां शुक्राचार्य जी कने पढनु बेसाणे। सु पढे नहीं। श्री रामजी को ध्यान करे, कहे। और पढ़बो

खोला गया। अन्दर से देखा—हाड की सांकल दिखाई दी। तब श्री ब्रह्मा जी ने कमंडल के जल से छींटे दिए—तब (वह) जाकर सचेत हुआ। उसने ऊपर को देखा तो उसे ब्रह्माजी खड़े दिखाई दिए। श्री ब्रह्माजी ने कहा—हे पुत्र! तुम मांगो वही तुम्हे दें। तुम से हम बड़े ही प्रसन्न हैं। तुमने बड़ी ही अच्छी तपस्या की है। तब हिरण्यकशिपु बोला—यदि आप प्रसन्न हुए हैं तो मुझे ऐसा वर दें कि न मैं अस्त्र से मरूं और न शस्त्र से मरूं। रात में मरूं नहीं दिन में मरूं नहीं तुम्हारी सृष्टि से मरूं नहीं। तब श्री ब्रह्माजी ने वरदान दिया। वर देकर वे ब्रह्म लोक (स्वर्ग लोक) को चले गए। हिरण्यकशिपु अपने स्थान पर आया। उसने आकर इन्द्र को युद्ध में जीतकर उसका सिंहासन स्वयं ले लिया। देवताओं को बड़ा ही कष्ट दिया और कहा कि भगवान कहाँ है? बड़े घमण्ड से (वह) रहने लगा। बहुत दिनों के बाद हिरण्यकशिपु के एक प्रह्लाद नाम का पुत्र हुआ। प्रह्लाद जी को पढ़ने के लिए गुरू शुक्राचार्य के पास भेजा। वह वहाँ पढ़ता ही नहीं।

मिथ्या है—श्री गोविन्द रो ध्यान सत है। सु शुक्राचार्य जी मालुम कीवी, तरै हीरणकस्यप कवर प्रह्लाद नै येकंत ले जाय समझावतो हुवो प्रह्लाद जी सु घणी धासना दीवी। क्रोध कर कह्यो हाथ मे खडग छै। कठै रे बालक, थारो ठाकुर कठै छै, तू मोनु बताय। तरै प्रह्लाद जी कह्यो मोमैं, तोमैं, खडग मैं थंभ मैं, सरब मैं, चराचर मैं श्री भगवान बिराज्या छै। तरै हीरण्यकस्यप खडग हाथ मैं सु देवण री करी, तिण सु थंभ फाड नै श्री नारायण नृसिंह रूप होय प्रगट्या नै गरज करी। तिण सु सारो ब्रह्मांड धुजो देवता, दैत समस्त धुजा, इसो सरूप देख डरपा। ओह सरूप सगला नु भखसावसी। तरै हीरणकस्यप नगारो मन दीखायो। तरै श्री नृसिंह जी हरिण्यकस्यप की चोटी पकडी। गोद माहे संध्या समै नखा सु उद्र फाडनै

श्री राम जी का ध्यान करता—और कहता—यह पढना मिथ्या है (झूठ है) श्री गोविन्द का ध्यान लगाना सत्य है। तब यह बात शुक्राचार्य को मालूम हुई। उन्होंने प्रह्लाद को अकेले मे लेजाकर समझाते हुए उसे नाना-प्रकार से डराया-धमकाया क्रोध मे आकर कहा—हाथ मे (मेरे) यह तलवार है। हे बालक बताओ! तुम्हारा भगवान कहां है? तुम मुझे वह दिखाओ। तब प्रह्लाद जी ने कहा—मुझ मे तुम मे तलवार मे खम्भे मे सब मे चर और अचर मे भी भगवान विराजते हैं। तब हिरण्यकशिपु ने अपने हाथ मे जो तलवार थी उससे मारने की सोची। इस पर खम्भे को चीरकर श्री नारायण भगवान ने नृसिंह रूप धारण करके गर्जना की। इससे सारा ब्रह्माण्ड हिल उठा—देवता और दैत्य सभी धूज गये ऐसा स्वरूप देखकर वे डर गए। यह स्वरूप तो सबका ही भक्षण कर जायगा। इस पर हिरण्यकशिपु ने उन्हें अपनी पीठ दिखाई। तब नृसिंह जी ने हिरण्यकशिपु की चोटी पकड़ी। संध्या के समय उसे अपनी गोद मे रख कर उसका पेट फाड कर उसकी आँतें

गला माहे आंतडा घालीया । दैतरा लोहीरा छांटा आपरे सरीर में लागा, सो छांटा सोभाय मान है । श्री नृसिंह जी सिंहासण उपर बिराज मान है । श्री देवता फुल बरसावत हुआ जय-जय सबद हुआ । श्री माहादेव जी श्री ब्रह्मा जी श्री नारद जी समस्त देवता असतुत करे है । श्री भगवान सामा ऊभा है, सर्व देवता कहे, मेह इसडो दरसण कदे कीयो नहीं । श्री लिछमीजी पण डरे, सु नजर आवे नहीं-इसडो सरूप दरसणमें कदेही आयो नहीं । तरे बीरमा जी प्रहलाद जी सु कही थे कने जावो । ओ सरूप थारे वास्ते धरायो म्हारो वर साचो कीयो । तदे प्रहलाद जी नजीक जाय पगे लागा तदे श्री नृसिंह जी प्रहलाद जी रे माथे हाथ दे चाटता हुआ । जदे श्री नृसिंहदेव जी दैतरो पेट टंटोलता हुआ । तदे प्रहलाद जी कयो महाप्रभु ! दैतरी देही

अपने गले में डाल ली । दैत्य के खून के छींटे अपने शरीर पर लगे—वह बड़े ही सुहावने लग रहे हैं ।

श्री नृसिंह जी सिंहासन पर विराजमान हैं । श्री देवता लोग पुष्प बरसाते हुए जय-जय के शब्द करने लगे । श्री महादेव जी ब्रह्माजी और श्री नारद जी सभी देवता स्तुति करते हैं । श्री भगवान सामने खड़े हैं—सभी देवता कहते हैं हमने ऐसा दर्शन कभी भी किया नहीं । श्री लक्ष्मी जी डरती हैं । वह भी पास में आ नहीं रही हैं, ऐसा स्वरूप भगवान का कभी देखने में आया नहीं । तब ब्रह्मा जी ने प्रहलाद से कहा—आप पास में जावें । यह स्वरूप (भगवान ने) आपके लिए ही धारण किया है और मेरा वरदान सत्य किया है । तब प्रहलाद जी—ने नजदीक जाकर नृसिंह भगवान के पाँव स्पर्श किए—तब भगवान उनके सिर पर हाथ रख कर उन्हें चाटने लगे । फिर नृसिंह भगवान दैत्य का पेट टटोलने लगे । तब प्रहलाद जी ने कहा—हे महाप्रभु ! दैत्य के शरीर को स्पर्श न करें । श्री नृसिंह जी

जामखो मया । श्री नृसिंहदेव जी कहै । प्रह्लाद थी हूँ इणरा पेट माहि तो सारीखो भगत फेरू नीसरै । श्री नृसिंह जी कहै आप पीता रै सिंघासण बैठो । प्रह्लाद जी कहै—म्हारै कोई राज सु काम नहीं, मोनु रावरा चरणारविंद की भगति देवो । म्हारै मस्तक ऊपर हाथ दियो, सु ब्रह्मा इन्द्र रुद्र कै माथै हाथ नहीं—सु राज म्हारै माथा ऊपरै हाथ दियो । प्रह्लाद जी अर्ज करी, हो देवो का देव ! हूँ आगलै भव कुण थो कांइ सुकर्म कीनो, राज रो दर्शन हुवो । सु राज मोनु कथा कहो । तदे श्री नृसिंह जी कहै—कासी नगरी मैं सुभद्र नाम ब्राह्मण थारो पीता—जीसकै च्यार पुत्र था । सु तो पंडित था । क्रियावंत था—देवता री पूजा करता, च्यार मैं येक थे था । सु पीतारो माल वेस्या सु खायो, भ्रष्ट हुवो । एकम दीन तु न वेस्या मांह्यो—म्हारे भजीयो । सु दिन रो लखणा पूरो हुवो तदे च्यार पोहर ममाणण हुवा । सु ओ दिन

ने कहा—हे प्रह्लाद मैं इसके पेट में देख रहा हूँ कि तुम्हारे समान मेरा दूसरा भी कोई भक्त पैदा हो । श्री नृसिंह जी ने कहा—अपने पिता के आसन पर (तुम) बैठो । प्रह्लाद जी ने कहा—मुझे राज्य-भार से कोई सरोकार नहीं । मुझे तो भगवान आप अपने चरणों में स्वे-विमल भक्ति प्रदान करें । जैसी आपकी कृपा मुझ पर रही है (जैसा मेरे सिर पर आपने हाथ रखा) वैसी तो ब्रह्मा इन्द्र और रुद्र पर भी नहीं । अत आपने मुझ पर बड़ी ही कृपा की । प्रह्लाद जी ने अर्ज की । हे देवों के देव मैं पहले जन्म में कौन था ? मैंने कौन सा पुण्य (सत्कार्य) किया जिससे मुझे आपके दर्शन लाभ हुए—यह कथा आप मुझे कहें ।

तब श्री नृसिंह कहने लगे—काशी नगरी में एक सुभद्र नाम का ब्राह्मण तुम्हारा पिता था जिसके चार पुत्र थे । वह बड़ा पण्डित था क्रियावान था । देवताओं की पूजा किया करता—उसके चार पुत्रों में से एक तुम थे । तुमने अपने पिता का माल वेश्या को खिलाया । भ्रष्ट होगया ।

वैसाख सुद चोदस रो थो। सु रात्र दीन भूका झीका रह्या, सु थानु वरत रो फल हुवो। तिरूम फळ सु दर्शण हुवो, परम पदवी आय बैठ रयो। तद प्रह्लाद जी अरज करै, 'महाराजा, देवा का देव, चौदह लोक रा नाथ, राज म्हो वरत अजाणे कीयो तिण्रो फल पायो। आप ईश्वर को दर्शण पायो। प्रह्लाद जी कहै, इसा मोटा वरतरी री विधान कही जै। श्री नृसिंह देव कहै वैसाख सुद १४ के दिन प्रभाते उठजे, सीनान कीजै। श्री नृसिंह देव सु अरज कर व्रत नेमिजे। श्री नृसिंह देव री मुरत सुवर्ण री घड़ाई जे, चौक माण्डी जै। उपरा सिंघासण हर्ष मीन सु पुजा मंडळ थापन करे तदि मंडल माण्डीजे। सरधा हुवै जठा ताई व्रत कीज। श्री नृसिंह जी भक्त प्रह्लाद जी सु कहे तिरूम घणा अघोर पाप कीया हुवे तिरूम रा समस्त पाप कटे, वैकुंठ जावे।

एक दिन तुम और वेश्या दोनों भीतर ही भीतर लड़ते रहे। दिन भर तो तुम लोग लड़ते ही रहे और रात्रि के चारों प्रहर (तुम दोनों) मनाने में व्यतीत हुए। वह दिन वैशाख शुक्ला चौदस का था। अत रात-दिन भूखे प्यासे रहे इसलिए तुम लोगों को व्रत का फल मिला। उसी फल से यह दर्शन हुए हैं—परम पदवी को तुम प्राप्त हुए हो। तब प्रह्लाद जी प्रश्न करते हैं—हे महाराज देवों के देव चौदह भुवनों के स्वामी मैंने हे भगवन्, अज्ञान में यह व्रत किया उसका फल मुझे मिला। आप जैसे परम पिता के दर्शन प्राप्त किए। प्रह्लाद जी कहते हैं—ऐसे बड़े व्रत का विधि-विधान (हमें भगवन्) कहिए। श्री नृसिंह भगवान् कहने लगे—वैशाख शुक्ला चौदस के दिन सुबह बहुत जल्दी उठकर स्नान करे। श्री नृसिंह भगवान् से प्रार्थना करते हुए, इस व्रत को नियम-पूर्वक करने का प्रण ले। श्री नृसिंह भगवान की मूर्ति सोने की बनवाए, चौक पूरे। उसके ऊपर सिंहासन (रखे) बड़े हर्ष और प्रेम से पूजा आदि करने के बाद उस पर मांडने मांडने चाहिए। श्रद्धा हो भगवान में इस

पावे मुरत आगे चढावो हुवै, मूरत सूंपो श्रीरामण सु दीजै। श्री नृसिंह जी प्रह्लाद जी सु कही, व्रत रे पुन्य रो पार नहीं। सारी पिरथी दोली परक्रमा देवो तिर्थ समस्त करो, भांवे श्री नृसिंह जी चतुर्दशी रो व्रत करो। तिके मानवी घणी सरधा सु व्रत करसी, सु परम गति पावसी, मनवांछित फल पावसी। समस्त देवता उमा श्रीरमाजी महादेव श्री नारदजी समस्त उमा दर्शन करे है। श्री नृसिंह जी कहे ब्रह्माजी, थाथे वर साचो कीयो, ईसारी सहाय करीयेव। श्री नृसिंह जी वर दीन्हो प्रह्लाद जी थारी कथा हरख प्रीत सु गावसी वैसाख सुध चवदस रो व्रत करसी सु मनोवांछित फल पावसी। समस्त देवता उमा अस्तुति करे। श्री नृसिंह देव नमः। इति श्री नृसिंह चतुर्दशी व्रत कथा संपूर्ण। श्री रामानुजाय नमः॥

विश्वास हो तब तक इस व्रत को करता रहे। श्री नृसिंह भगवान प्रह्लाद से कहते हैं—जिस व्यक्ति ने बहुत बड़े पाप किए हों उसके सारे पाप कट जाते हैं और वह वैकुण्ठ को चला जाता है। यदि मैं पूजा के उपरान्त मूर्ति के आगे प्रसाद चढ़ाए और फिर वह मूर्ति मय-प्रसाद के ब्राह्मण को देनी चाहिए। श्री नृसिंह भगवान ने कहा—व्रत के पुण्य का कोई पार ही नहीं है। चाहे तमाम पृथ्वी के चारों ओर उसकी परिक्रमा लगाओ चाहे सारे ही व्रत करो और चाहे श्री नृसिंह चतुर्दशी का व्रत करो। जो व्यक्ति बड़ी श्रद्धा और भक्ति से यह व्रत करेगा वह परमगति को प्राप्त होगा। उसे अपने मन के अनुसार इच्छित फल की प्राप्ति होगी। सभी देवता ब्रह्माजी महादेवजी नारद जी उसे दर्शन करते हैं। श्री नृसिंह जी कहते हैं—ब्रह्माजी मैंने आपका वरदान सच किया उसकी सहायता की। नृसिंह जी ने वरदान दिया—प्रह्लाद जी जो व्यक्ति आपकी कथा हर्ष और प्रेम से गावेगा वैशाख शुक्ला चौदस का व्रत करेगा उसे मनवांछित फल प्राप्त होगा। सभी देवता उसे प्रार्थना करते हैं।

२–अथ श्री काजली तीजरो कथा लिखते

एकसमै समीपे राजा जुधिष्ठर जी बैठा छे। कुन्ती जी द्रोपदी जी, बीजी ही भलिया घणी ऊभा छे। जिवरे श्री कृष्णजी महाराज पधारिया। तरै द्रोपदा जी श्री कृष्ण ने कहै छै महाराज म्हां नु कोई पुण्य बतावो। कोई व्रत करावो जिणरै प्रताप सूं म्हारो भरतार ने अति वल्लभ हो न घरै लिछमी घणी होइ। घर माहे धन, धान घणो होवै। घणा कुटम्बारी धणीयांणी होवै। जिण व्रत क्रिया सूं इतरा थोक हुवै सो राज म्हांने क्रिपा करि ने बतावो। तरै श्री कृष्ण जी कहै छै। एक दिन परजापत, श्री ब्रह्माजी रा बडो बेटा थो। तिणरी बेटी साठ हुई। नै केईक तो बेटी कासिबजी नू परणाई। केईक बेटी

कथा काजली तीज की

एक समय राजा युधिष्ठिर बैठे हैं। कुन्ती द्रोपदी और बहुत सी स्त्रियाँ खड़ी हैं इतने में (उस समय) श्री कृष्ण महाराज पधारे। अब द्रोपदी जी भगवान से कहती है—महाराज मुझे कोई पुण्य बतावें। कोई व्रत करावें जिसके प्रभाव से स्त्री अपने पति को बड़ी प्यारी लगे व घर में लक्ष्मी का आगमन हो। घर मे धन-धान बहुत हो। बड़े परिवार वाली बहू (स्त्री) हो। जिस व्रत के करने से ऐसा सब हो सके ऐसा व्रत महाराज! कृपया मुझे बतावें।

तब श्री कृष्ण कहते हैं—एक बार दिन-प्रजापति जो ब्रह्मा जी का पुत्र था उसके साठ पुत्रियाँ हुईं। जितनी पुत्रियाँ तो (उसने) काश्यप जी को विवाह दीं। कई पुत्रियाँ धर्मराज को विवाह दीं। कई तेरह पुत्रियाँ चन्द्रमा को विवाह दीं। जितनी ही पुत्रियाँ पवन को

धरम राजा नै परणाई। केईक तेरह बेटी चन्द्रमा नै परणाई। केईक बेटी अगन नै परणाई। केईक बेटी पीरां सु परणाई। केईक बेटी भूतां नै परणाई। नै एक बेटी जिणरो नाम सती है, सो श्री महादेव जी नै परणाई। नै एक दिन देवतां नै जिग होतो थो, उठै सरब देवता भेळा हूआ है। तरै श्री ब्रह्मा जी आय बैठा है। श्री महादेव जी पिण आय बैठा, बीजा ही देवता रिखेस्वर आया था। तरै श्री ब्रह्मा जी नै महादेवजी बैठा बात करै है। तरै ब्रह्मा जी रौ बेटो बडो दिछ परजापत ही आयौ। तरै देवता सुह उठ नै दिछ परजापत नै नमस्कार कीयौ, आदर मान दियौ। नै महादेव मोनु आदर नहीं दीयौ। नै नमस्कार ही न कीयौ। सो दिछ परजापत सु इसा मांह सु कुवचन कहण लागो। जो इण महादेव सु म्हारी बेटी परणाई, सो म्हैं म्हारा पिता

विवाह दी। कितनी बेटियाँ पीरों को विवाह दी। कितनी पुत्रियाँ भूतों को विवाह दी। और एक पुत्री जिसका नाम सती है—उसे महादेवजी को विवाह दी।

एक दिन देवताओं का यज्ञ हो रहा था। वहाँ सभी देवता इकट्ठे हुए। तब श्री ब्रह्माजी आकर बैठे हैं। श्री महादेव जी भी आकर बैठे हैं—दूसरे देवता लोग ऋषि लोग आकर बैठे हैं।

उस समय श्री ब्रह्मा जी और महादेव जी बातें करते हैं। तब ब्रह्माजी का बड़ा बेटा दक्ष-प्रजापति भी (वहाँ) आया। तब सभी देवताओं ने उठकर दक्ष-प्रजापति को नमस्कार किया—उसे आदर सम्मान दिया। और महादेव जी ने आदर सत्कार नहीं दिया और न नमस्कार ही किया। इसलिए दक्ष-प्रजापति मुँह में से बुरे वचन कहने लगा। मैंने जो इन महादेव जी को अपनी कन्या विवाही वह तो मैंने अपने पिता ब्रह्मा के कहने से विवाही थी। नहीं तो मैं इस अघोरी

ब्रह्माजी कह्या सूं परणाई। नहींतर हूं इण अघोरी नै कदै परणाऊं नहीं। इण महादेव नै सिव कहै छै सो ओ तो बड़ो असिव छै। नै इस्यां अधरमी नै कदै बेटी परणाऊं ? अघोरी छै—इण में काई सुध नहीं। घणी भाग धतूरो खाय, आक नींब खाय मसांण मांहे सोवै मसांण मांहै रहै, मसांण री राख लगावै। नागो उघाड़ो रवै। इणनुं खबर काई नहीं, सदा असुध रवै। ओ अग्यानी—इण मांहे ग्यान कोई नहीं। जो इण में ग्यान होवो तो यूं जांणतो—बडो छै म्हारो सुसरो छै। उठनै इणनुं घणो आदर सनमान देऊं, नमसकार करूं। दिख परजापत महादेवजी री निंदा घणी कीवी। कुबचन घणा कह्या तरै सगळां ही देवतां दिख परजापत नै बरजियो। पण दिख बरजियो मानै नहीं। तरै महादेव जी जिग पूरो करनै उठिया, सो कैलास पधारिया।

जो कभी भी कन्या नहीं देता। इस महादेव को (लोग) शिव कहते हैं—लेकिन यह तो बड़ा ही अशिव है। मैं ऐसे अधर्मी को कभी पुत्री देने का था ? यह अघोरी है—इसे कोई ज्ञान नहीं है। (यह) बहुत सारी तो भांग और धतूरा खाता है—आक और नीम खाता है—श्मशानों में सोता है श्मशानों में ही रहता है और श्मशान की ही राख लगाता है। नंगा और उघाड़ा रहता है। इसे कोई खबर नहीं—हमेशा अशुद्ध रहता है। यह अज्ञानी है—इस में ज्ञान नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। इसमें यदि ज्ञान होता तो इसे समझना चाहिए था—मैं बड़ा हूं इसका ससुर हूं। उठ कर इसे बहुत सा आदर सम्मान दूं—नमस्कार करूं। दिख प्रजापति ने महादेव जी की बहुत निंदा की। बहुत ही बुरे भला कहे तब सभी देवताओं ने दिख प्रजापति को रोका। लेकिन दिख मनाने पर भी माना नहीं। तब महादेव जी यज्ञ समाप्त होने पर उठे—वे कैलाश को चले अन्य देवता भी सभी उठे। सभी अपने—अपने स्थान गये (अपने—अपने निवास पर सभी गये) श्री महादेवजी ने इस अपमान

देवता पण सारा ही उठिया, आप आपरै ठिकाणै गया। श्री महादेवजी तो मन मांहि क्यु ही आंणियौ नहीं–नेम बड़ा। नै महासती नै पण काई बात कही नहीं। आप तो पार ब्रह्म सु ताळी लगाई छै। नै दिख परजापत रै मन मांहि गुमौ घणी छै। सो हुं जिग करु नै सारांई देवता नु नैवरू, नै महादेवजी नु पांत बारै काढूं। तदै बिचार जिग करूं नै सारा ही देवतां नै तेड सू। नै जिग मांहे महादेव रौ सेपनाग है सो छै सो सरब काठ देसू। नै महादेवजी रा औगुण घणा करै छै। सो दिख परजापत कहै ही जिग करणौ मांडियौ छै। देवता सगळा ही बुलाया छै जो सकोई साथ देवता रो जिग ऊपर आवजौ। नै देवतां नै दिख कहाडियौ–जो हुं महादेवजी नै देवतां मांह सु परहो काढूं छू। जिकोई देवता महादेवजी री हिमायत करै,

---

के लिए मन मे किसी प्रकार का विचार नही रखा—वे अटल नियम के थे ठहरे !! और न उन्होने इस विषय मे कोई बात महासती (पार्वती) से कही। उन्होने ब्रह्म का ध्यान किया।

लेकिन दिख प्रजापति के मन मे बड़ा ही क्रोध है। मैं यज्ञ करू, तमाम देवताओ को बुलाऊँ (निमन्त्रित करूँ) लेकिन महादेव जी को 'देवता-समाज' से बाहर रखू। ऐसा विचार कर यज्ञ करूँगा तमाम देवताओ को निमन्त्रित करूँगा और यज्ञ मे महादेव जी को सेपनाग है—वे जो है, उन्हे सबको निकाल दूँगा। इस प्रकार महादेव जी के बहुत से अवगुणो को कहता है।

दिख-प्रजापति ने दुबारा यज्ञ प्रारम्भ किया है। तमाम देवता को बुलवाये हैं जो तमाम देवताओ का समूह यज्ञ के कार्य पर आना। और देवताओ को दिख ने कहला दिया—मैं महादेव जी को देवताओ की समाज म से निकाल कर दूर करूँगा।

सो महादेवजी कनै आवै। नै महादेवजी री हिमायत करै सो महादेवजी कनै आवै। नै महादेवजी री हिमायत न करै, सो बैरा आवस्यो। तरै सारा ही देवता बिमाण बैस-बैस नै कैलास ऊपर होय नै, जिग जावै छै। सो सती बैठी देखै छै। बिमाण मांहे बैठा, बहिन बहनोई जाय छै। बळै बिमाण में बैठा बहिन भांणेजा जावै छै। पण सती नु कोई बतळावै नहीं कोई बोलै नहीं। तरै सती कहै छै म्हारा बिमाण नीसरता, तरै मानै राम राम करता म्हां सूं बात चित करता हिमकै कोई बोलै नहीं, बतळावै नहीं सो कासूं जाणि छै। जितरै श्री महादेवजी ध्यान करनै, आंख खोली। तरै सती कनै आय नै कहण लागा, म्हारा सगोई बिमाण बैठ-बैठ नै जावै क्यूं छै। तरै श्री महादेवजी बोलिया सती थारा बाप रै जिग मांडियो छै। सो उण देवतां नु बुलाया छै। सो सारा ही देवता उठै जाय छै।

यदि कोई देवता उनकी तरफदारी करता था तो वह (देवता) महादेव जी के पास जा सकता है—और जो देवता महादेव जी की तरफदारी न करता था वह मेरे यहाँ अति शीघ्र आने की कृपा करे। सभी देवता तब विमान में बैठकर कैलाश के ऊपर से होकर यज्ञ पर जाते हैं। सती बैठी तब देखती है। विमान में बैठ बहन और बहनोई जाते हैं। फिर (दूसरे) विमान में बहन और भानजे बैठे जा रहे हैं। लेकिन सती से कोई पूछ नहीं रहा है—उससे कोई बात नहीं कर रहा है।

तब सती कहती है—हमारा जब विमान निकला करता था तो मुझ से (व लोग) राम-राम किया करते थे मुझ से बात-चीत किया करते—इस बार तो कोई बोलता तक नहीं है बतलाता भी नहीं है। पता नहीं किस प्रकार जाना जाए? तब महादेव जी ने पूरा [illegible] (ध्यान लगाकर) अपनी आँख खोली। सती तब पास आकर कहने लगी आज ये सभी लोग विमान में बैठ-बैठ कर कहाँ जा रहे हैं? इस पर श्री महादेवजी बोले-

तरै सती कहै छै—आपां ही जिग ऊपर जावस्यां। तरै सतीनु महादेव जी कहै छै, थारो बाप तो म्हां सूं बैर राखै छै। म्हांने थारै बाप घणा कुवचन कह्या, तोही हूं बोलियो नहीं। नै जिग मांहे म्हारो हिस्सो छै, सो थारो बाप कहै छै, हिस्सो हूं परो काढसूं। सो आपां तो विगर बोलाया कोई जावां नहीं।

तरै सती कहै छै—बापरै घरै नै सासरै, पीहर बिना बुलाया ही जाईजै छै। तरै भी महादेवजी कहै छै—आ तो बात साची कही। पण आगै गया, आदर मान न पाईजै।

तो सु ही गया कांई होय। सामी जिके उठै बैठा होसी, सो उणरी हांसी करै। म्हे तो बिगर बोलाया कोई जावां नहीं, नै थांनै पण मनहा करां छां। तू पण मति जावै। नै तू आपसी

सती तुम्हारे पिताने यज्ञ रचा है। उसमें देवता बुलवाये हैं। इसलिए सभी देवता वहाँ जाते हैं।

सती ने तब कहा—अपन भी यज्ञ पर चलेंगे। तब सती से महादेव जी कहते हैं—तुम्हारा पिता तो मुझ से दुश्मनी रखता है। तुम्हारे पिता ने मुझे कितने ही बुरे वचन कहे तब भी मैं बोला नहीं। और यज्ञ में मेरा हिस्सा है सो तुम्हारा पिता कहता है मैं हिस्सा निकाल बाहर करूंगा। अतः अपन तो बिना बुलाए नहीं जायेंगे।

सती तब कहती है—बाप के घर पर, ससुराल और पीहर में बिना बुलाये भी जाया जा सकता है। महादेव जी ने कहा—तुमने यह बात तो ठीक ही कही लेकिन आगे इस प्रकार जाने पर मान नहीं प्राप्त होता। अतः ऐसे भी जाने से क्या लाभ? अतिरिक्त इसके वहाँ जो लोग बैठे होंगे वे हंसी और करेंगे। मैं तो बिना बुलाये नहीं जाऊँगा और मैं तुम्हें भी जाने के लिए मना कर रहा हूँ। तुम भी मत जाना।

माथे छत्र धार नै चमर ढुळता आगै करता नृत करता थकां है। बाजत्र बजावै है। इण भांत सती नु बाप रै लेगया।

आगै जिग होय है। देवता बैठा वेद भणै है—होम होय रयौ है। दिछ प्रजापत नै तिणरी बहू बेहड़ा-छेहड़ा बांधिया है, बाजोट ऊपर बैठा है। होम होय है, आहुत दीजै है। माथै मुकुट दोनु जणां रै बांधिया है—होम रै कुंड आगै बैठा है। जिणरा मांहिलो सती सु एकही कोई बोलै नहीं। थोरो सो आ-उकार बहिनां दियो, पण बीजो कोई बोल्यो नहीं। आव, बैस किण ही कह्यो नहीं। तरै सती नु रीस चढ़ी, घणो क्रोध चढ़ियो। तरै सती कहै है-धिक रे बाप तोनै ! तू बड़ो अधरमी है तैं महादेव सु वैर करनै हिसो जग माहसु परहो कीधो, सो थारो जिग पूरो पड़ै नहीं। तू महादेव की मोटै कांई समझै ?

यहाँ (पिता के) यज्ञ हो रहा है। देवता बैठे वेद पढ़ रहे हैं-होम हो रहा है। दक्ष प्रजापति और उसकी स्त्री गठ-जोड़ा बांधे हुए हैं—वे एक पाटे पर बैठे हैं। होम हो रहा है-आहुति दी जा रही है। दोनों के सर पर मुकुट बांधा हुआ है—होम के कुण्ड के आगे बैठे हैं। इनमें से सती से कोई बोल भी नहीं रहा है। थोड़ा बहुत आदर-सत्कार बहनों ने किया दूसरा कोई बोलता ही नहीं है। आओ बैठो ऐसा किसी ने भी नहीं कहा। तब सती को बड़ी नाराजी हुई-उसे क्रोध चढ़ा उस पर सती कहती है—'हे पिता, तुम्हें धिक्कार है ! तुम बड़े ही अधर्मी हो-तुमने महादेव जी से वैर रख कर, उनका हिस्सा यज्ञ में से बाहर किया-अतः तुम्हारा यज्ञ पूरा नहीं पड़ सकेगा। तुम महादेव जी को क्या समझ सकते हो ?' (अर्थात् तुम्हें इतना ज्ञान कहाँ जो महादेव जी की महिमा उनके महत्व को समझ सको) । मुझे महादेव जी हमेशा ही दाक्षायणी कह कर पुकारते हैं। लेकिन मेरा यह शरीर पिता

मोनै महादेवजी मना ही रास्थापनी कद बतावै छै। पण
ओ सरीर माहरे बाप सु पैदा हुई छै सो यो सरीर हूं कोई
राखु नहीं। तरे सती-जिग मांहे होम रा कुंड थो तिण मांहे
कूद पड़ी। उणरो पड़णो हुयो नै तुरत ऊपर सू विरला हुई।
पण सती तो बळी छै। नै सती साथै महादेवजी रा गण आया था,
तिणा पण मनमें क्रोध घणो कियो। गणांनु रीस आई, सो गण
देवतासु लड़ाई करण लागा छै। जिग रो विध्वंस करण
लागा छै। सो देवता तिल जवा रा ओषा मंत्र भण नै होम रा
कुंड मांहे नाखियो सो जिवरा जीव तिसरा दांणा होमिया था,
तिवरा कुंड मांहसा जोधा होय नीसरिया। सो गणां सु जुध
करण लागा छै सो गण सारा मारिया छै। नै कितरायक गण
लोहां पूरति के लोही बहतां नाठां। सु गण श्री महादेवजी कनै
आया। सो आ हकीकत आगे नारदजी महादेवजी नै कहता था।

से पैदा हुआ है यह शरीर मैं अब रखूँगी नहीं। तब सती यज्ञ मे जो
होम का कुण्ड था उसम कूद पड़ी। उसका गिरना ही था कि तत्काल
वर्षा हो चली। लेकिन सती तो जल ही गई। सती के साथ जो महादेव
जी के गण आये थे उन्होंने मन म बड़ा क्रोध किया। गणो को गुस्सा
आया—अब गण लोग देवताओ से लड़ाई करने लगे। यज्ञ को विध्वंस
करने लगे हैं। देवताओं ने तब तिल और जव के दानो को मंत्र पढ़कर
कुंड मे फेंके जितने बीज व उतने ही दाने होम मे फेंके थे। उतने कुण्ड
मे से योधे (वीर) पैदा होकर निकले हैं। वे गणो से युद्ध करने लगे
हैं—सो तमाम गणो को मार दिए हैं। और कितनेक गण लहू-लुहान
होकर लहू बहते भागे। तब गण श्री महादेव जी के पास आए।
सो यही हकीकत (वार्ता) श्री नारद जी महादेव जी से कह रहे थे।
इतने मे गणो को खून से लथ-पथ देखकर, महादेव जी को गुस्सा
[illegible] गीर उसे धरती

पगे लागो छे। ने केईक देवता नाठा था-सो श्री ब्रह्माजी कने जाय ने पुकारिया छे। कह्यो-श्री महादेवजी रे गण वीरभद्र जिग विध्वंसियो-देवता ने मारिया, दिछ परजापत रो माथो वाढ ने बाळ नाखियो। सारी हकीकत देवता श्री ब्रह्माजी ने कही। तरे श्री ब्रह्माजी कहण लागा-हूं इण जिग में इणहीज वासते आयो नहीं। हमें थे श्री महादेवजी कने जाय ने पगे लागो क्षमा कराय ने वीनती कीजो। श्री महादेवजी मोटा छे-ईस्वर छे। जो महादेवजी री अस्त्री मुई, सती हुई छे तोही अस्तुत कीयां थांने गुन्हो बकससी। ने थे, देवता डरता जावो छो तो हालो, थांहरे साथे हूं हालूं। तरे श्री ब्रह्माजी देवता ने लेने कैलास आया। तरे श्री महादेव जी ब्रह्माजी नु आवता दीठा तरे महादेवजी उठने साम्हा आया छे-घणो आदर सनमान दियो छे। पछे

यज्ञ का विध्वंस किया देवताओं को मारा और दक्ष प्रजापति का सिर काटकर जला दिया। सारी (तमाम) घटना देवताओं ने श्री ब्रह्माजी से कही। तब ब्रह्माजी ने कहा—मैं इसीलिए ही यज्ञ में नहीं आया। अब तुम जाकर महादेव जी के पांव पड़ो—खड़े रहकर विनती करना। श्री महादेव जी बड़े हैं—ईश्वर हैं। यद्यपि महादेव जी की स्त्री मर गई है। (वह) सती होगई है तब भी प्रार्थना करने पर वे आपको क्षमा कर देंगे। और यदि आप देवता लोग डरके मारे न जावें तो चलिये मैं आपके साथ चलता हूं।

श्री ब्रह्मा जी तब देवताओं को लेकर कैलाश (पर्वत) पर आए। महादेव जी ने जब ब्रह्मा जी को आते हुए देखा तब वे उठ कर सामने आये हैं बड़ा ही आदर सम्मान किया है। फिर यज्ञ की बात कही है। देवताओं ने तमाम हकीकत कही। तब ब्रह्मा जी ने कहा—श्री महादेव जी बहुत बड़े हैं (बड़े महान् हैं)—मोटे हैं। अब तो जितने भी देवता लोग यज्ञ में मारे गए हैं—उन्हें जिलाइये।

बिगरी बात कही छै। देवतां सारी हकीकत कही छै। तरै महाजी कह्यो-जो श्री महादेवजी राज बडा छो, मोटा छो इमैं तो जिग मांहे देवता मारिया छै जिको सरब सरजीवन करो। जिग पूरण करो। तरै श्री महादेवजी श्री ब्रह्माजी ने साथै लेनै, जिग थो जठै आया सो वीरभद्र मैं गणां काम कियो थो सो देखता फिरै छै। सो श्री महादेवजी रा मारिया पडिया छै सो किणी रौ हाथ, किणी रौ पग कणी रौ धड पडियो थो। सो सारा ही भेळा करनै श्री महादेवजी सारा ही नै फेर सरजीवन किया। नै दिखराज रा जमाप्प र दांत भांगा था सु दांत देदिया। भृगुरी दाढी खोसी थी सो देदी। नै दिख परजापति री माथो बळ गयो थो सो दिखरै बोकड़ा रो माथो लगाय दियो। समस्त ही साजा किया छै।

श्री ब्रह्मा जी तब महादेव जी को साथ लेकर वहां यज्ञ था वहीं आए। जो कुछ काम वीरभद्र ने किया था उसे वहां घूम-फिरकर देख रहे हैं। वे सभी महादेव जी के मारे हुए हैं—अत किसी का हाथ किसी का पैर और किसी का धड़ पड़ा है। उन सबको श्री महादेव जी ने इकट्ठा करके दुबारा जीवित किए। और दक्ष राज के दांत और जीभ टूट गई थी अत (श्री महादेव जी ने) दांत दिलाए। भृगु की दाढ़ी नोची गई थी उसे दुबारा देदी गई। और दक्ष प्रजापति का सिर जल गया था सो उसके सिर के स्थान पर बकरे का सिर लगा दिया। सबको जीवित कर दिए हैं।

इसके बाद श्री महादेवजी होम के कुण्ड पर आए। वहां देखा तो सती तो उसमें बस गई है और उस स्थान पर 'ज्वारें' उग गए हैं। और जिस कुण्ड में सती की देह होमी गई थी उस कुण्ड में चार देवियां पैदा हुई हैं। एक मुख से जो ज्वालामुखी हुई। उसका स्थान उत्तर में स्थापन

पछै श्री महादेवजी होम रै कुण्ड ऊपरै आया। सो देखै तो सती तो मांहि बल्याई छै बठै जवांरा ऊगा छै। मैं सती री देही होमी थी तिण कुड मांह थी देवी प्यार हुई छै। एक मुखरी तो ज्वालामुखी हुई। तिणरी उत्तर मांहि थापना कीवी। दूजी कुम्मखा देवी हुई। तिणरी थापना पूरब मांहि कामरू देस में। तीसरी तुलजाईवो पगांरी हुई, तिणरी दखिण मांहि थापना छै। चौथी भगती हिंगुलाज देवी हुई, तिणरी पछिम मांहि थापना कीवी। तरै श्री महादेवजी कवै छै। भो भाद्रवा वदि तीज रो दिन छै, सो गोरी रै दिन छै, तिणसु इण तीजरी नाम काजळी तीज है। इण तीजरै नांव म्हैं व्रत करसीं मैं थौसी ही संसार में अस्त्रियां जो व्रत करसी, सो सुहागण होसी, रूपवंत होसी, लिखमीवत होसी, बेटा, पोता, बहु पड़पोता देखसी, कबीला री घणो सुख देखसी। तरै देवतांरी अस्त्रियां

किया। दूसरी कुमख्या देवी हुई। उसका स्थापन पूर्व में कामरू देश में (है) तीसरी देवी पैरो तुलजा देवी हुई–जिसकी दक्षिण में स्थापना हुई। चौथी भगवति हिंगलाज देवी हुई, जिसकी पश्चिम में स्थापना हुई। महादेव जी तब कहते हैं—यह भाद्रपद की कृष्णा तीज का पाक दिन है, इसलिए इस तीज का नाम कजली तीज है। इस तीज के नाम से मैं स्वयं व्रत करूँगा और संसार में जो स्त्रियां यह व्रत करेंगी वे सौभाग्यवती होंगी रूपवान होंगी लक्ष्मीवान होंगी बेटे पोते और बहुत से पड़पोते देखेंगी। अपने कुटुम्ब का बहुत सुख लाभ करेंगी।

इस पर देवताओं की जो स्त्रियां वहाँ खड़ी थीं सभी व्रत करने लगीं और महादेव जी को देवताओं की स्त्रियां पूछने लगीं महाराज ! कजली तीज के व्रत का विधि–विधान हमें बतावें।

रूसी थी, सो सारी व्रत करती हुई, श्री महादेवजी नै देवतां री भक्तियां पूछती हुई, 'महाराज कजली तीज रे व्रतरी म्हानै विध विधान बतावौ।

तरै श्री महादेवजी कयो कै 'भादवा वदि तीजरै दिन परभातरा उठनै दांतण सीनांन कीजै, काजल-तिलक करिनै नवीन कपड़ा पहरिजै। गवर रै नांव व्रतरो नेम धारिणो, आज म्हैं एकासणो करस्यां। एकहीज धान खावस्यां। गेहूँ, जव, चिणा चावल यां च्यारां धाना में एक धांन खावणो। चन्द्रमा रो दरसण कर पूजा कर, एकासणो खोलिजै, नै बांसरी छाबड़ी में दिन सात पहिली जवारा बाहीजै जवां सु तथा गेहूँ सु। नै जवारा दिन सात रा होय तरै काजली तीजरै दिन बीजपान माथै काजल सु सती री मूरती मांडिजै। जवारां माथै मूरत मांडी

तब महादेव जी कहते हैं—भाद्रपद की कृष्णा तीज के दिन सुबह उठकर दातुन स्नान करना काजल तिलक आदि करना—फिर नए कपड़े पहिनना। गवर के नाम पर व्रत करने का—दृढ़ निश्चय करना—(ऐसा सोचना) मैं आज उपवास करूंगा। एक ही प्रकार का अनाज खाऊंगा। गेहूं जव चने और चावल इन चारों अनाज में से एक अनाज खाना। चन्द्रमा का दर्शन करके पूजा करनी चाहिए। इसके बाद उपवास खोलना चाहिए। सात दिन पूर्व ही बांस की टोकरी में 'जुवारे' उगाने चाहिए—जव के दानों से अथवा गेहूं के दानों से। और जवारे जब दिन सात के हो जावें तो काजली तीज के दिन बीज के पान में काजल द्वारा सती की मूरती मांडनी चाहिए। जवारों में जो मूरती मांडी हो उस पर बीज का पान धर देना। इसके ऊपर फल रखने चाहिए। फूल जितने भी प्रकार के हों, तमाम पांति के मंगवाकर, मूरति मांडी हो उस पर चढ़ा देने चाहिए। उनके ऊपर

होय, जिके चौकरी पांन धरीजे। ऊपर फूल मेलीजे। फूल जिके ही होय सो सारी जातरा मंगाय नै मूरत मांडै ऊपर चढाईजे। ऊपर पीळो कपड़ो चढाईजे। पछै चंदण केसर सू पूजा कीजे। धूप, अगर मुखरा आगे खेविजे। घिरत रो दीवो कीजे। नैवेद, मुखवास, सुपारी पण पान चढाईजे। ब्राह्मण कनै प्रतिष्ठा कराईजे। भलीभाँति सु शिव मंत्र भणाईजे। पछै चढावी होय सो सगळ ब्राह्मण नु दीजे। सातूरा लाडू कीजे, जिण मांहे सु सातूरो लाडू एक देवतां नु चढाईजे। वो लाडू एक चढावारी ब्राह्मण नु दीजे। बीजा लाडू सातूरा कीया होय सो चन्द्रमा री पूजा कीयां पछै खाईजे, पण थोड़ो-थोड़ो सगळां सु बांट खाईजे। इण भाँति सु पूजा करनै एकासणो कीजे। जिकाई भली भो व्रत करसी तिणरो सुहाग भाग अवचळ रहसी। भरतार सु घणी हेत पियार रहसी। तिणरै कदेई भूख न आवै।

पीला वस्त्र चढाना चाहिए। इसके बाद चन्दन-केशर से पूजा करनी चाहिए। धूप अगर उसके आगे जला रखना चाहिए। घी का दीपक करना चाहिए। नैवेद्य सुपारी आदि पान-पान पर चढानी चाहिए। ब्राह्मण द्वारा प्रतिष्ठा करवानी चाहिए। अच्छी प्रकार से शिव के मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए। इसके बाद जो प्रसाद चढाने के रूप में रखा हो सो सारा का सारा ब्राह्मण को दे देना चाहिए। सातुओं के लड्डू बनाने चाहिए उनमें एक सातू का लड्डू देवताओं को चढाना चाहिए। वह एक चढाया हुआ लड्डू ब्राह्मण को देना। दूसरे लड्डू जो बनाए हों उन्हें चन्द्रमा की पूजा के उपरान्त खाने चाहिए। लेकिन थोड़ा-थोड़ा सभी लोगों को बांटना चाहिए। इस प्रकार पूजा करने के बाद उपवास करना चाहिए। जो भी स्त्री इस व्रत को करेगी उसका सौभाग्य-सुहाग अचल रहेगा। उसका अपने पति के साथ बड़ा प्रेम रहेगा। उसके घर में भूख (दारिद्र) कभी भी नहीं आयेगी। यह

होवरी कदेई न रहे—सदा सुखी रहे । इतरी कहनै श्री महादेवजी कैलास पधारिया । पछै एकण दिन इन्द्र देवता जिग मांडियो । सो सारा देवता तेड़िया छै, श्री ब्रह्माजी आया छै, श्री ठाकुर पधारिया छै । सो जिग करै । जकी होय सो डीवणे अंगी बैसे । सु इन्द्र बैठा छै । इन्द्राणियां सोळै सिणगार करनै इन्द्रजी रै डीवणे अंगे बैठी छै । इन्द्राणी सुहागण मानेती छै । सो कनै बैठी छै । तरै जिग पूरी करनै उठिया । श्री इन्द्राणियां ठाकुरां नै कहै छै—महाराज म्हानु इसड़ो व्रत बतावो जिण कियां सु भरतार म्हौंसु—सीधा करै । रूपवंती घणी हुवै जिसमी अनवन पामीजे ।

तरै श्री ठाकुर कहै छै—एक व्रत छै, सो महादेवजी सुण ! पुराणी कनु कह्यो छै । सो हूं तोनै व्रत कहीस । तरै इन्द्राणी

कभी भी दुःखी न होगी—हमेशा सुखी ही रहेगी । इतना कह कर महादेव जी कैलाश पर्वत पर गए ।

इसके उपरान्त एक दिन इन्द्र ने यज्ञ रचा । उसने तमाम देवताओं को बुलाए हैं—श्री ब्रह्मा जी आए हैं श्री भगवान भी आए हैं । वह यज्ञ कर रहा है । जो भी हो वह उसके दाहिनी ओर बैठती है । अत इन्द्र बैठे हैं । इन्द्राणी सोलह शृङ्गार युक्त इन्द्र के दाहिनी ओर बैठी है । इन्द्राणी सुहागन है—मानेतन है । अत वह इन्द्र के पास बैठी है । इसके बाद यज्ञ समाप्त करके उठे । श्री इन्द्राणी भगवान से कहती है—महाराज ! मुझे ऐसा व्रत बतावें जिसके करने से पति हमसे प्रसन्न हो जाय । हम बहुत ही रूपवती बन जावें और धनवान भाभी बन जावें ।

तब श्री ठाकुर (भगवान) कहते हैं— एक व्रत है जो वह (व्रत) महादेव जी ने सुना ! पुराणों में सुना है । वह व्रत मैं तुम्हें कहूंगा । तब

कहे छे-महाराज ओ व्रत मोनै कहिजै। तरै श्री ठाकुर कहै छै—भादवा वदि तीज अंधारा पखरी आवै, सो कजळी कहीजै। काजळी तीज रै दिन गौर री व्रत कीजै। प्रभाते उठनै दातण स्नान करनै नेम धारिजै। चन्द्रमा देखनै पूजा कीजै। एकासणी करस्यां, पछै सात्तू करस्यां। गौर री मूरत मांडीजै। सात दिन पैहली जवारा बाहीजै। एक पीपरा पांन ऊपर सती री मूरत मांडीजै, काजळ सूं। दूजै पान ऊपर केसर री मूरत मांडीजै। गौर री मूरत तीजा पान ऊपर मांडीजै। पछै मूरत लेनै जवारां ऊपर मेलीजै। केसरियो कपड़ो कर ऊपर चढ़ाई जै-धूप अगर खेवीजै, घृत रौ दीवो कीजै। कुंकुम केसर चंदण सूं पूजा कीजै। फूलां सूं जवारा छांजै-फूलां री वारणो, पोख कीजै। केसरियो कपड़ो पोख-पोख ऊपर नाखिजै। नैवेद्य, लाडू भातूरो चढाइजै। मुखवास सुपारी पण चढाई जै। पछी प्रीतभाव

स्त्राणी कहती है—महाराज! यह व्रत मुझे कह। तब श्री भगवान कहते हैं—भाद्रपद की कृष्ण की जो तीज आती है वही कजली तीज कहलाती है। काजली तीज के दिन गौरी का व्रत करना (चाहिए)। सुबह उठकर दतुन स्नान आदि करके नियम धारण करना चाहिये। चन्द्रमा उदय हो तब पूजा करके चन्द्रमा का दर्शन करके 'गौरव्यायार' को भोजन करवाना चाहिए। पछी बारी हो (सत्त खाने की) तब स्त्रियों को उसी काल का सत्तू खाना चाहिए। चन्द्रमा को देखकर पूजा करनी चाहिए।

। गौरी की मूर्ती बनानी चाहिए। सात दिन पूर्व ही जवारे उगाने चाहिए। एक पीपल के पत्ते पर काजल से सती की मूर्ती बनानी चाहिए। दूसरे पान पर केसर से मूर्ती बनानी चाहिए। गौरी की मूर्तिया और भी दूसरे पत्ता पर मांडनी (बनानी) चाहिए। फिर मूर्ती को लेकर जवारो के ऊपर रखनी चाहिए। कपड़े को केसर से

सू पूजा कीजै । ब्राह्मण कनै पूजा करावीजै । पछै चढ़ावो होय सो ब्राह्मण नु दीजै । पण आपी पूजा न कीजै ।

एक ग्रस्त्री थी सो आपीज पूजा करती । ब्राह्मण कनै पूजा न करावती । नै पूजा मैं चढ़तो सो ब्राह्मण नु देती नहीं । सु कहती ब्राह्मण काईं करसी, जिके म हाथ करसी सु मैहीज करसां । तरै वा ग्रस्त्री मर गई । तरै वा कोढ़ी हुई । सु पूजा आपीज करिजै नहीं ।

एक ग्रस्त्री थी सो वा कामणो री पूजा विध सु करती, नै एक दिन दीवो न करती । सो मुई, तरै वा गुण चमचेड़ हुई । सो आपहीज पूजा न कीजै—विधियो के तिय विध सू पूजा कीजै ।

श्री ठाकुर कहे छै—हे इन्द्राणी, ओ व्रत तू घणी सरधा सू प्रीत सू करै तो थारै जनमी री वासी हुवै, सुहाग-भाग

रखकर ऊपर चढ़ाना चाहिए—धूप अगर खेना चाहिए, घी का दीपक करना चाहिए । कुंकुम और केशर, चंदन से पूजा करनी चाहिए । फूलों से चबारे को ढांक देने चाहिए (इतने फूल चढ़ाने चाहिए कि जिससे चबारे ढक जायें) फूलों का ही दरवाजा और प्रोल (बड़ा दरवाजा) बनाना चाहिए । केसरिया कपड़ा इस प्रोल पर रखना चाहिए । नैवेद्य लड्डू वस्तु का चढ़ाना चाहिए । पान दक्षिणा चढ़ानी (चाहिए) बड़ी ही श्रद्धा और भक्ति से पूजा करनी चाहिए । पूजा ब्राह्मण से करवानी चाहिए । इसके बाद जो चढ़ावा हो वह ब्राह्मण को दे देना चाहिए । पूजा स्वयं न करें ।

एक स्त्री थी वह अपने आप पूजा किया करती थी । ब्राह्मण से पूजा नहीं करवाया करती । पूजा पर जो चढ़ावा होता वह ब्राह्मण को नहीं देती । ऐसा कहा करती—ब्राह्मण क्या करेगा जो ब्राह्मण करेगा—वह मैं भी कर लूंगी । फिर (समय पा कर) वह स्त्री मर गई । तब वह 'कोढ़ी' हुई । इसलिए पूजा स्वयं नहीं करनी चाहिए ।

अवचळ रहे। तरै ओ व्रत इन्द्राणी भली विध सूं-करण लागी। श्री ठाकुर कहै है ओ व्रत द्रोपदी नुं कह्यो है। द्रोपदी तूं ओ व्रत भादवा वदि तीज कजळी-तीज रो आवै तरै करै। एक आंन बरस सोळह लग खाई। आवै आठ बरस तांई खाईजे। आवै च्यार बरस तांई खाईजे। पछे ऊजमणो मैं जजमीजे। सोळै गोरण्यां हुवै तिणा नुं पहला तो गुळरो पाणी पाईजे। पछै सातू घणो घृत खाड पाळ कीजै सो चन्द्रमा उगे तरै पूजा करनै चन्द्रमा रा दरसण करनै गोरणियां नूं जीमाइजै। तिणा री बारी होय तिणा स्त्रियां नूं ऊम आंन री सातू खवाइजे। पछै जीमीजे। पछै महादेवजी नुं वागो करीजै। महादेवजी री मूरत रूपारी कराईजे। आपरी सरधा सारू, सहु करीजे।

एक स्त्री थी वह कजली तीज की पूजा तो विधि से किया करती लेकिन दीपक कभी भी नहीं जलाती। वह मरी-तब चमगादड़ बनी। व्रत स्वयं अपने हाथों पूजा नहीं करनी चाहिए-जैसा लिखा हुआ है, उसी विधि-विधान से पूजा करनी चाहिए।

श्री ठाकुर कहते हैं—हे इन्द्राणी यह व्रत तुम यदि बड़ी श्रद्धा से प्रेम से करो, तो तुम्हारे यहाँ लक्ष्मी का निवास हो सुहाग-भाग अचल रहे। तब यह व्रत इन्द्राणी बड़ी अच्छी विधि से करने लगी। श्री भगवान कहते हैं—यह व्रत द्रोपदी से कहा है। हे द्रोपदी तुम यह व्रत भाद्रपद की कृष्णा तीज आए, तब करना। एक ही धान्य का अनाज वर्ष सोलह तक खाना। या फिर आठ वर्ष तक खाना। चाहे फिर चार वर्ष तक खाना। फिर कजली तीज का उजमणा करना। सोलह कन्याओं को (कुंवारी कन्याओं को) पहले गुड़ का पानी पिलाना। फिर सत्तू बहुत-सा घी और खांड के युक्त बनाना। चन्द्रमा के उदय होने पर चन्द्रमा के दर्शन करके गौरणियां को भोजन करवावें। जिस

पछै च्यार पोहर रात रातीजगो करावै। पछै च्यार पुहर री पूजा चार कीजै। पछै गोरणियां रै कुंकु रा टीका कीजै। टीकां ऊपर चौखा चेपीजै अखण्ड गोरणियांरी आंख मांहि काजळ घालीजै। मैंहदी हाथां पगां रै दीजै। बीड़ा खवाईजै। पछै सू चोखो तेल, फूल, चंदण कपूर, कस्तूरी चढ़ाई जै। चढियो होय सो ब्राह्मण नु दीजै रातीजोगो दिराई जै। ब्राह्मण नु जमन दीजै सो श्री ठाकुर कहियो द्रोपदी सू व्रत पूछती थी, सू इण भांत सू व्रत कीजै। ओ व्रत इण भांत करीजै। इण भांत सू व्रत गोरसी छै। श्री महादेवजी कह्यो छै, सो द्रोपदी म्हैं थोनै कह्यो छै। तरै द्रोपदी व्रत भली-भांत सू करण लागी छै।

धान की बारी हो, स्त्रियों को उसी धान का सत्तू खिलाए फिर भोजन करना-बाद मे भी महादेव जी को पोशाक पहिनाना। महादेव जी की मूर्ति चाँदी की बनाना। अपनी यथा शक्ति सहित सब यह करना। फिर रात्रि के चार पहर तक जागरण करना। फिर चार पहर की चार पूजा करना। फिर गौरणियों को (कन्याओं को) कुंकुम का टीका लगाना। टीके पर चावल चेपना। गौरणियों के आँखों मे काजल दे अञ्जन करवाना। उनके हाथों और पैरों मे मेंहदी लगाना। पान खाना चाहिए। फिर सुगन्ध वाला तेल फूल चन्दन कपूर कस्तूरी आदि चढ़ाना चाहिए। चढ़ावा हो वह ब्राह्मण को देना। रात्रि भर जागरण करना। ब्राह्मण को गुप्त दक्षिणा देना। तब श्री भगवान कहते हैं-तुम व्रत पूछ रही थी सो इस प्रकार व्रत करना चाहिए और इसी प्रकार इस व्रत का उजमना करना चाहिए। इस प्रकार यह व्रत गौरी का है। श्री महादेव जी ने कहा था-वही मैंने हे द्रोपदी! तुम्हें कहा है तब द्रोपदी भली प्रकार से व्रत करने लगी।

४—जन्माष्टमी री कथा

श्री गणेशायनमः । अथ श्री जन्माष्टमी री कथा लिख्यते । एकण समीये ब्रह्माजी दरबार जोडने बैठा छे, तठै महादेवजी पिण आया छे । बीजा ही देवता ब्रह्माजी रे दरबार आया छे । बडा-बडा रिखीसुर दरबार में बैठा छे । ब्रह्माजी छे, सु सेष्टा करता छे । बडी पदवी बैठा छे । तारे सब कोई आप आप नें नमसकार करैछे । सु सकोई बैठा छे । तिण समीयै नारद जी आया । सु नारद जी छे सु बडा भगत छे । सु ठाकुर नै रात दिन बीणा लीयां गावै छे । सु नारद जी ब्रह्माजी ने पुछेछै । सु राज ! आज जनमाष्टमी की कैसि मैहेमा छे ॥ सु राज मोनें कहो । तारे ब्रह्माजी कहेछे । स्याबास पुत्र तैं ठाकुर रो नाम लस छे । सु मोनु कह्या । तरे ब्रह्माजी कहेछे, नें नारद जी

जन्माष्टमी की कथा

एक समय ब्रह्मा जी दरबार जोड़कर बैठे हैं—वहां महादेव जी भी आये हैं । दूसर देवता भी ब्रह्मा जी के दरबार मे आये हैं । बड़े-बड़े ऋषि लोग दरबार मे बैठे हैं । ब्रह्माजी हैं वे सृष्टि के कर्ता हैं (सृष्टि के निर्माण करता हैं) बड़े (ऊँचे) आसन पर बैठे हैं । वहाँ सभी लोग बैठे हैं । उस समय नारद जी आये । नारद जी हैं—वे बड़े ही भक्त हैं । वे रात-दिन वीणा लिए भगवान का स्मरण करते रहते हैं । अब नारद जी—ब्रह्मा जी से पूछते हैं—भगवान्, आज जन्माष्टमी कैसी है, कैसी महिमा है कृपया मुझे बताएँ । तब श्री ब्रह्माजी कहते हैं । पुत्र धन्यवाद ! उस भगवान के नाम का बड़ा ही महत्व है यह तुमने मुझ से पूछा है । तब ब्रह्मा जी कहते हैं और नारद जी सुनते हैं । भादरवा की कृष्ण पक्ष में अष्टमी आवे वह जन्माष्टमी का व्रत राजा समर्पित करता है । राजा बली(प)

सांभळे छै। भादवा मास अंधारा पखरी आठम आवै सु जनमाष्टमी रो वरत राजा अमरीक करै छै। राजा बलीप करतो। राजा विभिषण करतो। विजाही बडा-बडा राजा जन्माष्टमी रो वरत करै छै। सु इण वरत कीया रो इतरो पुन्य छै। कपिला गाय, सोवन सींगी, रूपा खुरी, तांब पुठी तितरो पुन्य हुवै। नै कळू खेत मांहि सुरज गिरहण मांहि सोनो दीजै, सो भादरवानो दीया रो पुन्य होवै तितरो पुन्य हुवै। जगे तेतराई तीरथ छै, तितरा नाया रो फळ हुवै, इतरो फळ छै। तारै नारद जी कहै छै, राजा ! जनमाष्टमी रो विधान छै, सो कह्यो–कैसी विधि सु वरत कीजै। तारै ब्रह्माजी कहै छै–नारद भादवा वदि अष्टम रै दिन गोकुल मांडीजै, चंदण सु मांडीजै। पछै देवकी माता मांडीजै। पछै जसोदा माता ढोलीयै ऊपर सूता मांडीजै। जसोदा माता–नंद बाबो मांडीजै। पाछै श्री रुकमणजी माता री आव करत कमे

भी करता राजा विभीषण भी किया करता–दूसरे भी बड़े-बड़े राजा जन्माष्टमी का व्रत करते हैं। अब इस व्रत के करने का बड़ा पुण्य है–कपिला गाय सोने की सींगोंवाली चाँदी के खुरोंवाली तथा ताँबे की पूँछवाली (ऐसी) गाय को पुण्य करता है इतना बड़ा पुण्य–सूर्य ग्रहण में कुरुक्षेत्र के स्थान पर जाकर जो सोना दान दिया जाता है वही भाद्रपद में देने पर पुण्य होता है उतना पुण्य हो। फिर (सुनो) जितने तीर्थस्थान हैं उनमें स्नान करने का पुण्य प्राप्त होता है (इतना इस व्रत से होता है) तब नारद जी कहते हैं–जन्माष्टमी का कैसा विधि विधान है वह कहिए। किस विधि से यह व्रत करना चाहिए। तब ब्रह्मा जी कहते हैं हे नारद ! भाद्रपद की कृष्ण पक्ष के दिन गोकुल मांडना चाहिए उसे चंदन से मांडना चाहिए। फिर देवकी माता मांडनी (चित्रित करना) चाहिए। फिर यशोदा माता का चित्र जैसे वह खाट पर बैठी हो चित्रित करनी चाहिए। यशोदा माता और बाबा

मांडीजे । पछे रोहणी माता मांडीजे । पछे बळभद्र जी मांडीजे । पछे श्री महादेव जी मांडीजे । बीजा ही तेतीस कोटि देवता मांडीजे । देवी मांडीजे । पछे गाया घणी मांडीजे । बछा घणा मांडीजे । पछे गोपी गोप मांडीजे । पछे कालीनाग मांडीजे । पछे परतिष्ठा मणीया ब्रामण कने कराई जे । पछे आगे कुंभ एक मेल्हिजे । ऊपर सालिग्राम जी पधराइ जे । पाछे पूजा कीजे । पछे धूप अगरज खेविजे, दीवो घिरत रो कीजे । चंदण, कुंकुम, केसरि सु पूजा कीजे । पछे अखित चढाई जे । नैवेद हुई सो आंण ने समरपीजे । पछे तांबोल समरपीजे । पछे मथा री दिखणा ब्राह्मण ने दीजे । चढायो हुवे सो ब्रमण नु दीजे । इण विधि सु बरत करने, पछे आप पारणो कीजे । सु नारद जी इण विधि बरत करे तो तिण रे पाप री दे होवे ।

गन्ध भी चित्रित करना चाहिए । फिर भगवान श्रीकृष्ण माता की छाती से लगे—करवट के पास (लेटे) चित्रित करना चाहिए । फिर रोहणी माता चित्रित करनी चाहिए । फिर बलभद्र को चित्रित करना । फिर महादेव जी चित्रित करना । फिर दूसरे तैंतीस करोड़ देवता चित्रित करना । देवी चित्रित करना । फिर बहुत सी गायें चित्रित करना बहुत से बछड़े चित्रित करना । फिर गोप और गोपियाँ चित्रित करना । फिर काली नाग को चित्रित करना । इसके उपरान्त (इन सभी उपकरणों की) प्रतिष्ठा पढ़े लिखे ब्राह्मण से करवानी चाहिए । फिर एक घड़ा रखना चाहिए—उस पर सालगरामजी की मूर्ति स्थापन करनी चाहिए । फिर पूजा करनी चाहिए । इसके उपरान्त धूप अगर से अर्चना करनी चाहिए—घी का दीपक रखना चन्दन कुंकुम और केसर से पूजा करनी चाहिए । फिर अक्षत चढ़ाने चाहिए । नैवेद्य हो उन्हें लाकर (भगवान के) समर्पण करे । फिर पान समर्पण करना चाहिए । इसके उपरान्त पष्ठी की दक्षिणा ब्राह्मण को देनी चाहिए । प्रसाद जो भगवान पर भोग निमित्त चढ़ाया हो वह

घरमरी बेरष हुवे। तिण रै पुत्र हुवे, जिणमी मखूह रहै। वय नु दोहरम करे मावै। पुरप जिकोई जनमाष्टमी रो वरत करै सु सदा सरवदा लछमीयेत हुवे रहै बस सोभाग हुवे। नै मय वैकुंठ पदवि पावे। नै जो कोई पुरुष आष्टम रो व्रत न करै छै सु राक्सरी जमारो लहै। नै असत्री जिका जो वरत न करै छै, तो सापिनीरी जमारी लहै, उजवि बन रो वासो हुवे। सु नारद जन्माष्टमी रो वरत रो अनंत फल छै, घणो पुन्य छै, जिण पुन्य री पार कोई नहीं। ठाकुर कहै छै-ओर वरत घणाई छै पिण न्नविस वरत महारा छै। सु कहै-चोईस ईग्यारिस करै एक रामनवोमी जनमआष्टम, नरसिंघ चतुरदसी, सिवरात्रि, वामंन द्वादसी, ए वरत म्हारा छै। मनुष्य अवतार आयनै ए गुणतिस वरत करसी तिणनु ईं वैकुंठ पदवि मेलिस-इण वातरो संदेह नहीं। तिण म्हारी पीति घणी महात्माओं मगत छै।

ब्राह्मण को दे देना चाहिए। इस प्रकार से व्रत करने के बाद फिर व्रत को खोले (एक स्थान पर बैठकर एक समय भोजन करना चाहिए) हे नारदजी ! यदि कोई व्यक्ति इस रीति से व्रत करता है—तो उसके पापों का क्षय होता है। उसके धर्म की वृद्धि होती है—उसके सन्तान हो लक्ष्मी उसके यहाँ अखूट रहे। उसे कभी भी कष्ट न हो। जो पुरुष जन्माष्टमी का व्रत करता है वह हमेशा लक्ष्मीवान होता है। और यश का भागीदार बने और मरणोपरान्त वैकुण्ठ मे स्थान प्राप्त करे। यदि कोई व्यक्ति अष्टमी का व्रत नहीं करता है वह राक्षस का जन्म पाता है। और स्त्री यदि व्रत नहीं करती है, उसे सापिन (नागिन) का जन्म लेना पड़ता है। उसे निर्जन वन में वास करना पड़ता है। अतः हे नारद ! जन्माष्टमी के व्रत के फलस्वरूप फल हैं बड़ा ही पुण्य होता है जिस पुण्य की महिमा का कोई पार नहीं पा सकता। भगवान कहते हैं—और तो बहुत से व्रत हैं, लेकिन उन्तीस व्रत मेरे हैं। अतः उन्हें भी करें

एक दिन राजा युधिसटर जी बैठा छै तिनि समीमै श्रीक्रस्न जी पधारया। तारै राजा युधिष्ठर नमसकार करिनै हाथ जोरि नै श्री ठाकुर नै कहै छै–राजरी, आजो जनमआष्टमी हुई छै, सुं कहो मोनै। तरै श्री क्रिसनजी कहै छै, राज युधिष्टर जी सांमळै छै। ठाकुर कहै–धरती मैं कंस रो जोर हुवो। तारै देवता प्रथी मैं भेळा होय नै ब्रमाजी कनै आय पुकारीया। तारै ब्रमाजी, देवता प्रिथी मैं भेळा होय नै खीरि सागर मैं आया। आयनै हमारी असतुति करै छै। तारै मैं दरसण दयो। तारै ब्रम्हाजी कहै छै। राज भिरत खंड मांहे मथुरा नगरी छै तिठै दैत कंस अवतरीयो। सु मनिखा नु घणा दुख देवै छै। औ किणविधि ते मरै नहीं। तारै ठाकुर बोलया। हुं मथुरा जी मांहे वसुदेव जी

चौबीस एकादशी के व्रत एक व्रत राम नवमी का एक जन्माष्टमी का नृसिंह चतुर्दशी का एक शिवरात्रि का और एक वामन द्वादशी–ये व्रत मेरे हैं। मनुष्य जन्म लेकर ये उन्तीस व्रत जो व्यक्ति करेगा उसे बैकुण्ठ में स्थान प्राप्त हो इस बात में किसी प्रकार का संदेह नहीं। उस (व्यक्ति) पर मेरा बहुत ही प्रेम रहता है और वह मेरा भक्त होता है।

एक दिन राजा युधिष्ठिर बैठे हैं—उस समय श्री कृष्ण जी पधारे। तब राजा युधिष्ठिर नमस्कार करके और हाथ जोड़ कर श्री ठाकुर से कहते हैं–भगवान्, आपकी जो यह जन्माष्टमी हुई–इसके विषय में मुझ से कहिए। तब श्री कृष्ण जी कहते हैं और राजा युधिष्ठिर सुनते हैं। भगवान कहते हैं—पृथ्वी पर कंस बलवान हुआ। तब देवता लोग इकट्ठे होकर ब्रह्माजी के पास गए और (आकर) पुकार की। तब ब्रह्माजी और सभी देवता इकट्ठे होकर क्षीर सागर के पास। आकर

पवित्र छो। तिण रै घरै अवतार लेइस। नै देवता नु कहीयो थे मांहरो अंस लैअनै मथुरा जी मांहे अवतार लेवो। इयै थे जावो। तारै ब्रह्माजी देवता इसी बात सुण नै पिरथी मैं आपरी जायगा आया। पाछै कंस वसदेवजी नु आपरी बेहनि देवकी माता परणाया, तारै घरासु हालिया। सांथे कंस पोहोचावण आयो थो। सु आकासवाणी हुई। थू आठमो गरभ ईण रै उदर आवसी, सु थारो मारणहार हुस्यै। तरै कंस खीझ नै देवकी री चोटी पकड़ी नै खड़ग काढनै मारण लागो। तरै वसदेव जी कहै—थारै तो गरभ सु काम छै बेहनि कांयौ मारै। थारी दाय आवै तो आठमो गरभ दै, तरै आ बात कही। तरै कंस देवकी नु छोड़ी। बरस दिन हुवो, अनू एक बालक जायो। सु वसदेव जी कंस कनै आंणीयो। तरै कंस खोयमैं हीखो होयो। तरै कंस कनै नारद जी आया। आयनै कहै,

---

मेरी स्तुति करते हैं। तब मैंने दर्शन दिए—तब ब्रह्माजी कहते हैं—भगवन्, मृत्युलोक मे मथुरा नगरी है वहाँ कंस नाम का दैत्य पैदा हुआ है। वह मनुष्यों को बड़े ही कष्ट देता है और किसी से भी मरता नहीं। तब भगवान बोले—मैं मथुरा नगरी मे वसुदेव जी यादव हैं उनके यहाँ अवतार लेऊँगा। और देवताओ से कहा—आप अपना-अपना अंश रखकर मथुरा जी में अवतार लेना। अब आप जाइयेगा। इस प्रकार ब्रह्मा जी व देवता लोग ऐसी बात सुनकर पृथ्वी पर अपनी-अपनी जगह आए। समयोपरान्त कंस ने वसुदेव जी को अपनी बहन देवकी माता विवाह दी—वे लोग अपने घर को चले। साथ मे कंस उन्हें पहुँचाने आया था। रास्ते मे आकाशवाणी हुई—इसके आठवाँ गर्भ जो होगा वही तुम्हें मारने वाला होगा। तब खीझकर कंस ने देवकी की चोटी पकड़ी (वह) तलवार निकाल कर उसे मारने लगा। तब वसुदेवजी कहने लगे—तुम्हारा तो गर्भ से काम है बहिन को क्यों मारते हो। तुम्हें ठीक

थे बालक पण मारो । कुण जाणे कोई आठमों गरभ छे । तरै
कंस छ बालक मारीया–सातमै गरभ बलभद्र जी पधारीया ।
सु कंस जांणे देवकी रो गरभ खाल–खाल होय गयो । सो आठमै
गरभ हूं आयो । तरै देवकी माता वसदेव जी बंदीखांना मांहे
कंस रै हुवा, सु म्हारो जनम हुवो । तरै म्हे वसदेवजी नु देवकी
माता नु चतुरभुज रूप रो दरसन दीयो । उणां म्हारी अरदासती
कीनी । तरै मैं कहीया । थे मोनु गोकुल मांहे जसोदा माता रै–
नजीरै लेजावो । थे कंस थी बीहो मां । तरै रखवाल्या था स
सोगया । ताला था सु खुली परी गया । तरै वसदेवजी श्री ठाकुरां
नुं लेने गोकुल जी माहीं आया । शायजी छत्र करे छे । यमुना
पाणे लागी मे मारग दिय छे । नाय नंद जी भिलिया । जसोदाजी
तिणसमै बैठी–जागै छे । सु सुति छे, तिण सु सुधि कांई नहीं ।

जन्मे तो आठवाँ गर्भ ले लेना ऐसा (उसे) कहा । तब कंस ने देवकी
की खोज । एक वर्ष का समय व्यतीत हुआ तो एक बालक पैदा हुआ ।
तब वसुदेव जी ने कंस को लाकर सौंप दे दिया । तब उसे देखकर कंस
चुप गम पड़ा । तब कंस के पास नारद जी आए । आकर कहा—
आप इस लड़के को मार दीजिए । कौन जानता है आठवें गर्भ से क्या
होगा । तब कंस ने छः बालक मारे सातवें गर्भ में बलभद्र जी पधारे ।
कंस ने समझा—देवकी का गर्भ घट–घट होगया है । इस प्रकार आठवें
गर्भ में मैं आया । उस समय देवकी माता और वसुदेव जी—कंस के
बन्दीखाने में थे वहीं मेरा जन्म हुआ । तब मैंने वसुदेव जी एवं देवकी
माता को चतुर्भुज रूप धारण करके दर्शन दिए । इन्होंने मेरी प्रार्थना
की । तब मैंने कहा आप मुझे गोकुल में यशोदा माता के पास पहुँचा दें ।
आप कंस से डरो मत । उस समय जो रक्षक लोग थे वे सभी
सो गए । ताले थे सो खुल गए । तब वसुदेव जी भगवान को लेकर
गोकुल में आए । शेष भगवान् छत्र करते हैं । यमुना पाँव पड़कर उन्हें

किसन बी सु जसोदा कनै सुवांव मे बेटी लेनै पाछा आय देवकी माता नु दीनी । तरै कंवार जड़ गया । ताला जडीया छै मे माहे बालकी रोई । तरै कंस दौड़ी नै आयो । ताला खोलीया । किंवाड खोल दीवो लीया मांहे आया क्यु देखै तो देवकी बालकी लीया बैठी छै । तरै कंस पीठो यो कैसा हुवो ! बेटो थो मै आ बेटी क्यु हुई । तरै बेटी देवकी कनै सु कंस मागै छै, सु आ बेटी मोनु बकस । तरै कंस खोसनै बारै ले आयो । नै बालकी थी सु देवी रो रूप थो सु कंस रा हाथ मांहि थी, ऊडनै ऊंची गई । सु देवता सिंहासण आप्य दियो छै । अष्टभुजि देवी बैठी छै । हाथ मांहि आयुध छै । कांनां मांही कुंडील छै । बागो पिहरीयो छै । देवता हाथ जोयां असतुति करै छै । देवी रो नाम बीजुली देवी छै । तरै कपिण ऊमो दखै छै । तरै देवी कहै छै, रै कंस तु

मारकर बैठी है । वहाँ आकर जन्म भी लिये । उस समय यशोदा भी जागती हुई बैठी है । वह सो जाती है—इससे उसे कोई सुधि (खबर) नहीं रहती । (वसुदेव जी ने) भी कृष्ण को यशोदा के पास सुलाकर, पुत्री को लेकर वापिस आकर उसे देवकी माता को दी । तब किवाड सभी बन्द होगए । किवाड बन्द हैं—उनमें से लड़की रोई । तब कंस दौड़कर आया । ताले खोले । किवाड खोलकर दीपक लिए अन्दर आकर देखा तो देवकी लड़की लिए बैठी है । तब कंस ने देखा—यह कैसे होगया ? लड़का था—(लड़का होने को था) यह लड़की कैसे होगई ? तब देवकी से लड़की को कंस मांगता है—यह लड़की तुम मुझे भेंट करदो । तब कंस उसे छीनकर बाहर ले आया । लड़की थी—वह देवी थी । वह कंस के हाथ म सी छटककर ऊपर को गई । उसे देवताओं ने आसन दिया है । अष्ट-भुजाओं वाली देवी बैठी है । हाथों में आयुध (हथियार) हैं । कानों में कुण्डल हैं । पोशाक पहिनी हुई है । देवता हाथ जोड़े प्रार्थना करते हैं । देवी का नाम बिजली है । तब (कंस)

मोनू मारतो थो। देवकी नु तो खम्मी नहीं। थगमी हुती तो थारो भलो हुवत। म्हं देवी म्हांनु कुण मारै ? पिण थारो मारणहार बालक परगटीयो छै। आ बात कह ने आपरी जाइगा गई। नै कंस मन माहे पछतावो करै छै-चिन्ता करै छै, जु म्हं मूं डो कीयो। देवकी रै नै बेटी खाम लीनी नै वसुदेव नु बंदी-खाना दीयो। वडो साध छै-ए रीस करसी सराप देसी-तो हूं नरक गांमी हुईस। तरै वसुदेवजी कनै कंस आयनै वीनती करै छै-मैं थांनु दुख दीयो सो आकासवांणी कयो थो। नै आकास वांणी कूडी होय तो किसो काम। थे बडा साध छो-मोनू खमा करो। तरै वसुदेव जी कहे छै-कंस, थारो दोस नहीं। आ बात इण प्रकार छै दईव रै मारै छै। थोनु काम कोई नहीं। तरै वसुदेवजी नु देवकी माता नु घर री सीख दिनी। घरै आया।

अपना हुआ भला देखना है। तब देवी कहती है—हे कंस तू मुझे मारता था न ! देवकी को तो तूने क्षमा नहीं किया। तुम उसे क्षमा कर दिया होता तो तेरा कल्याण होता। मैं तो देवी हूँ मुझे कौन मार सकता है ? लेकिन तुम्हें मारने वाला बालक पैदा हुआ है। यह बात कहकर वह अपने स्थान पर चली गई। कंस अपने मन में पश्चाताप करता है—मैंने बहुत ही बुरा किया। देवकी की पुत्री मैंने छीनली—और वसुदेव को मैंने बन्दीखाने में डाल दिया। वह (वसुदेव जी) तो बड़े ही साधु पुरुष हैं। इन्हें गुस्सा आया और इन्होंने शाप दे दिया तो मैं नर्क का भोगने वाला हो जाऊँगा। तब कंस वसुदेव जी के पास आकर याचना करता है—मैंने आपको कष्ट दिये थे इसके विषय में मुझे आकाशवाणी हुई थी (इसी-कारण) और अब आकाशवाणी भी झूठी सिद्ध हो जाए, इसमें किसका दोष है। आप तो बड़े ही साधु-पुरुष हैं—मुझे क्षमा करें। तब वसुदेव जी कहते हैं—हे वत्स ! इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। यह बात इस प्रकार होनी ही थी—होनहार विधि

कंस पिण आपरै घरै आयो । नींद न आई। सवारै कंस कनै दुष्ट दैत था सु आया । वा रात री बात कही । दुष्ट कंस मतो दीयो–सु धरती मांहि बालक जनमीया छै सू सोह मारस्यां। गाय ब्राह्मण रिखीसर सु पण मारस्यां। वेद रो नाम करस्यां। ओ मतो करनै ऊठीया । पहिली तो ठाकुरां पूतनां नु मारी। बीजै फेरै ठाकुर सूता था नै त्रणावरत लेनै ऊंचो चढीयो । पछै ठाकुरां गलै झपोटे मै तणावरत मारीयो । सिला ऊपर पड़तां रो माथो फाटो। पछै ठाकुर माता नु मुख मांहि बैकुंठ देखायो । पछै माखण खायो। पछै माता कनै ऊखल सो बंधायो। पछै गोवरधन परबत दिन सात उचाय नै राखीयो । ईंद्र रो गरब गमायो। पछै काली नाग रै माथै पग दीया काली नाग नु यमुना माहि थी काढि नै रमणीक समद मेलीयो। पछै पछ

के हाथ मे है। तुम्हें इसका कोई दोष नहीं। तब उसने वसुदेव जी को एवं माता देवकी को घर जाने की इजाजत दी। वे लोग घर आए। कंस भी अपने घर आया। उसे नींद नहीं आई। सबेरे बहुत ही जल्दी कंस के पास दुष्ट दैत्य आये। उन्होंने रात्रि की बात कही। दुष्ट कंस ने राय दी कि जितने भी बच्चे पृथ्वी पर जन्मे हैं उन सभी को मार देंगे। वेद का नाश करेंगे। ऐसी बात सोचकर उठे।

पहले तो भगवान् ने पूतना को मारी। दूसरी बार भगवान् सोए हुए थे। उन्हें त्रणावरत लेकर ऊपर आकाश मे चढ़ा। वहीं भगवान ने उसका गला दबोचकर त्रणावरत को मारा। उसका शिला पर गिरते ही सिर फूट गया। फिर भगवान ने माता के मुँह मे बैकुण्ठ (उन्हें) दिखाया। बाद मे मक्खन खाया। फिर माता द्वारा अपने आपको ऊखल से बँधवाया। इसके बाद गोवर्धन पर्वत को सात दिनों तक ऊपर उठाकर रखा। इन्द्र का गर्व दूर किया। फिर काली–नाग के सिर पर

सू कंस उठै ही मु मूवो । तरै किसन जी बसदेवजी देवकी
माता कनै आया । बसदेव नु माता नु ग्यान ऊपनो । अमै बेटा
किण रा । ओ परमेसुर आप परगट हुवो छै, धरती रो भार
उतारण नु । सु हाथ जोड़ बसदेव जी नै देवकी ऊभा छै । तरै
ठाकुर रो कीधो इण नु ग्यान ऊपनो । सु समरू ग्यान री केम्प
नहीं । म्हारै प्रभु स घणो काम करणो छै । तरै कृष्णजी कहै छै
माता जी थे मानु क्यंय न मिळिया । माताजी-थे बंदीखाना
मांहे घणो दुख पाया तिण वास्ते न मेळो हो । सू माताजी
म्हारो दोस कोई नहीं । हूं पार के घर मोटो हुवो । सू इण कंस
दुष्ट की डरता थे मोनु नंदजी रै घरै मेलीयो तरै हूं उठै मोटो
हुवो । थांहरा हीया म्हु करि हवै । सू माताजी थे मानु रमायो
नहीं । नु धायो नहीं । मोटो न कीधो । सु थांहरो दोस छै ।

(बुरी तरह से) मारा कि कंस उसी स्थान पर ही मर गया । तब
कृष्ण जी वसुदेव जी और देवकी माता के पास आए । वसुदेव जी और
माता को ज्ञान उत्पन्न हुआ—ये पुत्र किसके ? यह तो स्वयं ईश्वर-
अवतार लेकर आया है । पृथ्वी का भार उतारने को । अत (वे) हाथ
जोड़कर वसुदेव जी और देवकी जी खड़े हैं ।

। । मुझे
अभी काफी काम करना है । तब कृष्ण जी कहते हैं—माता जी आप
मुझे क्या नहीं मिली ? आपने बन्दीखाने में बड़ा ही कष्ट पाया है इसी-
लिए नहीं मिल रही हैं । इसमें हे माता मेरा कोई दोष नहीं है । मैं तो
पराये (किसी दूसरे के) घर में बड़ा हुआ । इस दुष्ट कंस से भयभीत होकर
आपने मुझे नन्द के घर भेजा—अत मैं वहीं बड़ा हुआ । तुम्हारा (मुझ
पर) स्नेह कैसे हो सकता है ? अत हे माता तुमने मुझे बचपन में खेल
नहीं खिलाया । आपने अपना (स्तनों का) दूध नहीं पिलाया । मुझे बड़ा
नहीं बनाया । इसमें तो आपका ही दोष है । अब मैं बड़ा हो गया तब

हवे हूं मोटो हुवो तरै मैं कंस नै मार नै बंदी खाना भी छुड़ाया। तरै वसुदेव जी नै मोह लागो। तरै कहै, रे बेटा! थो बिन मेह दुःख पायो। नै ओ कंस तो सुरखो मिस करने सूतो होसी। ओ वळे उठने साध नै छिपानु दुख देसी। तरै श्री कृष्ण जी कंस नै घीसने बारै नांखीयो। तरै जिके भगत है सु आय आय नै ठाकुर रै पगे लागे है। उग्रसेन राजा नु मथुरा रो राज दीयो है। सु जेतन भगत है सु महोछो करे है। सु कहै है—राज मथुरा मांहि आजु पधारीया तो सु आज ही राज रो जनम हुवो। तरै ठाकुर कहै है आज जनमाष्टमी करो। मथुरा मांहे आ सगां बरत कीयो। चाद देखने चादनै अरघ देवै। आधी राति रो ठाकुर रो जनम हुवो। तरै वाजित्र बजाइ है ताल, पखावज मिरदंग

मैंने कंस को मारकर (आप लोगों को) बन्दी-खाने से छुड़ाये हैं। इस पर वसुदेव जी को मोह होगया। तब कहने लगे—बेटा! तुम्हारे बिना हमे बड़े ही कष्ट पाने पड़े और यह जो कंस है यह ऐसे ही बहाना बनाकर सो गया होगा। यह फिर उठकर अपने दुष्कर्म करेगा। मनुष्यो को दुःख देगा। तब श्रीकृष्ण जी ने कंस को घसीटकर बाहर फेंक दिया। इस पर भगवान के जितने भी भक्त लोग थे सभी आकर भगवान के पैरो पड़ते है। उग्रसेन राजा को मथुरा का राज्य दिया है। अत जितने भी यहा भक्त लोग है वे सभी उत्सव आदि करते है। वे कहते है—भगवान! आप तो मथुरा मे आज ही पधारे है—अत (हमारी तरफ से तो) आपका जन्म आज ही हुआ समझा जायगा। तब भगवान कहते है—आज जन्माष्टमी (का व्रत) करो। मथुरा म (भगवान से) सभी व्रत किया गया। चाद को देखकर चाद को अर्घ देकर (व्रत लिया गया)। अर्द्ध-रात्रि मे भगवान का जन्म हुआ। तब बाजे बजते है—ताल पखावज मृदङ्ग बासुरी झल-झालर, दमामा ढोल बहुत प्रकार से बजते है। रात्रि मे जागरण करना चाहिए।

बाजणी, संख झालरी, दमामा, ढोल घणा बाजा बजाईजे । रातै जागरण कीजै, दान पुन घणो कीजै । पछै धूप, दीप, नैवेद, तंबोल, पोहपां सू पूजा करीजै, घणा उछाह कीजै । ठाकुर कहै छै—जो माहरी जनमअष्टमी रो वरत करसी, तिण रै जनम-जनम रो पाप जावसी । नै वैकुंठ पदवी पावसी या ठाकुर री जनमअष्टमी रो वरत करै तिण नै अनंत फल छै । इति श्री जनमास्टमी री कथा वारता संपूर्ण सरब सिधदायक श्री कृष्ण सदासहाय छै ।

दान-पुण्य बहुत सा करना चाहिए। इसके बाद धूप दीप नैवेद्य पान फूलों आदि से पूजा करनी चाहिए। बड़ा ही हर्ष आनन्द—मनाना चाहिए। भगवान कहते हैं—मेरी (इस) जन्माष्टमी का जो व्रत करेगा उसके जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे और वह स्वर्ग में उच्च स्थान को प्राप्त करेगा। भगवान की इस जन्माष्टमी का व्रत जो करता है उसको अनन्त फल प्राप्त होते हैं।

५—रिषि पंचमी री कथा

श्री गणेशायनमः। अथ रिषि पंचमी री कथा लिख्यते॥ युधिष्ठिर उवाच। हे कृष्ण मैं था कन्हा अनेक व्रत सुणिया छै। अब अनेक पाप दूर करै इसो व्रत सुणियो चाहूं छू। श्री कृष्ण उवाच। राजा थांनु और रिषि पंचमी रो व्रत कहूं छू। जिके व्रत किया इस्त्री अनेक पाप सू छूटै। युधिष्ठिर उवाच—हे कृष्ण इसा पंचमी किसी अर रिषपांच्यो क्यू कहावै। नारी व्रत किया किसै पाप सू छूटै। पाप तो अनेक छै रिषि पांच्यो रै व्रत सू किसै पाप सू छूटै। श्री कृष्ण उवाच। जिका नारी रजस्वला हुई थकी जाण अजाण घररा भांडा मोटै तिके नू बहोत पाप हुवै। च्यारू वरण रा लोका रजस्वला इस्त्री नु घर बाहर राखणी। तिण रो कारण सुण। आगै इन्द्र वृत्रासुर नू मारियो तद ब्रह्म हत्या

ऋषि पंचमी की कथा

युधिष्ठिर ने कहा—हे कृष्ण मैंने आपसे अनेक व्रत सुने हैं। अब ऐसा व्रत सुनना चाहता हूँ जिससे अनेक पाप दूर हों। श्री कृष्ण बोले—राजा तुम्हें एक ऋषि पंचमी की कथा और कहता हूँ जिस व्रत के करने से स्त्रियाँ अनेक पापों से छूटती हैं। युधिष्ठिर बोला—हे कृष्ण यह कौनसी पंचमी है और ऋषि पंचमी क्यों कहलाती है। व्रत करने से नारि कौन से पाप से छूटती है? पाप तो अनेक हैं—ऋषि पंचमी के व्रत से कौन से पाप से छुटकारा हो? श्री कृष्ण ने कहा—यह स्त्री रजस्वला हो जाने पर जान में अथवा अजान में घर के बर्तनों को छूए, उसको बहुत पाप होता है। चारों वर्णों के स्त्रियों को रजस्वला होने पर घर से बाहर रहनी चाहिए। उसका कारण सुनो। पहले इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा—तब इन्द्र को ब्रह्महत्या का पाप लगा। तब इन्द्र

घासली, संख, झालरी, दमामा, ढोल घणा बाजा बजाईजै । रातै जागरण कीजै, दान पुन घणो कीजै । पछै धूप, दीप, नैवेद, तंबोल पोहपा सू पूजा करीजै, घणो उछाह कीजै । ठाकुर कहै छै—जो माहरी जनमाष्टमी रो वरत करसी, तिण रै जनम-जनम रो पाप जावसी । नै वैकुंठ पदवी पावसी जो ठाकुर री जनमाष्टमी रो वरत करै तिण नै अनंत फल छै । इति श्री जनमासटमी री कथा-वारता संपूर्ण सरब सिधदायक श्री कृष्ण सहासहाय छै ।

दान-पुण्य बहुत सा करना चाहिए । इसके बाद धूप दीप नैवेद्य पान फूलों आदि से पूजा करनी चाहिए । बहुत ही हर्ष आनन्द-मनाना चाहिए । भगवान कहते हैं—मेरी (इस) जन्माष्टमी का जो व्रत करेगा उसके जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जायेंगे और वह स्वर्ग में उत्तम स्थान को प्राप्त करेगा । भगवान की इस जन्माष्टमी का व्रत जो करता है उसे अनन्त फल प्राप्त होता है ।

उत्तम विप्र रै। तिका अपमी रजस्वला एक दिन हुई थकी घर रो काम कियो, मांडा सगळै भीटिया। तिकै पाप सू कुत्ती हुई। भरतार सुमित्तर पण लुगाई रै दोष सू बळद हुवो। दूनै ही बुरी गति पाई। सुमित्तर रै पुत्तर सुमति नाम हुवो–देवतारी पूजा रो करणहार हुवो, तिकै रा माता–पिता रितुरै दोष सू पसुरी योन पाई ता पण जात समर हुवा। तथा कुतरी जूठ पावती, फिरै आपरै पाप नू याद करै। सुमित्तर ब्राह्मण बळद हुवो। अठा उपरांत सुमिति आपरै बापरी संवछरी आई देख अर आपरी लुगाई चन्द्रवती नू कहै छै–आज म्हारै बाप री संवछरी छै। ब्राह्मणां नू जीमावण रै वासतै रसोई बणाई। तिकै चन्द्रवती भरतार री आग्या सु रसोई बणाई पक्वान्न बणायो। तद खीर मांहे साप आय अर गरळस नाखियो। कुत्ती रूमी दीठो। तद रसोई आमव दीनी। कुत्ती जाणियो विष सु ब्राह्मण मरसी इसो

उस अपनी ने रजस्वला की हालत में एक दिन घर का काम किया–सभी बर्तन छूए। इस पाप के कारण वह कुतिया हुई। पति–सुमित्र भी पत्नी के दोष से बैल हुआ। दोनों ने ही खराब गति पाई। सुमित्र के सुमति नाम का पुत्र हुआ–वह देवताओं की पूजा करने वाला। उसके माता–पिता ने रितु–धर्म के दोष से पशुयोनि पाई–उन्हें भी जाति स्मरण थी। वह कुतिया झूठन खाती फिरती–अपने पापों को याद करती। सुमित्र ब्राह्मण बैल हुआ।

इसके उपरान्त सुमति अपने पिता की समत्सरी आई देखकर अपनी स्त्री–चन्द्रवती से कहता है–आज मेरे पिता की समत्सरी है। ब्राह्मणों को भोजन करवाने के लिए रसोई बनाओ। तब चन्द्रवती ने (अपने) पति की आज्ञा से रसोई बनाई–पकवान बनाये। तब एक साँप ने आकर खीर में जहर डाल दिया। कुत्ती ने खड़ी हुई (यह) देखा। तब रसोई (को) उसने छूली। कुत्ती ने समझा। जहर से ब्राह्मण

इन्द्र नु लागी । तद इन्द्र धर्म करतो थको ब्रह्मा जी रै सरण गयो । तद ब्रह्माजी इन्द्ररी ब्रह्म हत्या च्यांरै ठिकांणे विहच दीवी । अगनरी पहली ज्वाला नु, नदी नु, पर्वत नु, अर नारी नु-इण ठिकांणे विहच दीवी छै । इण वासतै रजस्वला नारी सू बात न करणी । पहिलै दिन चांडाळी जांणणी दूसरै दिन ब्रह्मघातकी जाणणी । तीसरै दिन रंगारी जांणणी, चौथे दिन सुद्ध हुवै । अजांण अथवा जांण कर इसी नै किणी वस्त नू भीटी हुवै तो रिषि पांच्या रा व्रत करै तद पाप सू छूटै । तिण वासतै ब्रह्मणी, क्षत्रांणी विणयांणी शूद्री नै व्रत करणो । श्री कृष्ण उवाच । हमैं राजा रिषि पांच्या रा इतिहास कहूं छू । आगे सत्यजुग मांहै परमात्मा सेनजित नामा राजा हुवो । तिणरै देश मांहै वेद रो जाणणहारो एक सुमित्र नाम ब्राह्मण हुवो । खेती कर आजीविका करै । तिण रै स्त्री नो नाम जै श्री हुई-पतिव्रता हुई । घणा चाकर

धर्म करता हुआ ब्रह्मा की शरण मे गया । तब ब्रह्माजी ने इन्द्र की ब्रह्महत्या चार स्थानो पर बाँट दी । पहले अग्नि की ज्वाला को नदी को पर्वत को और नारि को—इन ठिकाणे बाँट दी । इसलिए रजस्वला स्त्री से सम्भाषण नही करना । रजस्वला को पहले दिन चाण्डालनी समझना दूसरे दिन ब्रह्मघातकी समझना । तीसरे दिन रंग रेजन समझना—चौथे दिन शुद्ध होती है । अजान मे अथवा जान मे स्त्री ने यदि किसी वस्तु को स्पर्श कर दी हो तो ऋषि पंचमी का व्रत करे, तभी पाप से छूट सके । इसलिए ब्राह्मणी क्षत्रियाणी बनियाणी और शूद्राणी को यह व्रत करना चाहिए । श्री कृष्ण बोला अब राजन ऋषि पंचमी का इतिहास कहता हूँ । पहले सतयुग मे धर्मात्मा सेनजित नाम का राजा हुआ । उसके देश मे वेदो का ज्ञाता एक सुमित्र नामक ब्राह्मण हुआ । खेती पर अपनी आजीविका करता । उसके जयश्री नाम की स्त्री हुई—पतिव्रता हुई । उसके काफी नौकर—चाकर और कुटुम्बी थे ।

कुटम बिण रै। तिका जयमी रजस्वला एक दिन हुई थकी घर रो काम कियो, भांडा सगळै भींटिया। तिकै पाप सू कुत्ती हुई। भरतार सुमित्र पण लुगाई रै दोष सू बळद हुवो। दूनें ही बुरी गति पाई। सुमित्र रै पुत्र सुमति नाम हुयो-देवतारी पूजा रो करणहार हुवो, तिकै रा माता-पिता रितुरै दोष सू पसुरी योन पाई ता पण जाति समर हुवा। तथा कुत्तरी जूठ पावती, फिरै आपरै पाप नू याद करै। सुमित्र ब्राह्मण बळद हुवा। अठा उपरांत सुमति आपरै बापरी संवछरी आई देख अर आपरी लुगाई चंद्रवती नू कहै छै-आज म्हारै बाप री संवछरी छै। ब्राह्मण नू जीमावण रै वासतै रसोई बणाई। तिकै चन्द्रवती भरतार री आग्या सु रसोई बणाई पक्वान्न बणाया। तद खीर मांह साप आय अर गरळम नाखियो। कुत्ती ऊभी दीठो। तद रसोई ब्राह्मण दीन्ही। कुत्ती जांणियो विष सु ब्राह्मण मरसी इसो

उस जयमी ने रजस्वला की हालत में एक दिन घर का काम किया-सभी बर्तन छुए। इस पाप के कारण वह कुतिया हुई। पति-सुमित्र भी पीहर के दोष से बैल हुआ। दोनों ने ही खराब गति पाई। सुमित्र के सुमति नाम का पुत्र हुआ-वह देवताओं की पूजा करने वाला। उसके माता-पिता ने रितु-धर्म के दोष से पशुयोनि पाई-उन्हें भी जाति स्मरण थी। वह कुतिया झूठन खाती फिरती-अपने पापों को याद करती। सुमित्र ब्राह्मण बैल हुआ।

इसके उपरान्त सुमति अपने पिता की संवत्सरी आई देखकर अपनी स्त्री-चन्द्रवती से कहता है-आज मेरे पिता की संवत्सरी है। ब्राह्मणों को भोजन कराने के लिए रसोई बनाओ। तब चन्द्रवती ने (अपने) पति की आज्ञा से रसोई बनाई-पक्वान्न बनाए। तब एक सांप ने आकर खीर में जहर डाल दिया। कुत्ती ने खड़ी हुई (यह) देखा। तब रसोई (को) उसने छुआ। कुत्ती ने समझा। जहर से ब्राह्मण

जांण अर रसोई आभड़ी। सुमित्र री लुगाई कुत्ती नूं मूसळ सूं मारी। अर ब्राह्मणां नूं बीजो भोजन दीन्हो। श्राद्ध संवत्सरी रो कियो। ब्राह्मणां भोजन कियां पछै चंद्रमती जूठ कुत्ती नूं बाहर न नाखी। कुत्ती बारखै भूखी रही। ता पछै रातरी कुत्ती भूखी थकी भरतार बळद कन्है आई अर कहण लागी। आज हूं भूखी रही छूं मनूं भोजन न दीन्हो। मनूं भूख बहुत लागी छै। आगै पुतर मनूं ग्रास देतो आज किम दीन्हो नहीं। और महि सांप गरळम नांखियो-मैं देखियो ब्राह्मण मरसी। इणा जांण रसोई भीटी। बहू मनूं मारी म्हारी कटि भागी छै हूं किसूं करूं। इसा वचन कुत्तीरा सुण भरतार बळद बोलियो हूं किसूं करूं? थारे पाप सूं हूं बळद हुवो छूं। आज मनु बेटै सारे दिन खेत मांहे बाह्यो मुख बांध। अर हूं ई भूखो मरूं छूं। बेटै श्राद्ध कीन्हो-मनूं तो आज घणो कष्ट हुवो। इसो माता पिता

मरेंगे ऐसा जानकर उसने स्पर्श करली। सुमित्र की औरत ने कुतिया को मूसल से मारा और ब्राह्मणों को दूसरा भोजन करवाया। (इस प्रकार) समत्सरी का श्राद्ध पूर्ण किया। ब्राह्मणों के भोजन करने के उपरान्त चन्द्रमती ने जूठन बाहर कुतिया को नहीं डाली। कुत्ती बाहर भूखी बैठी रही। उसके बाद रात को कुतिया भूखी रही हुई अपने पति–बैल के पास जाकर कहने लगी—आज मैं भूखी रही मुझे भोजन नहीं दिया गया। मुझे बड़े जोरों की भूख लगी है। पहिले तो बेटा मुझे ग्रास दिया करता था आज कुछ भी नहीं दिया। और मैं सांप ने बाहर डाला था—मैंने देखा (इसके खाने से) ब्राह्मण मरेंगे। ऐसा विचार कर रसोई को छूली। बहू ने मुझे मारी—मेरी कमर तोड़ दी मैं क्या करूं? इस प्रकार कुतिया के वचन सुनकर पति—बैल बोला—मैं क्या कर सकता हूं? तुम्हारे पाप से तो मैं भी बैल बना हूं। आज पुत्र ने मुझे मुँह बांध कर तमाम दिन भर चलाया। और मैं भी भूखो

ये संवाद पुत्र रो पुनर सुमति सुणियो। सुण अर तुरंत दोनूं ही नूं भोजन दीन्हो–कुत्ती अर बळद नूं। माता–पिता जाणिया अर मन मांहे दुख पायो। माता–पिता री इसी अवस्था जाण अर रिखीसुरां नूं पूछण रै वास्तै वन मांहे गयो। उठै वन मांहे मोटा रिखिसुरां नूं बैठा देख अर नमस्कार कर माता–पिता रै हित री बात पूछण लागो। सुमति उवाच। रिखीसरा! कहो, म्हारै मात–पिता री किसै कर्म सूं इसी अवसथा हुई, अर इण पसू हुवैरी योनि सूं किण तरह छूटसी सो बात कहो। रिखीसरा ऊचु। थारी माता आपरै घर मांहे अजांण थकी रजस्वला थकी भांडा भींटिया, तिण पाप सूं कुत्ती हुई छै। अर थारो पिता तैरै दोष सूं बळद हुवो। इणां री मुकति रै वास्तै तूं रिख पांच्यां रो व्रत कर। आपरी लुगाई सहित रिखिसरां री पूजा कर सात बरस तांई। पछै ऊजाणा कर। शिवाक मदन।

मरता हूँ। बेटे ने श्राद्ध वैसे ही (व्यर्थ में ही) किया–मुझे तो प्राय बड़ा ही कष्ट हुआ। इस प्रकार की अपने माता–पिता की बातचीत पुत्र–सुमति ने सुनी। सुनकर दोनों को ही भोजन दिया—कुत्ती और बैल को। (उन्हें) अपने माता–पिता जाना तो मन में बड़ा दुःख हुआ। माता पिता की ऐसी हालत जान (कर) ऋषियों को पूछने के लिए वन में गया। वहाँ वन में मोटे ऋषियों को बैठा देख कर (उन्हें) नमस्कार कर, अपने माता–पिता के हित की बात पूछने लगा। सुमति बोला–ऋषि लोगो कहिए हमारे माता–पिता की कौन से कर्म से यह दशा हुई है–और इस बैल और कुत्ते की योनि से किस प्रकार छूट सकते हैं–यह बात कहें। ऋषियों ने कहा–तुम्हारी माता ने अपने घर में जानते हुए भी रजस्वला के समय बर्तनों को छुआ दिया उसी पाप के कारण कुतिया हुई है। और तुम्हारा पिता उसी के दोष के कारण बैल हुआ है। इनकी मुक्ति के लिए तू ऋषि–पंचमी का व्रत कर। अपनी स्त्री सहित

एक टंक भख करणो । इणरी विधि कहे छै । भादवा रै महीनै में शुक्ल पख री पांच्यां रै दिन सरोवर विषै जाई दांतण करे, आ मंत्र पढ़े ।

आयुर्बल यशोवर्चः प्रजापशुवसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञांचमेधां त्वन्नोदेहि वनस्पते ॥

इण मंतर सूं दांतण कर अर तिल अर आंवळा केसां रै लगाय अर सनान करै । नवा सुध वसतर पहिर अर अरुंधती सहित सपत रिसीसरां री पूजा करै । कश्यप (१), अत्रि (२), भारद्वाज (३), विश्वामित्र (४), गौतम (५), जमदग्नि (६), वशिष्ठ (७) । अरुंधती रै नाम सूं पूजा करै । इणी तरह रिषि पंचमी रो व्रत कियां थकां रजस्वला रै सपरस रो दोष मिटै । श्रीकृष्ण बताव । इमा रिसीसरां रा वचन सुमति सुण करै आप आपरी

ऋषि लोगों की आठ वर्ष तक पूजा करो । फिर 'उद्यापन' कर बिना बोया हुआ धान एक समय ही भोजन करना । अब (इसकी) विधि कहते हैं । भादवा के महीने में शुक्ल-पक्ष की पंचमी के दिन तालाब जाकर दतुन करना तब यह मंत्र पढ़ना ।

आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजा पशुवसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञांचमेधां त्वन्नोदेहि वनस्पते ॥

इस मंत्र से दातुन करके तिल और आंवले बालों में लगाकर स्नान करें । नये वस्त्र पहिनकर सात ऋषियों की पूजा अरुन्धती के सहित करें । (१) कश्यप (२) अत्रि (३) भारद्वाज (४) विश्वामित्र (५) गौतम (६) जमदग्नि (७) वशिष्ठ एक पत्नी के नाम लेकर पूजा करे । इस प्रकार ऋषि पंचमी का व्रत करने से रजस्वला के स्पर्श का दोष मिटता है । श्री कृष्ण का न कहा—ऐसे ऋषियों के वचन सुमति सुनकर,

इसी सहित रिदि पांच्या री व्रत कर अर माता-पिता न फळ दीन्हो व्रतरै प्रभाव सू माता कुत्तीरी योनि सू छूट अर विमान पर बैठ दिव्य वसतर पहिर स्वर्ग गई। पिता पण बळद री देह छोड अर स्वर्ग गयो पाच्या रै व्रत रै प्रभाव सू। काया, वाचा, मनसारो कियो पाप इण व्रत सू दूर हुवै। सगळै दान किया जितरा फळ हुवै इसो फळ रिखि पांच्या रै व्रत सू हुवै। जिका लुगाई इण व्रत नू करै तिका सुख सुहाग पावै। रूप पावै। पुतर पोतरा पावै। इह लोक मे सुख पावै। परलोक मांहे भली गति पावै। पढ़ै सुणै तिकै रो पाप दूर हुवै। इति श्री रिखिपांच्यांरी कथा सपूरण। शुभंभवतु। कल्याण मस्तो।

अर आकर अपनी पत्नी सहित ऋषि पचमी का व्रत करके माता-पिता को (व्रत का) फल दिया। व्रत के प्रभाव से माता कुत्ती की योनि से छूटकारा पाकर, विमान मे बैठकर सुन्दर वस्त्र पहिनकर स्वर्ग को गई। पिता भी बैल का शरीर छोडकर स्वर्ग को गया-पचमी के व्रत के प्रभाव से। इस व्रत से मन वचन और कर्म द्वारा किया गया पाप दूर होता है। सब प्रकार का दान करने से जो फल होता है ऐसा फल ऋषि पचमी के व्रत से होता है। जो औरत इस व्रत को करती है उसे सुख और सुहाग प्राप्त होगा। उसे सौन्दर्य की प्राप्ति होगी। पुत्र और पोतो को पाने वाली होगी। दूसरे लोक मे सद्‌गति प्राप्त करेगी।

(इस कथा को) पढता है सुनता है-उसके पाप दूर हो।

तरे बहू आंधीयो सीरावणी तो माता मांहि डम मे छेवड़ा घालीया छे। कररौरी लागा कीच रांध नैं घालीयो छे। सो हूं कासू देईस। तो इमैं हूं मूं ढांको छेई मैं जाऊं तो सखरी। तरे गाडा थी उतर नै चाली जावै छे। तरे तलाव एक आयो। सो तलाव री तीरे नागपुत्री देवांगना बैठी छे, पूजा करे छे। तरे उणै पु छयो— मैं तो अनंत देवतारी पूजा करां छां। तरे उणा कहै अनंत देवता री पूजा कीधां—कासू हुवे। तरे कहै, इणरी पूजा कीजै, धन-धन हुवे, लिखमी रो घरे वासो हुवे। जिकाई मन मांहि वसत चितवे सो अनंतजी देवे। तरे कहै, हूं ई वरत करू। तरे बहू ही उण कनै बैस नैं अनंतदेव जी री पूजा कीधी, कथा सांभली। डोरारी पूजा करने डोरो हाथे बांधीयो, नै मन मांहै चितवीयो, सासूजीया म्हारे साथै भाटो घालीयो छे—तिण में डम-छेवड़ा घालीया छे सो मिठाई होय जो। सो पाछी आय मे गाडी मांहै बैठी छे।

तब बीच में एक तालाब आया। वहाँ चली आया देखकर पछताप किया। तब बहू ने जाना—कलेवे के लिए तो पत्थर, ईंधे जाते हैं। करवे के स्थान पर कीचड़ डाला है। सो मैं (इन्हें) अब क्या दूँगी ? इसलिए मुँह लेकर चली जाऊँ तो बहुत ही अच्छा।

गाड़े से उतर कर चली जाती है। तब एक तालाब आया। इस तालाब के किनारे देवांगना—नागपुत्री बैठी है पूजा करती है। तब उसने ऐसा कहा—मैं तो अनंत देवता की पूजा करती हूँ। तब उसने उत्तर दिया—अनंत देवता की पूजा कैसे और किससे हो ? तब कहती है (तब कहा) इसकी पूजा करना (इससे) धन-धन हो घर में लक्ष्मी का वास हो। जो भी मन-इच्छित वस्तु के लिए सोचे वही अनंत जी दे। तब कहा—मैं भी व्रत करूँ। तब बहू ने भी उसके पास बैठकर अनंतदेव जी की पूजा की—कथा सुनी। डोरे की पूजा करके डोरा हाथ में बाँधा और मन में विचार किया—सौतेली माँ ने मेरे साथ भाटा

पछे घरे आया तरे सासू माटो खोलने जोयो, सु मांहि वा पकवान नीसर्‌या। अनंतजी तूठा। सो एकण दिन रिखीसर बहू रे हाथे डोरो दीठो। तरे मन में जाणियो, वैर मोनु कांमण कीया छै, ने डोरो हाथे बांध्यो छै। तरे हाथ पाकिने डोरो तोड ने चूल्हा मांहि नांखीयो। तरे बहू दौड ने डोरा बारो लीयो। आधो एक बळियो आधो दूध सू पखाळियो। तरे ठाकुर रीसांणा नै रिखीसर रीसांणा। सो रिखीसर नु कोढ हुवो, डील अकळ घणी। तरे वैर नु कह्यो, जो कासू दुःख हुयो। तरे बहू कहै–ठाकुर अनंतजी रीसांणा। तरे घर री लिछमी सरब ही सो गई। तरे रिख अनंतजी ऊपर इकतार करने निकळियो। तरे मनमें चितव्यो सु चालतां-चालतां जठै अनंतजी मिळसी, तठै रहीस। अनंतजी दरसण देसी तरे आईस। सो चालियो जावै छै। सो कहै छै हूं अनंतजी कनै जाऊंछू। तरे बहू कहै,

---

डाला है (माटा रखा है) उसमे ढेले-पत्थर आदि डाले हैं—वे मिठाई बन जाय। सो वापिस आकर गाडी मे बैठी है। पीछे घर आने पर ताल मे माटा खोलकर देखा—तो वैसे पकवान पत्थर मे (से) बाहिर निकले। अनंत जी प्रसन्न हुए।

सो एक दिन ऋषिवर ने अपनी बहू के हाथ मे डोरा देखा। तब मन मे सोचा—औरत ने मुझ पर 'कामण' (जादू टोना आदि) किया है। अतः डोरा हाथ म बांधा है। तब हाथ थामकर डोरे को तोड़कर (उसे) चूल्हे मे फेंक दिया। तब बहू ने भागकर डोरा अपने हाथ मे लिया। आधा तो जल गया आधे को दूध से धोया। तब ठाकुर भी क्रोधित हुए और ऋषि भी। ऋषि के तब कोढ हुई शरीर में तकलीफ बहुत हुई। तब पत्नी से कहा—यह पीडा किस प्रकार हुई? इस पर औरत ने कहा—अनंत भगवान कुपित हुए हैं।

इसके उपरान्त घर की जो सब लक्ष्मी थी सो भी गई। यह ऋषि

धर्मतजी कठे मिलसी-बिचै मार, चोर मारसी। तरै ब्राह्मण कहै जठै मूवो तठै छूटो तोनुं मिलसी। तरै उठासुं चालियो। पिछै एक आंबो मिलियो। सो आंबो पाको छै पिण आंबो कोई जीव-जिनावर ही खाय नहीं। आगै चालिया जावै छै। तरै तलावड़ी तोय भरी छै—जणरो पाणी उणमें जाय छै। तरै तलावड़ी ब्राह्मण नु पूछयो, तू कठै जाय छै। तरै रिखीसर कहै, हूं धर्मतजी कनै जाऊं छूं। तरै कहै माहरो संदेसो एक लेतो जा-ज्यो मीठो पाणी छै पिण जीव-जिनावर पीवै नहीं। सो सोमें कासु अवगण छै। तरै रिख कह्यो-भली बात। पछै बळी आगो चालियो जावतै तरै बगड़ा एक मिलिया। आगे एक घोड़ा सोनारी भाग तथा ऊभा छै पिण ऊपर कोई चढे नहीं सो सोमें कासु अवगण छै। आगे जावता बोरड़ी एक दीठी सो बोर पाक लागे छै पिण कोई जिनावर ही खाय नहीं। सो सोमांहे

धर्मराज की पर विश्राम करने मिलना। अब मैं ऐसा सोचा—चलते-चलते यहीं भी धर्मराज की मिलेंगे नहीं रहेगा। धर्मराज की दर्शन देख—तभी आऊंगा। इसलिए चला जाता है। जिस करता है—मैं धर्मराज के पास जाता हूँ। तब चोरन ने कहा—धर्मराज की कहाँ मिलेंगे? बीच में कहिये चोर आदि मार देंगे। तब ब्राह्मण ने कहा—जहाँ मरा वहीं तुम से मिलने से छूटा। तब वहाँ से चला। बीच में एक आम का पेड़ मिला। वह आम पका हुआ है लेकिन उसे कोई जीव-जानवर खाते नहीं हैं। आगे चला जाता है। तब तालाब ने ब्राह्मण से पूछा तू कहाँ जाता है? इस पर ब्राह्मण कहता है—मैं धर्मराज भगवान के पास जाता हूँ। तब उसने कहा—मेरा एक संदेश ले जाओ—मीठा पानी होने पर भी कोई इसे पी नहीं रहा है। मुझ में ऐसा कौनसा अवगुण है। इस पर ऋषि ने कहा—अच्छी बात है। फिर दूर चला जाता है तब एक बैल मिला। आगे एक घोड़ा सोने की जीन आदि

असू अवगुण छै। आगे आवतां ठाकुरां बांमण रो रूप करनै हाथ में डांग मांडनै डोकरो हुय नै दरसण दीयो, तू कठै जाव छै। तरै कह्यो-अनंतजी कनै जाऊं छूं। तरै कहै, अनंत तोनु कठै मिलसी। तरै कह्यो, न मिलै तो आ देही त्याग करीस, इसड़ो निश्चो कीयो। तरै ठाकुरां चतुरभुज रूप करिनै दरसण दीयो। ठाकुर कहै तो मोनू कूवै में नांखीयो तिणरा म्हारै डीलरै डाम हुया छै। सो हम रिखीस्वर नु भी ठाकुरां तूठा, डील रो कोढ़ गयो। घरै लिछमी अनै धन माल हुआ। तरै बांमण भी ठाकुरां नै संदेसा कहायो आंबा पाक्या छै सो कोई खावै नहीं। सो किसै वासतै? तरै भी ठाकुर कहै छै, आगो आगलै भव बांमण थो। विद्या घणी भणियो थो पिण विद्या किणही नै सीखाई नहीं। तिण रो फल खाईजै, सोए फल खावसी। बोरड़ी री हकीकत कही। सो ठाकुर कहै, बोरड़ी आगली-पूरली

की हुई लगा है, लेकिन उस पर कोई सवार नहीं होता है। (उसने पूछा) मुझ में ऐसा कौनसा अवगुण है। आगे जाते एक बोरटी देखी—उसमें पके बेर लगे हुए हैं लेकिन कोई जानवर खाता नहीं है। (उसने पूछा) मुझ में ऐसा कौनसा अवगुण है। आगे जाते भगवान् ने ब्राह्मण का रूप बनाकर, हाथ में लाठी लिए बूढ़े आदमी का रूप बनाकर दर्शन दिया। तू कहां जाता है? तब (उसने) कहा—अनंत जी के पास जाता हूँ। उत्तर में कहा—अनंत जी तुम्हें कहां मिलेंगे? तब कहा—नहीं मिलेंगे तो अपनी देह त्याग दूँगा ऐसा निश्चय किया है।

इस पर भगवान् ने चतुर्भुज रूप धारण करके दर्शन दिये। भगवान् ने कहा—तुमने मुझे कुएँ में फेंका—इसलिए मेरे शरीर पर डामे हुए हैं।

अब ऋषि को भी भगवान् तुठे (उन पर प्रसन्न हुए)—(उनके) शरीर की कोढ़ चली गई। घर में लक्ष्मी और धन-माल (बहुत) हुआ।

थी। ग्राम किणनु देती नहीं। तरै बोरडी री अरज करी। ठाकुर कहे—तू बोरडी रा बोर खाए। पछै सकोई खावसी। चाकियां री अरज करी। तद ठाकुर कहे औ देराणी जेठाणी थीं। इणरी हाती पथा खावती थोड़ा ही किणनु देती नहीं। पछै घोड़े री अरज कीनी। तरै कहे घोड़े ऊपर कोई चढ़ै नहीं। तद ठाकुर कहे—औ घोड़ो रिण संग्राम माहे धणी नांखने आयो थो। सो ठाकुर बिरांमण नु तूठा बधु मनोरथ नु समान हुयम्बो। बांमण घरै आयो। बधाई हुई चैन पायो।

इति श्री अनंतदेवता री कथा सपूरण। ——

इस ब्राह्मण ने भगवान् को संदेश कहा—आम पके हुए हैं लेकिन उसे कोई खाता नहीं ? इसका क्या कारण है ? तब श्री ठाकुर जी कहते हैं—आम पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। विद्या काफी पढ़ी थी लेकिन (इसने) विद्या किसी को सिखाई नहीं। (तुम) इसका फल खाना तो सभी (लोग) इसका फल खायेंगे। बोरटी (बेर का पेड़) की बात कही। तब श्री भगवान् कहने लगे—बोरटी जाति की गूजरी थी। (यह) छाछ किसी को डाला नहीं करती। इस पर बोरटी की (ब्राह्मण ने) अर्ज की। भगवान् ने कहा—तू बोरटी के बेर खाना। इसके बाद सभी इसे खायेंगे। चाकर (छोटी तलाई) की अर्ज की। तब भगवान् कहते हैं—ये देवरानी और जेठानी थी। उसकी हाती (त्योहार आदि पर दिये जाने वाली मिठाई आदि) यह खा जाती किसी अन्य को नहीं देती थी। इसके बाद घोड़े की अर्ज की। आगे कहा—घोड़े पर (कोई) चढ़ता नहीं है। तब भगवान् ने कहा—यह घोड़ा युद्धस्थल में अपने स्वामी को छोड़कर (भाग) आया था।

इस प्रकार जैसे भगवान् ठाकुर पर प्रसन्न हुए—हे भगवन् वैसे सब पर प्रसन्न होवें। ब्राह्मण घर आया। बधाई बधाई गई—आनन्द से वह रहने लगा। ——

७—अथ दीपमालिका री कथा लिख्यते

एक दिन राजा युधिष्ठिरजी दरबार करने बैठा हा तठै व्यासजी श्री कृष्ण द्वैपायन पधारया। तरै राजा साम्हमो जाय परकमा दे डंडोत करने पग पखाळ चरणोदक माथैमेल सिंघासण दियो। व्यासजी सूं राजा चरचा करै है। पछै राजा हाथ जोड़ नै व्यासजी सूं अरज करै है। महाराज काती वदि अमावस रै दिन दीपमालिका री पूजा कीजै है। ऊजळा कपड़ा पहिरै है। गहणा पहिरै है। घर ऊजळा करै है—नै दीपक घणा करै है। सो इण दिन री महिमा राज मोनूं कहो। तरै व्यासजी कहै है, राजा सांभळ! काति वदि ११ श्रीमहालिछमीजी जागै है नै काती वदि अमावस श्री महालिछमी जी रो दिन है। सो लोक घर लीपै है धवळै है, ऊजळाई करै है। जाणै है, काति वदि इग्यारस

कथा दीपमालिका की

एक दिन राजा युधिष्ठिर जी दरबार लगाकर बैठे हैं—इतने में व्यास जी श्री कृष्ण द्वैपायन आये। तब राजा सामने जा परिक्रमा दे दण्डवत् करके पैर धोकर, चरणामृत सिर पर धरकर सिंहासन पर बिठाया। व्यास जी से राजा चर्चा करते हैं। फिर हाथ जोड़कर व्यास जी से अर्ज करते हैं। महाराज कार्तिक कृष्णा अमावस के दिन दीपमालिका का पूजन करते हैं। स्वच्छ कपड़े पहिनते हैं। गहने पहिनते हैं। घर स्वच्छ करते हैं और दीपक बहुत जलाते हैं। अतः इस दिन की महिमा राजन्! हम से कहें। तब व्यास जी कहते हैं राजन् सुनो! कार्तिक कृष्णा ग्यारसी को श्री महालक्ष्मी जी जागती हैं और कार्तिक कृष्णा अमावस श्री महालक्ष्मी जी का दिन है। अतः लोग घरों को लीपते हैं पोते हैं स्वच्छ करते हैं। जानते हैं—कार्तिक कृष्णा एकादशी

श्री लिछमी जागिया छै सो म्हारै घरै पधारसी । तिण सूं लोक घर लिपावै छै । राजा काती बदि अमावस रो दिन आवै तिण दिन परभात रा उठनै दांतण सिनान करीजै । राखड़ी रुपईआंरी पूजा कीजै । केसर कुंकम सूं पूजा करीजै, अखत चढाईजै, फूल चढाईजै । अगर धूप खेवीजै नवेद चाढीजै । मुखवास मुदरा दिण चढाईजै । पान बीड़ा चढाईजै । परसाद मिठाई पतासा बाटीजै । घणो उछाह कीजै, बांमणां नूं सकत माफक दिखणा दीजै । पछै नाना प्रकार रा भोजन करायनै उपासणो करीजै । पूजा कियां बिना जीमीजै नहीं, नै रातै जागरण कीजै । तरै युधिष्ठिर पाछै कहै छै—महाराज इण दिन री पूजा किणहीनूं फल प्राप्त हुई छै । इण पूजा सूं फल पायनै किसोहेक हुवा होय तिका कथा नै इण दिन दीपक घणा कीजै छै तिण री विध राज मोनूं कृपा करिनै कहो । तरै व्यासजी कहै छै—राजा सांभळ ! एक

को श्री लक्ष्मी जी जागी है—वे हमारे घर पधारेंगी । राजन् ! कार्तिक कृष्णा अमावस का दिन आए, उस दिन प्रभात को उठकर दातुन स्नान करना । राखड़ी रुपया की पूजा करना । केसर, कुमकुम से पूजा करना अक्षत चढ़ाना फूल चढ़ाना । अगर, धूप खेकर-प्रसाद चढ़ाना । मुख वास और मुखवास करना पान बीड़ा चढ़ाना । प्रसाद मिठाई बताशे बांटना । बड़ा उत्सव करना ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा देना । फिर नाना प्रकार का भोजन करवाकर उपवास करना । पूजा करने से पहिले नहीं जीमा जाय और रात में जागरण करना । तब युधिष्ठिर फिर कहता है—महाराज इस दिन की पूजा का किसी को फल मिला है इस पूजा से फल की किसे प्राप्ति हुई हो वह कहें और इस दिन दीपक बहुत जलाये जाते हैं उसकी विधि राजन् ! हमें कृपा करके कहें । तब व्यास जी कहते हैं—राजन् सुनो । एक इतिहास कहता हूँ । सतयुग में एक धनन्द नामक ब्राह्मण हुआ—उसकी स्त्री का नाम गुणवती था ।

इतिहास छै सो कहुं छुं । सतयुग रै विखै एक आर्यदेश मांमें ब्राह्मण हुओ तिणरै अस्त्री रो नाम सुलखणी । सो पति भरतार महा चतुर । सो एक दिन आपरा भरतार नै कह्यो—पंडि नारायण थे बारै अन्न वरत नूं जावो तरै पाछा घर मांहै खाली आवो मती । हर कछु ही केई नै आवक्यो, पिण खाली न आईजे । तठा पछै बांमण नूं कांई मिलियो नहीं । सो पाछो घरै आवतो थो, पिण मन में जांणै छै—कछु ही मिलै तो केई लावूं । अस्त्री कह्यो छै खाली आईजे नहीं । तरै दैव संयोग देखै तो गऊ ब्याई छै, तिण री जर पड़ी छै । तरै बांमण बिचारियो और तो आज कांई नहीं—आहीज लेजाऊं । तरै जर ठोकरा मांहै घाल नै लायो । आयनैं ब्राह्मणी नूं कह्यो—आज तो आ जर मिली छै नै बीजो तो कांई मिलियो नहीं । तरै ब्राह्मणी कह्यो आहीज आछी—नोहरा मांहै नाखनै आवो । तरै जर नोहरा मांहै नांखनै आयो ।

यह बड़ी पतिव्रता और महाचतुरा थी । उसने एक दिन अपने पति से कहा—हे ब्राह्मण नारायण आप बाहर अन्न मांगने जावें तो वापिस घर में खाली न आवें । कुछ भी लेकर आना लेकिन खाली मत आना । तब उसके बाद ब्राह्मण को कुछ मिला नहीं । तो वापिस घर आरहा था—लेकिन मन में जानता है—कुछ भी मिले तो लेता आऊं । स्त्री ने कहा है कि खाली आना नहीं । तब दैव संयोग से देखता है—तो एक गाय ब्याही है—उसकी जर पड़ी है । तब ब्राह्मण ने विचारा—और तो आज कुछ नहीं यह ही ले चलूं । तब जर को एक लकड़ी के टुकड़े पर डालकर लाया । आकर ब्राह्मणी से कहा—आज तो यह जर मिली है और तो कुछ मिला नहीं । तब ब्राह्मणी ने कहा—यह ही ठीक है लाकर नोहरे में डाल दो । तब जर को नोहरे में डालकर आया । तो राजा की रानी स्नान करती थी गहने खोलकर रखे थे उनमें हार एक नवलाख का था । उसे चील लेकर उड़ी । सो अब चील नी

सो राजा री राणी सिनांन करती थी नै गेहणों खोलाय नै मेल्हियो थो, तिण मांहि हार एक सवालाख रो थो। सो सांवळी ले'र नै उड़ गई। सो सांवळी उडती उडती बांमण रा नोहरा मांहि घर पड़ी थी तिण ऊपर निजर पड़ी। तरै चील नीची ऊतरी नै घर ऊपरै आई। सो हार तो नोहरा मांहि नांख गई नै घर ले'र गई। सो बांमण सहज मांहि नोहरै गयो थो, सो देखे तो हार पड़ियो छै। तब ब्राह्मणी कह्यो ले आवो। तरै ब्राह्मण घर मांहि ले'र नै आयो देखै हार तो राजा रा घर रो छै। तरै बांमणी कह्यो हार—ऊंचो धर राख सो।—— तरा मांहि गेहणो देखे तो हार नहीं। तरै राणी राजा नूं कहायो—भठा थी हार सांवळी ले'र नै उड गई। तरै राजा कोटवाळ नूं तेडियो, सहर मांहि खबर करो। तरै कोटवाळ सहर मांहि ढंढोरो देतो फिरै छै। सो बांमण रा घर आगै आय नीसरीयो। तरै बांमण कह्यो—हार मैं लायो छै। तरै

उड़ते-उड़ते ब्राह्मण के नोहरे में पड़ी—घर पर नजर पड़ी। तब चील नीचे उतरी और घर पर आ ठहरी। सो हार को नोहरे में पटक गई और घर को लेगई। ब्राह्मण वैसे ही नोहरे में गया था देखा तो हार पड़ा है। तब ब्राह्मण घर में ले आया देखा तो हार तो राजा के घर का है। तब ब्राह्मणी ने कहा—हार ऊपर धर कर रखदो

इतने में गहनों को देखा तो हार नहीं। तब रानी ने राजा से कहलवाया—यहाँ से हार एक चील लेकर उड़ी। तब राजा ने कोटवाल को बुलाया—शहर में खबर करो। तब कोटवाल शहर में ढिंढोरा देता फिरता है। वह ब्राह्मण के घर यहाँ आकर निकला। तब हार लेकर ब्राह्मण राजा के दरबार में जाने लगा। इतने में ब्राह्मणी ने कहा—राजा जी खासको हार की बधाई दे तो कहना कि ब्राह्मणी से पूछकर दूँगा। तब हार लेकर ब्राह्मण राजा के दरबार में गया। राजा ने देखकर ब्राह्मण से कहा—तुम्हारे ईमान को धन्यवाद। ब्राह्मण तु

हार लेईने बांमण राजा री हजूर आवण लागा। जिणरै बांमण
बोली—राजाजी आप हार री बधाई देवै तो कहेजो के बधा
तो बांमणी नै पूछनै लेसु। तरै हार लेनै बांमण राजा री हजू
गयो। सो राजा देखनै बांमण नू कह्यो—स्याबास रे थार
बापीन नै। बामण तू मांग—हूं तो सू रीझियो। तरै बांम
कह्यो—महाराज, मारी बांमणी नै पूछनै बधाई लेईस। तरै राज
कह्यो, बामनै पूछि आव। तरै बांमण आपरी बांमणी नू पूछ
राजारी हजूर गयो। महाराजाजी राज तूठा हो बचन पाऊ। त
राजा कह्यो—मांग। तरै बामण कहै, महाराज काती बदि अमावस
रै दिन दीपक होय जइ। सो कतो राजा रै मंडार हुवै, क
माहरै घरै होय और बीजा रै घरै हुय पावै नहीं। तरै राज
कह्यो—रे तै कासू मागियो। गाव धरती हाथी, घोडा मांगिय
हूंत। तरै बांमण कहै—सुगमाई थोडीज कह्या छे। तरै राजा कह्यो

मांग—मैं तुमसे प्रसन्न हुआ। तब ब्राह्मण बोला—महाराज मैं बधा
मेरी ब्राह्मणी को पूछकर लूँगा। तब राजा ने कहा—जाओ पूछ
आओ। तब ब्राह्मण अपनी ब्राह्मणी से पूछकर (वापिस) राजा
दरबार में गया। राजन्, यदि आप प्रसन्न हुए हैं तो मैं वचन पाऊँ
तब राजा ने कहा—'मांग'। तब ब्राह्मण कहता है कार्तिक कृष्ण
अमावस के दिन दीपक जलते हैं। सो (दीपक) या तो राजा के
महलों में हों या मेरे घर पर—दूसरों के घर न हो सकें। तब राजा
कहा—अरे यह तुमने क्या मांगा! गांव धरती हाथी घोड़े मांगे होते
तब ब्राह्मण कहता है—थोड़ा न नहीं कहा है। राजा ने कहा—
अच्छी बात है मेरा वचन है।

अमावस का दिन आया तो ब्राह्मण ने जाकर राजा के दरबार मे
अर्ज की—महाराज आज कार्तिक कृष्णा अमावस है मुझे अपना वच
दिल। तब राजा ने कोतवाल को बुलाकर कहा—गांव में नगर कहदो

बांमण र घरे श्री लिछमी जी आया, आयनै कह्यो—कुवाड़ो खोलियो ! तरै बांमण बोलियो, कुण छै। तरै महालिछमी जी बोलिया—हूं महालिछमी छू। तरै बांमण कह्यो—महाराज, मांहरै सात पीढी रहो तो कुवाड़ो खोलू। तरै आप कह्यो—पीढी एक तथा दोय रहसा। तरै बांमण कमाड़ खोलिया नहीं। श्रीमहालिछमी जी पाछा गया। सारै सहर में फिरनै पाछा इणरै घरै पधारिया—कह्यो किमाड़ खोल। तरै बांमण कह्यो—सातों पीढीयांरा वाचा देवो तो खोलू। तरै आप लिछमीजी कह्यो—पीढी छ तो म्हे रहस्यां। तरै बामण बोल्यो — हमैं पांडे नारायण, थे पिण हठ मती करो। श्री लिछमजी, सात पीढी तो किणही रै रहै नहीं नै छ पीढी तो आप कृपा करनै महरबान हुयनै रह्यो छो। तरै किमाड़ खोलिया। सो श्री महालिछमी जी पधारिया। तरै श्री लिछमीजी पधारत—संवाही बामण आणंद रै

रहे तो कृपया खोलूं। तब उन्होंने कहा पीढी एक या दो रहूंगी। तो ब्राह्मण ने किवाड़ खोले नहीं। श्री लक्ष्मी जी वापिस गई। फिर शहर में घूमकर वापिस इसके घर आई—कहा किवाड़ खोल ! तब ब्राह्मण ने कहा सात पीढी तक रहने का वचन दें तो खोलूं। तब लक्ष्मी जी ने कहा—छ पीढी तो मैं रहूंगी। तब ब्राह्मण बोला (अपने आपको कहा)—अब नारायण पाण्डे ! तू भी हठ मत कर। श्री लक्ष्मी जी सात पीढी तक तो किसी के यहां रहती नहीं है और छ पीढी तक आप महरबान होकर रहने को कहती हैं। तब किवाड़ खोले। अतः श्री लक्ष्मी जी पधारी। तब श्री लक्ष्मी जी के पधारते ही—ब्राह्मण आनन्द के घर में अवतीर्ण हुई—चारों ओर लक्ष्मी ही लक्ष्मी (दौलत ही दौलत) होगई। सो श्री व्यास जी राजा युधिष्ठिर से कहते हैं— राजन्, तुमने कार्तिक कृष्णा अमावस के दिन की तथा दीपक की महिमा पूछी थी—वही कहा।

घरे मवेसिय हुआ, चतुरंग लिछमी हुई। सो श्री व्यास जी श्री राजा युधिष्ठिर नै कहे छै—राजा तैं म्हनो वदि अमावसरा दिनरी तथा दीपक री महिमा पूछी थी सो कही। इण भांत बांमण भार्गव सूं श्री महालिछमी जी सुप्रसन्न हुआ। सो इसैं जिकोई मनुष्य दीपमालिका रै दिन श्रीमहालिछमीजी री पूजा घणो उत्साई सूं घणा उछाह सूं करसी तथा दीपक घणा करसी च्यारे पुहर रात जागरण रापसी जिण सु श्री महालिछमीजी भार्गव बांमण सु तुष्टमांन होसी। तरै आ कथा सुणनै स्यु सकोई मू तुष्टमांन हुवजो। पछै राजा युधिष्ठिर दीपमालिका रै दिन श्री महा लिछमी जी री पूजा और दीपक घणा उछाह सूं उतमाई सूं करण लागो।

इति श्री दीपमालिका री लिछमीजी री कथा संपूर्ण।

इस प्रकार ब्राह्मण भानन्द पर श्री महालक्ष्मी जी प्रसन्न हुई। सो सब कोई भी व्यक्ति दीपमालिका के दिन श्री महालक्ष्मी जी पूजा बड़ी स्वच्छता और बड़े उत्साह के साथ करेगा—तथा बहुत से दीपक जलायेगा रात को चार पहर तक जागरण रखेगा उसके साथ श्री लक्ष्मी जी भानन्द ब्राह्मण के साथ"

वैसी तुष्टमान होगी। तब यह कथा सुनकर तू सबको तुष्टमान होना। फिर राजा युधिष्ठिर दीपमालिका के दिन श्री महालक्ष्मी जी की पूजा और दीपक बड़े ही उत्साह और उमंग से करने लगा।

८—कथा काती वदि एकादसी री

युधिष्ठिर उवाच—हे स्वामी ! काती वदि एकादसी कौ नांम कसू, कुण देवता पूजी जै, इण मास री परमेसर री आगै मो महिमा कहो । आ बडी इग्यारस छै । श्री कृष्ण उवाच— हे राजा युधिष्ठिर, काती वदि एकादसी कौ नांम रमा, इण रै व्रत कीयां बैकुंठ मैं प्राप्त होइ । भली गत मैं प्राप्त होइ । हे राजा हेक इतहास सुण । वैसी अदभुत कथा सुणा । एक समै त्रेता जुग विषै मुचकंद नाम राजा । मुचकंद नागपुरी कौ राजा हो । तैं राजा रै देवता सू मित्राई हुई । इन्द्र, वायव, यम, कुबेर विभ, विभीषण, इतरा सखा हुवा । और ही नाना भाँत रा देवता सू भांत भांत कर प्रीत हुई । तिण रा राजा भगत हुवो । तैरै एक चन्द्रभागा नाम बेटी हुई । सो बेटी चन्द्रसेन राजा रै बेटो सोभन नै परणाई । सो

कथा कार्तिक कृष्णा एकादशी की

युधिष्ठिर बोला—हे स्वामी ! कार्तिक एकादशी का नाम कैसे पड़ा ? किस देवता की पूजा की जाय ? इस महीने भगवान् आपसे है—उसकी महिमा कहें । यह बड़ी एकादशी है । श्री कृष्ण बोला—हे युधिष्ठिर कार्तिक कृष्णा एकादशी का नाम रमा है—इसे करने से बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है । इसे अच्छी गति प्राप्त होती है ।

हे राजन् ! एक इतिहास सुनो । बड़ी विचित्र कथा है सुनो । एक समय की बात है—त्रेतायुग में मुचकुंद नाम का राजा था । मुचकुंद नागपुरी का राजा था । उस राजा की देवताओं से मित्रता हुई । इन्द्र वायव यम कुबेर, यम विभीषण इतने (उसके) मित्र बने । और कई प्रकार के देवताओं से कई प्रकार की उसकी मित्रता हुई । राजा उनका भक्त बना ।

सोभन एक समै सासरै आयो। तिणनै एकादशी आई। राजा नगर में ढंढोरो फेरयो। जिकोई एकादशी के दिन जीमै, तेरो घर लूट लेसीं। अर राजा दंड करसी।

पछै राजा को जमाई सोभन भूखो रह्यो एकादशी के दिन तीसरा पहुर ताईं। पछै अन बिना ब्राह्मण मर गयो। रात पड़ियो रह्यो। प्रात हुयो, तब दाग दया नै चाल्या। राजा की बेटी चन्द्रवती नाम साथ बळवा लागी। तब राजा कहै— बाई थारै भणा दान-पुन धरम करै। तू भली गति पाईस। तब बाई बरजी रही।

पछै धर्म नेम करै। नागपुर के विषै एक ब्राह्मण बसै थो। सोमसर्मा नाम थो। धनहीन थो। भीख माग-मांग पेट भरतो थो। सो ब्राह्मण अवर गाव मै चाल्यो। तठै पंथ विषै आवै थो। तठै दिन अस्त हुई गया रात पड़ी तठै पीपळ रुंखा मैं। संप

इस राजा के चन्द्रभागा नाम की एक पुत्री हुई। यह पुत्री चन्द्रसेन राजा के पुत्र सोभन को बिवाही। सोभन एकबार ससुराल आया। उस समय एकादशी आई। राजा के शहर में मुनादी फिराई – जो व्यक्ति एकादशी के दिन भोजन करेगा उसका घर मैं लूट लूंगा और राजा उसे दण्ड भी देगा।

इस प्रकार राजा का दामाद सोभन भूखा रहा एकादशी के दिन तीसरे पहर तक। इसके उपरान्त बिना अन्न के ब्राह्मण मर गया। रात भर पड़ा रहा। जब प्रातःकाल हुआ तो उसे जलाने को लगे।— राजा की पुत्री चन्द्रवती उसके साथ जलने को तैयार हुई। तब राजा ने कहा—बाई जलना मत! दान पुण्य धर्मादि करना। तुझे सद्गति प्राप्त होगी। इस पर वह बरजी हुई रह गई।

इस प्रकार वह धर्म-पुण्य करने लगी। नागपुर नगर में एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम सोमशर्मा था। वह धनहीन (गरीब) था।

भागता डरतो ऊँचो चढ़ गयो। उठै बैठो देखे तो एक कालेहार हिरण आयो। तैं सागै अनेक जीव, मृग, सिसीया रोम्ह, बाराह, गैंडो। अनेक भांत-भांत रा जीव आया। उठै रात एक नगर बस्यो। वद-शुध नगर बस्यो। भांत-भांत रा देहरा, मंदिर, विध विध रो बाजार मंड्यो।

सो राजा रो जंवाई एकादशी के दिन मुवो थो। सो दिन विषै तो हिरण होवै, रात विषै राजा होय। अनेक दरीखाना जुड़े। आप सु आसण बैसे, ऊपर छत्र जुवै। बड़ा बड़ा जोधा आय अर दरबार मांडे। और ही नाना भांत रा हाथी, रथ घोड़ा, प्यादा भाँत-भाँत री दरबार आय मंडे। अर परभात रो अलोप हुई जावे। उठै राजा सपासण बैठो थको ऊपर रूंख हतो तिके ऊपर नजर कीवी। सु डीवटां रै चांमणै सु ऊपरलो पुरख नजर आयो। तद राजा बोलियो—तू एक तो मनुस बैठो

जीव मांग-मांग कर पेट भरता था। वह अपने रास्ते पर चला जारहा था। उसे वहां दिन अस्त हो चला—रात पड़ गई। वहां उस उजाड़ में एक पीपल का पेड़ था। सिंह-बघेरों से डरता वह उस पर चढ़ गया। वहां बैठे उसने देखा—एक 'कालेहार'—काला हरिण आया। उसके साथ कई जीव मृग खरगोश रोम्ह, सूअर, गैंडा अनेक प्रकार के जीव आए। वहां रात्रि में एक नगर बसा। वह नगर बड़ा ही अद्भुत बसा। भांति-भांति के देवस्थान (मन्दिर आदि) और भांति-भांति का बाजार लगा।

राजा का वह जामाता जो एकादशी के दिन मरा था वह दिन में तो हरिण बन जाता और रात्रि में राजा बन जाता। अनेक प्रकार के दरबार जुड़ता। खुद सिंहासन पर बैठता ऊपर (उसके) चंवर दुलती। बड़े-बड़े योद्धे आकर दरबार में बैठते। और भी नाना प्रकार के हाथी रथ घोड़े प्यादे दरबार में आकर जुड़ते और प्रभात को विलीन

नजर आवे छे। इण मनुस नां बोलाय नै पूछियो—तू कुण छे?
तरे ब्राह्मण राजा नूं देख नै बोलियो, तू थो तो राजा रो
मागी सवाई—राजा मुचकंद रो मागी सवाई। तरे राजा नू
खबर पड़ी। तरे बांमण नूं निमस्कार कीवी। ब्राह्मण आसीसाद
दीवी। तरे राजा पूछियो—इ देव ब्राह्मण हमारी खमत्री कासूं
करे छे।

तरे ब्राह्मण कही—महाराज थांहरी खमत्री भरम-नेम भली-
भांत करे छे। पिण महाराज थांहरा प्रताप बाहि थांहरी रिण
कैमूं आ इसरा नगर बसा। तरे राजा सोभम बोल्यो—हे देव,
म्हे सगत बिना पछताणी करी थी सो फल पाया नहीं। राज
नगर बसै दिन प्रसे हुवे।

हो गया। राजा ने वहीं सिंहासन पर बैठे ऊपर को देखा। दीपक के
प्रकाश में ऊपर एक पुरुष नजर आया। तब राजा बोला—एक आदमी
कैसा दृष्टिगोचर हो रहा है। उसने पुरुष को बुलाकर पूछा—तुम
कौन हो? तब ब्राह्मण राजा को देखकर बोला—मैं तो राजा का
सगा दामाद—राजा मुचकुन्द का सगा दामाद हूँ। तब राजा को
खबर पड़ी। उसने उस राजा को नमस्कार किया। ब्राह्मण ने
आशीर्वाद दिया। तब राजा ने पूछा—हे देव, हे ब्राह्मण हमारी स्त्री
क्या कर रही है?

तब ब्राह्मण ने कहा—महाराज! आपकी स्त्री धर्म नियम इत्य
भली-भाँति करती है। लेकिन महाराज आप अपना तो हाल कहें।
आप पर इस प्रकार का विपत्ति पड़ी है या उस प्रकार का नगर
बस जाता है। तब राजा सोभम बोला—हे देव मैंने बिना शक्ति के
एकादशी का व्रत किया इसलिए उसका फल पा नहीं सका। शक्ति
से तो नगर बस जाता है लेकिन प्राण नष्ट हो जाता है।

तठै देव बोल्यौ-राजा, कोई उपाय करौ तो थांरी नगर बसे। तब राजा मोमन बोल्यौ, जे हमारी अस्त्री अठै आय एकांत एकादशी को एकांत व्रत कर अर पुन्य देवै तो नगर बसै अर थिर होवै। तब ऐसो बचन राजा मुचकंद नू आय कही। आद-अंत सौठो जिका आय कही। तरै ऐसी ब्राह्मण री वांणी सुण राजा अचरज पायौ अर आपरा हमाली माणो इंवा जिकांनू बात कही। तरै राजा राजारी बेटी और ही आपरा सब हिता जिकांनू साथ ले अर आप एकै आस्रम बैठा। इतरै आथण हुवौ। तठै फेर नगर बसै। पछै चन्द्र भागा नै लेअर ब्राह्मण गया आय ऊभो करी। राजा आपरी राणी नू देख बोलाई-आदर कियौ। पछै कह्यौ-थे कार्ती बदी एकादसी को व्रत देवौ तो आपणो नगर थिर होवै।

तब ब्राह्मण बोला—राजन कोई उपाय करें तो आपका नगर बस सकता है। तब राजा सोमन बोला यदि हमारी स्त्री यहाँ आकर एकांत म एकादशी का एकान्त व्रत करे और उसका पुण्य मुझे देवे तो, यह नगर बस जाय और फिर कभी नष्ट हो भी नहीं। तब इस प्रकार के बचन (उस ब्राह्मण ने) राजा मुचकुन्द से आकर कहे। आदि और अन्त तक जो कुछ देखा था वह कहा। राजा ने ब्राह्मण की इस प्रकार बात सुनकर बड़ा ताज्जुब किया और अपने को रिश्तेदार आदि थे उन्हें यह बात कही। फिर राजा और राजा की पुत्री अपने अधिक नजदीक के सम्बन्धियों को साथ लेकर एक स्थान पर जाकर बैठे। इतने मे सन्ध्या हुई। वहीं फिर नगर बसा। तब ब्राह्मण चन्द्रभागा को लेकर गया। राजा ने अपनी रानी को देखकर उसे बुलाया। उसका आदर किया। फिर कहा—तुम कार्तिक कृष्णा की एकादशी के व्रत का फल दे दो तो अपना नगर स्थिर रह सकता है। तब चन्द्रभागा ने कहा—हे प्रभु मैंने जन्म से लेकर आज तक का अपना पुण्य आप को दिया।

तरै चन्द्रभागा कह्यो-हेप्रभु आपरो दुखी आज तांई इसो पुन है, सो नगर नै थई दियो।

वद नगर थिर रह्यो। उन नगर जिसको द्वारकाको नाम जिमा एक बड़ी पुरी जैसो नाम हुवो-सोमन नाम हुयो। सोमन नाम राजा घणा बरस तांई राज कियो-अनेक पुत्र, धन, लछमी आद की वृद्ध हुई। पछै राजा रांणी नै वैकुंठ गत हुई। जो कोई कथा सुणे, मन करै तो भली गत सूं प्रापत हुवै और अश्वमेध जग्य को फल होवै।

वह नगर स्थिर हो गया। उस नगर का नाम जैसा द्वारिका का नाम हुआ उस बड़ी नगरी की शोभा हुई वैसा ही हुआ। सोमन उसका नाम पड़ा। सोमन नामक राजा ने कई वर्षों तक राज्य किया। उसके कई पुत्र हुए धन-धान्य लक्ष्मी की उसके यहाँ वृद्धि हुई। इसके पश्चात् राजा और रानी को वैकुण्ठ प्राप्त हुआ। जो व्यक्ति यह कथा सुन कर करता उस अच्छी गति प्राप्त होगी और उसे अश्वमेध का सा पुण्य फल होगा।

६—श्री सीव रात्री री कथा लिख्यते

श्री गणेशायनम: । श्री सीवरात्री री कथा लीखते ॥ श्री महादेवजी कैलास ऊपरा विराजमा है, सु कैलास स्फिटकमणि सारीखा उजलो है । सूर्य री कीरणा ज्यु ही जगमग करे । सु च्यार कोस ऊंचा है । अति सुन्दर है जठै श्री महादेवजी विराज्या है । श्री पारवती जी हाथ जोड़ अरज करै महादेवजी म्हनै कांईक वारता कहो । तद श्री महादेव जी कहै, पारवती जी जा वारता श्री नारायण जी इन्द्र जी सू कही सु वारता थासु कहुं थे एकचीत होय सुणो । फागुण वदि १४ अंधारो पखतीको दीन म्हारो है । सीवरात म्हारो वरत करसी विण रै पाप रो नास होसी पदवी वैकुण्ठ री पावसी । पारवती जी कहै 'इण वरत री विधान कहो ।' श्रीमहादेवजी कहै-फागुण वदि १४ रै दिन व्रत कीजै ।

शिव रात्रि की कथा

श्री महादेवजी कैलाश पर विराजते हैं—यह कैलाश स्फटिक मणि के समान उज्ज्वल है । सूर्य की किरणें जैसे ही जगमग करती है । (सूर्य की किरणें चमक रही है) (यह) पहाड़ चारकोस ऊंचा है अति सुन्दर है (यह पर्वत) यहीं श्री महादेवजी विराजमान है । श्री पार्वती जी विनती करती है हाथ जोड़ कर—हे महादेव देवों के देव आप कोई कहानी कहें । तब कहने लगे—पार्वती जी यह वार्ता श्री नारायण भगवान ने इन्द्र से कही थी वही वार्ता मैं आपसे कहता हूं आप चित्त लगाकर सुनें । फाल्गुण कृष्णा चौदस यह मेरा दिन है । जो व्यक्ति मेरा व्रत करेगा उसके पापों का नाश होगा उन्हें स्वर्ग में स्थान मिलेगा ।

पार्वती ने उत्तर में कहा—इस व्रत का विधान कहिये' । श्री महादेवजी ने कहा—फाल्गुण कृष्णा चौदस के दिन व्रत करना चाहिए ।

रात जागरण कीजै । च्यार पोहर में च्यार पूजा कीजै । पंचामृत सू स्नान, चंदण नैवेद, घीरत रो दीपक कीजै । च्यार पोहर सीव-सीव कीजै । इसरा करणवाळा नै मनोवांछीत फळ हुवै । पारवती जी कहै है स्वामी-का-स्या इण व्रत सु आगे कुण उधरीयो सु कहो । श्री महादेव जी कहै-येक भील सु परवत में रहै । तिण रै परवार घणा । सु वन में जीव मारनै आजीवका करै । सु एकण दीन च्यार पोहर भटका कोई मृगो मीळ्यो नहीं । सु भूखो वनि मांहु बैठो । उठै एक तळाव है-जठै घणा बील-रा रूख है । सु उठै भाया मरे । भुखो सु बोलता रूख उपरा चढे उतरे पान तोड़े नाखे । बीया मरता सीव-सीव करै । उठै श्री महादेव जी री आयगा पूजनीक ही । मारग तो छुटो जाणै नहीं-भुख्या जागता रह्या । फागुण वदि १४ रो दीन हो-पान तोड़ नाखीया सु पूजा मानी । उण सु बाखो । सामी चमकदी

रात का जागरण करना । चार पहर में चार पूजा करनी चाहिए । पंचामृत स्नान चंदन नैवेद्य घृत का दीपक करना । चारों पहर शिव-शिव रटना चाहिए । इस प्रकार का व्रत करने वाले को (मैं) मनोवांछित फल की प्राप्ति होता है । पार्वती कहती है—हे देवों के देव इस व्रत से पहले किस व्यक्ति का उद्धार हुआ सो कहना । श्रीमहादेवजी कहने लगे—एक भील था पर्वत में रहता था । उसका बड़ा परिवार था । वह वन में जीवों को मारकर अपनी आजीविका किया करता । वह एक दिन चार पहर तक भटकता रहा—उस दिन उसे कहीं भी शिकार हाथ नहीं आया । इस प्रकार वह वन में भूखा बैठा रहा । वहाँ एक तालाब है—वहाँ बहुत से बील के वृक्ष हैं । वहाँ वह ठंड से मरने लगा । भूख के मारे बील के पेड़ पर चढ़ने और उतरने लगा—इस प्रकार वह पान तोड़ कर नाखने लगा । ठंड के मारे वह 'ठंड लग रही है—ठंड लग रही है' ऐसा चिल्लाने लगा । वह स्थान

एक हीरणी आई । सु दिखाये, हीरणी मारने त्यारी कीदु । तरे हीरणी बोली, रे भील, मुने मोनु मारै मती । तरे भील विचार कीयो—मोनु इण बन माह भटकता घणा बरस बीता, पीण हीरणी नु ई बोलती कद सुणी नहीं । तरे हीरणी बोली, रे भील, हूं इन्द्रजी री अपछरा ही रंभा थी, जोबन भरपूर थी । इन्द्र जी मारा नाच सु घोहात खुसी हुता, तारा मोनु सबेरी सीरोमण कीधी । सगळ्यां अपछरा मारै लारै—हुं सीरोमण । एकण दीन श्री माहादेव जी इन्द्र जी कने पधारयां, सु समस्त अपछरा नाचती हुई । हुं पीण नाचती थी सुरग मांहे । बीच ही मैं मोनु हीरण मईं—सोपत रोक राखी । सु उपरो हुं मन मनाप राखी कर मोळी-सी आई । आयकर मुजरो कीयो । तरे माहादेवजी बोल्या—तु सगळा माह मोटी अर सबेरी, मोळी आई सु थारा अठा कुछ मति वाळी थे भसम कर नाखहुं । तरे रंभा बोली- राज,

---

श्री महादेवजी का था—पूजनीय (पूजन करने योग्य) था । भील तो भगवान की कुटिया (जहाँ भगवान का निवास स्थान है) जानता नहीं था—वह तमाम रातभर-भूखा प्यासा जागता रहा । फलस्वरूप कृष्णा चौदस का दिन था पान तोड़कर नीचे गिरा देने से वह (क्रिया) पूजा में मानी गई । फिर वह वहाँ से रवाना हुआ । सामने चमकती हुई एक हरिणी दिखाई दी । उसने (सोचा) इसे मारकर अपने पास रख लूं । इस पर (तब) हरिणी बोली—अरे भील ! मुझे तुम मारना मत ! तब भील ने सोचा मुझे इस वन में भटकते-भटकते कई वर्ष हो गए हैं । लेकिन कभी भी हरिणी को मुंह से बोलती हुई नहीं सुनी है । तब हरिणी ने कहा—मैं भगवान इन्द्र की अप्सरा थी रंभा थी यौवन से मैं भरपूर थी । भगवान इन्द्र मेरे नाच से बड़े प्रसन्न होते थे । तब मुझे सबसे बड़ी और शिरोमणी बना दी । सब अप्सरायें मेरे बाद मे शिरोमणी बनी । एक दिन श्री महादेव जी इन्द्र के पास

मोनु तो कने नहीं आऊं तो लागसी । हूं बेगी आऊं । हिरणी सोस खाई तदे भील मारी नहीं-जावण दीवी । भील तो छठीही जमो सीप-सीप करै, भीतरै हीरणी दुखी आई, विकप्प नु वीर सामो चाहण लागो । तदे हीरणी बोली रे भीलजी मोनु मती मारै । थारा सु मारो धणी आवसी, विकाना मारी । बचा माय मोटा छै । बचानु जुगाय आसु । नहीं आसु तो सोस करू बामण री हद पाप सीमन्या तीरपण नहीं करै, तोकण रो पाप मोनु । नहीं आसु तो गबु बैठी नै ठोकर दे उठायी सु पाप नहीं आसु तो लागजो । नरै भील आपी, हीरणी मेक आगै आई, दुखी पाछै आई-सु माचा दीसे है आप दीवी । तुरत हरण आयो । तदे भील हरन नु मारण लाग्यो तदे हरण बोल्यो 'रे पापी, मारे मति । अठै दोष मारी असवरी आई । तदे भील बोल्यो 'था जायगा कोई बडी पुजनीक है-जीनावर मानवी ज्यु बोल्या ।

छुटकारा कब होगा ? इस पर श्री महादेव जी ने कहा—बारह वर्षों के उपरान्त भिलभिल्लू मे दर्शन होंगे । इस लिए मैं (हरिणी) महादेवजी के दर्शन के लिए भटक रही हूँ । तब भील बोला-हे हरिणी तुम्हारी इच्छा हो उतनी बातें तू कह मैं तुझे किसी भी प्रकार से छोड़ने का नहीं । मेरे बालक भूखे हैं । मैं तो इस वन में जीवों को मार कर ही अपनी आजीविका उपार्जन करता हूँ । इस पर हरिणी ने कहा मैं गर्भवती हूँ मेरे पेट मे बच्चा है । बच्चा होने के बाद (मैं) आऊँगी । यदि मैं नहीं आऊँ तो शपथ पूर्वक कहती हूँ इस तालाब की पाल फूटने का पाप मुझे लगे । यदि मैं तुम्हारे पास नहीं आऊँ तो मुझे देवताओं की निन्दा करने का पाप ढीपों की बुराइयाँ करने का पाप तथा अपने पुरुष मे अनुरक्ति न रखने का पाप (जो एक स्त्री को लगता है) मुझे लगे । मैं बहुत जल्दी आऊँगी । हरिणी ने शपथ खाई-तब भील ने उस मारी नहीं उसे (वैसे ही) जाने दिया । भील वहाँ

तरै भील हरख पाम्यो, च्यार पोहर राते हेरण हीरण्यां सु भूखो रात रह्यो। भूखो भीलप पांन तोड़-तोड़ी नाखतो रह्यो, सीधा मरतो सीव-सीव कीयो । सु वास सीव रात्र थी, वापरा सीव जी रो मंदिर हो । सु भील नु श्री माहादेव जी प्रसन्‍न हुआ। भील नु परम पदवी दीवी, अपछरा आंप सु मीपरत हुई इन्द्रलोक गई। बिमान बैसि सुरग गया। सु आकाम मे तरे है। हीरणा रासे हेरण तीनु तारा पाछे सु आहेडी भी रे। सु भील जी रै सु श्री माहादेव जी रा प्रताप सु मोपन्न परास हुआ। सु परतख आसमांन मे दरसण दीसे है।

उठा-बैठा 'ठग रथ रही है' मथ रही है' ऐसा कह ही रहा था कि इतने में एक दूसरी हरिणी आई (वह) उसे तीर मारने को उद्यत हुआ। तब हरिणी बोली—हे भील मुझे मारना मत। पीछे से मेरा पति आ रहा है—उसे मारना। मेरे बच्चे छोटे हैं। मैं उन्हें दुधा-पानी देकर आऊं। यदि मैं तुम्हारे पास नहीं आऊं तो मुझे उस ब्राह्मण का पाप लगे जो सन्ध्या, तर्पण आदि नहीं करता है। यदि मैं तुम्हारे पास नहीं आऊं तो मुझे बैठी हुई गाय को ठोकर मारकर उठाने का जो पाप है—वह लगे। तब भील ने विचारा हरिणी एक पहले भी आई; दूसरी पीछे से भी आई, अत यह सच्ची मालूम होती है, उसे जाने दिया। अभी ही हरिण आया तब भील हरिण को मारने लगा। तब हरिण बोला—अरे ओ पापी मुझे मत मारना। यहां अभी मेरी दो स्त्रियां आई थीं। तब भील बोला—यह जगह कोई बड़ी पुण्यतीर्थ मालूम होती है यहां जानवर भी मनुष्यों की तरह बोलते हैं। तब भील बड़ा ही हर्षित हुआ। चार पहर तक रात्रि में हरिणों को हेरता हैरान होकर भूखों मरता रहा। भूखा बैठा भील वे पत्ते तोड़-तोड़कर फैंकता रहा और डर के मारे सी-सी-सी करता रहा। उस दिन शिवरात्रि थी—और उस स्थान पर शिवजी का मन्दिर था। अतः भील को भी महादेव जी

या कथा श्री महादेव जी श्री पारवती जी नु कही। श्री पारवती जी सीवरात्री को बरत प्रगट कीयो। करसी सु मनोवांछीत फल पावसी परमगति नु परापत हुसी। सीवरात्री रो बरत रो पुनरो पार कोई नहीं। सीव ईसुर अविनासी परमात्मा है। बरत करसी, कथा कहसी सुणकर धारसी-सु भगति पावसी। इति श्री सीवरात्री कथा। श्री रामजी श्रावण सुद १२ सं० १८२०। श्री हरी।

प्रसन्न (प्रसन्न) हुए। भील को बड़ी पदवी (अच्छा स्थान) दी और अप्सरा को उसके शाप से मुक्त की। वह इन्द्रलोक गई। विमान में बैठकर वे स्वर्ग को गये। अब आकाश में चमकते हैं। हरिण दोनों तरफ और हरिणी तीनों तारों के पीछे। इसे आहेडी कहते हैं। (यह आहेडी कहलाता है)। भील है वह भी महादेवजी के प्रताप से (कृपा से) मोक्ष को प्राप्त हुआ। यह प्रत्यक्ष आकाश में दर्शन देता है। (आकाश में प्रत्यक्ष दिखाई देता है)। यह कथा श्री महादेवजी ने पार्वती जी से कही। श्री पार्वती जी ने यह शिवरात्रि का व्रत संसार के सामने रखा। जो (व्यक्ति) इस व्रत को करेगा उसे अपनी इच्छानुसार फल की प्राप्ति होगी—वह परमपद (अलौकिक स्वर्ग) को प्राप्त होगा। शिवरात्रि के व्रत के पुण्य की बड़ी ही महिमा है इसका कोई पार नहीं है। शिव जी भगवान अविनाशी हैं—परमात्मा हैं। जो व्यक्ति यह व्रत करेगा इसकी कथा कहेगा अथवा इसे सुनकर दिल में धारण करेगा उसे (शिव की) भक्ति मिलेगी।

१०—अथ होली री कथा

एक राक्षस ब्राह्मण री बेटी, ढूंढा राक्षसणी । सो ढूंढा राक्षसणी श्री महादेवजी ऊपर तपस्या कीवी । सो ऐसी तपस्या कीनी जा एक सिव-सिव करै । बीजो कछु खावै न पीवै । तरै श्री महादेवजी प्रसन्न होय दरसण दीयौ, नै महादेव जी कह्यो, 'हूं तूठो, तू मांग' तरै ढूंढा राक्षसणी बोली, जो राज म्हांनै तूठा छो, तो इसड़ो देवो, जो हूं किणीथकै मरूं नहीं । देवतां सूं, मनखां सूं न मरूं । हथियारां सूं मरूं नहीं, इसड़ो मोनूं करो । तरै श्री महादेव जी जांणीयो—आतो राड़ राक्षसणी नै इणरै तो कपट घणो । आ मांणसां नूं दुख देसी । नै गई तो इणनु वचन दियो । तरै श्री महादेव जी कह्यो छै—बालक मनिखा री तो हूं न जाणूं नै बीजा तो सकोई थारी पूजा करसी । तरै राक्षसणी

कथा होली की

राक्षस ब्राह्मण की बेटी ढूंढा राक्षसणी थी । उस ढूंढा राक्षसणी ने श्री महादेव जी की तपस्या की । उसने ऐसी तपस्या की कि केवल 'शिव' 'शिव' करती रहे—इसके अतिरिक्त न वह कुछ खाती और न कुछ पान ही करती । तब श्री महादेव जी ने प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिए । वे कहने लगे "मैं तुमसे प्रसन्न हूँ—तू मुझसे वर माँग ।" तब राक्षसणी ने उत्तर दिया यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो ऐसा वरदान दें जो मैं किसी के मारे मरूं ही नहीं । देवताओं से न मरूं मनुष्यों से न मरूं हथियारों से न मरूं मुझे ऐसी बना दें (वरदान द्वारा) । महादेवजी ने तब सोचा यह तो राक्षसणी है—इसके (हृदय में) कपट बहुत है । यह आदमियों को कष्ट देगी । और मैंने तो इसे वचन के लिए वर दिया है । इस पर श्री महादेव जी ने कहा 'बच्चों व। और मनुष्यों की

स्वामियो, बालक रो भी कोई नहीं सामर्थ्य जु हूं काम आईस। पीछौ मांग्यौ सो सरब दियो। नै श्री महादेव जी अन्तरध्यान हुआ। पछे राक्षसणी छू डे गाव रहै छै। सो महाजोरावर हुई सो संसार में नाना जीवां नु घर मांहि सू सूता नै बैठां नू उपाड़ उपाड़ नै आवइ है—मार नै खाया। सो धरती सारी कनै मै आथणो जिवरी मैं फिरै, नै नाना जीव मार नै खावै। सो राक्षसणी जोरावर हुई। मारी मरै नहीं। ध्यांह ही खूट मैं राक्षसणी री धूम हुई। सो राजा रूप मत खंड सात दीप री धणी परमात्मा-विष्णु री धरती मांहे अन्याय कठै ही नहीं। न्याव रौ पइसौ लेवै, सो दुनियां सारी ही राजा कनै पुकार आई। कहै-महाराज छू डा राक्षसणी धरती मांहे अन्याय करै छै न्हना टाबरां नु मारनै खाय छै।' तरै राजा नु सोच ऊपनौ।

तो मैं कह नहीं सकता—अन्य सभी तुम्हारी पूजा करेंगे। तब राक्षसी ने सोचा मुझे बच्चों से तो कोई भय है ही नहीं उन्हें तो मैं खा जाऊँगी। और जो कुछ मैंने मांगा था सो तो मिल ही गया।

इस पर महादेव जी अन्तर्धान हो गए। इसके बाद राक्षसणी छू डा गांव में रहती है। वह बड़ी ही शक्तिशालिनी होगई। संसार में कई बच्चों को उनके घरों में से छोटे हुओं को बड़े हुओं को उठा-उठाकर भाग जाती है उन्हें मारकर खाती है। तमाम पृथ्वी पर जहां तक सूर्य उदय होता है और अस्त होता है वह वहाँ घूमती है और नाना-प्रकार के बच्चों को मारकर खा जाती है। इस प्रकार वह राक्षसी ताकतवर होगई—किसी के मारे मरती नहीं। चारों दिशाओं में उसकी धाक जम गई।

राजा रूप मत खण्ड सात द्वीपों का स्वामी बड़ा धर्मात्मा जिसकी धरती में अन्याय कहीं नहीं होता था—ऐसा था। वह न्याय का ही

तरै राजा गुरु वसिष्ठ जी नै पूछै छै, को लोक दुनियां सारा ही पुकार आया छै। दू ढा राकसणी धरती मांहि अन्याव करै छै, नांन्हा बालक सह मारै छै, तिणरो कासु करणो। तरै वसिष्ठ जी कह्यो-इण राकसणी नै श्री महादेव जी रो वरदांन छै। सो आ क्युं ही कीयां मरै नहीं। एक उपाव छै तिण करनै रहसी। श्री महादेव जी एक सेरी राखी छै। तरै राजा कहै छै-वसिष्ठजी उपाव बतावो। तरै वसिष्ठ जी कहै छै—गांव रै बारै होळी मातारो थान छै। नै सकोई आय नै माताजी री पूजा करो, बाजा बजावता, गावतां पूजा करो। फागुण वदि एक नै दिन होळी री डांडो रोपिजै, ऊपर कजा बांधिजै। नै छोकरां नै कही सु मुंहडा मांह सूं भूंडा बोलै, कुछर करै, मांथै कूदै पांणी नांखै। धूड राख नांखै, मींटोडा न्हाप्या, लकडी चोर लोसनै भैळा करो।

पैदा किया करता। अतः तमाम संसार (के लोग) राजा के पास फरियाद करने को आए। कहने लगे—राजन्! ढूंढा राक्षसणी पृथ्वी पर अन्याय करती है। छोटे-छोटे बच्चों को मारकर खाती है। तब राजा को बड़ा ही फिक्र हुआ। वे इस पर गुरु वसिष्ठ जी से पूछते हैं। दुनियां के सभी लोग पुकार लेकर आये हैं। ढूंढा राक्षसणी पृथ्वी पर अन्याय करती है छोटे-छोटे तमाम बच्चों को मारती है उसका क्या (उपाय) करना चाहिए। तब वसिष्ठ जी ने कहा इस राक्षसणी को श्री महादेवजी का वरदान है। अतः यह किसी से भी मर नहीं सकती। एक उपाय है—उससे मर सकती है। श्री महादेवजी ने एक छूट रखी है। तब राजा कहते हैं—हे वसिष्ठ जी उपाय बतावें।

तब वसिष्ठ जी कहते हैं—गाँव के बाहर होली माता का एक मन्दिर है। आप सभी उसकी पूजा करें—बाजा बजाते गाते हुए उसकी पूजा करें। फाल्गुण कृष्णा एकम के दिन होली के नाम का एक

जो राकसणी नै वरदान छै–बरसाळै, सीयाळै उनाळै न मरै। तिण सूं फागुण रो महीनो छै। सो उनाळै आगतां नै सीयाळै री सध छै। फागुण सुदि पूनम रै दिन डांडो रोपियो हुवो तिकोनै छोकरां लकड़ो छाणा मीटोरा भेळा किया होय तिके सारा भेळा करनै डांडा कनै नांखीजै। नै पछै होळी री प्रतिष्ठा ब्राह्मण सुं कराई जै। पछै होळी री पूजा कीजै–कुंकु चावल सूं पूजा कीजै, धूप खेईजै। मुंहडा आगै नैवेद, खोपरो, फूली चढाईजै। वस्त्र चढाईजै। लकड़ी रा खांडोला बाळकां रै हाथ मैं दीजै। पछै होळी प्रज्वलत कीजै। पछै झाळ निकळै तरै परिकरमा दीजै। नालेर मांहि नाज नै उठीकै झाळ मांहि सूं, नै पछै वधारिजै। हाथ मैं खांडोला होय सो पक होळी —।

लकड़ी सा लकड़ रोपना—उस पर एक ध्वजा बांधना। फिर बच्चों से कहना–मुँह से बुरे शब्द कहना गालियां निकालें नाचें कूदें पानी फेंकें धूल व राख फेंकें। सूखी–सूखी लकड़ियां और कण्डे इधर–उधर से चोर–खोस कर इकट्ठा करलें। राक्षसणी को वरदान है—वर्षाकाल ग्रीष्मकाल व शीतकाल मे यह मरे नहीं। अब फाल्गुन का महीना है यह गर्मी के प्रारम्भ होने तथा सर्दी के जाने समय दोनो का सन्धिकाल है। फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को जो लकड़ रोपा हुआ है—उसके पास लड़के चोरे हुए व लूट–खसोट किए हुए कण्डे व लकड़ियां इकट्ठी हुई हो सब वहां फेंक दे। इसके बाद होली की प्रतिष्ठा (पूजनादि) ब्राह्मण से करवानी। फिर होली की पूजा करनी चाहिए। पूजा कुंकुम चावल आदि से करनी चाहिए धूप भी करना चाहिए। उसके ठीक सामने प्रसाद–नैवेद्य आदि भी चढ़ाना चाहिए। वस्त्र चढ़ाने (चाहिए) लकड़ी के खांडोले (लकड़ी की तलवार आदि) बच्चों के हाथ में देनी चाहिए। फिर होली को जलाना चाहिए। इसके बाद होली की

मारग देस में मालेर वधारियो। तिणरो धूओ सगळै आसी। नै मान्दो छोक उमे तिणरी पूजा सांम्ळी, मळी, पूजी मेळ करने ऊपर साकड़ी भारी करने नैचे छोए नै बैसाणणो। मे ऊपर पांदे री काम्बळ दीनी ने गीत गाई वे। सो य पांडोळ्य री गान्को पड़ै सो राक्षमणी रै लागै। कान्कड़ नै होळी री धूआ लागै। तिण आगे राक्षमणी आवणी नहीं सो ये ओ उपाय कर्यो। तरै राज—लोक, दुनियां पुकार भाई वी तिणांम्नै आ बात कही के, थे सकोई इणमांत सू होळी री पूजा करो ज्यू राक्षमणी नहीं आवै। तरै सकोई इणभांत सू पूजा करण लागा। तरै राक्षसणी रो रोस उतरियो। इमै राक्षसणी न आवै। तरै बाळकां रो कष्ट कटियो।

'माल' (भी) निकले उस समय उसके चारों ओर परिक्रमा लगानी चाहिए। नारेल को जलती होली में डालकर फिर उसे निकालकर फोड़ना चाहिए। हाथों में जो 'बालीम' हो उन्हें होली में गिरा देंगे

अग्नि की लपट को देखकर नारेल को तोड़ना चाहिए। उसका धूआं चारों ओर जायेगा। और छोटा बच्चा पैदा हो उसकी पूजा करनी है दूसरों से करके उसके नीचे बच्चे को बिठाना चाहिए। उस पर तलवार को रक्षा के रूप में रखना फिर गीत गाने चाहिए। सो इसप्रकार तलवार काटकर जो गिरे वह राक्षसणी के लावर लगे। काटकर को होली का धुआं लगे। उसके सम्मुख राक्षसणी आयेगी नहीं—इस भाव यह उपाय करें। तब जो लोग शहर के और दुनिया के पुकार लेकर आए थे उनके पास यह बात पहुँची—आप सभी इसी प्रकार से होली की पूजा करें जिससे राक्षसणी न आ सके। तब सभी लोग इस प्रकार से पूजा करने लगे। इस प्रकार राक्षसणी का रोष का छुटकारा हुआ। अब राक्षसणी आती ही नहीं। तब जाकर बालक

पछे सकोई नान्हा, मोटा मरद, लुगायां मुहडा मांहि
थे भूंडा बोलैछे। माथा मांहि धूड़, राख, पांणी, मल मूत, घाले
छे। तिण थी दोस उतरै। पछे सकोई भेळा हुयनै हूंडा राकसणी
नूं राव काढीजै। तिणरा गळा मांहि छाणांरी माळा घालिजै।
उणरै घणी राख लगाईजै। पछे उनूं गधेडी ऊपर चाढ
चढाइजै। मुहडे आगे बाजा बजाइजै। छोकरां कनै भूंडा बोलाइजै
पछे भाठा वाहिजै। पछे राखनै गाँव बारै काढिजै। तरै भार
उतरै छे।

का कष्ट मिटा। उसके बाद सभी छोटे मोटे मरद स्त्रियां
मुँह से बुरे वचन बोलते हैं। सिर पर धूल राख पानी मल-मूत्र
डालते हैं—उससे दोषका परिमार्जन होता है। फिर सभी इकट्ठे होकर
हूंडा राकसणी का स्वांग निकालना चाहिए। उसके गले में एक माला
विशेष (गोबर की बनी) पहिनावें। उसके बहुत सी राख लगावें।
फिर उसे गधे पर चढ़ा देनी चाहिए। उसके मुंह के आगे बाजे बजावें।
लड़कों से बुरे वचन कहलावें। फिर पत्थरों की मार उसे मारना।
फिर गधे को गांव से बाहर निकालना। तब इसका भार कम हो
(तब जाकर यह काम हलका हो)।

११—अथ फल द्वितीया की कथा

श्री गणेशायनमः । अथ फल द्वितीया की कथा लिख्यते । एकदा समै राजा युधिष्ठिर श्री कृष्णदेव को प्रश्न कियो, हे स्वामिन, हे जनार्दन, दांना करि, यज्ञा करि, किसो पुण्य करि राज्य री प्राप्ति हुवै, सु थे निश्चय कर कहो ॥ १ ॥ तब श्री कृष्ण कहै—हो राजा, राज्य सुख चाहै छै वो व्रत करि, जिके व्रत कियां मनवांछित फल हुवै, व्रतां मांहि उत्तम छै मोटे पुण्य रो करण-हार ॥ २ ॥ कैसो छै व्रत जिके पछै व्रत कियां जितरो सारां तीर्थां विषै स्नान कियां पुण्य हुवै, तितरो पुण्य हुवै।

तब युधिष्ठिर कहै—हे कृष्ण किसो व्रत कियो ? किसे देवता रो ? किसी विधि ? विस्तार सौं कहो। जो थे म्हौं ऊपर

कथा फल द्वितीया की

श्री गणेशायनम । फल द्वितीया की कथा लिखी जा रही है। एक समय राजा युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण भगवान से प्रश्न किया—हे स्वामी हे जनार्दन दान और यज्ञ अथवा वह कौनसा पुण्य है जिसके करने से राज्य की प्राप्ति हो ? यह आप कृपा करके मवश्य कहें। तब श्री कृष्ण कहते हैं—हे राजा राज्य सुख चाहे, उसे व्रत करना चाहिए। उस व्रत के करने से मन-वांछित फल होता है यह व्रतों में उत्तम व्रत है और यह बड़े पुण्य को देने वाला है। यह कैसा है व्रत—जिस एक व्रत को करने पर समस्त तीर्थों में स्नान करने के समान पुण्य होता है।

तब युधिष्ठिर कहता है—हे कृष्ण वह कौन सा व्रत है ? किस देवता का है ? कैसी उसकी विधि है ? विस्तार पूर्वक कहें—यदि

माय राखो श्री तो। तब श्री कृष्ण कहै—राजा तू सुनि—व्रतां मांहि उत्तम व्रत छै। ओ व्रत आगै सौनकादिकां रिसीसरां नूं सूत जी कह्यो छै॥ ५॥

पुराण पूर्वे एक समै दण्डकारण्य बन वासीयां रिख्यां नूं आ बातां नूं सूत बचन कहत हुवो॥ ६॥ हे रिसीसरां कठै गया था, कासूं इवे रो प्रयुत्तर हुवे॥ ७॥ तब रिख बोलिया—हे सूत, म्हे श्री गंगा विषे स्नान करण गया था। तठै श्री भगवान पण आया। थांनूं आ सुन्यशवन नाम व्रत पूछण आया छां। जिकै व्रत कर राजा रुक्मांगद हुंवो हुवो, जिकैरी कीरति स्वर्ग ऊपरि जाय प्राप्ति हुई तठै श्री भगवान बिराजै। तब सूत कहै—भाद्रपदादि मास च्यार कृष्ण पक्ष री द्वितीया विकै आगै व्रत करि। जल शायी भगवान पूजीयो। जल धर्म सूं धपावो॥१०॥

आप मुझ पर कृपा भाव रखते हैं तो। तब श्री कृष्ण कहते हैं—राजन्! तुम सुनो—(यह) व्रतों में से उत्तम व्रत है। इसी व्रत को पहले शौनकादिक ऋषि आदि को सूत जी ने कहा है।

प्राचीन काल में एक समय दण्डका वनवासी ऋषियों के आगे पर, सूत जी इस प्रकार वचन कहने लगे। हे ऋषि लोगो—(आप) कहाँ गये थे ? (इस प्रकार के जाने का) क्या प्रयोजन था ? तब ऋषियों ने उत्तर दिया—हे सूत ! हम श्री गंगा जी में स्नान करने गये थे। वहाँ श्री भगवान भी आये थे। आपके पास (तो) 'शून्य-शयन' नामक व्रत के विषय में पूछने आये हैं। जिस व्रत के करने पर राजा रुक्मांगद या उसकी कीर्ति स्वर्ग तक जा पहुँची जहाँ श्री भगवान विराजमान हैं। तब सूत कहते हैं—भाद्रपद आदि महीने की चार कृष्ण-पक्ष की द्वितीया का (उपने) व्रत किया। जल में शयन करने वाले (विष्णु) भगवान को पूजा।

तैं कर भगवान प्रसन्न हुए वांछित फल देता हुवा। फेर ब्राह्मण री किरपा सूं पृथिवी रो राजा हुवो। इयेंहीज कथा नूं विस्तार कर कहूँ हूं—थे एकाग्र मन श्रवण करो ॥ १२ ॥

पुराण पर्वें राजा रुक्मांगद धर्मात्मा सारां राजवीयां विषै श्रेष्ठ। वामदेव रिषि रै आश्रम आय प्राप्त हुवो। तठै एकै रिखी नूं बैठो देख्यो। तिके नूं देखि राजा नमस्कार कीयो—चरणे लागो ॥ १४ ॥ रिसिस्वर पण उठी आसन अर्घ्य पाद्य सत्कार कियो। राजा री कुशल वार्त्ता पूछी। तब रिख नूं कह्यो—हे रिसिस्वर, थांहरी किरपा करि म्हारी राज विषै कुशल छै। पण क्यूं क हूँ पूछण आयो छों। म्हारे हृदै मांहि विसमय छै ॥ १६ ॥ हे ब्रह्मन्, किसे कर्म कर राज्य शत्रु वैरियां करि वर्जित म्हैं पायो, धर्मांगद सारीखो पुत्र पायो मना गामी

इससे भगवान प्रसन्न होकर (उसे) मनो-वाञ्छित फल का वरदान दिया। फिर ब्राह्मण की कृपा से पृथ्वी का राजा हुआ। इसी ही कथा को विस्तार पूर्वक कहता हूँ—आप लोग एक-चित्त होकर सुनें।

प्राचीन काल मे राजा रुक्मांगद बड़ा धर्मात्मा तमाम राजाओं में श्रेष्ठ (हो गया है)। वह वामदेव ऋषि के आश्रम मे आया। वहाँ एक ऋषि को बैठा हुआ देखा। उसे देखकर राजा ने नमस्कार किया उसके पाँवो पड़ा। ऋषि ने भी उठकर अर्घ्य आदि से उसका सत्कार किया। राजा से उसकी कुशल मंगल पूछी। तब उसने ऋषि से उत्तर में कहा—हे ऋषिदेव ! आपकी कृपा से मेरे राज्य मे सब कुछ कुशल है। लेकिन मैं कुछ पूछने को आया हूँ। मेरे हृदय में कुछ संशय है। हे ब्रह्मन् देवता किस कर्म द्वारा मैंने शत्रुओं द्वारा निसकण्टक राज्य को प्राप्त किया

मरण पायो, संध्यावली भार्या पाई-पृथ्वी बिचै जैसी गुणशील आचार पतिव्रता और नहीं। और ही जिको देवता नू दुर्लभ तिको म्हैं पायो, सू थे निश्चय कर कही। म्हैं किसै पुण्य सूं पायो। इयै भांत रुक्मांगद पूछियो जद्दे रिसीस्वर मुहूर्त मात्र ध्यान करि राजा रै पूर्व जन्मांतर री वार्ता जाणी।

उठा उपरांत रिसिस्वर हंसकर राजा सौं कहतो हुवो। हे राजन्—तू जन्मांतर रै बिचै धननीपाल नाम शूद्र हंतो। महा-दरिद्र कर पीड़ित थो। तू की भार्या थी। कुत्सित कर्मां री करणी। अकस्मात् कदी ब्राह्मणा री संगति हुई। तिके ब्राह्मण बरसा-बरस थी असुन्यस्यन व्रत करता। तिकां रै प्रसंग सू तै पण व्रत कीयो तिके री प्रताप है। तै सब भव दोइ पर्यंत कियो-तिके रा फल है।

अमीयद जैसा (पुण्यात्मा) पुत्र पाया इच्छित स्थान पर ले जानेवाला घोड़ा प्राप्त किया सन्ध्यावली जैसी पत्नी प्राप्त की पृथ्वी में जिसके समान पुण्यशीला आचरण वाली पतिव्रता और कोई भी नहीं है। और भी जो चीजें जो देवताओं को दुर्लभ है वे सभी मुझे प्राप्त हुईं ऐसा क्यों यह मुझे निश्चय ही कहें। मैंने कौन पुण्य प्रताप से इन्हें प्राप्त किये। इस प्रकार रुक्मांगद के पूछने पर महर्षिदेव ने पल भर ध्यान लगाकर राजा के पूर्व जन्म की बात को समझली।

इसके उपरान्त महर्षिवर हँसकर राजा से कहने लगा। हे राजन्, तुम पूर्व जन्म में धननीपाल नामक शूद्र थे। बड़ी दरिद्रता (गरीबी) के कारण दु:खी थे। तुम्हारी औरत बुरी थी। बुरे कर्मों को करने वाली थी। अकस्मात् तुम्हें किसी ब्राह्मण की संगति हो गयी वह (ऐसा) ब्राह्मण था जो कई वर्षों से यह 'अशून्य-शयन' करता आ रहा था।

श्रावण री द्वितीया कियां सै संपदा री प्राप्ति हुवै। भाद्रपद री द्वितीया कियां सै पुत्रां री प्राप्ति हुवै। आश्विन मासि री द्वितीया कियां सै भली स्त्री पावै। स्त्री करै तो भलो पुरुष पावै। ओ व्रत चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया करै।

ए राजा वचन रिसिस्वर रो सुणि आपरै नगर गयो। जायकर अशून्य-शयन व्रत करण लागो वरसो-वरस। तिकै सू अतुल कीर्ति, अतुल धन पायो। आ कथा सूत पौराणिक शौनकादिक प्रति कही। तब रिसिस्वरां फेर प्रश्न कियो। हे सूत, ओ व्रत कयूं कर उत्पन्न हुवो? कै किसो? किसी विधि कर करणो? किसो फल पाई जै?

तब सूत जी शौनकादिकां नै कहै—पुरा कल्पांतर रे विषै भगवान मार्कंडेय रिसिस्वर नूं माया दिखाई। समुद्र पृथ्वी,

---

उसी के प्रभाव से तुमने भी यह व्रत किया। उसी का यह प्रताप है। तुमने दो वर्ष तक किया उसका फल है।

श्रावण की द्वितीया करने पर सम्पदा की प्राप्ति होती है। भाद्रपद की द्वितीया करने पर पुत्रों की प्राप्ति होती है। आश्विन-मास की द्वितीया करने से अच्छी (अच्छे आचरण वाली) स्त्री प्राप्त होती है। स्त्री यदि इस व्रत को करेगी तो उसे अच्छा गुणवान पुरुष (पति) प्राप्त होगा। यह व्रत चन्द्रोदय व्यापिनी द्वितीया को करे (मान शुक्ल-पक्ष की द्वितीया को करे)

या वचन सुनकर राजा अपने नगर को आया। आकर कई वर्षों तक 'अशून्य-शयन' व्रत करने लगा। जिसके कारण अतुल कीर्ति और अतुल धन उसे प्राप्त हुआ। यह कथा प्राचीन काल में सूत ने शौनकादिक (ऋषि लोगों) से कहि थी। तब ऋषियों ने

जल-जलाकार करि आप एकै पदम रै पानड़ै पीपी करि तिकै माँहि सूता, तिकै समै मार्कंडेय श्री भगवान सूं प्रश्न कीयो। हे भगवन्—थे कैसे पदम रै पर्यंक ऊपरि रख्या रो करण हार कुण छै। याने स्नान-पान कुण दे छै। कुण थांहरौ भरण-पोषण करे छै ? थे कठा सूं उत्पन्न हुवा छो। हे बालक, सर्व निरूपण करि कहो ॥ १ ॥

इसै बालक रूप भगवान कहे छै—हे रिसि ये सर्व म्हैंहीज उत्पन्न कीया छै। ब्रह्मा इन्द्र महादेव आदित्य वसव तथा रिसिस्वर दिग्पाल, लोकपाल, गंधर्व, नाग, राक्षस पिशाच, राजान पर्वत, विद्याधर, ब्रह्म, पाताल, पृथिवी, सूर्यादिकचंद्र लोक, नक्षत्र जोग, रासि, तारा कलप्रासि वात, अग्नि। और ही स्थावर, जंगम जीव ए सर्व म्हैंही तैं उत्पन्न हुवे। म्हैंही

फिर प्रश्न किया। हे सूत ! यह व्रत किस प्रकार उत्पन्न हुआ ? किसने इसे (पहले पहल) किया ? कौन सी विधि से इसे करना चाहिये ? इससे कौन-सा फल मिल सकता है ?

तब सूत जी शौनकादिकों से कहते हैं—बहुत ही प्राचीन काल में भगवान ने मार्कण्डेय ऋषि को अपनी माया दिखाई। समुद्र पृथ्वी और जल सबको जल-मग्न कर स्वयं एक कमल के पत्ते को शय्या बनाकर उसमें सो गये। उस समय मार्कण्डेय ने भगवान से प्रश्न किया—हे भगवन्, आपका इस प्रकार कमल के पत्ते पर (शयन करते समय) आपकी रक्षा कौन करेगा ? आपको कौन स्नान द्वारा दुग्धपान करवायेगा ? कौन आपका भरण-पोषण करेगा ? आप कहाँ से पैदा हुए हैं ? हे बालक—सब निश्चय पूर्वक कहिये।

तब बालक रूप भगवान कहता है—हे ऋषि यह सब मैंने ही उत्पन्न किये हैं। ब्रह्मा इन्द्र महादेव आदित्य वसु ऋषिश्वर, दिग्पाल

विर्षे लीन हुवै । म्हाँहीं पालन हुवै छै । हे रिसि, तू म्हाँ नूं बुधि जाणै न छै । बालक करै छै ।

तब मार्कंडेय कहण लागो—हूं महाराज थांरी उतपति हूं न जाणूं । थांरी बिभूति कर्णां करि सुनी छै । तस् कारणात हे सुरोत्तम थांहरी किरपा सूं थांहरी हूं स्तोत्र बाचन करीस, सूत श्री सौनकादिक प्रति कहै छै । इसै भाव सूं मार्कंडेय कहतां थकांहीज मारा लोकां रै सुख का वाणहार भगवान मुख प्रसार उवासी मात्र मुनि नूं मुख माँहि प्रासन कियो । मुख माँहि प्रविष्ट थको रिसि नै उदर माँहि दोडतै थकै नै बरस एक सौ पाँच व्यतीत हुवा । तिको रिसि धर्मात्मा बालक रै उदर माँहि बैठ रह्यो । तबा उपरांत निराश हुवो थको स्तुति करण लागो । तब रिसि स्तुति करै छै—तू सारां भूत-मात्र प्राणियां री माता छौ ।

लोकपाल गंधर्व नाग राक्षस पिशाच राजा लोग पर्वत विद्याधर, यह पाताल पृथ्वी भूतादि चतुर्दश लोक नक्षत्र लोक राशि तारा वसणादि सब सृष्टि । और भी जड़-चैतन्य यह सब मुझ से ही उत्पन्न हुए हैं । मेरे ही में लीन होते हैं । मेरे द्वारा पालन किये जाते हैं । हे ऋषि—तुम मेरी बुद्धि जानते नहीं हो । (तब मुझे) बालक कहता है ।

तब मार्कण्डेय कहने लगा—हे महाराज मैं आपकी उत्पत्ति के विषय में नहीं जानता । आपकी महिमा कानों से सुनी है । इस कारण हे देवाधिदेव ! मैं आपके स्तोत्र आपकी कृपा से कहूँगा सूत जी शौनकादि के प्रति कहते हैं—

इस प्रकार मार्कण्डेय के कहने पर भगवान ने मुंह फैलाकर, उबासी मात्र में ही मुनि को अपने मुँह में रख लिया । मुख में प्रविष्ट होते हुए ऋषि को (भगवान के) पेट में भागते-दौड़ते १०५ वर्ष व्यतीत

तू हीज पिता छो। गुरु रूप तू हीज छै। थे वेदादिकां रै उद्धार रो करण हार थेहीज छो। थे थांहरै उदर विषै प्रविष्ट हुवै थकै म्हैं उदर री पान पायो। एक सौ पांच बरस भ्रमकर थांहरै शरण आय प्राप्त भयो। हे देव देवेश, हे शंख चक्र गदाधारी म्हांनु रक्षा करो। हे कमला कांत प्रसन्न हुवो। हे मधुसूदन प्रसन्न हुवो। जगतां नाथ, ह गरुडध्वज हे पुण्डरीकाक्ष हे जलशायिन् थांहरी तांई नमस्कार हुवो। थे देवतां दैत्यां रा भर्त्ता छो। मनुष्याणां का न्या नरक हूंता उद्धारण विषै था हूंता परै और समर्थ कोई नहीं। तब भगवान कहै—हे ब्राह्मण् रिख थारी स्तुति कर हैं ऊपरि हूं संतुष्ट हुवो। तू म्हैंहूंता वर मांगि! जो थारै मन मांहि वांछित छै तिको मांगि।

तब मार्कण्डेय कहै—हे देव, हे चतुर्भुज जो थे म्हां ऊपरि तुष्ट छो तो अनूत्स्मरवनाम व्रत कहो। तिको व्रत अठां मांहि

होगये। यह ऋषि धर्मात्मा बालक के पेट में बैठ गया। इसके उपरान्त निराश होता हुआ भगवान की स्तुति करने लगा। तब ऋषि स्तुति करता है—तू सभी भूत-प्राणियों का प्राणियों की माता है तू ही पिता है। गुरु रूप में भी तुम्हीं हो। वेद आदि के उद्धार के आप ही करने वाले हैं। आपके उदर में (पेट में) प्रविष्ट होकर मैंने आपके उदर से ही पान किया है।

एक सौ पांच वर्ष घूम-भटककर आपकी शरण पाकर प्राप्त हुआ हूं। देवदेवेश हे शंख चक्र गदाधारी मेरी रक्षा करें। हे लक्ष्मीपति (आप) प्रसन्न होवें। हे मधुसूदन आप प्रसन्न होवें। हे जगत के नाथ हे गरुड-ध्वज हे पुण्डरीकाक्ष हे जल-शायिन मैं आपके प्रति नमस्कार करता हूं। आप देवता और राक्षसों के भर्तार हैं। मनुष्यों को नरक-लोक से उद्धार करने में आपके होते दूसरा कोई भी सामर्थ्यवान नहीं है।

उत्तम है श्री। तिके व्रत कीयां शयन कहावै। शय्या तिका शून्य न हुवै। अर्थात् सौभाग्य घणो हुवै, तिको कहो। तद् श्री भगवान कहै, रिषि यो व्रत किही ना कह्यै कदी न है। न संसार में विख्यात छै—तिके तनू कहूं छू। तू एकाग्रमन सू श्रवण कर। संधरा श्रेष्ठ दिनां मांहे आरम्भ करै। प्रथम श्रावण वदि द्वितीया सू मास च्यार व्रत करै। चन्द्रमा उदय हुवै बीज में तिका द्वितीया करै। प्रातकाल नित्य नैमित्तिक करि दिन रो व्रत करणी।

पश्चात् चन्द्रमा उदय हुवा पैहली गोमयरी चोको दे तिण ऊपर अष्टदल कमल री करि तिके ऊपरि पात्र एक पूर्ण तांबै री तिके मांहि मूर्ति श्री लक्ष्मीनाथ जी री स्थापति करणी। पात्र

तब भगवान कहते हैं—हे ब्रह्मन ऋषि ! मैं तुम पर स्तुति करने के कारण बड़ा ही सन्तुष्ट हुआ। तुम मुझ से वर मांगो जो तुम्हारी मन की इच्छा हो वही मांगो।

तब मार्कण्डेय ने कहा—हे देव हे जनार्दन यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे आप 'अशून्य-शयन' व्रत का बखान करें। वह व्रत सभी व्रतों से उत्तम है। जिस व्रत के करने से शयन कहता है—(व्यक्ति) उसकी शय्या कभी सूनी नहीं होती। अर्थात् उसका बड़ा सौभाग्य रहता है, वही कहें। तब भगवान कहते हैं—यह व्रत मैंने किसी से भी कहा नहीं है। संसार में भी यह विख्यात नहीं है वह मैं तुम्हें कहता हूँ। तुम इसे एक-चित्त होकर सुनना। अच्छे शुभ दिनों से इसे प्रारम्भ करना। पहले श्रावण की कृष्ण पक्ष की द्वितीया से चार महीनों तक व्रत करना। जिस दूज को चन्द्रमा उदय हो उसी द्वितीया को करना। प्रातःकाल हमेशा के दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर दिन में व्रत करना (चाहिए)। फिर चन्द्रमा के उदय होने पर पहले गाय के गोबर का

माहि जल राखणौ। जल मांहि पधरावणी विधि संजुगत प्रतिष्ठा कीजै। पछै केशर सूं पूजै। पछै भक्ति सूं पूजा करि विनती घणी कीजै। हे देव, पशूशायन देहि पुत्र, दार, धन-धान्य करि पूर्ण। पछै अगर, कपूर, चंदन सुगंध लेपन महण करणी। वायरा फूल, शत पत्र कमल, मालति मुचुरायक, तुलसी रा पत्र, भौंरा ही उत्तम फूल समर्पण कीजै। धूप-दीप नैवेद्य मुखवास समर्पण कीजै। फल्लै विशेष पूजा कीजै। फल ज्यारां द्वितीयां नू नवा नवा फल समर्पण कीजै। तिके सू फल द्वितीया कहै, वे नाम अशून्य शयन व्रत रो छै। पछै दक्षणां, तांबूल, आचमन समर्पीजै। पछै अर्घ्य कीजै। एक पात्र माहि जल, गंध, फूल, सौपारी, अक्षयत ग्रहण कर यो पढ़ीजै—हे कृष्ण हृषीकेश, हे देव-जगतरा पिता, मे लक्ष्मी सहित थई दियो तिको अर्घ्य ये

चौका देकर उस पर चावलों द्वारा अष्ट-दल बनाकर, उस पर जल का पात्र धरना चाहिए। उसके अन्दर श्री लक्ष्मीनाथ जी की मूर्ति स्थापित करनी चाहिए। (उसे) पात्र में रखना चाहिए। जल में मुक्ति सहित उसे पधरानी चाहिए। फिर केशर से पूजा करना। फिर भक्ति सहित पूजा कर बहुत सी विनती करनी। हे देव हे अशून्यशयन आप हमें पुत्र स्त्री धनधान्यसे पूर्ण करें—फिर अगर कपूर, चन्दन सुगन्ध लेपन आदि करना। वायरे फूल शत पत्र कमल मालती मुचुराय तुलसी पत्र और भी प्रकार के उत्तम फूल (भगवान को) समर्पण करना। धूप दीप, नैवेद्य मुख-वास आदि समर्पण करना चाहिए। चारों ही द्वितीयाओं को नये-नये फल समर्पण करने (चाहिए)—इसी कारण फल द्वितीया यह कहलाती है—नाम इसका अशून्य शयन व्रत का है। फिर दक्षिणा पान-आचमन समर्पण करना चाहिए। फिर अर्घ्य देना चाहिए। एक बर्तन में जल गंध फूल सुपारी अक्षयत लेकर यह (इस प्रकार) पढ़ना चाहिए—हे कृष्ण हृषीकेश हे देव जगत के पिता आप मैंने जो

ग्रहण करी। इणरी प्रार्थना करि, भगवान रै आगै समर्पियै। पछै चन्द्रमा री पूजा करि चन्द्रमा नूं अर्घ्य दान करै। क्षीर सागर विचै उत्पन्न हुवो, अत्रि गोत्र विचै जनम, हे शशांक सूं रोहिणी सहित अर्घ्य रो ग्रहण करि। इयै भांत मास रै विचै करणो। कार्तिक विचै उद्यापन करै विधिपूर्वक संयुक्त।

तब मार्कंडेय कहै—हे भगवान, व्रत रै दिन भोजन कासूं कीजै, त्यागजै कासूं दान क्या दीजै? उद्यापन (किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कृत्य हवन, ब्राह्मण भोजन आदि) किसी भाँति कीजै। फल कासूं हुवै तिकी निरणय करि कहवो। तब श्री भगवान कहै—हे रिषि हविष्यान्न (सात्विक भाग) भोजन करै, घृत, गुड़, शर्करा संयुक्त। दधि, छाछ, बाजरी, गोहूं,

---

अर्घ्य प्रदान किया है—उसे स्वीकार करें। इसकी प्रार्थना करके भगवान् के आगे इसे समर्पित कर दे। फिर चन्द्रमा की पूजा कर चन्द्रमा को अर्घ्य दान दे। क्षीरसागर में उत्पन्न हुए, अत्रि गोत्र में जन्म है (जिसका) ऐसे हे शशांक आप रोहिणी सहित अर्घ्य को ग्रहण करें। इस प्रकार महीने के भीतर करना। कार्तिक के महीने में विधि-सहित उद्यापन करना।

तब मार्कण्डेय कहते हैं—व्रत के दिन भोजन किस से करना चाहिए? त्यागना क्या चाहिए? दान में क्या देना चाहिए? किस प्रकार उद्यापन करना चाहिए? व्रत की समाप्ति किस तरह हो यही निश्चय पूर्वक कहें। तब श्री भगवान् कहते हैं—हे ऋषि सात्विक भोजन करे घृत गुड़ शक्कर युक्त। दही और छाछ [illegible]—नहीं और उस [illegible] चाहिए। इनमें से [illegible] चाहिए। व्रत के दिन [illegible] और [illegible] देना चाहिए। [illegible]—इस प्रकार [illegible] करना [illegible]

मांहि लक्ष्म रामणी । लक्ष्म मांहि पधरावणी विधि संयुगत प्रतिष्ठा कीजै । पछै केशर सू पूजै । पछै भक्ति सू पूजा करि विनत्ती कीजै । हे देव मधुसूदन देहि पुत्र, दार, धन-धान्य करि पूर्ण । पछै अगर, कपूर, चंदन, सुगंध लेपन ग्रहण करज्यो । आपरा फूल, शत पत्र कमल, मालति भृङ्गराजक, तुलसी रा पत्र, बीजा ही उत्तम फूल समर्पण कीजै । धूप-दीप नैवेद्य मुखवास समर्पण कीजै । फल विशेष पूजा कीजै । फल ग्यारो द्वितीया सू नवा-नवा फल समर्पण कीजै । तिके सू फल द्वितीया कहै, जे भाग अशून्य शयन व्रत री छै । पछै दक्षणा, तांबूल, आचमन समर्पीजै । पछै अर्घ्य कीजै । एकै पात्र मांहि जल, गंध, फूल, सोपारी अक्षत ग्रहण कर यो पढीसे—हे कृष्ण हृषीकेश, हे देव-जगतरा पिता, थे लक्ष्मी सहित म्हैं दियो तिको अर्घ्य ले

शैया लेकर उस पर चावलों द्वारा अष्ट-दल बनाकर, उस पर तांबे का पात्र धरना चाहिए। उसके अन्दर श्री लक्ष्मीनाथ जी की मूर्ति स्थापित करनी चाहिए। (उसे) पात्र में रखना चाहिए। जल में भुक्ति सहित उसे पधरानी चाहिए। फिर केशर से पूजा करना। फिर भक्ति सहित पूजा कर बहुत सी विनती करनी। हे देव हे मधुसूदन आप हमें पुत्र स्त्री धनधान्यसे पूर्ण करें—फिर अगर कपूर चंदन सुगन्ध लेपन आदि करना। आपके फूल शत पत्र कमल मालती भृङ्गराज तुलसी पत्र और भी प्रकार के उत्तम फूल (भगवान को) समर्पण करना। धूप दीप, नैवेद्य मुख-वास आदि समर्पण करना चाहिए। ग्यारो ही द्वितीयाओं को नये-नये फल समर्पण करने (चाहिए)—इसी कारण फल द्वितीया यह कहलाती है—नाम इसका अशून्य शयन है। फिर दक्षिणा पान-आचमन समर्पण करना चाहिए। फिर अर्घ्य देना चाहिए। एक बर्तन में जल गंध फूल सुपारी अक्षत लेकर यह (इस प्रकार) पढ़ना चाहिए—हे कृष्ण हृषीकेश हे देव जगत के पिता आप श्री ला

ग्रहण करो। इतरी प्रार्थना करि, भगवान रै आगे समर्पये। पछै चंद्रमा री पूजा करि चन्द्रमा नूं अर्घ्य दान करै। क्षीर सागर विषै उत्पन्न हुवो, अत्रि गोत्र विषै जनम है शशांक तूं रोहिणी सहित अर्घ्य री ग्रहण करि। इयै भाद्र मास रै विषै करणो। कार्तिक विषै उद्यापन करै विधिकर संयुक्त।

तब मार्कण्डेय कहै—हे भगवान व्रत रै दिन भोजन कासूं कीजै, त्यागजै कासूं दान क्या दीजै? उद्यापन (किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कृत्य हवन, ब्राह्मण भोजन आदि) किसी भाँति कीजै। फल कासूं हुवै तिको निश्चय करि कहवो। तब श्री भगवान् कहै—हे रिष, हविष्यान्न (सात्त्विक भोग) भोजन करै, घृत, गुड़, शर्करा संयुक्त। दधि, क्षाम्र बर्जेती, गेहूँ,

---

अर्घ्य समर्पण किया है—उसे स्वीकार करें। इतनी प्रार्थना करके भगवान् के आगे इन्हें समर्पण कर दे। फिर चन्द्रमा की पूजाकर चन्द्रमा को अर्घ्य दान दे। क्षीरसागर मे उत्पन्न हुए, अत्रि गोत्र में जन्म है (जिनका) ऐसे हे शशांक आप रोहिणी सहित अर्घ्य को ग्रहण करें। इस प्रकार महीने के भीतर करना। कार्तिक के महीने म विधि-सहित उद्यापन करना।

तब मार्कण्डेय कहते हैं—व्रत के दिन भोजन किस स करना चाहिए? त्यागना क्या चाहिए? दान मे क्या देना चाहिए? किस प्रकार उद्यापन करना चाहिए? फल की प्राप्ति किस से हो यही निश्चय पूर्वक कहें। तब श्री भगवान् कहते हैं—हे ऋषि सात्त्विक भोजन करे घृत गुड़ शक्कर युक्त। दही और क्षाम्र निरस—गेहूँ और चना खाने चाहिए। इनमें से आधा ब्राह्मण को देना आधा आप स्वयं खाना चाहिए। व्रत के दिन शाक क्षौम मद और मोह का त्याग करना चाहिए। कथा को सुनना—इस प्रकार इक्कीस चौथे वर्ष अथवा सोलहवें वर्ष

जप जापणा। भाषो ब्राह्मण नू देणो। भाषो आप खाणो। व्रत रे दिन काम, क्रोध, लोभ मोह रो त्याग करणो।

कथा रो श्रवण करणो। ईयै भाँत सू व्रत कर चौथे बरस अथवा सोळ्हे बरसे उद्यापन करणो। उद्यापन बिना व्रत रो पूर्ण नाहो हिके सू अवश्य उद्यापन करणो। ब्राह्मण री आज्ञा लेयर शास्त्रोक्त विधि सू करणो। होम करणो। ब्राह्मण री बरणी बरणी अथवा असमर्थ च्यारां री। गोदान वस्त्र स्त्री पुरुष रा, आभूषण स्त्री पुरुष रा ब्राह्मण नू देवै। शय्या दान, गीदड़ा पथरणा ओसीसा सारी उपस्कर सामग्री संयुक्त सपत्नीक सहित ब्राह्मण नू। ब्राह्मण सोळ्हे भोजन खीर खांड सू दक्षणा सहित, पछ आपरी शक्ति सारु सुवर्ण रो कळसरा दूध भर, मांहि सुवर्ण घाति, सावद वस्त्र

उद्यापन करना चाहिए। उद्यापन बिना व्रत सम्पूर्ण नहीं होता। इसलिए उद्यापन तो अवश्य ही करना चाहिए। ब्राह्मण की आज्ञा लेकर शास्त्र की विधि से करना चाहिए। होम करना चाहिए। व ब्राह्मण को वरणी बैठाना (माला फेरने के लिए बैठाना) यदि असमर्थ हो तो फिर चारों को बैठाना। गोदान वस्त्र स्त्री पुरुष के आभूषण-स्त्री पुरुष के ब्राह्मण को देने चाहिए। शय्या दान रजाई, बिछौना ओसा तकिया अपनी शक्ति अनुसार सपत्नीक ब्राह्मण को देना चाहिए। ब्राह्मण को सोलह प्रकार के भोजन खीर-खाण्ड सहित करवाना चाहिए उसे दक्षिणा देनी चाहिए। अपनी शक्ति अनुसार एक सोने का पात्र दूध भर कर उसमें सोना डालकर, ऊपर से पीले-रेशमी कपड़े से उसे लपेटकर, ब्राह्मण को देना चाहिए। ऐसा ब्राह्मण जो वैष्णव हो कुटुम्बी हो अंग हीन न हो तपस्या का करने वाला हो योग्य हो, विद्यावान हो ऐसे ब्राह्मण को देना चाहिए। यदि सोने का पात्र बनवाने की शक्ति न हो तो तांबे अथवा मिट्टी का पात्र बनवाना

सूं बीटी ब्राह्मण कोई वैष्णव हुवै कुटुंबी हुवै स्त्री हीन न हुवै, तपस्या री करण हार हुवै, पात्र हुवै विद्या पात्र हुवै, तिके नूं देणौ। सुवर्ण री शक्ति न हुवै तो तांबे रो अथवा माटी रौ पण करणौ। पछे आप भोजन करै-मन प्रसन्न सूं च्यार बरस व्रत कर ईयै भाँति सूं उद्यापन करै।

श्री कृष्ण कहै—हे युधिष्ठिर, तिके ईयै भाँति करि, उद्यापन करै, तिनके रै फल री प्राप्ति हुवै। तिकौ सुणै, सूर्य ग्रहण विषै कुरुक्षेत्र मांहि जाय पितृ-तर्पण करै, तिके नूं कोई पुण्य हुवै, तिके पुण्य री प्राप्ति हुवै। तिको गया जाय पितृश्राद्ध करै, गिरिका विषै जाय स्नान करै, तिके फल रो भोगणहार हुवै। मथुरा मंडल विषै पंच भीषम मांहि जाई भगवान रै आगै जागरण

चाहिए। इसके बाद फिर स्वयं भोजन करे। प्रसन्नचित्त होकर चार वर्ष तक इसी प्रकार से व्रत करे और इसी प्रकार से उद्यापन करता रहे।

श्री कृष्ण कहते हैं—हे युधिष्ठिर जो व्यक्ति इस प्रकार करता है, उसे फल की प्राप्ति होती है। जो (व्यक्ति) इसे सुने उसे सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र में जाकर पितृ-तर्पण करने का जो पुण्य लाभ होता है, उसी पुण्य की प्राप्ति हो। जो व्यक्ति गया जाकर पितृ-श्राद्ध करता है गिरिका में जाकर स्नान करता है उसी ही पुण्य के फल को भोगने वाला हो। मथुरा-मंडल में जाकर पंचभीषम जागर जो व्यक्ति भगवान के आगे जागरण करता है, वैसे ही फल की प्राप्ति इसके करने से हो। मथुरा में प्रबोधनी का जागरण करने से नैमिषारण्य में गंगा-सागर समुद्र में गया में हरिद्वार में सिन्धु के पचनद में गोदावरी नदी में बृहस्पति सिंह राशि में हो तब बदरीका आश्रम में केदारनाथ में इन स्थानों में जाकर कोई स्वर्ण-दान करता है अथवा पृथ्वी दान करता है,

करै जिकै रो फल हुवै जिको फल भोगवै। मथुरा विषै प्रबोधनी रै जागरण कीयां नैमिषारण्य विषै, गंगा सागर समुद्र विषै, गंगा द्वार हरि विषै सिंधु पश्चत विषै, गोदावरी विषै बृहस्पति सिंह राशि विषै हुवै, बदरिका श्रम विषै, केदार नाथ विषै, इहां स्थानां विषै जाई कोई सुवर्ण री पृथ्वी दान करै जिकै नूं पुण्य हुवै, जिकै फल रो भोगणहार हुवै—जलशायी भगवान पूजियां जिको फल पावै। जिको विधान करि करै जो व्रतां मांहि उत्तम जिको यमलोक न देखै। भली गति नूं प्राप्त हुवै, निश्चय सूं। ब्राह्मण करै तो ज्ञान पावै। राजा करै तो जय पावै। स्त्रियां करै तो सात जन्मांतर रै विषै दुर्भाग न पावै। धन धान्य पुत्र-पौत्र घणो पावै। भाग्यां री, भरतार रो सुख पावै इये व्रत किये। और ही मनोवांछित फल पावै। सूत जी शौनकादिक नूं कही। मार्कंडेय रिखि नूं व्रत भगवान कह्यो। तापछै संसार मांहि विख्यात हुवो। शौनकादिक

उसे जो पुण्य होता है, उसी प्रकार के फल का भोगने वाला (इस प्रकार के व्रत को करने वाला) हो 'जल-शयन' भगवान के पूजन करने पर उसे फल मिले। जो व्यक्ति विधि विधान से यह व्रतो। मे जो उत्तम व्रत है उसे करता है—वह यमलोक को नहीं जाता। यदि ब्राह्मण इसे करता है वह ज्ञान-लाभ करता है। राजा करे तो उसे विजय-लाभ होती है। स्त्रियां करती है तो वे सात जन्म-जन्मान्तर तक दुर्भाग्य (विधवा) नहीं होती और धन-धान्य तथा बहुत से पुत्र-पौत्र वाली होती है। उन्हें बाद में भर्तार का सुख मिलता है इस व्रत को करने पर और भी बहुत से मनोवाञ्छित फल को पाती है—सूतजी ने शौनकादिक को ऐसा कहा। मार्कण्डेय ऋषि को भगवान ने यह व्रत कहा। इसके उपरान्त संसार में यह विख्यात हुआ। शौनकादिक भी यह सुनकर अपने आश्रम को गये। राजा युधिष्ठिर ने भी भगवान श्रीकृष्ण के मुंह से इनका महात्म्य सुनकर पांचों भाइयों और द्रोपदी के साथ

पण मुनिवर आपणे आश्रम गया। राजा युधिष्ठिर श्री कृष्ण रै मुखसूं वा महात्मय सुणि पाछा भार्या द्रौपदी सहित व्रत मधुस्य-शयन कियो तिके वनवास रै विषै तिके व्रत रै प्रताप वन री सन्ताप दूरि करि। आपरा वैरी जाय करि निर्कंटक राज्य पायो। श्री कृष्ण री कृपा सू व्रत रै पुण्य सू।

इति श्री पद्म द्वितिया कथा सम्पूर्ण।

इस 'मधुस्य-शयन' व्रत को किया जिससे वनवास काल में इसी व्रत के प्रताप से (प्रभाव से) उनका सन्ताप दूर रहता रहा अपने शत्रुओं को विजय कर निष्कंटक राज्य को प्राप्त किया — श्री कृष्ण की कृपा से एवं इसी व्रत के पुण्य के कारण।

इति श्री पद्म द्वितिया कथा सम्पूर्ण।

१२—बुधाष्टमी कथा

श्री गणेशायनमः । अथ बुधाष्टमी कथा लिख्यते । युधिष्ठिर उवाच—हे कृष्ण मैं थारने अनेक व्रत सुणीया छे । हिमे बुधाष्टमी रो व्रत सुणीया चाहु छु—थे प्रसन्न हुइ कहो । श्री भगवानुवाच—बुधाष्टमी रे दिन नदी जाइ स्नान करि, आपणो षटकर्म करे । तठा पछे आपरे घरे आइ चौको देकरि, अष्टदल मांडणो करि, इण विधान सु व्रत करे, तिका विधि कहुं छै । अष्टदल कमल अथ तांसु चौके ऊपर मांडीजे । तिणरे कुंभ थापीजे । पीले वस्त्र सु वींटीजे । मांहि नीम्ब पान घालीजे, ऊपर चंदन सु चरचीजे । मासे एक सुवर्ण री अथवा आध मासे सोने री बुध री प्रतिमा करीने इण विधि सु पूजीजे । हे युधिष्ठिर इण मंत्र सु बुधरो आवाहन कीजे ।

कथा बुधाष्टमी की

युधिष्ठिर ने कहा—हे कृष्ण मैंने आपसे कई व्रत (व्रत कथाएँ) सुने हैं । अब मैं बुधाष्टमी का व्रत सुनना चाहता हूँ—आप प्रसन्न होकर कहें । श्री भगवान् बोले—बुधाष्टमी के दिन नदी पर जाकर स्नान करके अपने षट-कर्म करना । उसके बाद अपने घर आकर, चौका देकर, चौकोर आल्पना मांडकर इस विधि से व्रत करना—जो विधि कह रहा हूं । अष्टदल कमल अक्षत आदि से चौके पर आल्पना मांडना । उसके बीच में घड़ा स्थापन करना । उसे (उस घड़े को) पीले वस्त्र से लपेटना । उसके भीतर नीम के पत्ते डालना ऊपर चन्दन के छींटे डालना । एक माशा अथवा आधे माशे की सोने की बुध की मूर्ति बनाकर इस विधि से पूजा करना । हे युधिष्ठिर इस मंत्र से अभिषिक्त करना ।

बुधोयं प्रति गृह्णाति, कृष्ण स्योपि शुभ स्वयं ।
पीयते च बुधेनैव, प्रीयतांमे बुधोमह ॥ १ ॥
दुष्टुं खि दुरितं दुःख नाशयित्वा बुधो मम ।
सौख्यं पुत्रास्त्री मनस्यं करो तु शशिनंदन ॥ २ ॥

जिण मास में चांदणे पख बुधवार हुवै, तिण दिन ओ व्रत कीजै । युधिष्ठिर उवाच–हे कृष्ण इण व्रत री महातम मोंने प्रसन्न हुई बिस्तार सौं कहो । श्री कृष्ण उवाच–सुणि युधिष्ठिर बुधाष्टमी व्रत री महातम हुं कहुं छु । जिण व्रत सु मनुष्य नरक कदेही पड़ै नहीं । इण व्रत री इतिहास कहुं छु । पूर्वे कृत युग मांहि इलापति नामें राजा हुतो । घण चाकर मित्र–मंत्री समेत हिमालय पर्वत समीपे एकदा समें आय नीकल्यो । उठै महादेव जी री आग्या छे जिको पुरुष उण वन में आवे, तिको इस्त्री हुइ जावे।

दुष्टुं खि दुरित दुःख नाशयित्वा बुधो मम ।
सौख्य पुत्रास्त्री मनस्य करोतु शशिनंदन ॥२॥

जिस महीने में शुक्लपक्ष हो और बुधवार हो उस दिन इसप्रकार का व्रत करना चाहिए। युधिष्ठिर बोला—हे कृष्ण इस व्रत का महात्म्य सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई, इसे विस्तार से कहें। श्री कृष्ण ने कहा—हे युधिष्ठिर सुनो मैं बुधाष्टमी का व्रत कहता हूँ जिससे मनुष्य कभी भी नर्क की यातनाएँ नहीं भोग सकता। इस व्रत का इतिहास कहता हूँ।

पहिले युग में इलापति नामक एक राजा हुआ। बहुत से नौकरों व मित्रों और मन्त्रियों के साथ वह एक दफा हिमालय पर्वत के पास आकर ठहरा। वहाँ महादेव जी की आज्ञा थी कि जो पुरुष उस वन में आ जाय वह स्त्री बन जाय। इस बीच में राजा हिरणी की शिकार के लिए घोड़े पर बैठा उस वन में आ गया। घुसने के साथ ही (वैसे

जिण प्रसाव राजा मृगरी सिकार रै वास्तै उवा वन में एका की खोडै चढ़ीयो वन में पैठो। पैठन समान अस्त्री रूप हुइ गयो। हिमैं विका स्त्री वन में भ्रमण करै मु यु न जाणे हुं कुण छु, कठै आई, दिसा मूली हुइ गई। उस समै बुध देवता उवा स्त्री दीठी महा रूपवंत अनेक गुण युक्त देखि मैं प्रसन्न हुवो। अष्टमी बुधवार रै दिन तुष्टमान हुइ नै उण स्त्री सु गृहवास कीयो। कितरेक दिन उण इस्त्री रै पुत्र हुवो जिण रो नाम पुरूरवा दीयो। चंद्रवंश री करणहार, सगळां ही राजा मांहै मुख्य हुवो। तिण दिन सु आ बुधाष्टमी पूज्य हुई-सर्व मनोवांछित री पूरणहार, सर्व पाप री हरणहार छै। हिमै भी कृष्ण बुधाष्टमी रो इतिहास कहै छै। मिथिला नाम नगरी में निमि नामैं राजा हुवो तिको राजा संग्राम में बलवंत वैरीयै हण्यो राज्य लै सा शत्रवै कीयो।

ही वह यहाँ बैठ) वह स्त्री रूप बन गया। अब वह स्त्री वन में घूमने लगी उसे यह ज्ञात नहीं मैं कौन हूं ? कहां आ गई ? दिशा भूली हुई वह आने को बढ़ी। उस समय बुध देवता ने उस स्त्री को देखा। बड़ी रूप वाली (अति सुन्दर) और अनेकों गुणों से युक्त उसे देखकर उसपर प्रसन्न हुए। अष्टमी को बुधवार के दिन उस पर तुष्टमान (प्रसन्न होकर) उस स्त्री से संभोग किया।

कुछ दिनों के उपरान्त उस स्त्री के लड़का हुआ जिसका नाम पुरूरवा रखा गया। वह चन्द्रवंश का प्रकाशन स्थापन करने वाला ? वह सभी राजाओं में प्रधान रहा। उस दिन से यह बुधाष्टमी पूज्यनीय मानी गई। यह सब प्रकार की मन की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली है सब पापों को हरने वाली है।

अब भी कृष्ण बुधाष्टमी का इतिहास कहते हैं। मिथिला नाम नगरी में निमि नाम का राजा हुआ उस राजा को युद्ध में बलवान

तिणरी भस्त्री दारिद्रणी ऊर्मिला नामैं दोय बालक समेत पृथ्वी रै विषै भ्रमण करै छै । एकेणी नगरी मांहे ब्राह्मण रै घरै आई। ऊर्मिला पेट भराई निमित्त ब्राह्मण रै घरै पीसणा कांड्यो करै छै। एकै समीयै सात ७ गोहूं चोरिनैं दोई बालकां नै भूखा जाणि दीया। इणे भांति आपरी नै दोय बालकां रो भरण-पोषण करती कितरेक दिनै ऊर्मिला परोक्ष हुई। उणरा पुत्र मिथिला नगरी जाइनैं आपरै पिता रो राज्य लीयो। पुण्य योग सु भली तरै राज पाळै छै। आपरी बहिन जी-सो धर्मराज नै परणाई। धर्मराज एकै समीयै आपरी भस्त्री नु कहण लागौ-भस्त्री रूप मैं श्याम जी। हे श्यामे! तू म्हारा घर मैं चाकरां नै दान-मान दीया कर। भली भांति रक्षा कर। थने तू सुखि-मारग घर मांहि सात विचर छै। सात ७ ताम्र बाल्या छै, तिके तू

वैरियो ने हराया उसका जो राज्य था वह शत्रुओं ने ले लिया। उसकी स्त्री दारिद्रणी (भिखारिन) उर्मिला नाम की अपने दोनों लड़कों सहित पृथ्वी पर भ्रमण करती है। वह नगरी में एक ब्राह्मण के घर में आ गई। उर्मिला अपना पेट भरने के लिए (गुजारे के लिए) ब्राह्मण के यहाँ पीसना आदि (कार्य) करती है। एक समय अपने दोनों बालकों को भूखे समझ कर उसने सात गेहूं (गेहूं सख्या में सात) उन्हें खाने को दिए। इस प्रकार अपना और अपने बालकों का पालन-पोषण करती हुई कुछ दिनों के बाद उर्मिला इस संसार से चल बसी। उसके पुत्रों ने मिथिला नगरी में जाकर अपने पिता का राज्य सम्भाला।

अपने पुण्य के कारण अच्छी प्रकार से राज्य करता है। अपनी बहन जो थी उसने धर्मराज को विवाह दी। धर्मराज एक समय अपनी स्त्री से कहने लगे-स्त्री रूप की श्याम वर्ण की थी। हे श्यामे! तू मेरे घर में नौकरों को दान-पुण्य खूब दिया कर। बड़ी अच्छी प्रकार

देखै तो माता नै तिल पीलीजै ज्यों पील रह्या छै। वठै सातमो ही विवर उघाडियो। आगै देखै तो माता कोढी राध में भीनी घटां किसा बिलाट करै छै। सु देखि नैं, स्यामला घणु दुखित हुई। एक दा समै यमराज नु स्यामला पूछण लागी—स्वामी, इण किसा पाप कीया, जिण सु म्हा म्हारी माता सातां ही विवरां मैं घणु पीलीजै छै। तद यम बोल्यो कोप करिनै—हे मित्रे! तैं साते विवर क्यू उघाड्या, मैं तोनै पहिली वरजी थी नहीं। थारी माता पुत्र रा स्नेह सीं गोहूं चोर नैं दीया था सो तू म जाणै। तैं ब्राह्मण खाजी बको सात कुल बाल्यै तिणहीज कर्म सीं था नरक री स्थिति देखि। गाहूं मा विहै कृमि हुइ दुख देवै। थारी माता कीया कर्म भोगवै छै। आ बात सुणि नै स्यामला बोली—महाराज माहरे भ्यागमु हु यर्थ बाणु छु जिउ माहरी माता

देखा—उसकी मा के गले के ऊपर पैर रखकर उसे (यमदूत) मुक्कर से कूट रहे हैं। फिर छठा कोठार खोला देखा तो माता को जिस प्रकार तिलों को पेले जाते हैं (तिलों का तेल निकाला जाता है) उसी प्रकार पेल रहे हैं। फिर सातवा कोठार खोला—देखा तो मा के सामने मह में सिजोई हुई घटें (कीड़े मकोड़े) किलबिलाहट कर रही हैं। ऐसा देखकर स्यामा बड़ी ही दुखी हुई।

एक समय स्यामा यमराज से पूछने लगी—इसने ऐसे कौन से पाप किए, जिससे मेरी यह माता सातों ही कोठरों में बड़े कष्ट पा रही है। तब यम क्रोध करके बोला—हे मित्रे! तुमने सातों कोठार खोल दिये! मैंने तुम्हें पहिले ही इन्कार किया था। तेरी माता ने पुत्र-स्नेहवश गेहूँ चोर कर (पुत्रों को) दिए थे—यह तुम्हे मालूम नहीं है। ब्राह्मण का धन्न खाने से सात-कुल में आग लगाती हुई उसी कर्म से इसने यह नर्क की स्थिति देखी है। गेहूँ में से कीड़े होकर दुख दे रहे हैं।

कीयो थो। सो पिण हूं भरतार, म्हारी माता इण विधि रा दुःख सु छूटै सो विधि करो। इसो सुणि धर्मराज विचारिनैं बोल्यो आपरी मातृ मोचन रै अर्थ श्यामला प्रियारी प्रार्थना सी करण लागो। हे प्रिये, तू सुणि इण जन्म सु तू सातमैं जन्म तैं मालिनी नारी रै संग सु बुधाष्टमी रो व्रत कीयो थो। महा फलदायो तिण व्रत रो फल थारी माता नै देवै तो थारी माता नरक सौं छूटै। इसो सुणि श्यामला ऊनाकर्मी स्नान करि बुधाष्टमी रो पुण्य वाचा दे करि माता नैं दीयो, तिण सु ऊर्मिला नरक सु मुक्त हुई। तत्काल दिव्य रूप धारि विमान में बइठी दिव्य वसतर पहिर स्वर्गि गई। भर्तार निमि राजा रै पास गई। अद्यापि बुध रै तारै कन्हैं आकाश मांहि दैदीप्यमान सोभै छे—बुधाष्टमी रै प्रभाव सौं। इसो सुणि श्रीकृष्णजीरा मुख सौं युधिष्ठिर कहै छै-

---

तुम्हारी माता अपने किए हुए कर्मों को भोग रही है। यह बात सुनकर श्यामा बोली महाराज आपके कहने से मैं सब जान गई जो कार्य मेरी माता ने किये। अब हे प्रिय प्राणप्यारे! मेरी माता इन कीड़ों से छूटे (किस प्रकार मुक्ति पावन) वह विधि बतावें।

ऐसा सुनकर धर्मराज विचार कर अपनी पत्नी की प्रार्थना पर माता के पाप से छुटकारे का उपाय कहने लगा। हे प्रिये सुनो! इस जन्म से सातवें जन्म में तुमने एक मालिनी नारी की संगति में बुधाष्टमी का व्रत किया था। (अत) महाफल–देने वाले व्रत का फल तुम यदि अपनी माता को दे दो तो वह नरक से छूट जाय। ऐसा सुनकर श्यामला ने पानी से स्नान किया। बुधाष्टमी के पुण्य व फल का माता को वचन दिया इससे उर्मिला नर्क से छूट गई। तदुपरान्त वह दिव्य रूप धारण करके विमान में बैठकर सुन्दर वस्त्र पहिन कर स्वर्ग को चली गई। वह अपने पति राजा निमि के पास में आई। आज भी बुध के तारे के

आ बुधाष्टमी अतीव श्रेष्ठ छै। हे कृष्ण, इण व्रत री विधान मोनैं कहौ। श्री कृष्ण उवाच। हे युधिष्ठिर, तू सुणि बुधाष्टमी व्रतरी विधि। जिण दिन चांदणे पख आठिम बुधवार हुवै, तिण दिन औ व्रत सर्व व्रतां में प्रधान कहीजै। प्रभातै नदीरै विषै स्नान करि तर्पण करि पूर्वोक्त विधि सौं बुधरी पूजा करि, गोधूम रै आटे सु जुदो-जुदो नैवद्य करि ब्राह्मण नै पकवान करि भोजन दीजै। पहिली बुधाष्टमी मोदकां सु करणी, दूसरी बुधाष्टमी फीणियां सु करणी। तीजी घेवरां सु करणी। चौथी वड़ां सु करणी। पांचमी मांडा सु करणी। छठी सु हाळीयां सु करणी। सातमी मिश्री-घृत-युक्त सेवां री करणी। आठमी फल्लां सु करणी। ऊपर दक्षिणा यथाशक्ति देणी। इण अनुक्रम सौं बुधाष्टमी आठ करणी। सगळा भाई-भाई बंधु भेळा करि बीमावना-उपाख्यान

पास आकाश में (वह) चमकती हुई दिखाई देती है बुधाष्टमी के प्रभाव से। ऐसा श्री कृष्ण के मुह से सुनकर युधिष्ठिर जी कहते हैं—यह बुधाष्टमी बड़ी ही श्रेष्ठ है। हे कृष्ण इस व्रत का विधान आप मुझसे कहें। श्री कृष्ण बोले—हे युधिष्ठिर बुधाष्टमी के व्रत की विधि सुनो—जिसदिन शुक्लपक्ष आठम बुधवार हो उस दिन इस व्रत को जो सब व्रतों में प्रधान है, करना चाहिए। सुबह नदी पर जा स्नान तर्पण करना चाहिए। ऊपर बताई विधि से बुध की पूजा करने के बाद गेहूँ के आटे से अलग-अलग नैवेद्य कर, पकवान बनाकर ब्राह्मण को भोजन देना चाहिए।

पहली बुधाष्टमी लड्डुओं से करनी दूसरी बुधाष्टमी फीणियों से करनी चाहिए। तीसरी बुधाष्टमी घेवरों से करनी। चौथी बड़ों से करनी चाहिए। पांचवी मांडा से करनी चाहिए, छठी सुहालियों से करनी चाहिए, सातवी मिश्री और घी से युक्त (मिली हुई) सेवों से

भो ब्राह्मण रा मुख सौं सोमळीजै । जिणरै कथा न सुणीजै, इणरै जीमीजै नहीं । बुधरी पूजा करि एकोसणो करि आचमन करि वेदरा जाणणहार पंडित ब्राह्मण नै वस्त्र समेत कळश अनेक प्रकार रा फूल-फळ, धूप-दीप करि पीळा वसतरां सौं नैवद्य सु पूजा करि समर्पण करणो । मासे एक सोनैरी अथवा अधमासे री बुध री प्रतिमा करि पछै ब्राह्मण नै दीजै । जद व्रत पूरो हुवै तद आठ ब्राह्मणां नै भोजन कराय, आठ गाय आठ बाछै समेत वस्त्र अलंकार सौं सिणगार करि बहुत दूधरी देवाळ नवी इसी आठ गायां देणी । ब्राह्मण-ब्राह्मणी स-जोड़े नै जीमाय वसतर अलंकार पहिरावणी करि पछै इण मन्त्र सौं बुधरी मूर्ति समर्पण कीजै—

> बुधोऽयं प्रति गृह्णाति द्रव्यस्थोऽपि बुधः स्मृतः ।
> दीयते बुध रत्नेन बुध्यतांच बुधो मम ॥

करनी चाहिए । आठवीं पक्षों से करनी चाहिए । साथ ही दक्षिणा—यथा शक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार देनी चाहिए । इस क्रम से बुधाष्टमी आठ करनी चाहिए । इसमें भाई-बन्धुओं को इकट्ठे करके पर्व भोजन करवाना—ब्राह्मण के मुँह से कथा प्रीति सुननी

.. ।

जब तक यह कथा नहीं सुनी जाए—तब तक भोजन नहीं करना चाहिए । बुध की पूजा करके उपवास खोलकर, उद्यापन करके वेदों के जाननेवाले को वस्त्र-सहित कलश (और) अनेक-प्रकार के फल-फूल धूप-दीप सहित पीले-वस्त्र से विधिपूर्वक पूजा करके देना चाहिए । मासो अथवा आधा मासे की बुध की प्रतिमा (मूर्ति) ब्राह्मण को देना । जब व्रत समाप्त हो तो आठ-ब्राह्मणों को भोजन करवाकर, आठ गायें आठ बछड़ों सहित वस्त्रालंकारों से शृङ्गार करवाकर बहुत दूध देनेवाली ऐसी आठ गायें देनी चाहिए । ब्राह्मणी और

बुधः सौम्यस्तारा केयो राजपुत्र इलापतिः ।
कुमारो द्विजराजश्च पुरूरवस पिता ॥
दुर्गाणि दुरितं दुःखं नाशयित्वा बुधोमम ।
सौख्यं चिरं सौमनस्य करोतु शशिनन्दनः ॥१॥

इण विधि सु जिको बुधाष्टमी रो व्रत करे, पुरुष अथवा स्त्री तिको सात जन्म तांई राज्य पावे, उत्तम विद्या पावे, घर्‌मे घर मांहि धन-धान्य लक्ष्मी बहुत हुवे। जिका लुगाई इण व्रत नु करे तिका सुख-सोहाग पावे, रूप पावे पुत्र पोतरा बहुत संपदा पावे। दीरघ आव संसार रा भोग कौतुक-विलास भोगवे। इह लोक में सुख पावे—परलोक मांहि भली गति पावे; इन्द्र पद पावे। जितरे तांई आ सृष्टि है इतरे तांई भली सुख भोगवे। श्री कृष्ण जी कहे छे हे युधिष्ठिर म्हो प्रबन्ध में तोनु

ब्राह्मण को जोड़े सहित वस्त्र और अलंकार आदि पहिनवाकर फिर इस मन्त्र से बुध की मूर्ति समर्पण करना।

मन्त्र—बुधोय प्रति गृह्णाति द्रव्यरूपोपि बुधः स्वयम्।
दीयते बुध राजेन तुष्यतांच बुधो मम ॥
बुध सौम्य तार-केयो राज पुत्र इलापति।
कुमारो द्विजराजश्च पुरूरवस पिता ॥
दुर्गाणि दुरित दुःख नाशयित्वा बुधोमम ।
सौख्यं चिरं सौमनस्य करोतु शशिनंदन ॥

इस प्रकार से जो व्यक्ति भी बुधाष्टमी का व्रत करता है चाहे वह स्त्री हो और चाहे पुरुष —उसे सात-जन्म तक राज्य की प्राप्ति होती है। उसे अच्छी विद्या प्राप्त होती है, फिर, उसके घर में धन-धान्य लक्ष्मी की बहुत वृद्धि होती है। जो स्त्री इस व्रत को करे, उसे सुख-सुहाग मिले वही रूपवाली हो—बहुत से पुत्रों व पोतोंवाली व सम्पत्तिवाली

क्यौ। इण व्रत सु ब्रह्म हत्या रो करणवाळो, गो–हत्या रो करण वाळो, मद्यपानी, गुरु तल्प गामी इतरा पाप सर्व दूर हुवे। अथवा वाचा मन मारो कीयौ पाप इण व्रत सु दूर हुवे। आठुमी बुध संयुक्त चांदणे परवरी इण तरह सु पाणी समेत कुम्भ समेत जिको मानवी वेदरी जाणणहार ब्राह्मण नै मक्ती भक्ति सु देवै तिको पुरुष यमलोक कदे ही न देखै, स्वर्ग रा सुख भोगवै। इण कथा नै पढ़ै, सुणै तिको प्राणी यमलोक न देखै। हे युधिष्ठिर, सद्गति पावै।इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्री कृष्ण–युधिष्ठिर संवादे बुधाष्टमी व्रत कथा सम्पूर्ण।

हो। सभी प्रायु पाकर संसार के ऐश–प्राराम (वह) भोगता है। इस संसार में सुख को (उसे) प्राप्ति हो और परलोक में भी सुख भी (वह) प्राप्ति करे; इन्द्र का वह पद प्राप्त करे। जब तक यह सृष्टि है (संसार है) तब तक प्राणी सुख लाभ करता है। श्री कृष्ण जी कहते हैं—हे युधिष्ठिर, यह कथा मैंने तुम्हें कही है। इस व्रत से ब्रह्महत्या जैसा भयंकर पाप करने वाला गो–हत्यारा मद्यपान करने वाला गुरु की पत्नी के साथ गमन करनेवाला—इतने सभी पाप सब दूर होते हैं। मन वचन कर्म से किए गए सब पाप इस व्रत से दूर होते हैं। शुक्लपक्ष की बुधवार की अष्टमी को इस प्रकार जल से भरा कुम्भ का पात्र उसमें द्रव्य डाला हुआ हो—कोई व्यक्ति भक्ति सहित ऐसे ब्राह्मण को जो वेदों का जाननेवाला हो उसे दे तो वह पुरुष यमलोक कभी भी नहीं जावे और वह स्वर्ग का सुख लाभ करता है। इस कथा को जो प्राणी पढ़ता हो अथवा सुनता हो वह यमलोक को कभी भी प्राप्त न हो। हे युधिष्ठिर—वह सद्गति को प्राप्त करे।

१३—श्री अगस्त जी री कथा

श्री गणेशायनमः ॥ श्री अगस्त जी कथा लिख्यते । श्री कृष्ण जी तेतीस कोटि देवता सहित कुरुक्षेत्र आया । तब राजा युधिष्ठिर जी श्री कृष्ण ने पूछयो कुण विधि सू धर्म वधै जी, कुण विध सू धर्म घटै, सु कथा कहो । श्री कृष्णोवाच । राजा अगस्ति की कथा सुणयां धर्म की वृद्धि होइ—कथा सुणै नहीं तो दसवा अंस पुण्य व्रत कियो होइ सो दूरि होइ । तब राजा कह्यौ—श्री कृष्ण अगस्ति की कथा किसी विधि छै—अगस्त जी कुण को पुत्र छै कठै थानक छै । श्री कृष्ण जी कहै छै—एक वाता नामा दैत्य महादेव की तपस्या करी, बरस सहस्र तब रुद्र प्रसन्न हुवा । थारो नाम काई ? तब दैत्य कह्यो—महादेवजी कहै सोई नाम । तब महादेव जी कह्यौ—थारो नाम वातानामा दैत्य । ताके समीप

कथा श्री अगस्त जी की

श्रीगणेशायनमः । श्री अगस्त जी की कथा लिखते हैं—श्रीकृष्ण जी तैंतीस करोड़ देवताओं सहित कुरुक्षेत्र आए । तब राजा युधिष्ठिर जी ने श्री कृष्णजी से पूछा—कौनसी विधि से धर्म बढ़ता है—कौनसी विधि से धर्म घटता है—वह कथा कहें । श्री कृष्ण जी ने कहा—राजन् ! अगस्त जी की कथा सुनने से धर्म की वृद्धि होती है—कथा जो न सुने, तो उसके पुण्य और व्रत के दसवें अंश का नाश हो । तब राजा ने कहा—हे श्री कृष्ण जी अगस्त जी की कथा की विधि कैसी ? अगस्त जी किस के पुत्र हैं ? उनकी कथा कैसी है ? तब श्री कृष्ण जी कहते हैं—एक वाता नामक दैत्य ने महादेव जी की हजार वर्ष तक तपस्या की तब महादेव जी प्रसन्न हुए । तुम्हारा क्या नाम ? तब दैत्य ने उत्तर दिया—जो नाम महादेव जी कहें वही मेरा नाम । तब

की देही वर पायो। दैत्य घरि आयो। बहुत्यै कह्यो–महादेव जी मुनै वर दीयो। तब दैत्यणी कह्यो–क्या भली करसी। बुरी तौ थांकै बांटै आई ही छै। वर पाया भली करो तब वर को फल होई। तब दैत्य बहु नै कह्यो–बांडाळी, अैसी बात मु तै कही, क्यांसु रिखीसुरां नैं मारीस। तब दैत्यणी कह्यो–रिखीसुर गोदावरी नदीका तट तप करै छा। तठै दैत्य गयौ रिखीसुरासु कह्यो मोसे युद्ध करौ। रिखां कह्यो–थारा कुल सू युद्ध कर, म्हा रावजे हथयार खाक को कुरा छै। तदे कह्यो–मारसां थामें। तद रिखीसुर सब विश्वामित्र जी जमदग्न जी भारद्वाज जी कस्यप जी, गौतम जी वशिष्ट जी इतना रिखीसुर उठी जाता रह्या। एक बसिष्ट जी रह्या। ध्यान कर देखै तो महादेव जी वर दीयो छै 'ताळा वैं मीच छै' नाम को अमीतीर बणाय राखी। गोडा नीचे दे राखी। दैत्य आय लडे लागो। तब वशिष्ठ जी कह्यो–रूरू भाइ म्हारी

महादेव जी ने कहा—तुम्हारा नाम 'ताला मामा दैत्य'। ताला में मृत्यु इस देह से नहीं होने का वर पाया।

दैत्य घर आया। पत्नी से कहा—महादेव जी ने मुझे वर दिया है। तब दैत्यणी (राक्षस की पत्नी) ने कहा—क्या भलाई करोगे ? बुराई करना तो तुम्हारे हिस्से मे आई हुई है। वर पाकर भलाई करो तब वर का फल हो। तब दैत्य ने पत्नी से कहा—चंडालनी ! तुमने ऐसी बात कैसे कही ? क्या मैं ऋषियों को मारूँगा ? तब दैत्यणी ने कहा—ऋषि लोग गोदावरी के किनारे पर तपस्या करते हैं। दैत्य वहाँ गया—ऋषि लोगों से कहा—मुझ से युद्ध करो। ऋषि लोगों ने कहा—अपने कुल में युद्ध करो। हमारे पास राम की कृपा है (१) राम की स्तुति (२) राम सबका कृपा है। तब कहा—आपको मारूँगा। तब सब ऋषि विश्वामित्र जी जमदग्न जी भारद्वाज जी कस्यप जी गौतम जी वशिष्ठ जी इतने ऋषि लोग उठकर चले गए।

थारो साखी बुलाई, जो जीतै सो कहै जो। तब वैस्य रूख चढि बैठो रीयो। रिखीसुर नीचै सूं बाण में तीर की दीन्ही। वैस्य मूवो। वैस्यणी नै कही–थारो भरतार मारीयो। वैस्यणी कही भली हुई। रिखीस्वरां नै सतावै थो। आपणो कीयो पायो। तब वैस्यणी नै गर्भ रयो। तिण के पुत्र दोइ हुवा। शुक्र देवता वैस्या रो गुरु छै। सो नांव धरवा आयो। दोनों पुत्रां का नाम थरप्या। पहले को नाम इलवल दूसरा को नाम वातापी। तरुण दस का पुत्र हुवा। सिकार जाइ सभा में कहे लागा–म्हां सारीखो जोधा कोई और भी छै। तब वैस्या कही–बाप को तो वैर लीयो जाइ ही नहीं थे क्या जोधा हो। तब इलवल वातापी माता पूछी–म्हां को बाप कुणे मारियो। तू बताय, मीथर उन मारस्यां। माता कही–पुत्र ऋषिया री फौज मतो छेडो। बांके

एक ऋषि जी पर गये। ध्यान कर देखा तो महादेव जी ने वर दिया—(वाण अमर है)। वाण का तीर मनुष्य बनाकर रखा। नीचे से नीचे रखली। वैश्य आकर लड़ने लगा। तब ऋषि जी ने कहा—पेड़ पर चढ़ो तुम्हारा और मेरा साक्षी बना। जिसकी विजय होगी—वह बढ़ेगा। तब वैश्य ने पेड़ पर चढ़कर आवाज लगाई। ऋषि ने नीचे से वाण को तीर मारा। वैश्य मरा। वैश्यणी से कहा—तुम्हारे भरतार (पति) को मारा। वैश्यणी ने कहा अच्छा हुआ। ऋषि लोगों को सताया करता था। तब वैश्यणी को गर्भ रहा। उसके दो पुत्र हुए। शुक्र देवता दैत्यों का गुरु है। वह नाम रखने के लिए आया। दोनों पुत्रों का नाम निकाला। एक का नाम इलवल दूसरे का नाम वातापी। पुत्र दस वर्षों के हुए। शिकार को जाते एक सभा में कहने लगे—हमारे समान दूसरा कोई योद्धा है। तब दैत्यों ने कहा—पिता का तो बदला लिया भी नहीं जाता तुम क्या योद्धा हो? तब इलवल—वातापी ने माता से पूछा—हमारे पिता को किसने मारा? तू बता नहीं तो

पिता हजार बरस महादेव जी री पूजा करी। एक पग के पाणि ऊभो रह्यो तब वर दीयो। तब रिखीस्वर सताया। कह्यो, रिखि सुरां मारियो। तब पुत्रां दोनां आय कैलास ऊपरि तपस्या करी। नीची माथि करी ऊंचा पग किया। बरस हजार हुआ। तब महादेव जी बरदान के वास्ते पार्वती जी देखण मेल्हाई, कुण छै। तब पार्वती पूछ्यो थे, कुण छौ। इलवण वातापी कह्यो माताजी म्हे ताल नाम दैत्य रा पुत्र छां। पिता रे वैर के वास्ते वर मांगा छां। पार्वती जी आइ महादेव जी सौं कह्यो-तालनामा दैत्य का पुत्र छै। पिता के वैर वास्ते वर मांगै छै जी। महादेव जी वर दियो-जननी का गर्भ सैं नीसरै छै सो थांस्यै कोई जीतो नहीं। तब पार्वती कह्यो-जननी सूं सारी सृष्टि उपजै छै। देवता

तुम्हें मारेंगे। माता ने कहा—पुत्र पैदा करने का अच्छा काम किया। तुम्हारे पिता ने हजार वर्ष तक महादेव जी की पूजा की—एक पैर के सहारे खड़ा रहा—तब वर मिला। तब ऋषियों को सताया। कहा—'ऋषियों ने मारा'। तब दोनों ने कैलाश पर तपस्या की। सिर नीचा किया पैर ऊपर को किए। हजार वर्ष हुए। तब महादेव जी ने वरदान के लिए पार्वती को देखने को भेजी। कौन है? तब पार्वती ने पूछा—आप कौन हैं? इल्वल-वातापी ने कहा—माता जी हम ताल-दैत्य के पुत्र हैं। पिता के बैर के लिए वर मांगते हैं। पार्वती ने जाकर महादेव जी से कहा—ताल नाम के दैत्य के पुत्र हैं। पिता के बैर (बैर का बदला निकालने) के लिए वर मांगते हैं। महादेव जी ने वर दिया—माता के गर्भ से जो पैदा हो (जिससे) वह आपसे कभी जीत नहीं सके।

तब पार्वती ने कहा माता से तो सारी सृष्टि पैदा होती है देवता असुर, मनुष्य। तब पृथ्वी को (यह) मारेंगे। महादेव जी ने कहा—अब तो मैंने वर दे दिया है।

असुर, मनुष्य । सारी पृथ्वी ने मारसे । महादेव जी कयो—आप तो मैं वर दियो है । तब दैत्यां कही—म्हें सारी पृथ्वी जीतस्यां, ये आप ने म्हाने मारो तो मरां । महादेव जी कयो, हूं ही वर देवां, हूं ही मारूं नहीं । तब दोनों भाई गोदावरी नदी आया । गोदावरी सदा मेलो होय है । अठयासी हजार रिखीसुरां कस्यप जी सदा देवता सूधा आवता । वठै दोनों भाइयां कुटी बाध तुलसी वाडी रिखीसुर को रूप कीधो । संघ की संक्रान्त का बाईस दिन बाद है—आठ रह्या, वठे मेलो होइ है । वठै रिखिसुर आवे है, सो दोनों भायों में एक तो मीठो होइ । [वातापी] दूसरो इल्वल मीठा ने रांधे । रिखिसुर ने नेतो । म्हका पिता को श्राद्ध है—तब रीखीसुर जीमावे । तब पंचामृत पुरुसै, मीठा को मांस पुरुसै । तब वाका—तब आसी वचन दीधो । तब सांरा का पेट फोड़ मीठो नीसरीयो । इणभांत

दैत्यों ने तब कहा—हम तमाम पृथ्वी को जीतेंगे—आप आकर मारेंगे तभी मरेंगे । महादेव जी ने कहा—मैं ही वरदूँ मैं मारता नहीं । तब दोनों भाई गोदावरी-नदी पर आये । गोदावरी में हमेशा मेला होता है । अट्ठासी हजार ऋषि लोग कश्यप की सहित सदा आते । वहाँ दोनों भाइयों ने कुटिया बनाकर तुलसी उगाई, ऋषियों का रूप बनाया । सिंह की संक्रान्ति के बाईस दिन बीतते हैं—अठारह रहते हैं, तब (वह) मेला होता है । वहाँ ऋषि लोग आते हैं—वहाँ दोनों भाइयों में से एक तो मिठाई बनाता है (वातापी) । दूसरा मिठाई को तैयार करता है । ऋषि लोगों को निमन्त्रित करते हैं । हमारे पिता का श्राद्ध है—तब ऋषि लोगों को भोजन करवाते हैं । तब पंचामृत परोसते हैं—मीठा मांस परोसते हैं । तब (ऋषियों ने) खाकर वाला आशीष वचन कहे । तब उनका पेट फोड़कर मीठा (बाहिर) निकला । इस प्रकार दस हजार ऋषियों को मारा । तब गोदावरी (नदी के तट) पर

रिक्षीमुर दस हजार मारिया । तब । तब गोतुकादड़ी जी श्रीकृष्णजी आया । तब बृहस्पति देवता नैं श्री कृष्ण जी पूछयो को रिक्षीमुर पद भाषा कुण वास्तै । बृहस्पति जी कही–वाक नाम दैत्य का पुत्र पिता के बैर के वास्ते महादेव को तपस्या करी । वर दियो— माता की योनि स्यौ निकस्ये, उपजे छे यो थांसो मत जीयो । सो हजार दस रिक्षीमुर मारिया । तब श्री कृष्ण जी कही–महादेव जी भस्मा दैत्य नैं वर दियो छो । ताही के माथे हाथ धरै सोई भस्म होइसी । तब दैत्य महादेव के माथे हाथ धरवा दौड्यो । महादेव जी भागा । तब नारद जी श्री कृष्ण नैं कही–महादेव नैं संकट छै । तब कृष्ण जी मोहनी रूप पार्वती जी को कीयो । तब दैत्य मोह्यो । कही थार चालु । थारे ही वास्तै महादेव को झार कीधी छै जी । तब श्री कृष्ण जी पार्वती का रूप कीया । कही तू थारे माथे हाथ देय के नाचे तो थारे लारे चालु । तब

श्री कृष्ण आये तब बृहस्पति देवता से श्रीकृष्णजी ने पूछा—ऋषि लोग सख्या मे कम आए–क्या कारण है) बृहस्पति ने कहा वास नाम के दैत्य पुत्र ने पिता के बैर के लिए महादेव जी की तपस्या की । महादेवजी ने वर दिया—माता की योनि को निकलेगा पैदा होता है वह तुम से नहीं जीत सकता । अत: (उसने) दस हजार ऋषि लोगो को मारा । श्री कृष्ण जी ने कहा – महादेव जी ने भस्मासुर दैत्य को वर दिया था । जिसके सिर पर वह हाथ रखे वही भस्म हो जाएगा । तब दैत्य महादेव जी के ही सिर पर हाथ रखने को दौड़ा । महादेव जी भागे । तब नारद जी ने श्री कृष्ण जी से कहा—महादेव जी को संकट है । तब श्री कृष्ण जी ने मोहनी कर मैं पार्वती का रूप धारण किया । तब दैत्य को मोहित किया । कहा तुम्हारे साथ चलती हूं । तुम्हारे ही लिये महादेव जी ने पीछे आने को कहा है । तब श्री कृष्ण जी ने पार्वती जी का रूप बनाया । कहा—तू अपने सिर पर हाथ धरकर नाचे तो

दैत्य माथे हाथ धर नै नाचण लागो । भस्म हुवो । सु महादेव जी ऐसा वर देवै छै । तब सारा रिखीसुर नै कृष्ण कही-पे मित्रा, वरुण रिखीसुर की आराध करो । तब सारा रिखीसुर देवता, मित्र, वरुण की आराधना कीयो । मित्रा वरुण प्रसन्न हुवो । तब देवता कही-ताल नाम दैत्य का पुत्र पिता के वैर के वास्तै रिखीसुर हजार दस मारया । सु थे सहाय करो । मित्रा, वरुण कुंभ थाप, ऊपरि नालेर राखि माही कलस का कुंभ मेल्या । तिही कलस माहि अगस्ति जी नीसरया आगासी माथो पाताल पग । ऐसो अगस्ति ऊभो होइ वन में आयो । तब रिखीसुर कही मित्रा वरुण जो आ, रिखा को काम करि । अगस्ति जी कही मनै ठिकाणो बतावो । कन्या रिखीसुर देसी तो दैत्य मारोस । तब श्री कृष्ण जी लोपा मुद्रा रिखासर की बेटी दीनी । लंका के द्वारि पांचमे पर । आयामे आयो-कन्या थारी सु णे नहीं, तिही

तुम्हारे साथ चलूं । तब दैत्य सिर पर हाथ धर कर नाचने लगा । भस्म हो गया । अतः महादेव जी ऐसे वर देते हैं । तब तमाम ऋषि लोगों से कृष्ण जी ने कहा—आप सूर्य वरुण ऋषियों की आराधना करें । तब ऋषि लोगों ने देवताओं सूर्य वरुण के यहां जाकर आराधना की । सूर्य और वरुण प्रसन्न हुए । तब देवताओं ने कहा—ताल नाम दैत्य के पुत्र ने पिता के वैर के लिये दस हजार ऋषियों को मारा है । अब आप (हमारी) रक्षा करें सूर्य और वरुण । घड़ा लेकर ऊपर नारियल रख उसमें काष्ठ के कुम्भ रखे । इस कलश में से अगस्त जी निकले—आकाश की ओर सिर,पाताल की ओर उनके पैर । ऐसा अगस्त जी खड़ा होकर वन की ओर चला । तब ऋषियों ने कहा—हे सूर्य और वरुण आओ ऋषियों का काम करो । अगस्त जी ने कहा—मुझे ठिकाना बताएं । मुझे ऋषि लोग कन्या देंगे, तो दैत्य को मारूंगा । तब श्री कृष्ण जी ने लोपामुद्रा ऋषि की पुत्री दी । लंका के द्वार पर तुम्हारा

को दशवांश धर्म तू लै । जो क्या मुझे लिहो मैं फल्ल है । तब गोदावरी की, श्री अगस्तिजी आया । तब इल्वल वातापी देख्यो म्हां का पिता को वैरा आयो । इहनै मारां । तब आय डंडोत कीयो-बै म्हाके भोजन करौ । तब अगस्ति की कह्यो, मणो खाउं छू । आपसौं नहीं । तब,अगस्तिजी बैठो-पातलो कीन्हीं । तब अगस्तिजी कह्यो-पातली मैं भावौं नहीं । तब एही को भाडो कीयो-मण हजार बीस मावै, तब वह को भोजन करावत हां । सो सारो पुरुसै मण सै पांच रांधो छै तिहको इल्वले सो ग्रास कीयो । तब इल्वल कही सूमोरूतु,भाई श्री पुलस्त्युयो । उदर का तो पेट फाडि निसरै छै । अगस्ति का पेट में हुंकारो कीयो । तब अगस्ति पेट ऊपरि हाथ फेरि भरम कीयो । तब इल्वल भागौ । अगस्ति गेल करी । सुमेर परबत मैं गयो । तब सुमेर ऊपर जाइय राख्यो । तब अगस्तिजी यों कही म्हारा चोर बारै सनै आयो छै, तू

भर । खाने के लिये बैठो—क्या तुम्हारी जो न मुझे उसके धर्म का दसवां हिस्सा तुम लेओ । जो क्या मुझे उसे फल देना । तब श्री अगस्त जी गोदावरी पर आये । तब इल्वल—वातापी ने देखा हमारे पिता का शत्रु आया इसे मारें । तब आकर दंडवत् (नमस्कार-प्रणाम) किया —आप हमारे यहां भोजन करें । तब अगस्त जी ने कहा—मैं अधिक खाता हूँ अतः नहीं खा सकूँ गा । तब अगस्त जी बैठे — पत्तल दी गई । तब अगस्त जी ने कहा —मैं पत्तल से नहीं खाय सकता। तब एही से एक गड्ढा किया—उसमें मण-हजार बीस (बीज) समावें । जब यहाँ (इटवर) भोजन कराते हैं । इसलिए सारा पुरसा-पाँच सौ मण रांधा है अथवा छोटा-सा ग्रास किया । तब इल्वल ने कहा—पुत्र हो जाइये भाई को भी परोस दिया । औरों के तो पेट फाड़कर निकलता है । अगस्त जी ने पेट में हुँकारा (हाँ भरना) किया । तब अगस्त जी ने पेट पर हाथ फेर कर भस्म किया । तब

काढ़ दे। सुमेर कह्यो—तू म्हारो कहा करसी। तब अगस्ति कह्यो—पछतावैलो। मानी नहीं। चिटी आंगळी पर्वत ऊपर मेल्हदी चौसठ हजार भोमी में गडि गयो। पगों पड़ै मुनै खायो, मती गळावो। तब चोर भागी—नरबदा कनै गयो, नर्बदा की पार उतार पछोड़ राख्यो। अगस्ति जी कह्यो नरबदा, चोर आयो, तू काढ़ दे। नरबदा मानी नहीं। तब अगस्ति जी एकी चळू पानी सोख लियो। रेत उड़ै लागो। नर्बदा पगां पड़ी। कई चोर्ने मेड् आयो नहीं। तब मरजाद में राखी। चोर भाग समुद्र में गयो। समुद्र पछाड़ राख्यो—गाजै लागो। अगस्तजी कह्यो—समुद्र चोर काढ़ दे। समुद्र कह्यो—कदे सरणे आया दीजै छै अगस्त जी कह्यो—पछतावोला। समुद्र कह्यो—म्हाको के आयु करोला। तब अगस्ति जी तीर बैठा आचमन कीयो। दोय आचमन किया-

---

हमारा भागा। अगस्त जी ने पीछा किया। सुमेर पर्वत पर गया। तब सुमेर पर्वत ने छुपाकर रखा। तब अगस्त जी ने ऐसा कहा—मेरा चोर तुम्हारे पास आया है तू निकालकर दे। सुमेर ने उत्तर दिया—तुम मेरा क्या कर लोगे? तब अगस्त जी ने कहा—पछताओगे! (उसने) माना नहीं। कनिष्ठा अंगुली पर्वत के ऊपर रखी चौसठ-हजार भूमि में (नीचे की ओर) धंस गया।

पांव पड़ता है—मुझे सारा ही मत गाड़ो। तब चोर भागा नरबदा जी के पास गया। नरबदाजी ने पार उतार कर छिपा रखा। अगस्त जी ने कहा—नरबदा चोर आया है तू निकाल दे। नरबदा मानी नहीं। तब अगस्त जी ने एक चुल्लू—पानी सोख लिया। धूल उड़ने लगी। नरबदा पांव पड़ी—मैंने आपका भर आया नहीं। इसलिये मैं अपनी सीमा में रही। चोर भागकर समुद्र में गया। समुद्र ने छिपा कर रखा—गर्जने लगा। अगस्त जी ने कहा—समुद्र! चोर को निकाल दे। समुद्र ने कहा—शरण में आया भी नहीं दिया जाता है। अगस्त जी

तीसरो आचमन कियो पांणी रह्यो नहीं। तब समुद्र पगां पड़ियो— गई बाहरी मेद माण्यो नहीं जीव की दया करो। तब अगस्तजी कही—समुद्र रीतो किसी भांत भरे ! तब अंग अंग महा पसेव को नदी नौ मे निवासी सौराय चकाय समुद्र भरयौ। तब से खार समुद्र हुवो। चोर भांति समुद्र पियो। होय फांट करि अगस्त जी आप गयो सीक करतां छोटी-सी कमी मुख माहा गिरिपड़ी तिही की मारवी हुई। बड़ी पड़ें तो पेट फाड़ नीसरे, छोटी पड़ी तोही अपुठी मुखड़े माहोइ नीसरै। ऐसी विधि अगस्त्य रिखी सुरां की सहाय कीवी। श्री कृष्ण जी कहे छे। राजा ऐसी विधि अगस्त जी की कथा छे जोणे तिही को धर्म वधे। न सुणे तिही को धर्म घटे—अश्वमेध जग्य को फल होइ। कथा कहि पाछे जल सौं अर्घ दीजे।

ने कहा—पछतावोगे। समुद्र ने कहा—मेरा तुम क्या कर लोगे ? तब अगस्त जी किनारे पर बैठे—आचमन किया। दो आचमन किये तीसरा आचमन किया पानी रहा भी नहीं। तब समुद्र पैरों पड़ा मैंने आपका भेद समझा नहीं मुझे माफ़ करें। तब अगस्त जी ने कहा— खाली समुद्र किस प्रकार भरा जा सकता है। तब अङ्ग—अङ्ग में से पेशाब की नव सौ नदियाँ निकाल—खार चला समुद्र भरा। तब से समुद्र खारा हुआ। समुद्र ने चोर को लाकर दिया दो टुकड़े कर अगस्त जी खा गये। छींक करते छोटी सी कमी मुँह से गिरी उसकी मछली हुई। बड़ी गिरे तो पेट फाड़कर निकले छोटी गिरे तो भी फिर मुँह में से होकर निकले। इस प्रकार से अगस्त जी ने रखी—देवताओं की रक्षा की। श्रीकृष्ण जी कहते हैं—राजा इस प्रकार अगस्त जी की कथा है। जो सुने उसके धर्म की वृद्धि हो। न सुने उसका धर्म घटे। अश्वमेध यज्ञ का फल हो। कथा कहकर फिर जल से अर्घ देना।

उक्तमंत्र—

वातापी भक्षितोयेन, पीतोयेन महोदधि ।
समुद्र सोषितोयेन, गृहाण अर्घमोस्तुते ॥१॥

कलश माटी को थापीजै, नीचै आरवा मेलीजै । ऊपरे नाळेर ऊपरे मेलीजै । सावी मुग्यो पञ्चरत्न नाळेर में राखीजै । आम्रसिम फूल मेलीजै । दरखणा सोपारी मेलीजै । पूरी हुई तब ब्राह्मणां नां सीधो कलस नाळेर दरखणा दीजै । जो थावै तिही नें अगस्ति फल देवै । घड़ी च्यार अथवा दोय पाछली रात्रि रहे तब कहीजै तो पुण्य घणो है कहे तैने पुण्य फल निश्चय अठाय होय । सुणे तिही नैं फल घणो होई । पवि हाथ मांहे तिहि से सुणे तिही नैं फल घणी होई, जिम ब्राह्मण को आशीर्वाद होय ।

उक्त मंत्र—

वातापी भक्षितो येन पीतो येन महोदधिः ।
समुद्र शोषितो येन गृहाण अर्घमोस्तुते ॥

मट्टी का कलश स्थापन करना (उसके) नीचे अक्षत रखना । अच्छा नारेल उसके ऊपर रखना । मोती मूंगियें पञ्चरत्न नारेल में रखना । अशोकाशिका के फूल रखना । दक्षिणा और सुपारी रखना । (कथा) पूरी होने पर ब्राह्मणों को सीधा कलश नारियल दक्षिणा देना । जो पढ़े उसे अगस्त्य की फल दें । घड़ी चार अथवा दो—पीछे की रात्रि रहे तब पढ़े—तो पुण्य बहुत हो—पढ़े उसे पुण्य अक्षय निश्चय (अर्थात् निश्चित ही) हो । सुने उसे फल बहुत हो । हाथ से थाली से (संकल्प से) उससे सुनने वाले को फल अधिक हो ऐसा ब्राह्मणों का आशीर्वाद है ।

१४—अथ चौथ मासती री कथा

उज्जैण नामा एक नगरी जठै अरिमर्दन राजा राज्य करै है। तिण के नगर में देवसम ब्राह्मण रहै। ऊ ब्राह्मण बहुत धनवंत, लिछमी रो पार कोई नहीं। उण ब्राह्मण के अस्त्री हुती सो मृत पामी। तिण के कन्या एक हुंती सो जीवती रही। ब्राह्मण और विवाह कियो उणके एक कन्या भई। ब्राह्मण दोनूं कन्या नै पाळै—दोनूं ई वर प्राप्त हुई। ब्राह्मण कन्या रो पाण ग्रहण रो आरंभ कियो दोनूं ई जान साथै आई। पाण ग्रहण करायो। माट भरता साथै एक माट में कांणा पत्थर छोडा भरिया। जिणरी माता मर गई थी जिणरै मांट मांहि भरिया। माट नै राजवा कन्या दीठी। वह कन्या मन में विचारीज हूं अबू ही कइस्यू तो बाप इण नू दुख देसी। तिण सू विचार कर किण ही नू नहीं कह्यो। जान नै ब्राह्मण सीख दीधी। कन्या मन में विचार करै

कथा चौथ माता की

उज्जैन नामक एक नगरी जहा अरिमर्दन राजा राज्य करता है। उसके नगर मे देवसम नामक एक ब्राह्मण रहता है। वह ब्राह्मण बड़ा ही धनवान लक्ष्मी का पार नही (उसके)। उस ब्राह्मण की स्त्री थी वह मृत्यु को प्राप्त हुई। उसके एक कन्या थी वह जिन्दी रही। ब्राह्मण ने विवाह दूसरा किया (दुबारा किया)—उस स्त्री से एक कन्या हुई। ब्राह्मण दोनो ही कन्याओ को पालता है—दोनों ही 'वर-प्राप्त के योग्य हो गयी। ब्राह्मण ने कन्याओ का विवाह प्रारम्भ किया—दोनो की जान (बरात) एक साथ आई। उनका विवाह किया। माट' (मिट्टी का एक बड़ा बरतन) को भरते समय एक माट मे कच्चे पत्थर और लकड़ी के छिलके भर दिए। वह उस 'माट' मे भरे गये जिस कन्या की माता मर गई थी।

है—इण सासरै में ब्राह्मणां में म्हारो काम सिध-होसी होसी। कन्या मन में दुचिती करण लागी। तितरै एक नदी-खिप्रावती आवै कूल भाँत-भाँत, कंवल फूल रह्या। उठै निरमल जल भर रह्यो है। अपछरा रो रथ पड़ियो दीठो। ब्राह्मणी मन में विचारियो के देव मूरत रमा दीसे है। ब्राह्मणी अपछरा बैठी उठै आय ऊभी रही। पूछियो, तुमें कोण देसरी राज कन्या हो। गंधर्व कन्या, नाग-कन्या, यक्ष किन्नर, देव अपछरा हो—म्हानूं कहो-खबर-द्यो। तब देव कन्या बोली हे ब्राह्मणी, म्हे इन्द्रलोक सूं आई इन्द्र री अपछरा हां। म्हारे आज चोथ माता रो व्रत है, सो म्हे आज चोथ-माता री पूजा करण वास्ते, इण सरोवर आई हां। सो अठै चौथ रो व्रत करस्यां-मन्द-मास; समेत पूजा करस्यां। जिण सूं देवी बहुत परसाव होसी मनवांछित सिध होवै। तद ब्राह्मणी मन में सोच करण लागी—म्हारो मन कै

मार्ग के अन्दर रहते समय कन्या ने यह सब देखा। तब कन्या ने मन में विचारा यदि कुछ कहूँगी तो पिता रहे (दूसरी माता को) कह देगा। ऐसा विचार कर किसी से भी नहीं कहा।

ब्राह्मण ने बरात की विदाई दी। कन्या मन में विचार करती है—मेरी ससुराल में ब्राह्मण-समाज में निश्चय ही मेरी हँसी होगी। कन्या मन में चिन्ता करने लगी। इतने ही में नदी खिप्रावती आ गई। उसके किनारे पर तरह-तरह के पेड़ और कमल फूल रहे हैं। वहाँ निर्मल जल भरा हुआ है। वहाँ अप्सरा का रथ खड़ा देखा। ब्राह्मणी ने सोचा—यह देवमूर्ति रम्भा दिखाई देती है। जहाँ अप्सरा बैठी हुई थी ब्राह्मणी भी वहीं जाकर खड़ी हो गई। पूछा—तुम कौन देश की कन्या हो? गन्धर्व कन्या नाग कन्या यक्ष किन्नर, देव अथवा अप्सरा हो—मुझे बतायें मुझे उत्तर दें।

म्हू चौथ माता करै तौ बरत हूं म्हारू । जद अपछरा बोली-
हे बांमणी तू बरत म्हारू-चौथ माता थारी मन-कांमना सिद्ध
करसी । मद-मांस समेत पूजा करसी तोनू बहुत राजी होसी ।
बरत बांमणी संभायो । आंपणें डेरें आई । आगी माट मांहें पयु
मेवा मिष्ठान भाँत-भाँत रा होय गया । ब्राह्मणी नै तुरंत चौथरो
परचो पायो । बांमणी हरसवंत हुई । उठासू घरे आई । अबे
हमेस, चौथ आवै तद बरत करै । मद आध सेर, मांस अधसेर
आंण व्यंजन समीचीन कर श्री मैरवी चौथ नै पूजे । धूप करै ।
दीप जोति कर पाठ आगे करै, मीम्ही ग्रोव चाढ़ै अक्षत्र चढ़ावै,
मंगल गीत गावै, कथा वार्ता सुणै- बचावै ।

ऐसी तरै ब्राह्मणी बरत करै, माता चौथ री सेवा करै
पछे हरियै गोबर री गुहली दिराय स्नान कर, कुंकु चाढ़णां ।

तब देव कन्या बोली—हे ब्राह्मणी मैं इन्द्रलोक से आई हूँ—इन्द्र
की अप्सरा हूँ । मेरे आज चौथ-माता का व्रत है—अतः मैं चौथ-माता
की पूजा करने के लिए इस तालाब पर आई हूँ । यहाँ चौथ का व्रत
करूंगी—मद मांस सहित पूजा करूंगी । इससे देवी बहुत से वर को
देने वाली होगी और मनोकामनाएँ सिद्ध होंगी । तब ब्राह्मणी मन में
विचार करने लगी—मैं भी ऐसा ही सोचती यदि चौथ-माता की कृपा
रहे तो मैं भी इस व्रत का नियम पकड़ लूं । इस पर अप्सरा बोली—
हे ब्राह्मणी तू भी व्रत करने का संकल्प करले चौथ माता तुम्हारी
मनोकामना सिद्ध करेंगी । मद-मांस सहित यदि पूजा करोगी तो तुमसे
(वे) प्रसन्न होंगी ।

ब्राह्मणी ने व्रत का निश्चय किया । अपने स्थान पर आई ।
(आकर देखा) 'माट' के भीतर तरह-तरह के फल एवं मिठाईयाँ बन

करने लोगो–गुरु, पिरत निजर आयो । तदपूत बामणी रै पगे लागा, आपणे कोटवाल कनै पाछा आया कह्यो—बांमण झूठ कहै है । बात खिलाफ सब झूठ है । कोटवाल बांमण नै दूर कियो बामणी नै नमस्कार कियो, सम्मान कर घर मैं सीख दीवी । बामणी घर आई, पूजा कीवी आप पिण प्रसाद लियो । इमैं बामणी वरत करै पण मद मांस न चढावै । य करतां बरस पांच सात व्हो गुरु सू करिया । चौथ माता बैराजी हुई ।

इमैं एक दिन राजा रो कुंवर बठा बामणी रै सुसरे रै घरे आयो । पण न हाय कुंवर नै ऊंचो कियो । तदुपरान्त प्राण छूटा, कुंवर हाथां मांहि मृत पायो । इवा बात राजा नै ठीक पुगती । राजा कह्यो–ब्राह्मण आयो है । ब्राह्मण नै बुलायनो, नहीतर कुंवर जीवतो हुवै । तद बामणो, बांमणी दोनूं ई माता चौथ रै

चर्चा आमन्त्रित करने के बीच आदि माया करती । इस प्रकार व्रत करते बारह वर्ष होगये । मद्य–मांस लाते बहू के देवर और जेठ ने (चढे) देखी । पांच–सात बार इस विषय की चर्चा हुई ।

एक दिन ब्राह्मणी मद्य–मांस लेकर आती है । कुटुम्ब के आदमी ने कोतवाल को और सिपाही को ब्राह्मण के साथ भेजे । वे लोग ब्राह्मणी से आकर मिले । ब्राह्मणी मन में भय खाने लगी । इतने में चौथ–माता का ध्यान किया । चौथ माता ने उस समय कहा—'डरो मत' ।

कोतवाल और प्यादा–सिपाही ने पूछा—'ब्राह्मणी तुम्हारे पास क्या है ? ब्राह्मणी ने उनसे कहा—पुष्प और माता चौथ के भोग लगाने के लिए है । और तो कुछ भी नहीं है । तब ब्राह्मण ने कहा—झूठ बोलती है—असत्य वचन कहती है । सरकारी प्यादे–सिपाही ने कपड़ा दूर करके देखा । तो (उसे) पुष्प ही नजर आया । तब दूत ब्राह्मणी के पांवों पड़ा । उसने अपने कोटवाल के पास वापिस आकर कहा—ब्राह्मण झूठ कहता

रैयांस में बैठा, कुंवर उठै पोढ़ियो। ध्यान माता चौथ रो कर रह्या छै। ध्यान करतां पुहर क व्यतीत भया। आधी रात हुई तिररै माता चौथ च्यार हस्त सूं आय दरसण दियो। बांमण-बांमणी पगै लागा। माता कह्यो-थै क्यूं आवाहन कियो ? बांमणी बोली म्हांमें बहुत संकट पड़ियो, सो संकट मांजो। जद माता बोली-तैं बांमणी मद-मांस क्यूं टाळियो हूं थारैसी सामग्री हुती। पण तौमें बड़ो खून पड़ियो-पण-मद-मांस क्यूं चढ़ायो कर। बांमणी कह्यो-हे माता, तोनूं चौथे—मासे मांय चढ़ासूं तूं मांहरो संकट भांजा। तो थाहिरी मांहरो संकट कुण कटे। तूं भवानी संकट री मांजणहार छै। इतरी सुण भवानी बोली तूं इण कुंवर री मारणी रावै है अमृत ले आऊं। भवानी शिवजी कनै कैलास परबत गई। शिव भवानी नै उठ आदर

है। इसके विरुद्ध सारी बातें झूठी हैं। कोटवालने ब्राह्मण को एक ओर किया—ब्राह्मणी को नमस्कार कर उसे सम्मान सहित घर को प्रस्थान की।

ब्राह्मणी घर आई उसने पूजा की—और फिर स्वयं प्रसाद लिया। अब ब्राह्मणी-व्रत तो करती है लेकिन (चौथमाता को) मद-मांस नहीं चढ़ाती है। इस प्रकार करते-करते पांच सात वर्ष सुख (प्रसाद लगाकर) पूजा करती रही। चौथ-माता इस प्रकार नाराज होगई।

अब एक दिन राजा का कुंवर उस ब्राह्मणी के ससुर के घर आया। उस ब्राह्मण ने (प्रेम करने के लिए) कुंवर को ऊपर पठाया। उसी समय उसके प्राण छूट गए—कुंवर हाथों में ही मर गया। यह बात ठीक इसी प्रकार राजा के पास पहुंची। राजा ने कहा—ब्राह्मण दोषी है। या तो कुंवर को ब्राह्मण जिलावे अन्यथा उसे बनाविया जाय। तब ब्राह्मण और ब्राह्मणी दोनों ही माता-चौथ के मन्दिर में जा बैठे। कुंवर को वहीं सुलाया गया। माता का ध्यान करते एक पहर व्यतीत

कियो कह्यो-भवांनी, क्यूं आई ? तद चौथ माता बोल नै कह्यो, म्हारै सेवक में संकट पड़ियो सो अमृत री कूंपी द्यो, ज्यूं हूं संकट काटूं । तरै शिव जी कहै-चन्द्रमा कनै जाय, तोनूं अमृत देसी । माता चन्द्रमा कनै आई । चन्द्रमा उठनै नमस्कार कियो पूछियो हे भवांनी आज धन-भाग तूं आई, कांम आई सो कहो । तरै माता कह्यो-चन्द्रमा मोनूं अमृत री कूंपी दे, ज्यूं हूं म्हारै सेवक री संकट काटूं । तरै चन्द्रमा कह्यो-चौथ म्हारी बरत में सीर करै तो अमृत द्यूं । माता कह्यो-चन्द्रमा च्यार घड़ी चौथ रै दिन रात बाकी, तद चंद्रमा ऊगै तरै बरत हुसी । च्यार घड़ी री थारी बरत है । तरै चन्द्रमा कह्यो भला माता गणेश कनै रास, ज्यूं अमृत ल्यावां । चन्द्रमा चौथ माता दोनूं ई गणेश कनै आया । गणेश उठनै ऊभो हुवो । आज ये कठाई आया, माता

होवेंगे । आधी रात हुई तब माता चौथ ने चार-भुजा धारण कर दर्शन दिए । ब्राह्मण और ब्राह्मणी पैर पड़े । माता ने कहा—आप लोगों ने मुझे क्यों निमन्त्रित किया ? ब्राह्मणी ने कहा—हम में बड़ा संकट आ पड़ा है हमारे संकट को आप काटें । तब माता ने उत्तर दिया—हे ब्राह्मणी तुमने मद-मांस सेवा में चढ़ाना क्यों बन्द कर दिया ? मैं इसे अपने आप समझ लेती । आप लोगों पर संकट आया है—मद-मांस तो थोड़ा-बहुत प्रसाद-रूप में चढ़ाया ही कर । ब्राह्मणी ने कहा—हे माता मैं आपको गुड़-मधु ने आकर चढ़ाऊंगी—आप हमारा संकट काटें । आपके बिना हमारा संकट कौन काटे ? हे भवानी आप संकट को दूर करने वाली हैं ।

इतना सुन भवानी बोली—तू इस कुंवर की निगरानी रखते रहना—मैं अमृत लेकर आती हूं ।

भवानी शिवजी के पास कैलाश-पर्वत पर गई । शिव ने उठकर भवानी को आदर-सत्कार किया । कहा—हे भवानी ! कैसे आना हुआ ? तब चौथ माता ने बोल कर कहा—मेरे भक्त पर संकट पड़ा

कह्यो गणेश पां कनै अमृत है, सो म्हांनै दी । तद कह्यो, माता थ्यू ही एक थो म्हारै वरत में म्हांनूं भेळो ! तरै माता कह्यो म्हारै साथै थांनूं पूजसी । तरै गणेश अमृत दियो । माता चौथ अमृत लेने बांमणी कनै आय बांमणी नै अमृत दियो । जिकै कह्यो- दिवे तू बांमणी छांटी मांस थ्यू कुंवर उठ ऊभो हुवै । बामण उठ मनविणा कीनी, अमृत री अरदासियो करने लियो । धूप खेव, छांटो नांखियो । राजा री कुंवर उठ ऊभो हुवो । देवी चौथ रै पगे लागो । बांमणी माता रै पगे लागी । माता बामणी नै कह्यो, इ

है—अब अमृत का कृप्या आप दें । जिससे उसका संकट दूर कर सकूं । तब विनायकी ने कहा—आप चन्द्रमा के पास जायें । (वह) आपको अमृत देगा । माता चन्द्रमा के पास आई । चन्द्रमा ने उठकर नमस्कार किया । कहा—हे भवानी ! आज हमारे अहोभाग्य हैं जो आप पधारी हैं । किस काम के लिए आप आई हैं कहें । तब माता ने कहा—हे चन्द्रमा मुझे अमृत का कृप्या दें जिससे मैं अपने सेवक का दुःख दूर करूं । तब चन्द्रमा ने कहा—हे चौथ-माता आप यदि अपने व्रत में मेरा भी हिस्सा रखें तो मैं आपको अमृत दे सकता हूँ । माता ने कहा—चार पहर रात्रि बीतने पर जब तुम उदय होवे तभी मेरा व्रत पूर्ण होगा समझा जायगा । इस पर चन्द्रमा ने कहा अच्छा (बहुत ठीक) माता अब आप गणेश के पास जावें वहीं से अमृत ले आवें । चन्द्रमा और चौथ-माता दोनों ही गणेश के पास आए । गणेश उन्हें देखकर खड़ा होगया । आज आपने पधार कर बड़ी कृपा की । माता (आने का कारण) कहिए ? गणेश तुम्हारे पास अमृत है सो हमें देवो । तब कहा माता तुम्हारे किसी एक व्रत में तो मुझे भी साथ रखें । माता ने कहा—मेरे साथ तुम्हें भी (लोग) पूजेंगे । तब गणेश ने अमृत दिया ।

बामणी ! म्हारी पूजा करती थाळ मत राखै थारी संकट हूं मात स्यूं माता पछै आपणी धाम नूं मुकाम गई, राजा री कुंवर उठ आपणे घरे आयौ। राजा प्रभात री बांमणी रै पगे लागो। बांमणी चौथ रै वरत री बात कही। राजा बांमणी रै मनरी कही। राजा पिण चौथ रो व्रत आदरियो। चौथ री वरत बांमणी संसार में चलायौ। आगे वरत गुपत करता। देवता इन्द्र लोक में वरत करै है। चौथ रा वरत करै है जिणने चालू ई लूट आछी करी

माता चौथ अमृत लेकर ब्राह्मणी के पास आई—आकर अमृत ब्राह्मणी को दिया। उसे (ब्राह्मणी को) कहा—हे ब्राह्मणी तुम अब इस पर (मरे हुए राजकुमार पर) पानी के छींटे डालो—कुंवर अवश्य उठकर खड़ा हो जायगा। ब्राह्मण ने उठकर (चौथ माता की) परिक्रमा की और अमृत का पात्र अपने पास लेलिया। धूप आदि करके पानी का छींटा देता—राजा का कुंवर उठकर खड़ा होगया।

ब्राह्मणी माता के पैरो पड़ी। माता ने ब्राह्मणी से कहा—हे ब्राह्मणी ! मेरा पूजा करते समय किसी प्रकार की (पूजा में) कमी मत आने देना। तुम्हारा संकट मैं दूर करूंगी। माता इसके उपरान्त अपने स्थान को चली गई; राजा का कुंवर भी उठकर अपने घर आया। दूसरे दिन राजा ब्राह्मणी के चरणों लगा। ब्राह्मणी ने चौथ के व्रत की ही महिमा है—ऐसा कहा। राजा ब्राह्मणी के मन की बात समझ गया। राजा ने भी चौथ का व्रत करने का संकल्प कर लिया। (यह) चौथ का व्रत संसार में ब्राह्मणी ने आरम्भ किया। पहले व्रत गुप्त किया करते। भगवान 'इन्द्र-लोक' (स्वर्गलोक) में व्रत करते हैं—वे चौथ का व्रत करते हैं।

देवणवाळो कोई नहीं। धूप खेवणा दीवा करणा, सुगंध पुष्प चढावणा आरती गावणा, चूरमो कर श्री गणेश जी नै, श्री चौथ माता नै भेळा पूजणा। किरदवाळी तो केरवा भाया करणी। चांद ऊगाळी ऊगे करणी। चौथ'मातारी वरत करै तिकण नै मन-कांमना पूरवै, लिछमी रो सुख मिळै, रिण-संग्राम में जय प्राप्ति होय।

मन कांमना चढै होय सो पावै, देवलोक वासी हुवै, सातमैं जन्म सुगति होय।

धूप करना दीपक करना सुगन्धित फूल चढाने प्रसाद चढाना—चूरमा बनाकर श्री गणेश जी को और श्री चौथ-माता को साथ ही साथ पूजना।

चौथ-माता का जो कोई व्रत करता है—उसकी मनोकामना सिद्ध हो। उसे लक्ष्मी का सुख लाभ हो युद्ध क्षेत्र में उसे विजय प्राप्त हो। जो कुछ भी मनोकामना हो वही प्राप्त करे। देव-लोक मे निवास हो और सात जन्मो में जन्म से उसकी मुक्ति प्राप्त हो।

१५—अथ कथा सोमवती की

अमूक नगर मांहें ब्राह्मण एक बसै। तेरै तीन पुत्र नै एक कन्या। जिरा एक दिन व्यतीत हुआ छै, एक दिन एक अतिथ भिक्षा नै आयो। आई अर आशीरवाद दियो। तारां ब्राह्मणी बहुवां नूं कह्यो थे भिक्षा देवो। बहुवां भिक्षा दीनी। तारां ब्राह्मण आशीरवाद दियो—सु पुत्रवती सौभाग्यवती भव।

फर ब्राह्मणी आपरी बेटी नूं कह्यो सु बेटा भिक्षा घो। तारां बेटी ही उठी, भिक्षा दी। तारां ब्राह्मण आशीरवाद दियो सु धर्मवती भव। तारां ब्राह्मणी रै मन माहैं आसंका हुई, सु बहुवां नैं और आसीरवाद दियो, अर बेटी नै और भांति आसीरवाद दिया। तारां ब्राह्मणी बेटी नै लेई नै ब्राह्मण रै

सोमवती की कथा

किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था। उसके तीन पुत्र और एक कन्या थी। बहुत दिन (जब) बीत गये एक दिन एक अतिथि भिक्षा के लिये आया। आकर उसने आशीर्वाद दिया। तब ब्राह्मणी ने बहुओं से कहा—बहू (तुम) भिक्षा दे दो! बहुओं ने भिक्षा दी। तब ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया—(आप लोग) पुत्रवती और सौभाग्यवती हो।

फिर ब्राह्मणी ने अपनी बेटी से कहा—बेटी तू भी भिक्षा दान दे। तब बेटी भी उठी भिक्षा दान दी। तब ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया—धर्मवती बनो। तब ब्राह्मणी के मन में संशय उत्पन्न हुआ—बहुओं को और आशीर्वाद दिया और बेटी को दूसरी भाँति का आशीर्वाद दिया। तब बेटी को लेकर ब्राह्मणी ब्राह्मण के पीछे हो ली—उसके घर गई

रै पांसै आगि, पगै लागी—ब्राह्मण रै पगै लागी। ताहरां ब्राह्मण पूछियो जु बाई कुण निमित्त आई। ताहरां ब्राह्मणी हाथ जोडि नै कह्यौ, जु स्वामी थां म्हारी बहुवां नै आसारीवाद और भांति कियो, बेटी नै और भांति कियो सु कोण कारण? ताहरां ब्राह्मण कह्यौ जु बाई ईयै बात री पूछै मत—म्हैं इसही कह्यौ, सुभाव सू। ताहरां ब्राह्मणी बहुत हठ कियो जुई पै बात रौ निरणौ कह्यां ही जु बणै। ताहरां ब्राह्मण कह्यौ जु बाई कह्यां थकां तू बहुत दुख पाईस। ताहरां ब्राह्मणी कह्यौ—अवस्य कर कह्यौ। ताहरां ब्राह्मण कह्यौ जु बाई ईयै कन्या रै विवाह विषै चौथे फेरै इस भांति रौ उपद्रव हुसी सु बाई री वर शान्त हुसै ताहरां ब्राह्मणी कह्यौ जु भाई ईयै बात रौ कोई भांत जतन हुवै सू कह्यौ।

और ब्राह्मण के पैरों पड़ी। तब ब्राह्मण ने पूछा—बहन तू कौन निमित्त (किस कारणवश) आई हो? तब ब्राह्मणी ने हाथ जोड़कर कहा—स्वामिन् आपने बहुओं को तो आशीर्वाद और प्रकार से दिया और बेटी को दूसरी भांति से दिया इसका क्या कारण है? तब ब्राह्मण ने कहा—बहिन इस बात को मत पूछो। मैंने वैसे ही स्वभाव वश कह दिया। तब ब्राह्मणी ने बड़ा ही जिद् कर लिया—आपको इस बात का कारण तो बताना ही होगा। ब्राह्मण ने तब कहा—बहन कहने पर तुम्हें बहुत दुःख होगा। तब ब्राह्मणी ने कहा—(आप) अवश्य ही कहें। इस पर ब्राह्मण ने कहा—बहन इस कन्या के विवाह के समय चौथे फेरे में इस प्रकार का उपद्रव होगा कि (उसमें) इस कन्या का पति शान्त हो जायगा (पति मर जायगा)। तब ब्राह्मणी ने कहा—हे भाई, इस बात का किसी प्रकार कोई उपाय हो तो बतलावें।

ताहरा ब्राह्मण कह्यो—जु भाई एक जतन छै जु संघल द्वीप मैं सोमा धोबी रहै छै सु जे इणा बीवाह मांहि आवै तो जतन हुवै। इसरी पूछि ब्राह्मणी घरे आई। ताहरां आपरा बेटा नै कह्यो जु थे कोई भाई रै साथे जावो। बडा बेटा कोइ हुता तिण्यां नाकरी कियो। छोटे भाई कह्यो—मां हूं भाई रै साथे जाईस अवस्य। ताहरां बहिन भाई दोनूं जणा प्रभात समा चालिया। चालता-चालता समुद्र रै तीर आइ रह्या। ताहरां समुद्र रै तीरै बड़ो एक वृष हुंतो, ते नीचै बहिन-भाई आइ बैसि रह्या। भूखाद्रीस बैठा रह्या—कछु जुगती नहीं। ताहरां उवै वृष ऊपर गरुड़ रा बेटा हुता उवां दीठो जु ब्राह्मण भूखा रह्या। ताहरां सन्ध्या रै समईयै गरुड़ रा बच्चां री माता चूग लेकर आई—सभी चूग ख्वाई। सुखी थकी बच्चां आगै— बेरदी घणा चूग

तब ब्राह्मण ने कहा—एक उपाय है सिंघल द्वीप में सोमा धोबी रहती है। यदि वह विवाह में आ जाय तो कुछ यत्न हो सकता है। इतना पूछकर ब्राह्मणी घर पर आई। तब अपने पुत्र से कहा आप में से कोई बहन के साथ जावेगा? पर दोनों पुत्रों ने इन्कार कर दिया। छोटे भाई ने कहा मां मैं बाई के साथ अवश्य जाऊंगा। तब दोनों बहन-भाई प्रभात के समय चले। चलते-चलते वे लोग समुद्र के किनारे आ-पहुंचे।

उस समुद्र के किनारे एक बड़ा वृक्ष था—उसके नीचे बहिन-भाई दोनों आकर बैठ गये। भूखे ही बैठ रहे—कोई साधन नहीं था। तब उस वृक्ष के ऊपर गरुड़ के बच्चे रहते थे। देखा—ब्राह्मण भूखे रह गए। जब सन्ध्या समय गरुड़ के बच्चों की माता उनके लिये चुग्गा लेकर आई—वह सबको चुग्गा खिलाने लगी। उसको प्रसन्न होकर बच्चों के पास रखा। लेकिन बच्चे चुग्गा नहीं खा रहे हैं माता ने व (कोप) बार भी नहीं रहे हैं। इस पर माता ने कहा—बच्चो आज

खावे नहीं, न माता सूं बोले। तारां माता कह्यो, रे बेटा थे बोलो नहीं अर चूण खावो नहीं—किसे वास्ते। तारां बहूओ बटा बोलियो, शु माता म्हें चूण क्युं करि खावां। म्हारे नीचे दोई ब्राह्मण भूखा बैठा छै। वे ऊबारो समाधान हुवे तो म्हें चूण खावां। तारां गडकडी की नीचे आई। आइने पूछियो, शु थे कोण छो, केम आसो। तारां त्यां कह्यो—थे जीमो, अंन सामग्री हुं देईस। अर सवारे थानूं समुद्र उतारीस। तारां ऊनानूं अंन दियो, ऊवे जीमिया। तापछे सवारे ऊनानूं गडकणी पार उतारिया। पछे त्यें दोनूं जणा सोमांरो घर पूछिने गया। त्ये बहिन-भाई एकाम्तडेरे रह्या। सोमांरे घरे मास छ तांई सेवा करी सोमां न जांणे। एक दिन सोमां बहूआं ने पूछियो शु बटा थे इतरो घर सास तो क्युं कीधो, किसे कारण। तारां बहूआं

लोग बोलते भी नहीं रहे हैं और चुग्गा भी नहीं खा रहे हैं इसका क्या कारण? तब छोटेवाला बच्चा बोला—मा हम लोग चुग्गा किस प्रकार कर सकते हैं। हमारे नीचे (के स्थान में) ब्राह्मण भूखे बैठे हैं। यदि उनका काम बने तो हम चुग्गा कर सकते हैं। तब गरुड़ की स्त्री नीचे आई। आकर पूछा—आप कौन हैं? कहां जायेंगे? तब उसने कहा—आप भोजन करें अन्न सामग्री आदि मैं आपको दूंगी और कल आपको समुद्र पार कर दूंगी। तब उनको अन्न दिया—उन्होंने भोजन किया। उसके बाद दूसरे दिन गरुड़नी ने उन्हें समुद्र पार किया। फिर वे दोनों सोमा का घर पूछकर (उसके) यहाँ गए। वे दोनों बहन-भाई अलग स्थान में रहने लगे। छः महीनों तक सोमा के घर की सेवा की सोमा को मालूम भी नहीं हो सका।

एक दिन सोमा ने अपनी बहुओं से पूछा—बेटी आपने इतना सुन्दर घर को क्यों साफ किया है—इसका क्या कारण है? तब

कह्यो म्हु माम्है म्हे सीखा नहीं हां। थे कुण सीखे छे। ताहरां दिन एक सोमा आसूझ कीधी। पाछली रात्रि दखे तो ब्राह्मणी सीखे छै अर भाई पाणी ल्यावे छै। ताहरां सोमा कह्यो थे कुण छो। तवे कह्यो—म्हे ब्राह्मण छा। किसे कारण इतरी हठ कियो—सू कह्यो। ताहरां भाई कह्यो—म्हारे काम छै इये वास्ते म्हे आया छां ताहरां सोमा म्हांरै साथे चली। वांसे बहुवां नू कह्यो—जुये कोई बिगाड़ हुवे तो चपाड़ो मतां, ज्युं होवे सूं ढांकि राखि ज्यो। सोमा नगां रै माथे गई। ब्राह्मणी रो विवाह कियो। मसरबी में कन्यारी वर शान्त हुवो। ताहरां सोमा पछे परिक्रमा री सोमवती रै दिन अरयमरी तेरी पुन्य दियो। तै कर बालक जीवियो। उठि हर्षो हुवो, मगळे आनन्द बधाई हुई। सोमा आपरे घरे गई। आगे देखे तो घर में कोई उपद्रव हुवा छै ढांक

बहुओं ने कहा—हम लोग सीखा पोया नहीं करती हैं। तो फिर कौन सीखता है? तब फिर एक दिन सोमा ने जासूसी की। पिछली रात्रि में देखा—ब्राह्मणी सीख रही है और भाई पानी ला रहा है। तब सोमा ने कहा—आप कौन हैं? उन्होंने कहा—हम ब्राह्मण हैं। कौन कारण इतना जिद कर रहे हैं—बताईं। तब भाई ने कहा—हमारा आपसे काम है—इसलिए हम लोग आये हैं।

तब सोमा उनके साथ चली। जाते समय बहुओं से कहती गई—यदि कोई काम में (पीछे से) कोई गड़बड़ी हो तो उसे मत उठाना बल्कि जैसा हो उसे उसी प्रकार ढांक कर रख देना। सोमा उनके साथ चली। ब्राह्मणी का विवाह किया। सप्तपदी (विवाह के समय सात वचन) में कन्या का वर मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब सोमा ने एक परिक्रमा का पुण्य (जो सोमवती के दिन पीपल की परिक्रमा किया करती थी) दिया। इस कारण बालक जीवित हो उठा। वह मरा हो गया तब

राखिया छै। पछै सोमवती अमावस्या आई ताहरां सोमां फूल सं भर थाळ अरसपरसी परिक्रमा कीवी। पहिली एक अष्टोत्तर शत परिक्रमा कीवी, तांहरां पहिली पड़ियो हुवो सु जीवायो। ता पछै वळै परिक्रमा कीवी। बीजी परिक्रमा पूरी हुई ताहरां जिके पड़िया हुता सु जीविया। ता पछै तीसरी परिक्रमा देअर घरे आई। सगळै आनंद विनोद हुआ। सोमवती अमावस्या रै दिन स्त्रिया जो अरसपरसी परिक्रमा धर्मशील सु कर सी जिके नै इवै प्रकार रै पुण्य रो फळ हुस्यै। इति सोमवती अमावसि अरसपरसी परिक्रमा।

लोगो मे आनन्द और बधाइयां हुई। सोमा अपने घर आई।

यहां आकर वह देखती है कि घर मे जो अपशकुन हुए है, उन्हे ठीक कर रखे है। इसके बाद सोमवती अमावस्या आई—तब सोमा ने पीपल की परिक्रमा की। पहले एकसौ आठ परिक्रमाएं की इसपर जो पहले पड़ गया था वह जीवित हुआ। इसके उपरान्त फिर परिक्रमा की। दूसरी परिक्रमा पूरी हुई—इसके उपरान्त तीसरी परिक्रमा देकर घर आई। सभी आनंदित और सुखी हुए। सोमवती अमावस्या के दिन जो स्त्री पीपल की परिक्रमा धर्म-ध्यान के साथ करेगी उसे इस प्रकार के पुण्य का फल होगा।

१६—अथ श्री सनीसर जी री वात लिख्यते

श्री उजेणी नगरी, श्री विक्रमादित्य राजा राज करै छै। तिण प्रस्तावै विक्रमादित्य नूं शनीसर-बारमो आयो छै। एकै प्रस्तावै राजा सिकार चढियो छै। एक सूअर वांसै चढ़ियो। फिरतां फिरतां सुअर आगोआग जावै छै। किनरी एक धरती यु दीज गयो। साथ सगळा वांसलो छूट गयो, घोड़ो पिण छूट थाको, राजा पिण तिसियो हुओ। तिसियै थकै घणो दुख पायो। राजा बाग झाल ऊभो रह्यो। सूअर अलोप हुओ। घोड़ा रा पवन ही प्राण छूटा। तिण प्रस्तावै एक गोवाळियो आयो-राजा नै बोलायो। तिसयो थको बोल सकै नहीं-हाथ सूं बोक मांडी। गोवाळियै राजा नूं थोड़ो पाणी पायो। राजा सावचेत थयो। घोड़ा रा पिलाण सोनै री साकत सा सो गोवाळिया नै दीनी।

कथा श्री शनिश्चर जी की

उज्जैनी नगरी—श्री विक्रमादित्य राजा राज्य करता है। उस समय विक्रमादित्य को बारवां शनीश्वर आया है। एक समय राजा शिकार को चढ़ा है। एक सूअर के पीछे उतरा। इधर उधर भागते बहुत दूर तक वह सूअर के पीछे लगा रहा। कितनी दूरी तक तो वैसे ही गया। सभी साथवाले थककर पीछे रह गये घोड़ा भी थककर रह गया राजा भी प्यासा हुआ। प्यास के मारे बहुत दुख पाया। राजा घोड़े को बाग पकड़ कर ठहर गया। सूअर अदृश्य होगया (अलोप होगया)। घोड़े के सिर्फ प्राण निकल गये। उस समय एक ग्वाला आया। राजा को (उसने) बुलाया। प्यास के मारे बोला नहीं जा सका—हाथ से पानी पीने के लिए अञ्जली मांडी। ग्वाले ने राजा को थोड़ा पानी पिलाया। राजा सचेत हुआ। घोड़े का पलाण (जीन आदि) सोने

हिवै राजा नेडी बसती विचार में पछै सहर आयो। आवीमें एक महाजन रै हाटै आय बैठो। बडो हाट विसाल, मोटो विवहारियो हुवो! सु ठांमांसु लूटो। लेहणा था तिकै पिण अटक गया, तिण रै हाट आय नै बैठा। माहरै, तिण ग घणो चाखियो। पुरां आपणां आवण लागी अत चुकावणु लागो। घरै पिण इण बहुत हुई। साह बौपारियो जे उत्तम पुरुष घरै आयो नै बैठो तिण रै प्रसादै लाभ घणा हुवो। इतरै जीमण वेला हुई—आवार ने साह विक्रमादित्य नू घरै लेगयो। जीमाबी, जीमाइ नै माळिया मांहि विश्रामणो कर दीयो। आपरी स्त्री नै कह्यो—ओ उत्तम पुरुष है, इण रै पग लेह रै आंपांरो भलो हुवो। आंपांरै पुत्री मोटी छै, वर जोवता सो बैठो आय मिळियो। थे कहो तो इण नै परणावां तरै स्त्री कहण लागी-जिण रै पग तरै आंपणो भलो हुवो उणनै हुवा तिण नू परणावो। तरै स्त्री कहण लागी घणो भलो होसी,

---

गा था वह ग्वाले को दिया। अब राजा नजदीक की बस्ती को छोड़कर एक शहर में आया। आकर एक महाजन की दुकान पर जा बैठा। बड़ी दुकान बड़ा रहवा ठाठ–बाट बड़ा व्यापार करने वाला था—सो पैसे हीन होगया था। रहवा (लोगों में नाम) लेने थे—वह भी रुक गया उसी की दुकान पर आकर बैठा। साह–(साहूकार) ने व्यापार अच्छा चला। लेनेवाले बड़े जोरों से दाम देने आने लगे—[illegible] आदि चुकाने लगे। घर पर बड़ी अमन चैन हुई। साहूकार ने विचारा—शुभ मनुष्य घर आकर बैठा उसी की कृपा से अधिक लाभ हुआ। इतने में भोजन का समय हुआ—साहूकार विक्रमादित्य को बुलाकर घर ले गया। भोजन करवाकर भोजनोपरान्त महल में बिस्तर लगा दिया। अपनी पत्नी से कहा—यह शुभ लक्षणों का व्यक्ति है, इसके पदार्पण से अपना कल्याण हुआ। अपने पुत्री बड़ी है वर की खोज में है, सो यह घर बैठे ही भगवान ने मिला दिया। तुम कहो तो इसे ही

पिण भलै वगत जोय परणायो । साहरै जिम पैली हुतो तमहीज हुयो । हिवै एक दिन साहरै राजारो बुलावो आयो । हिवै रोखिया नै गैणा गाठां साहरी — —हजूर घडावै । हजूर— — —घडावै छै । तिण प्रस्तावै एक सवालाख रो हार रांणीरै हुतो सो राजा साहनै कहण लागो इण हार री कीमत करावो । साह नै तेडनै हार सूंपियो । आणि नै माळियारी खूंटी मेलियो । साह माळिया में आयो हुतो, सूता विक्रमादित्य बैठो छै । तिण माळिया में चित्रांम रो मोर सवालाख रो हार गिळियो । राजा विक्रमादित्य दीठो पिण बोलियो नहीं । जितरै साह जागियो—हार सामो जोयो हार दीठो नहीं । तरै साह राजा विक्रम नै पूछियो—हार कठाथो । अण्य बिहुं मांणस था—बीजो मांणस कोई आयो नहीं । कैतो हार थो मांहि—कै तो मांहै ।

ब्याह दें । तब (साह की) स्त्री कहने लगी—जिसके प्रताप से अपना अत्यधिक वैभव बलवान हुए, उसी को विवाह दो । फिर स्त्री कहने लगी—बड़ा अच्छा होगा यदि तुम लग्न देखकर शादी करदें । साह की वैसी पहले स्थिति थी वैसी हो गई ।

अब एक दिन साह को राजा का बुलावा आया । वे सब गहने-गांठे साह की मारफत बनवाये । इसकी मारफत बनने लगे । इसी बीच में एक लाख का हार रानी का था सो राजा साह को कहने लगा इस हार की कीमत करवाओ । साह को बुलाकर हार सौंप दिया । लाकर महल में खूंटी पर रखा (खूंटी पर टांगा) । साह महल में थोड़ी देर के लिये सो गया विक्रमादित्य बैठा है । उस महल में मोर का चित्र मांडा हुआ है । उस चित्र के मोर ने सवालाख के हार को निगल लिया । राजा विक्रमादित्य ने देखा लेकिन (वह) बोला नहीं । इतने में साह जागा—हार को सामने देखा—हार दिखाई नहीं दिया ।

विक्रमादित्य नूं सोच हुइ रह्यो—कहूं के चित्रांम रै मोर हार गिळ्यो तो कोई मानै नहीं। वरै तिण कह्यो—हूं न मांनूं। हिवै दूसरो जमाई झगड़तां राजा पासै गया। राजा ! ओ कोई परदेसी छै—हूं ओ जांणूं नहीं। म्हारै हाट आइ बैठो हुतो। भलो जीव देखिनै पुत्री परणाई। पिण-पछीतरा लखण जांण्या नहीं। आपरी माळिया में बैठो—तिवरै माळिया मांहै आइनै हार खूंटी टेरयो हुतो। बिहूं टाळ तीजो मांणस और को आयो नहीं—इणै चोरयो। हिवै मुकर गयो। राजा न्याव करो। राजा कही परदेसी हार परो दै। विक्रमादित्य कहण लागो, हूं न जाणूं—मैं न मेलियो। राजा हुकम कियो—जिणसै चाम चोरंगो करो। चोरंगो कीधो। तिणरा तीनां ठौई विक्रमादित्य री अवस्था मांगणी। उठै अवस्था भोगवतां साढा सात बरस पूरा हुवा।

तब शाह ने राजा विक्रम से पूछा—हार बताओ। दो ही व्यक्ति थे तीसरा कोई व्यक्ति आया नहीं। या तो हार मेरे पास है या फिर तुम्हारे पास। विक्रमादित्य को सोच हो गया—यदि कहूं कि चित्र वाले मोर ने हार निगल लिया तो कोई मानेगा नहीं। तब उसने कहा—मैं नहीं मानता (मैं नहीं जानता)। अब ससुर और दामाद लड़ते-झगड़ते राजा के पास गए। राजन् ! यह कोई विदेशी है—मैं जानता नहीं। मेरी दुकान पर आकर बैठा था। अच्छा नर समझ कर कन्या की शादी इससे की। लेकिन गुण के लक्षण नहीं जान सका (लक्षण जानने में नहीं आ सके)। महल में बैठा था—इतने में महल में आकर हार खूंटी पर टांग दिया। हम दोनों के अतिरिक्त तीसरा कोई अन्य आया नहीं—इसी ने ही चोरा है। अब इन्कार कर गया। राजन्, न्याय करें। राजा ने कहा—परदेशी हार दे दो। विक्रमादित्य कहने लगा मैं नहीं जानता मैंने नहीं रखा। राजा ने हुक्म दिया जिन[1] से चाकर

[१] एक स्थान विशेष

कीपी । राजा घणा लागो मिस प्रसावै— आपरी बड कुमार दीकरी नै राजा विक्रमादित्य नै परणाइजी । उठमैं आछब-मोछब करनै कुमरी विक्रमादित्य नै परणाई । घणा हरख घणा बाजा गाजा करनै उजेणी नगरी पोहचाया । सनीसर देवता पहीली विक्रमादित्य नू पीड़ा कीपी तिसड़ी किणही नू मत करजो । अनै पछै वर देनै सु परसन हुवो तिसड़ो सगळां ही नै होज्यो । ए बात कहै अथवा सांभळै अथवा लिखै तिण नै ग्यारहमी रास का फल देसी, शनीसर आछो ही भलो करसी । इति श्री शनिश्चर री बात सम्पूर्ण ।

राजा पश्चाताप करने लगा—मैंने अन्याय किया ।

विक्रमादित्य ने कहा तुम्हारा कोई दोष नहीं—ग्रहों ने पीड़ा की । उसी बीच मे राजा कहने लगा—अपने एक बड़ी कुँवारी लड़की है राजा विक्रम को विवाह दें । पश्चात् उत्सव आदि करके (उसे) विक्रमादित्य को विवाह दी । बहुत-सा सामान (देकर) बाजे गाजे के साथ उज्जैनी नगरी मे पहुंचाया । शनीश्वर देवता ने जैसा विक्रमादित्य को कष्ट दिया वैसा किसी को कष्ट न दें । उसके उपरान्त वर दे करके जैसा (शनि) प्रसन्न हुआ वैसा सब पर होना । यह बात को कहे या सुने या लिखे उसे ग्यारवीं राशि का फल देगा—शनीश्वर यदि बुरा हो तोभी अच्छा ही करेगा ।

परिशिष्ट

महि सेस मणिधर-श्रीर अंबर इन्द्र देवां ओपतो।
हरिचंद सत्त तेज सूरिज देत दंसण ओपतो ॥
ज्युं सुगुरु ग्यांनी मणी दांनी, देव हरी मा जिसी।
वैकुंठ दाता प्रम्म माता बडो व्रत एकादसी ॥२

ज्युं शास्त्र गीता सती सीता देखि रंभा सोहती।
बल वीर हनुमंत जोधा अर्जुन रूप मोहै रसवती ॥
गुरु नाथ गोरख माप कविता बुधि वांचिया पारसी।
वैकुंठ दाता प्रम्म माता बडो व्रत एकादसी ॥३

अमवार वाजा राम राजा नदी गंगा निरमली।
जल प्रीत मछी भ्रम्म ब्रह्मा गऊँ राचवा मदगली ॥
नर रूप जंबू हंस पंखो रूप देखण आरसी।
वैकुंठ दाता प्रम्म माता बडो व्रत एकादसी ॥४

॥ दूहा ॥

एकादसी तूं रूपला, करुं सुण मानव देव।
माम ज्यूं त्यांरा हिये, तरि माता हरि सेव ॥१

॥ छंद भुजंगी ॥

वरण ताहरी सेवणी तीन लोके।
परधा व्रत जीप सदा पाप धोके ॥
तणी वात त्रेता जुगे वेद तोरी
नागपुर राज सुचंद मोरी ॥१

महा इन्द्र यम सोम कुबेर मैत्री।
पुगही मणा जाइ पुत्री सुपुत्री ॥
ब्रह्मा पुण्य करतूत मित्री कमाई।
जोर वर जोध सोमन्न नामै जमाई ॥२

ममई जीवि हिंसा करतो मिखारी,
कन्हुइ चीर आप्यो नहीं सीतभरी ।
फिरतौ गिरतौ पछ्यो भूख मरतौ
मम्यौ जीव खातो न को पेट भरतौ ॥२८॥
जीया वनफल खाव वासीतलागे
पड्यौ पीपळ्यं हेठि एकादसी पुन्य जागइ ।
प्रभावे नारायण की आप पूठा,
गया भव तणां पाप अलगा अपूठा ॥२६॥
पंच हजार वरसइ लगई राज पाम्यौ
मरै मारि नगरी तणै सीस नाम्यौ ।
सु भक तणी बात सगलै कहाणी,
सफल एकादसी सहू जगत जांणी ॥३०॥
कहाणी एकादसी पुत्र प्राजा,
नगर भद्रावती करै केतु राजा ।
भरत उपाडीयौ गयौ भूप भटकी,
वसै वडमरेवा सरोवरइ स्वांतटकी ॥३१॥
पगै लागि राजा तिये पासि बैठो,
सही पुत्र नी बात पूछै स हेठो ।
रिखी भाखियौ एकादसी पुन्यरासी
विरी व्रत आप्यौ सही पुत्र थासी ॥३२॥
कियौ व्रत एकादसी पुत्र जामै,
जगतई वदीतो पुत्र पांच पामै ।

दूहो

पाया राजा पांच सुत हरख्यो राज सुकेत ।
माइ अंधारी मानवी, हरइ पाप सुख हेत ॥

इक अपछर मन्नी सेती सग,
रमी पुष्पवत करइ बहु रंग।
आणी इंद्रे अपछर आत
सरापे इंद्र करै अतिपात ॥७॥
प्रतापइ अपछर होई पिसाच,
पछी तिण पाप संताप पराच।
सही त्रिस भूख अनंत सरीर,
न भक्ष न भक्ष लाधो तिण मीर ॥८॥
पछी तिहां पीपल हेठि पधारि,
व्रत एम एकादसी होई विचारि।
दरसण केसव प्रहसम पीठ,
पुहवी स्वर्ग लोक अपछर पीठ ॥९॥
मनि माह उल्लासी पछी मन्न,
बहु पाप संताप हरइ सुप्रसन्न।
हिवइ सुण पारवा अविरल देई मत्ति
गुण गाऊं रघुनाथ का विजै एकादशी व्रत ॥१०॥

छन्द मुजंगी

विजै एकादसी फागुणइ मासि विरत्ति,
पुरा मन्त्रि पांमइ पणु आइत करत्ती।
करै व्रत सुणइ राज दसरथ राजा
वाजै कोटि छप्पन नीसांण बाजा ॥११॥
सधा राम सिरदार सुभ राम भाई,
भजौ मीच सम्मंत लखमण भाई।

प्रभू रामजीयो पाथरै पाज बांधी,
सुर करै सिला सू सिसू सूज सांधी ॥८॥
तठइ राम रै नांम पाथर तिराणां,
जड़ी च्यार मह कोम पाथर जड़ाणा।
जपके संगूय बई संप फेरी
प्रभू रांम रै नाम री भांम फेरी ॥९॥
बदे लीज म्भू बानरां सेन बाधी
झपेटे मझइ आपरै लंक बाधी।
उठ्यो रावणी दैत कोप चधारी
पटंट्यो रखे पमा बड़गा पधारी ॥१०॥
किलकी करै उठीया कुम गाजै
महिरांवणो पड़िओ चोट मांगइ ।
मखा निनानू कोड़ि राखस मारी
देखतां देवि दीधइ क्यारी ॥११॥
खुबे जुध माती रुवे झोक जंगी,
खीसे जाइया इथापाय बंबति खंगी।
सम्रै बानरां कड़ि दैतां संहारइ
इण्ई रांकमां सैन इण् वह कारइ ॥१२॥
मंडे राइ बेप झकमक मारइ
मझी रूप माहीत फिरयो क मारै।
झपेटे राम झकमयो लंक झीपी,
बभी सीत मैं बीत सइ बात सीधी ॥१३॥
आनंदइ अयोध्या सीतसे राम आया
मिलै मानिनी रंग मोती बधाया।
दिसै एकाइसी बगत मइ बात बाधी
सही इयो पुन्य की रामजी लंक साधी ॥१४॥

दूहो

सुंदर पाप हरइ सदा, आदरइ इक चित्त।
करइ न व्यापइ काय नई, व्यापि रोग केपत्त ॥१॥

॥ छंद पाधड़ी ॥

केपत्ति अंग व्यापइ विकार, चंपावती चाइसेन सार।
ग्रम काम राज परणी पधार इक दिन रोग व्यापै अपार ॥
छूटै न सुकव काया विगार, --- -----------।
चायइ सु चित चिंता विहाय वेदीया राजवैद्य काय ॥
करी न काइ लागै परोख, बळि चिंतै मन राजम विनोद।
पूछीयो व्यास सुकदेव राज रूपनी रोग व्यापै अथाग ॥
[दिन व्रत रोग जाय विशेष, अप्परी नाम जेठी एकेस।
व्रत कीधौ राज मनि धर्मी कोडि जायगया रोगि गइ देह कोडि॥

अपरा एकादसी सुम सुदि जेठ, मावठि मूल मां होइ भेद।
दिवइ निरजल्य नाम हरि भगत हेत पूछंति भीम व्यासी समेत ॥
कहइ भीमसेन सुण भूख क्रम पल केम दपव करू कवन सुमन।
बापू न पेट अन खाज बांम पामु न तृपति खांधे न पान ॥
मन मरई वपर वृकग भूख कुण सुमाणा क्यै रूपनी कूख।
मोदक देवको माहरी माय, भी करै देव बापू अघाय ॥
कहे व्यास दासू जिम्मे व्रत तीन सइ साठ दिन संतप्त।
निर्जल्य एकादसी करो नाम तरी लेम संसार अपार ताम ॥
करइ सदा राज वत्तर कुबेर, वसु पुत्र हेम माली कुबेर।
जप पेम दाम जग माहि सार, करइ भीम व्रत नेम वार ॥

निरवोख मीम पामे मरेस, करइ मानसी कर्म अवर कलेस।
आसाढ अंधारी योगिनी नाम, तजै नगक नै कोढ ताम ॥
करइ सदा राज (पसर कुबेर, वस पुत्र हेम माली सुमेर।
इण कर्मे फेर कोढी अवाक, नव गल गलित सह सगवन सक ॥
पूछीयो व्यास तासो परच, जोगनि आराधि प्रभु जाई जव।
कीयो हेम माळी गयो कोढ कष्ट, वमै वीस वापे आणंद वसिष्ट ॥
आसाढ उजाळी कामिका नाम, हरइ पाप संताप पी सुमा ठाम।
वसियर्इ द्वारि पीढे मुरारि, सूवे देव तैतीस संसार सारि ॥
जागइ न देवता करै पुन्न, मइ तप्प जप्प इक चित्त मन्न।
जप साम कीय आपइ अछेद, गुरु ध्यान मोन मगम सुगेद ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

वर गेह सु कम्मम नाम वरं,
मधि माधम वदि गिरिजि मरं।
गुरु गोविंद सब करै गुहिर,
भव भारिज सिव कर सुचिर ॥
पुन्न धेन दिय भव पाप हर,
करतम्म कीय अगि सुचि कर।
मम मास उजारीय एकादशी
सुर मोनव ध्यान सु चित्त वसी ॥
त्रिधे मास देव अपुत्र जन,
मधि राव मै दीह आरत्ति मन।
रिद्ध राग्य वाज विराजि रजं,
पुरि चाइ कुटुंबीय धर्म धुजं ॥
सब सूम संसार असार भसे,
गुण मांनि गुमांनिगुण गहै ॥

दिन एक मीगी रिख देखी प्रसन्न पनवर पूछीयं
कहि अमावनी प्रवह दक्षिण मांबइ दुस्यियं ।
कहितंग कीधो कही कीसा मानसी,
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥६॥

मामा बिरुद्धी पुण्य रुद्री किसन पखे मावर्व
प्रभराम भागइ पुण्य भादे पाप हेता सापर्व ।
इरचंद भाग दखीप मीवत किता तारचा तारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥७॥

पहर चक्की मंबमार रोहिदास वखेसर
उद्धारइण व्रत पाप निवत देव मानवर खेचर ।
महारइ मोटे पाप छूटइ भव हिस्या तारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥८॥

वैसाख पाखी पाप बचाखी पापहरवा मोहिनी,
भव पंच सद्धु नरक दुख्ख दुतीय मामइ खोभमी ।
पूछति रिखि बसिष्ट कहइ पाप निवारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥९॥

करे पात्र बांधी संकखीपी देत दसमिर तोडीया
मिखि कोडि रादिम दैत मारे रोझि मसक रोडीया ।
दुर्ई पवि मोहि हिरमा कैव पुस्पे तारमी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥१०॥

वासिष्ट बांणी राम आणी मोहनी व्रत कीजीये
इस पुन्य अमरा नगर आई अधिक अमृत पीजीये ।
जगि जेठ पहिली पखि अपरा नाम सु दर मारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥११॥

दिन एक मीगी रिख देखी प्रसन्न परमेश्वर पूछीय
करहि आमावती प्रतह दखिइ मांकइ दुखियं ।
कखितग कीधी वही कीसा मामसी,
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥६॥

नामा विरुद्धी पुण्य रुद्धी किसन पक्षी मावर्ष,
प्रमराज भागइ कृष्ण भाखै पाप ईवा सामर्थं ।
हरचंद भाग हखीप प्रीछत किता तारया तारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥७॥

पहुर चक्की चंवमार रोहितास चक्षेमर्द,
चहारहण प्रन पाप निभ्रत देव मामवर क्षेचरं ।
महादइ मोटै पाप छूटइ प्रम हित्या मारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥८॥

वैसाख खामी पाप चखाली पापहरणा मोहिनी,
भव पंच छलु नरक दुःखु तुतीय नामइ सोमनी ।
पूछति रिखि वसिष्ठ कहइ पाप सिवारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप पग्यारसी ॥६॥

करै पात्र बांधी खंक खीची देव दमसिर तोड़ीया,
मिथि कोडि रावणि देव मारै रोझि मस्तक रोळीया ।
हुई पवि मोहि हित्रा कैप पुरयै तारसी
भगवान मासी पुयय रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥१०॥

वासिष्ठ वांमी रांम वांणी मोहनी प्रन कीजीयै
इण पुन्य अमरा नगर जाई अमिय अमृत पीजीयै ।
जगि सेठ पहिली परि अपरा नाम सुंदर मारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥११॥

|| दूहा ||

मुनि भांखलीये रूपरथी भाद्रै कीय सुरत्न ।
चैत्र अ धारी विषथरी, हरइ पाप पाप समरत्थ ||१||

|| छंद सारसी ||

समरत्थ चैत्री पुत्रय येत्रो पाप मोचन सु हरं,
सोमस्त रिक्यं भाइ मिस्यं पाइ पूजि पुरंदर ।
मांन्धाव प्रश्न वाव मरत पूछइ पारसी,
भगवान भाखी पुन्य रायी हरइ पाप इग्यारसी ||१||
इम मोक्ष अपछर पाइ मञ्जर दरिस मेधा बुकीय,
च्यवन तात पुत्र रात सीप ग्यारस कुकीय ।
ज्नति थांप बक कीय सक करइ पखावर रागमी
भगवान भाखी पुन्य रामी हरइ पाप इग्यारसी ||२||
कोव वच भक्त निते रोम मृग रटंतीय,
चैती अ धारी पुण्य सारी अइइन पुत्र अरतीय ।
भयराय पूर्ज पइइ मर्क्त बइइ खोखा रागसी
भगवान भाखी पुन्य रायी हरइ पाप इग्यारसी ||३||
चैती उजाम अमजाउ पाप बंधन मव हरं,
कामावती मांमं सुजम ठांम प्रती चैती वासरं ।
पूलथी वसिष्ठ राज सिष्ट महामरी मानसी
भगवान भाखी पुन्य रामी हरइ पाप इग्यारसी ||४||
राजा दिलीप थाम दीपं रिग्री भागें अव्याप,
पुंडरीक हद मागधाके ललित अपछर रम्पए ।
पुंडरीक श्राप ललित राक्षस बाइ बांधो तामसी,
भगवान भाखी पुन्य रायी हरइ पाप इग्यारसी ||५||

दिन एक सीगी रिख देखी प्रसन्न पम्बर पूछीयं
करहि कामावती मवह एकिद्र मांडइ दुरियं ।
सखिलंग कीयो सही सीता मानसी,
भगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥६॥

सामा बिरुद्धी पुन्य रुद्धी किमन परै मावर्थ
प्रमराज भागइ कृष्ण भारे पाप हेता सापर्थ ।
हरचंद प्राग दलीप मीरात किना तारया तारसी
मगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥७॥

पहूर चक्की पंचमार रोहितास उजेमरं,
चढ़ाइण प्रन पाप निम्रत देव मानवर सेचरं ।
महाराद्र मोटै पाप सूत्र ब्रह्म हित्या सारसी
मगवाम भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥८॥

वैसाख बाजी पाप पज्जासो पापहरता मोहिनी,
मव पंच सखु मरक दुसु छुनीय मामइ सोमनी ।
पूदति रिखि वसिष्ट वइइ पाप मिवारसी
मगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप पग्यारसी ॥६॥

करै पात्र भापी संक कीपी देत स्पसिर गोदीया,
मिथि कोटि रानिम देन मारै रोजि मस्तक रोळीया ।
इर्दे पति मोहि हिरवा कैत पुण्यै तारसो
मगवान भासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥१०॥

वामिह भामी रोम भापी मोहनी प्रन कीजीयै
इरा पुन्य प्रमग नगर आई अधिक अमृत पीजीयै ।
जगि जेठ बदिमी वगि भारा नाम सु दर मारसी
मगवाम भासी पुन्य रासी हरइ पार इग्यारसी ॥११॥

दिन एक सीगी रिख देखी प्रसन्न पधम्बर पूछीयं
करहि कामावनी प्रवद दखिन्न मांबद दुखियं ।
मखितंग कीधो कही कीता मानखी,
भगवान मामी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥६॥

ग्यमा विरुद्धी पुण्य रुद्धी किसन पदी माधर्म
भ्रमराज भागइ कृन्या भाखे पाप हंता साधर्म ।
दरचंद भाग दलीप भीखत किमा वारपा वारसी
भगवान मासी पुन्य रामी हरइ पाप इग्यारसी ॥७॥

पसर चम्की धंबमार रोहिदास रुक्मेसर,
पद्मारकुण व्रत पाप निब्रत देव मानवर खेचरं ।
महारह मोटे पाप छूटइ ब्रह्म हित्या मारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥८॥

वैसाख वामी पाप वखाणी पापहरता मोहिनी,
मव पंच वसु मरक दुख दुखीप नामइ खोमनी ।
पूछति रिखि वसिष्ट कहइ पाप निवारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप पग्यारसी ॥६॥

करे पात्र बापी कंक कीधी देव दममिर मोहीया
मिखि कोटि रतिम देव मारे रोहि मस्तक रोहीया ।
हुई पति मोहि हिरवा देव पुण्ये तारसी,
भगवान मामी पुण्य रामी हरइ पाप इग्यारमी ॥१०॥

वासिष्ट वांमी रोम कांमी मोहनी व्रत कीजीये
इस पुन्य ममरा नगर वाई अधिक अमृत पीजीये ।
वगि सेठ पहिली पनि अपरा नोम सुधर मारसी
भगवान मामी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥११॥

॥ दूहा ॥

इणि मोकलीयै ऊपरथी भाखै कीध सुरत्थ ।
चैत म धारी चितधारी, हरइ पाप पाप समरत्थ ॥१॥

॥ छंद सारसी ॥

समरत्थ चैत्री पुण्य वेत्री पाप मोचन सुन्दरं,
लोभस्स रिक्खं भाइ मिक्ख पाइ पूणि पुरंदर ।
मांमधात प्रजा तात प्रश्न पूछइ पारसी
भगवान भाखी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥१॥
दस पोष अपछर पाइ कन्धर देखि मेधा सुकीय,
च्यवन तात पुत्र रात सीप ग्यारस कुकीय ।
अति कोप वक कीय सक करइ पलचर राक्सी
भगवान भाखी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥२॥
जीव चत मच निर्त रोभ मृग रहंतीयं,
चैती म धारी पुण्य धारी अहइन सुस भटतीयं ।
भक्तत्थ पूर्ण पढइ मर्त्त बाद्द खीता राक्सी
भगवान भाखी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥३॥
चैती चमास अमजास पाप वचन भव हरं
कमावती नोमं सुवस ठोम श्रवे चैती वासरं ।
पूछयो वसिष्ठ राज सिष्ट महामते मामसी
भगवान भाखी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥४॥
राजा दिलीप दान दीपं रिखी आगै अवपाप,
पुंडरीक इव नागलोके ललित अपछर रचाप ।
पुंडरीक साप ललित राक्स वाइ लागी तामसी,
भगवान भाखी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥५॥

॥ दूहा ॥

दुणि आंवळीयै ऊमरथी, भाई कीध सुरत्थ ।
चैत क धारी चितभरी, हरइ पाप, पाप समरत्थ ॥१॥

॥ छंद सारसी ॥

समरत्थ चैत्री पुण्य देत्री पाप मोचन सु घर्द,
लोमस्स रिख्यं आइ सिख्यं पाइ पूछि पुरंदरं ।
मांमधात प्रजा तात मरन पूछइ पारसी
भगवान भासी पुण्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥१॥
एम पोख अपछर पाइ कम्मर देखि मेधा मुकीय,
च्यवन तात पुत्र रत सीप ग्यारस कुकीय ।
अति कोप बाक कीध बाक करइ पसाचर राससी
भगवान भासी पुण्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥२॥
कीध व्रत भक्त निसं रोम सुग रंटंतीयं
चैती क धारी पुण्य सारी प्रहन मुक्त भवतीयं ।
भसात्म मुक्त पवइ स्वर्ग पदइ कीधा राससी
भगवान भासी पुण्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥३॥
चैती वखाण कमखाण पाप घपन मत हरं
कामावती मांमं सुग्रस ठांम प्रते चैती वासरं ।
पूछपी वसिष्ट राज सिष्ट महामते मानसी
भगवान भासी पुण्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥४॥
राजा दिलीप पान दीप रिखी भागे अकस्माय
पुंडरीक इंद नागलोके ललित अपछर रम्मय ।
पुंडरीक श्राप ललित रासस भाद लागी तामसी,
भगवान भासी पुण्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥५॥

दिन एक मींगी रिस देखी प्रसन्न पटम्बर पूढीय
करहि क्षमावती प्रवह दरिद्र भांजइ दुखियं ।
आलिंग कीधौ साही लीला मानसी,
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥६॥

नामा बिरुद्री पुण्य रुद्री किसन पखै माधवं
प्रमराज भागइ कृष्ण मासै पाप ईता साधवं ।
हरचंद प्राग इखीप मीकत किना तारया तारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥७॥

पहर चक्की चंबमार रोहितास रजेसरं,
रुद्रारइण प्रत पाप निव्रत देव मानवर खेचरं ।
महारुद्र मोटै पाप चूरइ मद्य हित्या सारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥८॥

वैसाख वाळी पाप पखाळी पापहरता मोहिनी,
मद पंच रास्तु नरक दुख्नु दुतीय मासइ सोमनी ।
पूछति रिखि वसिष्ट कहइ पाप निवारसी,
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप पग्यारसी ॥९॥

करै पात्र वांमी संक हीमी देव दममिर लोकीया,
मिणि कोडि रात्रिम देव मारै रोम्रि मस्तक रोमीया ।
दुरं पति मोहि हित्या कैया पुरवै तारसी,
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥१०॥

वासिष्ट वांणी गंम आंणी मोहनी प्रत कीजीयै
इण पुन्य अमरा नगर जाई अधिक अमृत पीजीयै ।
जगि जेठ पहिली परि अपरा नांम सु दर मारसी
भगवान मासी पुन्य रासी हरइ पाप इग्यारसी ॥११॥

त्याय मीम पामे मरेस, करइ मानती कर्म कारइ कलेस।
साह अंधारी योगिनी नाम, तजै कलंक नै कोड़ ताम ॥
इ सदा राज उत्तर कुबेर, जस पुत्र इम माझी सुमेर।
कर्म फेर कोढी कलक, नव नर गलित सह सज्जन सक ॥
दीपो व्यास तासो परम, जोगनि धारादि यमु आई जम।
यो हेम माझी गयो कोढ दुष्ट, कर्म जीव वाये आणद वसिष्ट ॥
तिथार एकाधी भ्रमित नाम हरइ पाप संताप थी सुमा ठांम।
विराई हरि पौढें मुरारि, सूर्ये देव तेतीस संसार सारि ॥
गाइ न देवता करै पुन्न मह तप्प अप्प इक चित मन्न।
र खाम जीव मापइ मजेह, गुरु ग्यांन नाम मगम सुगेह ॥

॥ छन्द त्रोटक ॥

वर गेह सु कमम्म नाम वरं
मरिह माघण वदि गिरिजि मरं।
गुरु गोविंद सेव करैं गुहिरं
मत्र कारित्र मिद्र कर सुथिरं ॥
पुन्य पेन विप सव पाप हर,
करतम्य जीम वगि सुचि कर।
मम मास वजारीय एकादशी
सुर मांनव ध्यान सु चित वसी ॥
जिको माम देव अपुत्र जन,
महि रात मैं दीह भारचित मनं।
रिद्र रायण धाम विराजि रजं,
सुरि याह कुटुंबीय धर्म धुजं ॥
सत्र सून संसार असार मझै
गुण मांनि गुमांनिगुव गहै ॥

इक पुत्र बिना सब अंध इसा
जिवसा अपूठा बहर जसा ।
सोइ पुत्र सुपुत्र सरूप भया
महिमा मह वंसीय पुत्र सुरा ॥
कहै पुत्रहा इक श्रावण मास कथी
नर भाद्रव नाम अजैव नथी ।
इण पुन्य महीजित राज इलं,
कलजु जुगद्वापर राज किलं ॥
जाणे जगि पुत्र सुजाणिपरं,
बस मार सुबाहोय संम घरं ।
हरिचंद नरिंदीप पाप हरं,
इत पुन्य कीयै दिस रंग भरं ॥
जमि भाद्रव मास उजास पखं
रिति पदमां मांम सुठाम रखं ।
यहु पूजइ देव रिखीपवरं,
अभिमार अयोध्या आप सुरं ॥
मन जाइ न बरसइ मेह झडं,
खित कोइ न खेत किसान खडइ ।
प्रियमाहि अगोचर आस पडइ
नरपति नृपि तन कोइ नडइ ॥
अगइ माता तात न कोइ पुत्र जनं,
नर है प्रिय नेह सनेह जिनं ।
चढी हुतोपा न इन्द्रियक चिह
त्रहि ताहि हुई जनि सोक तिह ॥

प्रत काई पुकारिय राम प्रवह,
दुनीया न दुखी हवै तुम्ह प्रवह ।
करि बाहर किस्रीय काइ किमा,
विल मात नहीं सु कइ तमा ॥
मांधाता येहि प्रसन्न कीयं
किकै आंगिा रिखीसर स्योविरमीयं ।
पदमादरा प्रत करांड इसा,
मुझाया हरि नीर अथम्ग अझा ॥
नगरी प्रत राम सुरापुरीयं
इक चित्त पद्मावरी प्रत कीयं ।
करि कांठमी कीम मनाकि कम्मी
इल मारति बिस्र मझागम टम्मी ॥
गवकै गाम मझे मरीय,
ममकै नीर भरै मरीय ।
सुइ मांस्यौ मेह मय सुगता,
करा सेह सनेह हुआ सुगता ॥
धन मास कुमार अंमार पर्व
पद्मावरी हेरा नाम कहं ।
प्रत इस्या कायइ पाप परा,
करइ इक चित्तहि सत्त प्रत मरा ॥
कृतयुग्गहि राम करी महिमा,
इंद्रसन महाधिप सेन सखा ।
तिण प्रत कीयइ आप दूरि गयौ,
तिम रीह थी लोक प्रसिद्ध थयौ ॥

हाथ लियो परसाद मन महि संगट खोले ।
भव भव संगट कटे, देव करै विलम खोले ॥
बहु हरख करै इम कामणी, दंत वरत मोमें दयो ।
अपछरा करै थासी अपण, काम काज सोहम कयो ॥४॥

अब कीधो कामणी, तरह आपण परि आई ।
पारस रंक पामियो, जिना चिंतामणि पाई ॥
अभिचारी तिय चौथि करै नित मन चलविव ।
कै आमां केरडां, अब रजमी मसि रूगंत ॥
तिण समै म्याग राजा रचै, किम्बा विवाहण कारणे ।
तोरे निवाह तुरत पहुत, पाके भेद न पारणे ॥५॥

राय वेडे कोतवी कही विधी पही कथ ।
मतीसा कारणे, तोह जाह भेद पहुत ॥
राय हुकम कोटवाल दूत भेले हरकावै ।
बाबा के प्रिय पास सोभि आयो गेह आवै ॥
दूत पकड़ कीधो दूप बाल कू, कांयु निवाह उचारियो ।
दे बीच सीस धुणा डोकरा कबही पातक कारियो ॥६॥

बैठी धर कामणी ध्यान धणीआंणी ध्यावै ।
पातक कोह पर करै आंच डर मूल न आवै ॥
बैठो सुख में जाव होय पांखी हुलासव ।
हरी होय मंजरी हुआ सोना रा हासव ॥
कुमार निवाह न पाम्मियो दिवस बीच लगो दरण ।
निवाह मांहि बनियो नहीं देव क पहुत अचारीमय ॥७॥

दुखी बात सहर में रैत संभलियो राजा ।
राजा आप पूछियो देव कोई पहुत द गाजा ॥

बोले वद मित बास नहीं कोप देव न दांणव ।
बासो इण सरीर में बास विप्र कणक समाइया ॥
तू पाखि हिमै परि नाइरे, तुझ माथ बैठी वठे ।
पिर मांन बिराजै चोम रो, नाम कभो राजा कठे ॥८॥

॥ राजा वायक दूहा ॥

कहि किणरी सेवा करे कहि किण री बिसवास ।
पावक री तिम पूजियां ताप न लागे तास ॥९॥
सु ठक पीठक जत्र मंत्र असुर सुर अराध ।
साच बताबो सुदरी सो हूं पूछ साध ॥१०॥

॥ बांमणी वाइकं दूहा ॥

बोल कहे इम बामणी राजा संमळि राइ ।
को आगम है ईसरी अगम अपार अथाह ॥११॥
सुर पूजे सबे सगत इन्द्राणी सुर इन्द ।
चार माप पूजे तिके दधी उगा चंद ॥

॥ वचनिका चोम री वार्ता ॥

बांमणी भणे छे राजा सुणे छे बामणी बात कहे छे राजा
स्नरो मान करे छे । 'एक दिन रे विमै सुरत मइ 'वपणो छे
ध्यान म गई ' मूमी फाटी ऊतरे अपछरा विमांन सू ऊतरी ।

॥ दूहा ॥

अपछर विमांनो ऊतरी पूजा 'धारण प्रीत ।
बलद ऊपलो मांडमी 'मइ देगि मयमीत ॥१२॥

---

(१) मा पवर मइ । (२) बांपणा । (३) नपरी वाट पृथ्वी फटी ।
(४) धारण पवित्र । (५) करें । (६) मइ ।

बांमणी बणीयांणी मैं ब्याई ईसरी साद सांमळता सभी आई।
बांमणी रो बाळ नीवाद में न बळ्यो, राजा प्रजा सब रो मन गळीयो
मत रो राह बांमणी बतायो, प्रजा राजा चौगरो परचो पायो।

॥ दूहा ॥

परचै परचौ [1]पूजवै प्रभी लगाई पाव।
केसरीया अपघार करै, मा मोटी महमाव॥
सबने मेवा सुखदेवे राम्य [2]दुसदला गुदरा गला।
सांकड़ै मोकळो सुखकळ भासाम, परजा पूजै राजमांन।

[3]मत री महैमा परगटित भई।
[4]सगत री वार्त्ता केसरी सिंघ सोवमदासौत कही।
सं० १८०८ इति श्री [5]चौथ माता री कथा सम्पूर्ण।

श्री चाळीसम्पे लिखतं

(१) पृथ्वी। (२) देवै सबका भेवरा गाम्म। (३) वन करतां महमाप मालुम भई (४) सुणी ने वार्त्ता (५) बचनिका।

तिसइ रोहिणी स्नान विलेपण करइ, खीरोदक स्वेत वस्त्र पहिरि मोती ने आभरणे अलंकरी जाणे देवलोक नी अच्छरी। रूपि अपछरा पालखीइ बइठी। सखी परवरी तिहां आवी। प्रतिहारी आंगलि कुमरना नाम गोत्र, गुण-लक्षण, गमम, सीम, सूरमा कहिवा। ते मूकी। नागपुरनउ राजा वीतसोक तेहनु पुत्र असोक कुमर वरिउ। वरमाला घाती। योग्य वर वरिउं। सहु हरखिआ। विवाह कीधओ। हाथी घोडा वस्त्र भोजन, तंबोल देइ रोहिणी सहित नागपुरि पहुंचाविओ। वीता राजा सगला सनमान्या। आप आपणइ थानकि गया।

केतलइ कालि राजाइं असोक कुमरनइ राज्य देई दीक्षा लीधी। असोक राजा राज्यपालतां सुख भोगवतां ८ पुत्र गजेन्द्र सरिखा हुआ। च्यारि पुत्री हुई।

एक वार राणी सातमइ मालीइ गोखि बइठां हतां। लोक-पाल बटुक मुख आगलि बइठउ छइ। तिसइ कोइ एकनु पुत्र मरण पामिउ छइ। तेहनी माता विलाप करती रोती, पुत्रना गुण बोलती देवनइ ओलभा देती देती। रोहिणीइ राजा पूछिउं स्वामी एकेहूं नाटक नाचइ छे। राजा कहइ अहंकार म करि। धन-यौवन राज्य मदि भरित प्रसादइ पुत्री पूरी हुती स्वामी रीस म करउ अहंकार नथी करती मई कहीउ। ए नाटिक नथी दीठउ तेह भणी पूछउ। राजा कहिं नाटिक केई बिहुं हाथि पुत्रकरी गोखि बाहरि ही काढतां हाथि थी ऊपडिउ। महुमो हाहा कार करइ। रोहिणीनइ मनि दुख नही। नगर देवताइं पुत्र पडितु झाली। सिंहासनि बइसारिउ। लोक हरखिउ। ए रोहिणी धन्य सुपुण्य ज दुखनी वात ना जाणइ। वलि पुरवा राजारांणी बेहु महिल क्रीडा करिवा लागा। इणीइं श्री वासुपूज्य

करता तीर्थ करता चित्त रूप कुम्भ स्वर्ग कुम चमारि मानना घणी, छठ अट्ठम, तप करता वन मांहि पुहता। राजा राणी बेटा सहित बद बांधिया। गुरे धरम लाभ दीधउ। धर्म देसना कही। राइ पूछियं भगवन् राणी इसीव तप कीधउ जिणइ दुखनी वात न जाणइ। सुम भइ राणी ऊपरि प्रेम घणु हुइ। वे स्वामणी ? बेटा सुन्दर, गुणवंत हुआ। रूप कुम गुरु कही राजा सांभलु।

इणई नगरि धर्म मित्र सेठि धन मित्रा कलत्र हुइ। तेहनइ दुर्गं वा बेटी हुइ। कुरूपिणी दुरभागिणी हुई। विवाइ विवाह मांडी। कुष्टकोटि मानी। धणिको रांकई न परणइ। ए कन्यारी न हुं भी सेवा मांगिइ वर राखी तेइ नइ दीधी। तेहनी दुर्ग बई रात्रि माठिउ सेठि विलखाइ करइ। धर्म दो मई कांई न थाइ। घरि रही दान बई धरम करइ। तेहना हाथनु को न खइ। चहइ ज्ञानी गुरु पूछ्या। कहइ गिरनारि नगरि पृथ्वीपाल राजा राज्य करइ। तेहनइ सिद्धमती राणी छइ। राणी सहित राजा वन क्रीडा करिवा गया। तिणइ साम त्रमणानइ पारणई गुणसार ऋषि नगर माइ आवा दीठा। राणी परापि पाडी वाली। कडितं ए ऋषिनइ प्रासु आहार देयो। राणी रोसाणीइ। कडु व तू बहड दीधउ। पारणु करता प्राण गया। सुभ ध्यानइ देव हुआ राजाइ वात जाणी। राणी काढी। मात में दिन कोढ निकलिउ। निराइ दुखइ छट्ठी मरकि गइ। पछइ तिर्यञ्च मइ माछे नरके दुख भोगवि। मांजिरि ऊंटणी, कुकरी सियाली सूयरि, घिरोली ऊंदरी मछा आगडी रासिभी चहाडो गाई हुइ निरां सवढार भाममा। मइनइ दुर्ग वा बेटी हुई। निकलि करम बाइइ थाकइइ जातिस्मरण करमउ। चाकिता सब दीठा। दुर्ग वा हाथ आदि मइइ ए दुख इपइ न वराय कहइ।

गुरे कहिउ भारती मंजन राखिय मत करउ । विधि सांभलइ । सात वरस सात मास कीधइ । श्री वासु पूज्य नइ रोहिणी नई दिनि उपवास कीधइ । ते तप करतां सुभ ध्यान भाविइ । ए तप नइ प्रभावइ रूडी हुयइ भावतइ असोक राजा नइ रानी हुइ । भाग भोगवी । श्री वासु पूज्य नइ तीर्थ मोक्ष पामिसिइ । तप पूरइ थातइ । ऊजमणउ करउ प्रसाद करावी । तिहां असोक वृक्ष तलि श्री वासु पज्यनी रतनमइ प्रतिमा करावी पूजीइ ।

असोक रोहिणी सहित सोना मणि मोतीना आभरण करावी । श्री वासुपूज्य नइ स्नात्र विलेपन कुंकुम कपूर सुगंध द्रव्य पूजा श्री संघ भक्ति कीधइ । अमारि प्रवर्त्तावीइ । साहमी वत्सल संघ पञ्च करावीइ । मिथ्यात छिडावीइ । इम दुक्ख जाइ सिइ । राजानी परि दुर्गंधा वली पूछइ । दुण ते सुगन्ध राजा । ऋषि कहइ ।

सीइ पुरि नगरि सिंहसेन राजा कनक प्रभा राणी । तेहनइ पञ्च दुर्गंध हूओ । कहिनइ कर्म्म सही । पछइ तीणइ श्री पद्म-प्रभु तीर्थंकर वांद्या । कारण कर्म विपाक पहिया । परमेसरि कहिया । नागोर निकट पारखो भण्या नील पर्वत, ते ऊपरि शिलाऊइ । तिहां रिपि १ मास खमण तप करइ । ऋषि नइ प्रताप थिइ आहेडी निफल थाइ । ऋषि ऊपरि रीस आणइ । ऋषि पारणइ गामि माहि पुहता । तेतलइ आहेडिइं शिला ऊपरि आगनी बाली । ऋषि शिला ऊपरि रीसइ बैठा । ताप हुवइ । तिम-तिम शुभ ध्यान आणइ । कर्म्म क्षय करी । केवल ज्ञान पामी मोक्ष पुहतो । तिणि आहेडिइ ऋषि शिला हत्याइ कोढ रोग हुइ । मास मी मरण पुभवीइ पइ_पउ पछइ पहिली नरक गयउ । पछइ माप पछइ पांचमइ मरण सिंह, पछइ चोथी नरकि

चीतक श्रीमइ नरगि विखाद इम भाइवी नव जीव भमि गोवालिणी दरिद्री हुवी । नागुरि आवन्नइ नवकार मीखिव । वचानस्ते वखिपी । नवकार प्रभावइ राजानइ पुत्र हुवी । कर्म भावतु दुग्धु । विवाइ दुर्गंध हुवी । पछइ वेहनइ जातिस्मरण उपनउ । दुःख संभारी वीहतइ श्री पद्मप्रभु पछूचा स्वामी कोइ उपाय पूछी । तीर्थंकरी कह्यु रोहिणी तप किधो । विधिपूर्वक विवाइ सुगन्ध पणो पामी मरी देवता हुवी । चवी चंपानगरीइ मनमथ राजानी धर्मी रोहिणी रूप पात्र हुवी । ताहरी राणी हुई । जन्म लगइ भाति पिता न जाण्यो । अशोक राजा हूं तइ पूछियी स्नइ स्वामिणी ते सांभळि सिंहसेन राजाइ सुगन्ध पुत्र नइ राज्य देइ दीक्षा लीधी । सुगन्ध राजाइ जिन धर्म पाली देवगति पामी । पुष्कलावती विजय पुंडरीकिणी नगरीइ विमलकीर्ति राजानइ पुत्र अर्ककीर्ति हुवो । तेहनइ चक्रवर्ती पदवी हुइ । राज्यपाळी अपि चक्रइ दीक्षा लीधी । दुष्कर तपक्रिया कीधी । आयु पूरो बारमइ देवलोकि अच्युत इन्द्र हुवो तिहां विजय पुष्करीकणी चवीनै तूं अशोक राजा हुवो । रोहिणी राणीमइ बलभ तुम हैं तिहुं बर्णी ए कर्म रोहिणी तप विधिइ कीधउ । तोरइ भति स्नेह छइ । बेटा गुणवंत छइ । ते सांभळि ।

मथुरा नगरीइ अग्नि शर्मा ब्राह्मण तेहना सात बेटा हुवा, पणि दरिद्रि । एक वार पाडलिपुरि नगरि भिक्षा मागिवा गया । तिसइ वाटी माहि राजकुमर देव सरीखा वाहि विरचा मायइ मुगट काने कुंडल, हीयर हार कमरबंध, हाथ हीरे जडी मूंदडी । एहवा राजकुमर रमता दीठा । सिव शर्मा ब्राह्मण आपणा पुत्रनइ कहइ दिसा भाइ अन्तर कीधो । ए मन-वांछित सुख भोगवइ । आपण भिक्षा मागता घरि-घरि हींडिइ ।

तू आपणा कर्म मइ कर्मा दीधइ। अब पाळीइ भवि आपणे पुन्य न कीधउ तव दलिद्री हुवा। पछइ तीर्थे आयणो कीध इमा धर्म पाखवड मांडोउ। गुरु पास दीक्षा लीधी। अति तप तप आठ सगर करि साउमइ देवलोकि देव हुवा। तिहां थी चवी ताहरइ गुणशालिक बेटा ७ धर्मवंत सहित हुवा। अनै आठमू पुत्र लोकपाल छइ ते आ गइ वैताढ्य पर्वति मिल्लक मामइ विद्याधर रहतौ हुतउ। नंदीश्वरि शाश्वती प्रतिमा पूजितु यात्रा करतु धर्म सेवतु आय पूरी सउ धर्मइ देव हूऔ। तिहांथी चवी ताहरै लोकपाल हूऔ। तेहनै मित्र देवताइ सानिध कीधउ। हिव बेटी ना भव सांभलि।

वैताढ्य पर्वति विद्याधरलइ च्यारि बेटी। रूपवंत गुणवंत यौवन पुहती वन मांहे खेलती। ज्ञानी ऋषिसरै बोलावी। कोई पुण्य करौ छउ। धर्मई कांई पुण्य नवी करतां। गुरै कहियौं आयुखा थोडली रही तव्वावस्था छइ। तेहे कह्यु तू धर्मई पुण्य सू थाइ। गुरै कह्यु आज अनुभाजी पांचमि छई। ज्ञानपंचमी तप आराधउ, उपवास करउ। पतइइ तवइ सुखिया हुसिओ। पछइ पचखाण करि घरिगाई, देवपूजी पुण्यनी अनुमोदना करइ छइ। आऊलउ दिन गुरु पसाइ सफल हूऔ। ए पांचमी तप सजीव लगइ करिस्। इस कहितां थां हसू वीज पडी। च्यारि परोक्ष हुइ। देवता थइ चवी ताहरइ बेटी हुई।

एक दिनि पचमि कीधी। तेहना फल हवा कुशल थाया, सुख थाम्या। ए चरित्र अशोक राजारो राणी, आठ बेटा च्यारि बेटी। ए रूप कुम गुरु पासि सांभलि जातिस्मरण ऊपनउ। राजा परिवार धर्म पचखाणी धरि आम्या। केतलइ कालि राजा राणी सहित वैराग्य ऊपनू। मौयायु पूज्य कन्हइ दीक्षा लीधी।

कर्म क्षय करि । केवल ज्ञान पामि । मोक्ष सुख सास्वता पाम्या । रोहिणी पांचमि तप तणा निरूपा फल ए जाणि । सुरत न सुवइ, सुख संपजइ इम बोलइ गुरु वाणि ।

॥ इति श्री रोहणि अशोक राजा कथा समाप्ता ॥

श्री बृहत् खरतरगच्छ महाचार्य श्री सागर चन्द्रसूरि शाखायां वाचनाचार्य श्री आणंद धीरजी गणिशिष्य पं० प्र० श्री सुखहेम गणि शिष्य पं० सुमत विशाल मुनि लिखितं ।

अभय जैन ग्रन्थालय-बंडल नं० ७५, प्रति नं० १२७०, पत्रांक १४-१५ ।

अथ होलिका पर्व री कथा

श्री गुरुभ्योनमः। हिवैं होलिका पर्व री कथा छै। फागुण सुदि पूनिम दिनैं हुई तिणनैं लोक होली कहै छै। तिका होली रो प्रकार री छै—एक द्रव्य होली दूजी भाव होली। तिहां जिन धर्म विमुख अज्ञानी मनुष्य तिके काठ-छाणा बालकर होली करै। पछै दूजे दिन धूलि-क्रीड़ा मल-मूत्र रक्षाधन, रासभ चढ़णा स्त्री-मनुष्य पीड़न कर्दमा प्रमुख मांहोमांहि करै। तिको सर्व अनर्थ दंडरो कारण जाणनो।

तिका द्रव्य होली भद्रा मनुष्यां मे दोषण पाप्य छै। फेर धर्मी मनुष्य छै तिके इसा कर्त्तव्यां करी भाव होली करै, तिके कथ्य कहै छै। ज्ञान तो तपरूप अग्नि जांमे कर्मां रा दल तिके छाणा तिणां री भस्मी करणी तिका भावहोली कहै छै।

फेर धर्म-ध्यान रूपी पांणी सू खेल करै। नव-तत्व रूपणी गुलाल उडावे, पाच सुमति रो पिचरको हाथ में लेवे, समरूपी छिड़काव करे—इत्यादि भाव होली खेलै।

हिवैं लौकिक भूमिये पर्व री कथा कहै छै। जयपुर नगर विषे अधर्म राजा—तिण नगर विषे मनोरथ नामा सेठ रहै छै। तिण सेठ रै च्यार बेटा ऊपर अत्यंत रूपवान होली नामै बेटी हुई। तिण बेटी में व्याम अवस्थायें पितायें मोटे महोत्सव हुती परणाई।

तिण कर्म रै वश हुती—तिका बेटी विधवा हुई। पछै माता पितारै घरे रहै। हिवैं एकदा अवसरैं तिका कन्या गोखडे विषे बैठी छो। तिण अवसरैं वंग देशरो धणी—भुवनपाल राजा तिणरा बेटा कामराज इण गली माय नीकल्यो। कुमरे कन्या नै

देखी कन्यायें कुमर नैं देखी। दोनू ही मांहोमांहि काम व्याप्त हुवा।

तिवार पछै गुरु पीड़ा सहित पुत्री प्रतै सांमण सेठ चिरापुर रहै। हिवैं तिण हीज नगरी बिसै एक डुकरा भामै सांमण रहै छै। बावरी भावसी छै, चंदरूप नामैं बांदरी बेटी छै जनैं चंचल मूर्ति नामैं भरदे नैं परणाई छी तिका सांमण मंत्र-यंत्र, कूड़-कपट करती लाकां नै ठगे छै। मूत प्रमुख कहै। भवरी बदना भोगवती सरीर में दूवली रहै—घर-घर भीख मांगती फिरै। पिण कामांतरायरै उदय हुवी पूरी भीख नहीं मिलै। तिण कारनै लोकां ऊपर क्षमाकुल रहै। तिका सांमण भीख मांगती मनोरथ सेठरै घरै आई। तद सेठ कह्यो— हे माता म्हारी बेटी नैं साजी कर!

पछै सांमण होफी–कन्या कनै आई, मांहोमांहि वातां करी। फेर सांमण कह्यो—हे बेटी! थारै मनरी बात कह। तद कन्यायें पिया भ्रमपाम रै मिलणरी बात कही। तद सांमण कह्यो— हे बेटी आदीतवारै दिन पूजारो मिसकर सूर्य देवरै मंदिर आवजे उठै थाहरा मनोरथ पूरस्यूं।

पछै आदीतवाररै दिन होसिला-कन्या उठै आई। कुमर पिण सांमणरै संकेत सूं उठै आयो। पछै कन्या सूर्य देवरी पूजा कर बाहर आई, तद कुमर कन्या सूं मिल्यो। मांहोमांहि बात विगत करी—भाग्निगम कियो। पछै कन्या कुमर रै पूठै वापोटा देई मै रूकी—मनैं पर पुरसरो संयोग हुवो, तिके माठो पाप लागो। सो पाप दूर करण वास्तै हूं अग्नि-प्रवेश करस्यूं।

तद पिता आय कर इठड़ री बेटी नै परै लायो। फेर फागुण सुदि पूनिम री रात्रै तिण सांमणैं फेर तिणारै सबोग कराओ। तद सांमण पिण तिणारै मशीक मू पड़ी छै, तठै सूती छै। पछै कन्यावै जांण्यो—इ कनांरी वात छै, तिका थोड़े हुसी। इसो विचार नैं सांमणरी मू पड़ी जगाय कर कुमर-कन्या घोर ठिकाणै आवता हुवा।

हिवै परभात हुवो—सेठैं पुत्री नैं नहीं जाणकर घणा विलाप किया। पछै लोकां पिण सती मैं नहीं जांणकर तिणरी भस्मी मर्दै नमस्कार कर सरीर विसै लगावता हुवा।

तिण दिन हु तो वरस-वरस होठ होळी पर्व प्रवर्त्यो। अबार पिण परभातैं सूल्य लोक होळी पर्व करै छै।

हिवां कितरा एक दिन गयांपछै कुमरैं होळिका स्त्री मर्दै कह्यो—हे स्त्री, म्हारै मनै धन री विसे सबे लाधो। तिणैंकर धन कमावण मैं परदेसे जास्यू। तिणारै होळिकायैं कह्यो—ह स्वामी, हूँ कहू तिको उपाय करो—जिणह री आपरै धन प्राप्ति हुसी। कहो मर्यादं, म्हारै पितारी हाट जायकर एक साड़ी लावो।

पछै कुमर जायकर साड़ी ल्यायो। तद स्त्रियैं कह्यो-आ साड़ी म्हारै लायक नहीं। तद कुमर फेर जायकर दूजी साड़ी ल्यावो। फेर स्त्रियैं कह्यो—आ पिण म्हारै लायक नहीं। इण तरै तीन चार-वार फेरयो। तद सेठैं कह्या—थारी स्त्री नै लेआव, जिका आपै ही दरखसी।

पछै कामपाल पिण आपरी स्त्री नैं मागै लेकर सेठरी हाटै आयो। तद सेठ देखकर बोल्यो—आ तो म्हारी बेटी छै !!

पछे कामपाल तिण आपरी स्त्री नैं सागे लेकर सेठरी हाटे आयो। तद सेठ देखकर बोल्यो—आ तो म्हारी बेटी है !! तद कामपाल सेठ प्रतैं कहतो हुवो—अहो सेठ ! थे तो घणा भोळा हो। थांरी बेटी तो अग्नि प्रवेश करयो ! तिणरी बात सर्व लोकजांणे है। अर थे किसी न जाणो हो !! आगे पिण सूर्य देवरै मन्दिर मांहि हूं म्हारी स्त्री सहित आयो हो, तद थांनैं थारी बेटी रो भरम पड़ायो हो। अबार तिण म्हारी स्त्री देख नैं थांनैं थारी बेटी रो भरम पड़यो ! तिणवास्ते अहो सेठ सरीखा रूप किसी न हुवे है !! थानैं तो निकमो भरम पड़े है अर अठे कारण नहीं है।

इसो सुणकर सेठ हर्षवंत हुतो थको बोल्यो— मैं तो इणनैं बेटी कही, सो म्हारे तो आजसूं आ पिण बेटी है। इसो कहकर सठैं बेटी रै स्नेह हुती कपड़ा गहणा, भोजनादिक सामग्री सर्व पूरै है।

हिवैं दुःखा स्त्रीमरण मरकर पिसाचणी हुई थी। तिणैं आपरो पूरलो भव देख्यो। अहो इण नगर रा लोक महा दुष्ट है मनैं निकळा पिण पूरी नहीं थावता ! सो इणां मैं संतापणा ! पछे पिसाचणी कोपाक्रांत हुई थकी लोकां नैं मारण मंडी। नगर रै ऊपर मोटी सिला विकुर्व।

लोकिक रो मान्य कवर नो लोकिकसु पुछै नहीं। पछे लोकां भय पांम्या अत्र-आकुल करया। तद पिसाचणी कह्यो— महा लोकां हुं पहिलां मांड-मरता लोप कुआं मैं छोड़कर थीर मर्वलोकां प्रतैं मारसूं।

तुलसी व्रत कथा[1]

एक हो बामण—बामण रै घर में एक छोटी-सी छोरी ही। वे कह्यो—मा हूं तुळसी पूजोस[1] के बाई पूजसी।

कातीरो पून आई— वे तुळसी री पूजणो सुरू कियो। वा तुळसी रोज पूजती। घरे मांयसूं एक छोटी-सी छोरी, गैणा कपड़ा पैर'र निकळती। हाथे बाई, तू म्हारी मायसी होयजा। वा बोलती कोयनी।

एक दिन मांनै आय र कह्यो—मां तुळसी मांय सूं एक छोरी रोज निकळे है। मनै कवे है—तू म्हारी मायसी होयजा। मां कह्यो— मायसी होयजा तू परी। जदै वा दूजै दिन पूजण गई। छोरी घरे माय सूं फेर निकळी। हांये बाई हैं मांनै पूछियो ! हां बाई पूछियो— म्हारी मां कह्यो, तू मायसी होयजा।

म्हारी मायसी हुई, तमै हूं जीमण रो नैतो देयूं हूं। काल म्हारे घरे जीमण नै हालै। जदै मां नै कह्यो के मां वे मनै जीमण नैतो रो दियो है। तावै बाई जावै परी। दूजै दिन बापरै घर में चोख्या-चोखा कपड़ा पा पैर'र तुळसी पूजण गई।

तुळसी री मायसूं वा मायसी निकळी—के बाई हाल! वा पैलै सेगई—सगई बैकुंठ में। कोई कवै मूंग खाई कोई कवै चैन खाई, कोई कवै कांई खाई। सैनजणा करी स्वागत करी। मानै रै थाळ में छत्तीस भोजन तैतीस तरकारियां पुरसियाँ। सोनै री झारी भरदी। पछै चोखी तरै जीमाय, तुळसी रै पेड कनै छोड़दी।

१—श्रीमती मोहनी देवी द्वारा लिखाई गई।

और कयण लागी—मामजी, मनै नैतो कदतीस । कै म्ह
मां नै पूछर पछै दीस । बा घरै आई । घरै आय मां
कयो—हांस मा थेरै घरै तो बतीस भोजन—तैतीस तरकारि
ही । बा कयो मनैं ही नैतो दे । थारां आपारै घर में क
जीमाणों देवै । मां कयो—नैतो देदै । आपां रै घर में साग
रोटी है, साग रोटी ही जीमाय देसौं ।

बा दूजै दिन तुलसी जी पूजण गई । तुलसी माय
बाई मायजी निकल्यो । कै हाथै बाई, थैं मानैं पूछयो ।
बाई पडूत्तियो—नैतो देवण आई हूं । काल तू म्हारै घ
जीमण आवे । कै काल हूं थारै घरै जीमण आईस । तू
आठे रो दीवो चौमुखो करपरो आंगण में जगाय दिये ।

बये बा घरै आई । घरै आय मां नै कयो— मां हूं नैतो
देय आई । दूजै दिन बा जीमण आई थेरै घरै । आय
आंगण में बैठ गई । बे कयो—हांवे बाई, रसोई होय गई ?
म्हारी मां माथो धोवै है । माथो धोय'र रसोई करसी
फेर बा बैठी रई कईताल । हांवे हाल रसोई होई कोयनी
थेरै मोय तो दूजी बात ही-बाप आटो लेय'र आयो कोयनी—
रसोई कांयरी करै ?

बये कयो—मनै तो भूख लागी है । हमैताल हूं भूखी
रहूं कोयनी ? तोकै थारो नाम पर और तो संभाळ ! क्य
संभाळ् बाई ? म्हारै तो घर में कई कोयनी ? तू दय
घरी जाय ।

सट विनायक

एक समय की बात है—एक तालाब में एक मेंढक और एक मेंढकी रहा करते थे। मेंढकी को भगवान् श्री गणेश जी से बड़ी भक्ति थी—वह तमाम दिन भर 'सट-विनायक' 'सट-विनायक' की रट लगाया करती थी। मेंढक को यह सब बुरा लगता—रौंड! तमाम दिन भर पराये पुरुष का नाम लेकर रटा करती है—मुझे लाज-शर्म भी नहीं आती। मेरा तो कभी नाम तक भी नहीं रखती। इस प्रकार मेंढक रोज बक्‌ करता और मेंढकी अपना जिद पकड़े, अपने विश्वास पर दृढ़, 'सट-विनायक', 'सट विनायक', आठों पहर रटती ही रहती।

और एक रोज मेंढक के इस प्रकार अधिक झगड़ा करने पर, 'गुड़-गणेश' ने बकझक कर मेंढकी से 'सट-विनायक', सट-विनायक' की रट लगाना हमेशा के लिए बन्द ही कर दिया।

समय पाकर एक रोज एक पनहारिन पानी भरने को तालाब पर जो आई, तो आते समय मेंढक और मेंढकी को भी घड़े में डाले लेचली। घर पर लेजाकर तालाब के उस पानी को 'मींढके-मींढकी' सहित चूल्हे पर गरम करने को रख दिया। अब तो मेंढक भी घबरा उठा। वह गुस्से में आकर मेंढकी से कहने लगा 'रोज तो तालाब में बैठी 'सट-विनायक' सट-विनायक' रटा करती थी! और आज जो गरम पानी में सिजोये जाते हैं, तब बुलाती क्यों नहीं—तू तेरे 'सट-विनायक' को! जरा अब देख तो हूँ तेरे उस 'सट-विनायक' की बहादुरी—बड़ी भक्त बनी फिर रही थी तब तो।

तुलसी व्रत कथा

कथा बहुत पुरानी है, एक बुढ़िया रहा करती थी। बुढ़िया का नियम था—वह हर रोज ठीक समय पर 'तुलसी की पूजा करती एक लोटा उसमें डालती और तब कहीं जाकर अन्न पान ग्रहण करती। बुढ़िया पूजा करते समय तुलसी माता से प्रार्थना करती 'माता धन दे धन दे अन्न दे सिरखो दे पूर्ण रो परिवार दे भाई दे भतीजा दे इग्यारस रो दिन दे, सूरज री साख दे, श्री कृष्ण भगवान् री कांध दे।'

इस प्रकार वह बुढ़िया रोज पूजा करती और रोज ही वह इस प्रकार की तुलसी माता से प्रार्थना करती। बुढ़िया की जब यह प्रार्थना तुलसी माता ने सुनी तो उन्हें बड़ी चिन्ता होने लगी। उनका शरीर क्षीण हो गया वे दिन-प्रति-दिन कुम्हलाने लगी।

भगवान् ने जब देखा तुलसी जी कुम्हला रही हैं, तो उन्होंने इसका कारण पूछा। तुलसी जी ने डोकरी की सारी कथा कहते हुए बताया मुझे और किसी प्रकार का भय नहीं है। मैं उसे उसकी सभी मनोकामनायें पूर्ण कर सकती हूं। पर श्री कृष्णजी री कांध दें—मैं जब मरूँ तो मुझे श्री कृष्ण भगवान् उठाने के लिए आवें यह कार्य मुझसे कैसे सम्भव हो सकता है!

भगवान् ने यह सब सुना तो हँस पड़े। उन्होंने तुलसी जी से कहा-तो इसकी कौन चिन्ता है। मैं सब ठीक कर दूँगा समय आने पर। आप से जब बुढ़िया ऐसा ही वरदान माँगती है, तो उसे सहर्ष देदें।

और समय पाकर कुछ ही वर्षों बाद बुढ़िया यमलोक को चल पड़ी। बुढ़िया को नहलाया गया उसे नवीन वस्त्र पहिनाये गये। मरणोपरान्त जैसे सभी संस्कार होने चाहियें बुढ़िया के भी किये गये। अभी उसके बेटे-पोते उसे उठाने को ही थे—श्मशान भूमि में ले जाने के लिए कि उनके आश्चर्य का पारावार नहीं रहा। बुढ़िया इतनी भारी हो चुकी कि सभी लोगों के मिलकर उठाने पर भी वह जमीन से जरा सी भी उठाई नहीं जा सकी। सभी हैरान होगये। शहर के सभी लोग आये साधु आये सन्यासी आये कई ऋषि-मुनि और तपस्वी भी जंगलों में से आये यह सब सुनकर और लगे आजमाने अपना अपना, योगबल तपबल मंत्रबल लेकिन सभी असफल रहे, सभी हार थक गये।

शाम हो चली सभी लोग चिन्ता सागर में गोते लगाने लगे। हैरान होकर वे सभी मन मारकर बैठ गये। अब वे लोग कर भी तो क्या सकते थे? जहाँ शक्ति मानव की नहीं चली काम वहीं पर उस शक्तिमान का डेरा बनता है। बुढ़िया के दाह-संस्कार में योग देने वाले सभी लोग भगवान का स्मरण करने लगे।

इतने में देखा एक बालक नगरी की ओर भागा आ रहा है। उस बालक ने आते ही पूछा भाई! यह जमघट किस बात का है? तुम लोग यहाँ मारे के मारे किस वास्ते इकट्ठे हो रहे हो? सारी कथा उस बालक के प्रति कहते हुए एक वृद्ध ने बड़े ही कातर शब्दों में कहा—बुढ़िया तो बड़ी ही पुण्यशीला धर्मात्मा, ईश्वर भक्त थी। फिर यह कौन पूर्व जन्म का कुकर्म है यह हम सभी के उठाने पर भी उठाई नहीं जा रही है। उत्तर में उस बालक ने हँसते-हँसते कहा तो मैं भी अपनी शक्ति आजमाऊँ यदि आप लोगों की राय हो तो।

उपस्थित लोगों में से कुछ लोग बालक के इस भोलेपन पर हँसे कुछ लोगों ने उसको मूर्खता पर मुँह बिगाड़ा कुछ लोगों ने उसके इस प्रश्न पर विस्मय व्यक्त किया। फिर भी उस वृद्ध ने उससे प्रभावित होकर उसका ऐसा करना सहर्ष अंगीकार कर लिया।

लोगों ने देखा उस बालक ने अभी अपना कन्धा बुढ़िया को उठाने को लगाया ही था कि वह जमीन से काफी ऊँचाई पर आ-ठहरी। अब तो बुढ़िया इतनी हलकी प्रतीत होने लगी जैसे कोई फूलों का बण्डल लिए जा रहा हो।

इस प्रकार बुढ़िया का दाह-संस्कार विधिवत् हो गया। वह बालक भी बुढ़िया के साथ-साथ श्मशान-भूमि पर आ-ठहरा। बालक को पकड़ने पर 'हे सुबाल! तुम कौन धरा को उज्ज्वल पवित्र करते हो ?' भगवान् ने अपना चतुर्भुज रूप सभी लोगों को वहीं दिखलाया और फिर अन्तर्ध्यान हो गये।

'हे कुम्मी माता' ग्वों उन्हें लोकरी में गुप्तमान हुई, उसी सकल में हुवे।

सोमवार की कथा

एक समय की बात है—कहीं एक राजा और एक भाट रहा करते थे। भाट और राजा दोनों ही शिवजी के बड़े भक्त थे। बिना किसी प्रकार का नागा किए भाट भी शिवजी की पूजा करने जाया करता; लेकिन राजा बड़े ही ठाठ-बाट के साथ, हाथी-घोड़े, रथ-पालकी गाजे-बाजे व फौज-पलटन के साथ जाया करता—और जाए भी क्यों नहीं आखिर राजा जो ठहरा—उसके यहाँ कौन बात की कमी थी।

शिवजी का मन्दिर शहर के बाहर काफी दूर नदी के किनारे पर था। भाट का यह नित्य प्रति दिन का नियम था—वह नदी में तैरता-तैरता जाता और उसकी बीच धारा में से शिवजी के लिए जल पूजा के लिए लाता। वह वहाँ जाकर वह जल अपने मुँह में भरता और फिर भगवान् पर कुल्ला करके वह ध्यान मग्न हो उनके सम्मुख बैठकर माला फेरा करता। मालोपरांत वह पूजा करता—'पूजा भई?' तब शिवजी प्रसन्न होकर बदले में उत्तर देते— 'भई!!' और तब भाट वहाँ से उठकर अपने घर को जाता और अपना काम-धंधा करता। जब तक भगवान् शिव के मुँह से यह उत्तर नहीं सुन पाता—'भई' भाट, वहाँ से उठना तो दरकिनार रहा—हिलता तक नहीं था।

इधर राजा साहब का ठाठ ही निराला था। उसके यहाँ भला किस बात की कमी थी। वे पूजा का सारा सामान—धूप दीप, पुष्प, केसर कपूर फल-फूल और प्रसाद से पूजा किया करते। उन्हें इस बात का बड़ा ही अभिमान था। मैं इतने उपकरणों के साथ शिवजी की पूजा किया करता हूँ, निश्चय ही मैं शिवजी का प्यारा भक्त हूँ! मुझे स्वर्ग में स्थान मिलेगा।

एक दिन भगवान् को अपने भक्तों की परीक्षा लेने की सूझी। फिर भला क्या था—भगवान् ने माया को फैलाई तो आँधी-तूफान और साथ ही बड़े जोरों की मूसलाधार वर्षा हो चली। शहर में इस प्रकार का भयंकर तूफान और जोरों की वर्षा तो सैकड़ों वर्षों के इतिहास में भी नहीं हो पाई थी जैसी आज हुई। सभी शहरवासी भयभीत हो उठे—आखिर यह प्रलय कैसा !!

ऐसे भीषण समय में भी जाट पूजा करने का समय हुआ जानकर घर से मन्दिर को चलपड़ा। वह तूफान से संग्राम करता मेह पानी में भीगता हुआ नदी के किनारे शिव मन्दिर में जान पहुँचा। नदी वर्षा के चढ़नी चली आरही थी। जाट को यह कुछ भी भयभीत नहीं कर सके। भक्त तो भगवान् पर आश्रित रहता है फिर भला उसे भय और कष्ट किस बात के। वह कूदकर फौरन नदी के मध्य धार में पहुँचा वहाँ से भगवान् की पूजा के लिए फिर मुँह में जल भरा और हाथ मारता-मारता किनारे आ लगा। उसने भगवान् पर कुल्ला किया। 'पूजा भई'! कहकर फिर ध्यान मग्न होकर भगवान् के उत्तर की परीक्षा में बैठ रहा। भगवान् तो आज भक्तों की परीक्षा लेने की ठाने बैठे थे—इन्होंने आज उत्तर नहीं दिया।

जाट का तो ऐसा नियम था—जब तक 'भई'! का उत्तर भगवान् शिव नहीं दिया करते वह अपने स्थान से उठने का नाम तक नहीं लेता और आज जब उत्तर नहीं मिला तो वह शान्त और धैर्य मुद्रा में ध्यान लगाए अपने पर आसन जमा रहा। इधर भीषण वर्षा के कारण मन्दिर का छत फट चली और एक दीवार में दरार भी पड़ गई। छत के फटने से मलबा नीचे मन्दिर में गिरने लगा। एक-दो ईंटे आकर जाट के पास भी गिरी। ऐसा प्रतीत होने लगा—जैसे यह मन्दिर अभी धराशाई हुआ। लेकिन जाट तो अपना आसन जमाए अटल बना बैठा रहा।

भगवान् शिव ने देखा—यह भक्त तो परीक्षा में उत्तीर्ण होगया तो उन्होंने कहा—'भर्ग'। भाट खुशी-खुशी अपने घर को लौटा।

इधर आँधी तूफान और भीषण वर्षा को देखकर राजा साहब ने सोचा-ऐसी कौन देरी होरही है पूजा म। यह रहा मन्दिर ! अभी बैठा घोड़े पर और बात ही बात में पहुँचा मन्दिर को। व्यर्थ ही म इतने नौकरों चाकरों को क्यों कष्ट दिया जाय और क्यों इस आफत में पड़ा जाय !! जब आंधी शान्त हुई और वर्षा जरा रुक पाई तो राजा-साहब चले शिव-मन्दिर को पूजा करने।

समय पाकर राजा साहब का भी देहान्त होगया और उस भाट का भी। राजा साहब के ताज्जुब का पारावार नहीं रहा जब उन्होंने देखा—भाट तो स्वर्ग चला गया है और स्वयं स्वर्ग जाने की स्वीकृति नहीं मिल सकी। राजा साहब ने क्रोधित होकर भगवान् शिव से उपालंभ देते हुए कहा—भगवन् आपके यहां भी भारी अन्धेर है। मैंने तो आपकी सेवा इतने ठाठ-बाट से की उसे तो मिला 'नरक' और भाट ने केवल मठा पानी ही आपके सिर पर चढ़ाया उसे मिला स्वर्ग !! बड़ा अच्छा है आपका न्याय !!

भगवान् शिव ने जरा मुस्कराते हुए उत्तर दिया—मैं ऊपर के ठाट-बाट से प्रसन्न नहीं हुआ करता हूँ। तुम तो केवल अभिमान को लिए राजा की शान में आकर पूजा करते थे तुम्हारे हृदय में भक्ति का लेशमात्र भी अंश नहीं था। और भाट सच्चे हृदय से सेवा करता था—समझे !!

हे भोलेनाथ जिस प्रकार उस भाट को स्वर्ग का सुख दिया—उसे बैकुण्ठ-धाम मिला वैसा सब को मिले और जिस प्रकार राजा को निराश किया वैसा निराश आप किसे भी नहीं करें।

मंगलवार की कथा

एक गाँव में एक साहूकार रहा करता था। उसकी स्त्री हनुमान जी की बड़ी ही भक्त थी। वह हर समय, आठों पहर श्री हनुमान जी की माला जपा करती। हमेशा हनुमान जी को सवा सेर का एक रोटा भोग के रूप में चढ़ाया करती।

कुछ समयोपरान्त श्री हनुमान जी इस साहूकार की स्त्री की भक्ति से प्रसन्न हुए। उसके एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ।

भगवान् भक्तों की बड़ी ही कठिन परीक्षाएँ लिया करते हैं। शायद वे इस साहूकार की स्त्री को इस परीक्षा से कब छूट देने वाले थे। जब इसका बालक पाँच वर्ष का हुआ तो उस समय साहूकार इस असार संसार से चलता रहा।

साहूकार की स्त्री ने इस भीषण दुःख को भगवान् की इच्छा एवं अपने ही कर्मों का फल समझे और बड़े धैर्य एवं शान्ति से सहन किया। वह हनुमान जी की सेवा और भक्ति से तनिक भी विचलित नहीं हुई। उसी प्रकार श्री हनुमान जी की सेवा और सवा सेर का रोटा उसे हमेशा चढ़ाती रही जैसा वह अपने पति के जीवित काल में करती रही थी।

साहूकार के इस पुत्र का नाम था अनूपचन्द। जब अनूपचंद बड़ा हुआ और उसकी शादी हो गई, तो उसकी स्त्री अपने घर को आई। अनूपचन्द की पत्नी सावित्री को सास का यह नित्य-प्रति दिन घण्टों तक हनुमान जी की पूजा में समय लगाना एवं सवासेर आटे का रोट रोज भोग लगाना अच्छा नहीं लगता। काफी दिनों तक तो वह यह सब देखती रही और सहन करती रही।

अन्त में एक दिन उसने साहस करके पति को यह सारा विस्तारपूर्वक कहा और साथ ही यह भी कहा—मैं यह व्यर्थ का सवासेर आटा नष्ट होता नहीं देख सकती। आप अपनी माता को इसके लिए रोक दीजिये। इस प्रकार आप देखेंगे कि लगभग एक मन आटे की हर महीने अपने यहाँ बचत हो जायगी। इतनी भारी बचत से न मालूम घर के कौन-कौन से काम-धंधे निबेर जा सकते हैं।

अनूपचन्द ने उत्तर में कहा—मैं यह सब जानता हूँ कि माता जी सेवा पूजा में घण्टों बैठी रहती है। मुझे यह भी ज्ञात है—वह सवासेर का रोट हर रोज प्रसाद रूप में श्री हनुमान जी के भेंट रखा करती है। लेकिन मैं किसी भी प्रकार से अपनी माता जी को यह बन्द करने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। मेरी माताजी तो मेरा जन्म होने से पूर्व ही यह सब करती आ रही है। भला यह कोई उनसे कहने जैसी भी बात है।

अनूपचन्द का यह उत्तर सुनकर सावित्री बड़ी नाराज हुई। वह कहने लगी—यदि आप उन्हें बन्द करने को नहीं कह सकते हैं तो फिर उन्हें घर से बाहर निकाल दें। अनूपचन्द ने कहा—अरी तुम पागल तो नहीं हो गई हो ! कहीं मा को भी घर से बाहर निकाला जा सकता है। यह तो कभी भी नहीं होने जैसी बात है।

तब तो सावित्री बहुत ही बिगड़ी। उसने अनूपचन्द से कहा—जब तक आप अपनी माता को घर से बाहर नहीं निकाल देंगे मैं अन्न जल कुछ भी नहीं ग्रहण करने की। यह कहकर जा बैठी एक कमरे में और उसे भीतर से बन्द कर लिया।

लाचार होकर ऐसी विषम परिस्थिति में अनूपचन्द को अपनी स्त्री की यह अनुचित मांग स्वीकार करनी पड़ी। वह अपनी मां के पास आया और कहने लगा—माताजी मैंने गंगा-स्नान करने का निश्चय किया है। क्या आप भी मेरे साथ चलेंगी।

अनूपचंद की मां ने जब बेटे के मुँह से गंगाजी जाने की बात सुनी तो वह बहुत ही प्रसन्न हुई। उसने कहा—बेटा यह भी क्या पूछने जैसी बात है? मैं यदि तुम्हारे साथ तीर्थ-स्थान पर नहीं चलूँगी तो फिर किसके साथ चलूँगी। मैं तो इसी दिन की प्रतीक्षा में ही थी बेटा!

अब सच्चा क्या था—अनूपचंद अपनी मां को लिये गंगाजी को चल पड़ा। जब वह काशीजी पहुँचा तो माता को गंगा के किनारे पर बिठाकर स्वयं अपने घर को चलता बना। जाते समय कहता गया—माँ तुम यहाँ जरा ठहरी रहना। मैं अभी-अभी वंगाह होकर आरहा हूँ।

बुढ़िया को क्या मालूम था कि उसका पुत्र टट्टी हो आने का झूठा बहाना बनाकर उसे यहाँ गंगा के किनारे अकेली छोड़कर घर को चला गया है। वह बेचारी वहाँ घण्टों तक अनूपचन्द का इन्तजार करती रही। लेकिन जब दिन अस्त होगया तो उसे चिन्ता ने आघेरा। सबसे अधिक चिन्ता तो बुढ़िया को भी हनुमान जी की सेवा की थी। उसे फिकर लगी कि मैं कल सुबह होते ही भगवान को सवासेर का रोट का प्रसाद कैसे चढ़ाऊँगी।

इस प्रकार चिन्ता करते-करते जब बुढ़िया को सुबह हुई तो उसने देखा— श्री हनुमानजी नाचते-कूदते, चहकते उसके पास आरहे हैं। उन्होंने बुढ़िया के पास आते ही कहा—

लाल लगोटो, हाथ में सोटो,
ल डोकरी सवा सेर रो रोटो।
थें मनें दियो बालापण में,
हूं थनें दूं बुढ़ापण में॥

बुढ़िया ने सवा सेर का रोटा उनसे लेलिया और श्री हनुमान जी का ध्यान लगाकर उन्हें चढ़ावा चढ़ा दिया। इस प्रकार बुढ़िया अपने दुःख के दिन काटने लगी। अब तो हमेशा श्री हनुमान जी बुढ़िया के पास सुबह-सुबह आते और इस प्रकार से कहते—

लाल लंगोटो, हाथ में सोटो,
ल डोकरी सवा सेर रो रोटो।
थें मनें दियो बालापण में,
हूं थनें दूं बुढ़ापण में॥

और बुढ़िया को सवा सेर का रोट देकर कूदते फांदते वापिस चले जाते।

एक दिन बुढ़िया ने श्री हनुमानजी का ध्यान करते हुए उनसे प्रार्थना की महाराज, और तो सब ठीक है। परन्तु रहने के लिए तो स्थान बनवा दें। हनुमानजी ने कहा तथास्तु—

दूसरे ही दिन हनुमानजी ने डोकरी को दो महल–एक सोने का और दूसरा चाँदी का बना दिया। डोकरी अब बड़े आनंद से यहाँ अपने दिन व्यतीत करने लगी।

इधर अनूपचन्द की दशा भी हनुमान जी के कोप के कारण दिन प्रतिदिन बिगड़ने लगी। बिगड़ते–बिगड़ते, दशा ऐसी उसकी बिगड़ी कि सुबह खाने को है तो शाम को नहीं है और यदि शाम को खाने को है तो सुबह खाने को नहीं है। अन्त में किसी एक ज्योतिषी ने अनूपचन्द की पत्नी–सावित्री को सुझाया–यह सब हनुमान जी का प्रकोप है। तुम यदि अपनी सास को लौटाकर अपने घर में वापिस ला–सको तो यह सब पूर्व–वत हो सकता है।

अब तो लाचार होकर सावित्री ने अपने पुत्रों से कहा—पुत्रों, कैसे भी हो कहीं से अपनी दादी को ढूढ़कर ले आओ। पहले तो बच्चों ने जाने से इन्कार कर दिया। कहने लगे—हम लोग कौन मुँह लेकर जावें! आपने तो उन्हें घर से बाहर निकाल दिया!! हमें जाते समय शर्म लगती है। लेकिन जब सावित्री ने बहुत कुछ कहा सुना तो वे अपनी दादी को ढूढ़ने चल पड़े।

चलते चलते जब वे गंगा के किनारे पर आए तो उन्हें अपने पिता के बनाए हुए स्थान पर कुछ और ही रंगत को मिला। सोने और चाँदी के महलों को देखकर उन्होंने अनुमान लगाया—हो–न–हो ये महल किसी राजा–महाराजा के हैं। फिर भी उन्होंने हिम्मत न खोकर किया और वे चले ही गये इन महलों के भीतर।

जब वे भीतर गये तो उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ—वहाँ उनकी दादी बैठी हुई है। कई नौकर-चाकर उनकी सेवा आदि कर रहे हैं—यह महल उसी का ही है।

बच्चों ने कहा—दादी मां बहुत हो गया अब आप घर चलें। हमें बड़ा दुःख है कि पिताजी माताजी की बातों में आकर आपको यहाँ गंगा के तट पर छोड़कर चले गए।

बुढ़िया ने कहा—बच्चों मुझे इसका लेशमात्र भी-रंज नहीं है। अरस्तु—होना वही होता है जो भगवान को मंजूर होता है। इसमें आप लोगों को दुःख करने जैसी कोई बात नहीं है। आप लोगों का इसमें क्या दोष हो सकता है। लेकिन मैं घर तो श्री हनुमानजी की आज्ञा लेकर ही चल सकती हूँ—इससे पूर्व तो कदापि नहीं।

अभी यह चर्चा हो ही रही थी कि हनुमानजी यह कहते हुए आन उपस्थित हुए—

लाल लगोटो, हाथ में सोटो,
ले छोकरी, सवा सेर रो रोटो ॥
थें मनैं दियो बालापण में,
हूं थनै दूं बुढ़ापण में ॥

यह देखकर डोकरी के पोत्र अपने घर को वापिस चले गए। उन्होंने बाप यहाँ का वृतान्त वर्णन करते हुए बताया—हनुमानजी स्वयं दादी के पास आते हैं और नित्य सवासेर का रोट देकर वापिस चले जाते हैं। बुढ़िया इससे तो नहीं आने की भले ही आप जा सकते हैं !!

लाचार होकर अब तो अनूपचंद को ही आना पड़ा। उसने आते ही मां के चरणों में अपना सिर नवाया और उससे घर चलने की प्रार्थना की।

बुढ़िया ने कहा—बेटा चलने को तो मैं चल सकती हूं। लेकिन मैं हनुमानजी की आज्ञा लिये बिना कुछ भी नहीं कर सकती। ठीक समय पर जब हनुमानजी डोकरी के पास आ उपस्थित हुए, यह कहते हुए—

लाल लगोटो, हाथ में सोटो,
ले डोकरी सवा सेर रो रोटो।
थें मनैं दियो बालापण में,
हूं थनै दूं बूढ़ापण में ॥

अनूपचंद ने भी हनुमानजी से प्रार्थना करते हुए निवेदन किया—महाराज, मेरी बूढ़ी मां को छुट्टी देदें; मैं इसे घर लेजाना चाहता हूँ। हनुमानजी ने कहा—यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो ले जासकते हो। अनूपचंद ने कहा—महाराज, फिर ये सोने-चाँदी के महल आदि ।

हनुमानजी ने कहा—ये सब तुम्हें मिल जायँगे। श्री-हनुमानजी ने अनूपचंद और डोकरी सहित वे महल पलक मारते-मारते ही डोकरी के गांव में लाकर धर दिए। उन्होंने कहा—डोकरी मैं तुम पर प्रसन्न हूं, कोई वर मांग!! बुढ़िया ने कहा—भगवान् मुझे तो अब आपके दर्शनों के अतिरिक्त किसी भी वस्तु की चाहना नहीं है। लेकिन जब वर मांगने के लिये आज्ञा देते हैं, तो मैं इतना ही मांगती हूं कि मुझे मुक्ति मिले और

अनूपचंद को इतनी धन-दौलत मिले कि इसकी सात पीढ़ियों से भी खाया नहीं जा सके। श्री हनुमानजी ने कहा—'तथास्तु'—और अन्तर्धान होगए। अब तो अनूपचंद और उसकी पत्नी सावित्री बड़े ही सुख से रहने लगे।

हे बजरंगबली—अनूपचंद को जिस प्रकार दुःख व कष्ट दिया वैसा तो किसी को भी मत देना। और जैसी डोकरी को मुक्ति प्रदान की वैसी सभी को देना।

बुधवार की व्रत कथा

एक समय की बात है—कहीं एक साहूकार रहा करता था। इस साहूकार के एक ही पुत्र था।

जब यह लड़का बड़ा हुआ तो इसका विवाह समीप के किसी गाँव में कर दिया गया।

कुछ वर्षों के बाद एक दिन लड़के ने ही अपनी माँ से कहा—माँ, मैं आज ससुराल जाऊँगा। माँ ने कहा—बेटा मत हो चले जाना। पण्डित जी महाराज से तुम्हारे जाने का अच्छा मुहूर्त पूछ लेने दो, तब जाना ठीक रहेगा और आज तो बुधवार है। बेटा! बुधवार को घर नहीं छोड़ा जाता है।

लेकिन इस साहूकार के पुत्र ने जिद पकड़ी तो पकड़ ही ली। उसने माँ से कहा—माँ, मैं तो आज ही जाऊँगा और आज यदि बुधवार है जैसा कि तुम कहती हो तो आज ही प्रस्थान करता हूँ। इतना कहकर वह उसी दिन बुधवार को ही अपने घर से ससुराल को प्रस्थान हो गया।

साहूकार का यह इकलौता पुत्र जब अपनी ससुराल पहुँचा तो उसका वहाँ बड़ा ही मान-सत्कार हुआ। इस प्रकार जब उसे वहाँ रहते सात रोज होगए, तो उसने सास से अपने घर को जाने की इच्छा प्रकट की। सास ने कहा—कुँवर जी! मैं चाहती हूँ—कुछ दिनों तक आप यहाँ और रहें। आखिर इतने वर्षों के उपरान्त यहाँ पधारे हैं तो कुछ दिन तो हमें भी सेवा करने का अवसर दें। ऐसी जल्दी क्या जाने की पड़ी है? जब साहूकार का लड़का जिद पकड़े ही रहा तो सास ने कहा—

आप जाना चाहें तो भले ही जायें। लेकिन आज नहीं। आज तो
बुधवार है। बुधवार को प्रस्थान नहीं किया जाता।

और यह ठीक भी कहा गया है—युवावस्था और बुद्धि इन
दोनों का मेल तो बहुत ही कम देखा जाता है। फिर इस वणिक
पुत्र में भी बुद्धि ठिकाने रहे युवावस्था में—यह कैसे सम्भव
हो सकता था। उसने सास से कहा—मैं बुधवार-शुक्रवार कुछ
भी नहीं समझता। आपको यदि मुझे खुश रखना है तो आज
ही रवाना करवायें। अन्यथा मैं वैसे ही अकेला चला जाऊँगा।

अब तो सास बड़ी ही दुविधा में पड़ गई। दामाद को यदि
रवाना करती है तो आज बुधवार है और यदि वह अपनी
पुत्री को नहीं भेजती है तो दामाद अप्रसन्न हो जाता है।
उसकी नाराजी का ख्याल रखते हुए सास ने कहा—'जैसी
आपकी इच्छा'।

साहूकार का यह पुत्र उसी समय बुधवार को ही अपनी पत्नी
को साथ लिए अपने गाँव का प्रस्थान कर गया।

भगवान् बुध ने देखा—इसकी मति मारी गई है यह म
अपमान कर रहा है तो उन्होंने साहूकार के पुत्र को सीख दे
की ठानी।

जैसे ही वह अपने गाँव की राह चल रहा था—भगवान
बुध ने उसी प्रकार साहूकार के पुत्र का रूप बना लिया अ
उस राह में रहकर कहने लगा—'भाई यह पत्नी तो मेरी है।
तुम कहाँ से आ गए हो'।

साहूकार के पुत्र ने उत्तर में—यह पत्नी तो मेरी है। मैं
अभी-अभी ही अपनी ससुराल से विदाए आरहा हूँ।

अब क्या था—दोनों व्यक्ति एक दूसरे से उलझ पड़े। दोनों कहते रहे—यह पत्नी मेरी है। इस प्रकार दोनों ही झगड़ते-झगड़ते राज-दरबार आ पहुँचे।

राजा ने देखा—दो व्यक्ति शक्ल-सूरत में ठीक एक ही समान हैं। उनके साथ एक औरत भी है। राजा ने कहा-बोलो, तुम लोग यहाँ किस कारण से आए हो?

साहूकार के पुत्र ने कहा—सरकार यह पत्नी मेरी है। मैं इसे अभी-अभी अपनी ससुराल से लिए अपने गाँव को जारहा था। नहीं जानता यह व्यक्ति कौन है! मुझे यह राह में मिल गया और कहने लगा—यह स्त्री मेरी है। यह झगड़ा भी कर रहा है और जबरन मेरी पत्नी को अपनी बनाए ले जाने को उद्यत होरहा है।

राजा ने साहूकार-वेषधारी भगवान् बुध से पूछा—कहिए आप इस विषय में क्या कहना चाहते हैं? भगवान् बुध ने कहा—राजन्, यह मेरी स्त्री है। एक रोज यह पानी भरने तालाब पर गई थी और फिर घर को लौटकर नहीं आई। आज एका-एक वैसे ही मैं किसी गाँव को जारहा था—मैंने देखा यह व्यक्ति इस लिए जारहा है। मैंने इससे अपनी स्त्री लौटाने की प्रार्थना की लेकिन यह मुकर रहा है। अब आप ही न्याय करें—मुझे मेरी पत्नी दिलवा दें।

राजा ने देखा—औरत तो एक ही है और उसके हकदार दो व्यक्ति बने जा रहे हैं। दोनों ही व्यक्ति शक्ल-सूरत में भी एक जैसे दिखाई दे रहे हैं और दोनों ही अपनी-अपनी बात पर अड़े हुए हैं।

राजा ने फैसला देते हुए कहा—देखो आप दोनों ही मेरे इस नगर का चक्कर काट लें। जो व्यक्ति पहले चक्कर काटकर लौट आएगा, बस समझो—पत्नी उसी की है। राजा ने इन दोनों व्यक्तियों के पीछे अपना एक जासूस लगा दिया।

बुध भगवान् तो अपनी माया के बल पर फौरन ही नगर का चक्कर काट आए। लेकिन साहूकार का लड़का—बेचारे ने बहुतेरी कोशिश की बड़ी तेजी से भागा दौड़ा—फिर भी पहले नहीं आ सका।

राजा ने फैसला देते हुए बुध भगवान् रूपी साहूकार से कहा—यह औरत तुम्हारी है। अब तो साहूकार का पुत्र बड़ा दुःखी होता हुआ अपने घर को बिना स्त्री प्राप्त किए रवाना हुआ।

राह में चलते-चलते उस भगवान् बुध उसकी पत्नी को लिए हुए मिले। उन्होंने कहा—यह लो तुम्हारी पत्नी, मुझे तुम्हारी पत्नी से क्या लेना-देना! लेकिन भविष्य में याद रखना कभी भी बुधवार को अपने घर से प्रस्थान मत करना। साहूकार के पुत्र ने नमस्कार करते हुए निवेदन किया—प्रभु मैं भविष्य में कभी भी ऐसी भूल नहीं करूँगा।

हे भगवान् बुध जिस प्रकार उसकी स्त्री छीनी गई उसे कष्ट हुआ ऐसा कष्ट किसी को भी न हो। जिस प्रकार उस अपनी पत्नी पुनः प्राप्त हो पाई उसे खुशी हुई—वैसी सब को हो।

——

गुरुवार की कथा

एक था साहूकार—उसका व्यापार बहुत ही बड़ा-चढ़ा था। उसका परिवार 'फूलों हाथों' था। वह भगवान बृहस्पति का बड़ा सच्चा भक्त था।

घर में इतना काम-धंधा था कि उसकी पत्नी को एक मिनट के लिये भी फुर्सत नहीं मिला करती। तमाम दिन वह घर के धंधों में उलझी ही रहती थी।

एक दिन साहूकार की पत्नी किसी काम-वश घर के दरवाजे के बाहर खड़ी थी—उस पर पास की पड़ौसिन ने पुकारा। अरी तुम भी ठीक हो। दिन भर घर में पड़ी रहती हो। घड़ी भर तो घर से बाहर भी आया कर!

साहूकार की स्त्री ने तब उत्तर देते हुए कहा— क्या करूँ! मुझे तो एक पल भर भी स्वाँस लेने को समय नहीं मिल पाता। घर में इतना काम रहता है कि सिर ऊपर उठाने भी नहीं उठता।

पड़ौसिन ने कहा—समय तो तुम्हें मैं निकालकर दे सकती हूँ। साहूकार की स्त्री ने कहा—वह कैसे? उसने कहा—प्रत्येक गुरुवार को तुम अपना सिर साबुन से धो लिया करो अपने पति की हजामत उसी दिन बनवा दिया करो। झाड़ बुहारकर घर की सफाई कर लिया करो और लिपाई पुताई कर लिया करो। अपने आप समय तुम्हें मिल जायगा।

जब गुरुवार आया तो उसने अपना सिर साबुन से धो लिया। पति ने कहा—आइये आप हजामत करवा लीजिए। उसके पति ने कहा—मैं तो ऐसा नहीं करने का। और—यदि तुमने भी ऐसा ही किया तो तुम्हें पछताना पड़ेगा।

सेठानी ने जिद पकड़ लिया—आपको ऐसा करना ही होगा। मुझे तो एक मिनट भी घर के झंझटों से समय नहीं मिल पाता।

लाचार होकर साहूकार को अपनी पत्नी की आज्ञा का पालन करना ही पड़ा। सेठानी ने भी अपनी पड़ोसिन के द्वारा बताए सभी कार्य कर लिए। इस प्रकार जब चार गुरुवार तक वह ऐसा करती रही तो भगवान बृहस्पति देव उस साहूकार से अप्रसन्न होगए।

अब भला क्या था—उसे व्यापार में घाटा होने लगा। उसके बेटे-पोते मर गए। उसके जानवर गाय आदि सभी मर गए। उसके पास केवल उसकी एक लड़की बच रही।

साहूकार ने अपनी पत्नी से कहा—देखो मैं तो परदेश में कमाने के लिए जा रहा हूँ पीछे से तुम्हारे पास इस लड़की को छोड़े जारहा हूँ। यह हमेशा बकरियें आदि चरा लाएगी। तुम दोनों इसी प्रकार अपना गुजारा करते रहना।

इतना कहकर साहूकार तो किसी शहर में चला गया। वहाँ वह एक सेठ के यहाँ मुनीम के स्थान पर काम करने लगा। इधर गाँव में उसकी लड़की बकरियां आदि चरा लाती—जितना जो कुछ मिल पाता उससे दोनों मां-बेटी अपना पेट भरती।

जब यह क्रम कई वर्षों तक चलता रहा तो एक दिन लड़की पास वाली पड़ौसिन के यहाँ चली गई। वहाँ से जो विलंब से वापिस आई—तो माँ ने उसे देर से आने का कारण पूछा। लड़की ने उत्तर में कहा—मा यह अपनी पड़ौसिन तो बड़ी ही निकम्मी—और दूसरे के सुख को देखकर जलने वाली है। स्वयं तो अपनी बहू-बेटियों को लेकर भगवान बृहस्पति की पूजा कर रही है और अपने को यह सब उलटा काम करने को बता दिया।

माँ ने तब कहा—यदि भगवान बृहस्पति अपने पर कृपा करेंगे तो अपन भी उसकी पूजा करनी प्रारम्भ कर देंगे। बेटी ने कहा—माँ अपन तो आज से ही प्रारम्भ करलें। उसी दिन से मा तो बृहस्पति भगवान की कथा कहने लगी और बेटी सुनने लगी।

इस प्रकार इन्हें जब कथा कहते-कहते काफी समय हो गया तो भगवान बृहस्पति ने सोचा—साहूकार की पत्नी ने दूसरों की बातों में आकर—उलट काम किये इसका तो कोई दोष नहीं है। इन लोगों की गरीबी दूर करनी चाहिये।

भगवान ने ब्राह्मण का वेश बनाया—उन्होंने पीले वस्त्र पहिन लिए पीले घोड़े पर सवार होकर वे साहूकार के घर पर आ पहुंचे।

घर पर आकर भगवान ने कहा—बच्ची मुझे 'उतारा देवो'। उसने कहा महाराज मैं आपको अपने यहां कैसे ठहरा सकती हूँ। मेरे पतिदेव यहां नहीं हैं। भगवान ने कहा–मैं तो तुम्हारे घर ही ठहरूँगा और कहीं जाऊँगा नहीं।

साहूकार की पत्नी ने कहा—तो आप पीछे गायों के बाड़े में ठहर जाइए। भगवान गायों के बाड़े में ही ठहर गए। इसके बाद मां ने बेटी से कहा—बेटी पड़ौसिन से जाकर एक सेर आटा एक पाव खांड और एक पाव घी तो मांग लाओ।

लड़की पड़ौसिन के घर गई, कहने लगी—बहन, एक सेर आटा पाव भर खांड और एक पाव घी तो देना। हमारे यहां मेहमान आए हैं—उन्हें भोजन करवाना है।

तब पड़ौसिन ने अपनी बहुओं से कहा इसे देदो। बहुओं ने कहा—सासूजी इसे देने से क्या लाभ—यह तो बहुत ही गरीब है। वापिस कब लाकर देगी? सासने कहा यदि लाकर देगी तो ठीक है और नहीं लौटाएगी तो समझेंगे ब्राह्मण अपनी ओर से ही भोजन कर गया।

उसने घर आकर रसोई बनाई। बृहस्पति भगवान को भोग लगाकर ब्राह्मण को भोजन करवाया। ब्राह्मण भोजन करके वहीं सो रहा।

जब संध्या हुई तो साहूकार की स्त्री को बड़ी ही चिन्ता हुई। सुबह तो इस ब्राह्मण को कहीं से मांगकर भी भोजन करवा दिया। अब संध्या में इसे क्या खिलाया जायगा।

बृहस्पति भगवान ने सोचा—साहूकार की पत्नी बड़ी चिंता कर रही है। इस पर मुझे प्रसन्न होजाना चाहिये। उन्होंने कहा—तुम क्यों व्यर्थ में चिंता कर रही हो। अपना भंडार तो खोलकर जरा सम्भालो।

साहूकार की स्त्री ने अपना भंडार खोलकर देखा तो अन्न धन, लक्ष्मी से भरा पूरा है। चारों ओर गुड़, घी और शक्कर भरी पड़ी है।

वह मांगती-मांगती गई। आटा और घी लेकर बेसन का उसने चूरमा बनाया। भगवान् बृहस्पति का भोग लगाया और फिर उस ब्राह्मण को भोजन करवाया।

गायों के बाड़े में गायें रंभाने लगी। बेटे पोते सभी जीवित होगए। अब तो उसे मालूम हुआ यह आने वाला ब्राह्मण भगवान् बृहस्पति ही हैं।

अब तो रोज ही वह चूरमा बनाती भगवान् के प्रसाद चढ़ाती, कथा सुनती और फिर भोजन करती। इस प्रकार कई वर्ष व्यतीत होगए तो एक दिन सेठानी ने भगवान् से अर्ज की—भगवन् और तो सभी प्रकार से आनन्द-मंगल है—मेरे पतिदेव को मुझ से मिलवादें। भगवान् ने कहा—यह भी हो जायगा।

वे साहूकार के बेटे के स्वप्न में गए—कहने लगे ए साहूकार! सोरहे हो या जाग रहे हो। साहूकार ने कहा भगवन् नींद किसे आरही है। घर छोड़े तो कई वर्ष होगए हैं।

भगवान् ने कहा—घर जा क्यों नहीं रहे हो? उसने कहा—भगवन् घर कैसे जा सकता हूं। मेरे यहाँ तो नव मन सूत उलझा पड़ा है। भगवान् ने कहा सुबह स्नान आदि करके बैठ रहना। देने वाले दे जाएँगे और लेने वाले ले जाएँगे—तुम्हारा नव मन सूत सुलझ जायगा।

उसने ऐसा ही किया—उसका नव मन सूत सारा का सारा सुलझ गया। दम वाले दे गए—लेने वाले ले गए।

सेठ से उसने कहा—मैं अपने घर जारहा हूं। सेठ ने कहा—इस प्रकार क्या जारहे हो? तुम्हारे आने पर तो मुझे बड़ा ही मुनाफा हुआ। साहूकार ने कहा—यदि मुनाफा हुआ है तो मुझे कुछ ददो।

साहूकार ने क्षमा माँगते हुए कहा—भगवान् अब मैं ऐसी भूल कभी नहीं करूँगा। आप मेरे घर में निवास करें।

भगवान् बृहस्पति बोले—मैं स्थिर किसी के यहाँ टिक कर नहीं रहा करता। जो मुझे रोज बुलाता है—मैं उसके यहाँ हमेशा चला जाता हूँ, जो आठ दिनों के बाद बुलाता है, मैं वहाँ आठ दिनों के बाद चला जाता हूँ। इस प्रकार कहकर भगवान् अन्तर्धान होगए। साहूकार और साहूकार की पत्नी हमेशा कहानी कहते और सुनते—भगवान् बृहस्पति का ध्यान करते। भगवान् की असीम कृपा से उनके यहाँ धन दौलत बहुत अधिक होगया—सब प्रकार का उनके यहाँ आनन्द-मंगल होगया।

हे बृहस्पति भगवान्, उन पर आप जिस प्रकार महरबान हुए वैसे सभी पर हों; उन पर जैसी आपकी मायाकी रही ऐसी किसी पर न हो।

———

शुक्रवार की कथा

एक साहूकार के सात लड़के थे चार सातों ही की शादी हो चुकी थी। इन में छः लड़के तो बहुत ही अच्छा कमाया करते थे सातवाँ था निकम्मा। इस पर मां-बाप का स्नेह बहुत ही ज्यादा था। तमाम घर के लोगों की जूठन को चूर कर या यों समझें कि जूठन का चूरमा बनाकर इस लड़के को खिलाया जाता और यही खिलाया जाता उसकी पत्नी को। इस सातवें लड़के को यह कुछ भी ज्ञान नहीं था, चूरमा किसका बनाया जाता है। वह तो यह समझता था—सब लड़कों से अधिक स्नेह मां-बाप को मुझ पर ही है तभी तो मुझे रोज-रोज खाने को चूरमा मिला करता है।

एक दिन इस साहूकार के लड़के के यार-दोस्त घर पर आये हुए थे। मित्र वर्ग बैठकर आपस में नाना प्रकार की बातें वैसे ही विनोदपूर्वक कर रहे थे। एक ने कहा मेरी मां मुझे मेरी इच्छानुसार कपड़े आदि सिलवाकर पहिनने को देती है। दूसरे ने कहा मेरी मां मेरी इच्छानुसार मर्जी ही मुझे थाली में परोसती है। सभी अपनी अपनी प्रशंसा कर रहे थे तभी इस साहूकार के लड़के ने कहा—तुम सब लोगों से मेरी मां अच्छी है। उसका स्नेह सब भाइयों से भी मुझ पर अधिक है। मुझे तो मां हर रोज खाने को चूरमा देती है।

उसकी पत्नी उसी समय किसी आवश्यक कार्य के समीप से होकर निकल रही थी। उसने जो यह सुना तो कहा—हो लिया आपकी मां का स्नेह सब से अधिक आप पर ! आपको और मुझे तो वे रोज-रोज घर-भर की जूठन का चूरमा बनाकर खाने के लिए दिया करते हैं।

साहूकार का सबसे छोटा लड़का अपनी पत्नी की यह बात सुनकर सुन-सुनकर रह गया फिर भी उसने सोचा—निश्चय सभी हो सकता है, अब मैं स्वयं इसे अपनी आँखों से देख लूँ।

वह उसी क्षण अपनी मां के पास गया और झूठ-मूठ ही सिर दर्द का बहाना बनाकर मां से कहने लगा—मां, आज तो सिर-दर्द के मारे प्राण निकले जाते हैं, जरा दवा तो लगा दो!

मां का हृदय कितना पवित्र और स्नेहशील होता है अपनी सन्तान के लिये! वह तो बेचारी विवश थी अपने इन छः लड़कों के दुर्व्यवहार के कारण! मां तो कभी भी नहीं चाहती थी कि उसके सबसे छोटे वाले लड़के को मारे घर-भर की झूठन मिले; और बाकी सभी मौज और आनन्द से रहें! लेकिन वह क्या करती?

उसने जो सुना कि बच्चे को सिर-दर्द बड़े जोरों का हो रहा है तो उसने दुलार करते हुए अपनी गोद में सुला लिया और लगी उसका सिर थपथपाने।

अब तक रसोई बन चुकी थी। सभी घर वाले जीमने वाले थे। छोटे वाले लड़के ने मां से कहा—मां मुझे बड़े जोरों की भूख लग रही है। मा ने उत्तर देते हुए कहा—बेटा तुम्हारे भाई अभी आये नहीं हैं। जरा सा लेट हो फिर तुम भी भोजन कर लेना। वे सब किसी जरूरी कार्य-वश बाहर गये हुए हैं, अभी आने को ही हैं।

लड़का समझ गया—निश्चय ही दाल में कुछ काला है। वह जान बूझकर नींद का बहाना बनाये आधी आँखें बन्द एवं आधी खुली कैसे हो मारता।

उसने देखा—उसके पिता भोजन करने आये हैं। उसकी भावज ने उनके मूठन को इकट्ठा कर लिया। इस प्रकार उसका पहला दूसरा तीसरा और क्रमशः छठा भाई भी भोजन करने आया। सभी लोगों की मूठन एक बर्तन में उसकी भाभी ने इकट्ठी करली। उन लोगों के भोजनोपरान्त तब उसकी माँ ने उस इकट्ठी की हुई मूठन का चूरमा बनाया, चूरमा बनाकर थाली में परोसकर उसने अपने इस छोटे वाले लड़के को उठाने के लिये आवाज लगाई।

सेठ का लड़का यह सब बातें आँखें बन्द किये देख रहा था। वैसे ही उसकी माँ ने उसे भोजन करने के लिये दो तीन बार आवाज लगाई वह उठ बैठा। उसने कहा—माँ, मुझे भूख नहीं है। मैं आज भोजन नहीं करूँगा। माँ ने कहा—बेटा, भूख तो लगी ही होगी। खाओ—जितनी इच्छा हो, खाओ। लड़के ने कहा—मैं बहुत दिनों तक मूठन खा चुका माँ! अब तो मैं कमाकर खाऊँगा तभी इस घर में भोजन करूँगा।

उसकी माँ ने कहा—बेटा ठीक है तुम्हारी यदि ऐसी ही इच्छा है तो भले ही कमाने के लिये चले जाना। लेकिन इस समय कहाँ जा रहे हो रात्रि में ! कल जाना चाहो तो भले ही चले जाना।

लड़के ने तो यह सब अपनी आँखों देखा था। वह अपमान की ज्वाला में जल रहा था। उसने कहा माँ मैं तो इसी समय घर छोड़कर कमाने के लिए विदेश को जा रहा हूँ तुम मेरा पीछे से मेरी पत्नी का ध्यान रखना। इस यहीं घर में ही बिठाये रखना, कहीं बाहर मत जाने देना। उसकी माँ ने वैसे ही हाँमी भरली।

सेठ का यह छोटे वाला लड़का चलते-चलते एक नगर में पहुँचा। स्वभाव और विचारों से शुद्ध होने के कारण उसे फौरन ही एक सेठ के यहाँ नौकरी मिल गई।

इस सेठ के यहाँ इस साहूकार के लड़के के आने पर व्यापार में बड़ा ही मुनाफा रहा उसने खुश होकर कुछ रुपया-पैसा इसे भी दे दिया इस प्रकार यह साहूकार का छोटे वाला लड़का अपने सुख के दिन यहाँ व्यतीत करने लगा। इसके पास काफी धन-दौलत कुछ ही वर्षों में जमा हो गयी। यह एक अच्छा-खासा शहर का धनवान व्यक्ति बन गया।

छोटे वाले लड़के की स्त्री के साथ घर में सभी बुरा व्यवहार किया करते। उसे रोज जंगल से लकड़ी काटकर लाने को जाना पड़ता। और जैसे ही वह जंगल में लकड़ियों का गठ्ठर लिए घर को लौटती उसे खाने को दिया जाता सूखा ज्वार का रोटा।

उसी जंगल में एक मन्दिर था शान्तिमाता का। एक रोज जब वहा सारे-दुःखों के अत्यन्त विकल हो गई तो गई उस मन्दिर में शान्तिमाता की शरण में। वहां बैठकर वह फूट-फूटकर दुःख में रोने लगी।

माता शान्ति देवी ने जो यह विलाप सुना तो उन्होंने एक बुढ़िया का रूप धारण किया। बुढ़िया बनकर इस स्त्री के पास आई और कहने लगी—बच्ची इस घनघोर जंगल में तुम इस प्रकार फूट-फूटकर क्या रो रही हो। साहूकार की स्त्री ने अपनी सारी दुःख की कथा कहते हुए कहा—अब मेरी जेठानियाँ मुझे बड़ा ही कष्ट दे रही हैं। वे मुझे सिर्फ एक सूखा ज्वार का रोटा

छोटा-सा देती हैं खाने के लिये मैं तो भूखों मर रही हूं। इतना ही नहीं वे मुझे नाना प्रकार के ताने भी देती हैं।

बुढ़िया ने कहा— बेटी ! आज से तुम मेरी धर्म की पुत्री हो— मैं तुम्हारी धर्म की मां हूं। तुम ऐसा करना—यहां हमेशा चली आना। तुम्हारे लिए खाने को रोज सवासेर चूरमा और पीने को पानी मैं यहां रख दिया करूँगी। तुम अपना पेट इसी से भर लिया करो। शान्ति माता जंगल में से लकड़ियां भी उसे काटकर ला देती।

इस प्रकार इस छोटे वाली साहूकार की बहू अपने दुःख के दिन काटती रही। इधर जेठानियों ने देखा—इनकी यह देव रानी तो दिन प्रति-दिन बड़ी सुन्दर निखरती जा रही है, तो उन्हें जलन होने लगी। 'रांड पति की अनुपस्थिति में भी इस प्रकार मस्तानी बनी जा रही है—बड़ी प्रसन्न रहती है। यदि पति के आगमन के समाचार मिल गये तो फिर इसकी खुशी का ठिकाना ही क्या होगा।

आज जब वह जंगल में लकड़ियां काटने गई तो उसने शान्ति माता से निवेदन किया—मा मेरी जेठानियां कह रही हैं पति यहां नहीं है फिर भी यह ऐसा है। यदि उसके आगमन के समाचार मिल गए तो फिर इसकी खुशी का क्या ठिकाना रहेगा। शान्ति माता ने कहा—बेटी तुम लेशमात्र भी इस बात की चिन्ता मत करना। उसके आने के समाचार भी शीघ्र आ जायेंगे।

कुछ ही दिनापरांत उसके पति के आगमन का समाचार आया। अब तो वह खुशी होनी स्वाभाविक ही थी। पति का

पत्र लिये वह प्रसन्नचित्त पड़ौसिन के पास गई और उसे वह पत्र दिखाया। जेठानियों को जब यह खबर लगी तो जल-भुनकर खाक होगई। भागमम का पत्र आया है, इसमें इतराती फिर रही है! यदि रुपये आगये फिर तो कहना ही क्या है इसका!

आज भी, जब वह जंगल में लकड़ी काटने गई तो माता से सब निवेदन करते हुए कहा—अब मुझे ताना देती हुई जेठानियाँ कह रही हैं—'खर्ची आजाय तो रौब का क्या कहना है!' मां ने कहा—बेटी, कोई चिन्ता नहीं खर्ची भी उसकी आ जायगी। और थोड़े ही दिनों में उसके नाम रुपये आगये उसके पति की ओर से।

अब तो उसका प्रसन्न होना स्वाभाविक ही था। रुपये लेकर वह फिर पड़ौसिन के पास गई और उस अपने सारे सुखद समाचार कहे।

इन समाचारों की खबर जब जेठानियों को लगी, तो बहुत जली। रौब की खर्ची आई है तो यह दशा है और यदि इस का खसम आगया तो फिर यह तो पृथ्वी पर पैर भी न रखेगी। इस प्रकार उन्होंने कई ताने दिये।

आज भी जब वह लड़की जंगल में लकड़ी काटने गई तो उसने सारी बातें माता से कहीं। मां ने कहा—बेटी, तुम कोई चिन्ता मत करना। इन जेठानियों से तुम्हें कुछ भी नहीं कहना है। अभी कुछ दिनों तक और शान्तिपूर्वक रहो—तुम्हारा पति भी शीघ्र आजायगा।

और शान्ति माता की कृपा से सेठ का वह लड़का सात-आठ दिनों बाद उस नगर से रवाना होकर अपने घर को चल पड़ा।

इधर वह सेठ का लड़का जिस समय इस जगह में से होकर चल रहा था यह लड़की वहीं लकड़ियां काट रही थी। उसी समय एकाएक बड़े जोरों का तूफान और आंधी आगई और फिर वर्षा हो चली। ऐसे समय में कहीं अन्य ठहरने का स्थान न देखकर साहूकार का लड़का शान्ति माता के मन्दिर में आ घुसा।

अभी उसने मन्दिर में पैर रखा ही था कि मन्दिर की सभी बत्तियां स्वयं जल उठीं। शान्ति माता की कृपा से वहां मन्दिर में एक आसन भी बिछ गया। साहूकार के लड़के की जो उधर नज़र गई तो उसने अपनी पत्नी को वहां घूंघट निकाले देखा।

उसने विस्मय में चिल्लाकर कहा—अरे, तुम यहां कैसे! उसकी पत्नी ने इस पर अपनी सारी आपबीती कहानी कह सुनाई। मैं तो माता की कृपा से जीवित भी बच रही अन्यथा कभी की मर गई होती। इस समय मैं तो जंगल में लकड़ियां काटने के लिए आई हुई हूँ।

सेठ का लड़का यह सब सुनकर बड़ा ही दुखी हुआ। उसने कहा—मैं तो घर की ओर प्रस्थान करता हूँ तुम ज़रा ठहरकर पीछे से घर में पहुँचना। इतना कहकर वह लाखों की सम्पत्ति और अनेक प्रकार की अमूल्य वस्तुएँ लिए अपने घर को चल पड़ा।

घर में पहुँचते ही धन-दौलत को देखकर उसका बड़ा सम्मान हुआ। उसने इधर-उधर देखकर मां से कहा—

माँ, घर का एक व्यक्ति नजर नहीं आरहा है, कहीं गया हुआ है क्या ?

यह सुनकर माँ ने कहा—गई होगी रांड कहीं इधर-उधर भटकने खाने को। तुम्हारे जाने पर वह तो बिल्कुल बेफिकर होगई है। छोड़ो छोड़ो उसकी चिन्ता। तुम्हारी शादी कहीं अन्य कर देंगे। लेकिन सेठ के लड़के ने उत्तर दिया—नहीं माँ तुम सच सच बताओ वह कहां गई है ? मैंने तुम्हें जाते समय कहा था न, उस घर से बाहर निकलने ही मत देना। माँ ने कहा—बेटा वह बड़ी ही मुंहजोरी है—भला वह किसी की मानने वाली है ! वह तो किसी के भी काबू में आने वाली नहीं है।

इतने ही में साहूकार के पुत्र की वधू सिर पर लकड़ियों का बड़ा-सा गट्ठा लिये घर के आंगन में आ उपस्थित हुई। उसे देखकर लड़का जल-भुनकर राख होगया। उसने माँ से कहा—तुम तो कुछ और ही कह रही थी—और यह आरही है जंगल में से लकड़ियाँ लेकर। वह उसी समय घर से निकल पड़ा और अपनी पत्नी के लिए परिवार के लोगों से अलग रहने लगा।

इतना सब कुछ होने पर भी साहूकार की पुत्रवधू हमेशा शांति माता के दर्शन करने जंगल में उस मन्दिर में नियमित रूप से जाया करती।

एक दिन उसकी जेठानियों ने उस को ताना ! तो फिर व्यंग कसा इतराती फिरती है पति के आने पर। और यदि पुत्र होगया तो न मालूम आकाश के कोमल तारे तोड़ लेगी।

आज जैसे ही वह शान्तिमाता के दर्शन करने जंगल में गई तो उसने कहा—जेठानियां अभी तक भी ताने देती हैं, कहती हैं एक पुत्र यदि उत्पन्न होगया तो फिर इसका क्या कहना। माता ने कहा बेटी, कोई चिन्ता मत करो, तुम्हें एक पुत्र भी होगा अब ठीक नवें महीने के बाद एक पुत्र इस छोटे वाले लड़के के हुआ। अब तो वे बड़े ही आनन्द से रहने लगे।

जब इस प्रकार बहुत से दिन सुखमय व्यतीत हो चले तो लड़कों ने ही अपनी माता शान्तिदेवी से निवेदन किया—माता मैं तुम्हें प्रसाद चढ़ाना चाहती हूं। शान्ति माता ने उत्तर में कहा, नहीं बेटी! मेरा प्रसाद करना आसान काम नहीं है। मेरे प्रसाद में तुमने यदि कढ़ाई आदि बाली तो ठीक नहीं रहेगा। मैं फिर रुष्ट हो जाया करती हूं ऐसे व्यवहार से। सेठ के इस छोटे वाले लड़के की बहू ने कहा—माँ मैं आपको बताई विधि से ही करूँगी। ऐसा शान्ति माता से कहकर वह अपने घर आ गई।

उसने आकर अपने पति से कहा। दोनों ही ने मिलकर शान्तिदेवी का प्रसाद बड़े मन से तैयार किया। शान्तिमाता का यह प्रसाद साहूकार के लड़के ने अपने घर वालों को भी भेजा।

साहूकार के लड़के की भौजाइयों ने प्रसाद के साथ दही आदि चटाई बाली। इसे देखकर शान्ति माता साहूकार के इस छोटे वाले पुत्र पर रुष्ट हो गयी।

इधर जैसे ही शान्ति माता रुष्ट हुई, वो राजा ने दो दूत उसके पास भिजवाये। उन्होंने आते ही कहा—चलो राजा साहब के पास, तुम्हें वे बुला रहे हैं। उनका कहना है कि तुम इन दो

ही महीनों में इतना अपार धन कैसे और कहाँ से कम लाये हो ! हमें तुम्हारे इस कार्य पर सन्देह है। राजा के दू उसे बन्दी बनाये राजा के सामने लाकर हाजिर किया।

सेठ के लड़के के लाख बात कहने पर भी कि मैं कम लाया हूँ मैंने किसी का भी डाका आदि नहीं मारा है राज एक भी नहीं सुनी। उसका तमाम धन राजा के खजाने में गया और उसे जेल में भेज दिया गया।

अब तो सेठ की बहू शान्तिमाता के पास भागी भागी आकर निवेदन किया—माता यह क्या बात है। शान्तिमात कहा—बेटी मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया था मेरा प्रसाद क कोई सरल काम नहीं है। तुमने माना नहीं। तुम्हारी लड़ाई यही आदि लड़ाई लाकी और यह उसी का प्रकोप है। बेटी ने क्षमा माँगी—माँ, मैं ऐसा अब कभी भी भविष नहीं करूँगी।

शान्तिमाता ने राजा को स्वप्न में आकर कहा—साहूका पुत्र को क्यों व्यर्थ में पकड़ रखा है और उसका धन छेरखा है। उसका सारा धन लौटा दो और साथ ही उतना ध ओर से धन और उस दे दो। नहीं तो मैं तुम्हारा सारा चौपट कर दूँगी। राजा ने सुबह होते ही साहूकार का लड़ा से मुक्त किया उसका धन लौटाते हुए उसमें उतना ही अपनी ओर से मिला दिया। और उनसे क्षमायाचना करते पर को विदा किया।

साहूकार के पुत्र ने उसी दिन घर पहुँचते ही शान्तिम का प्रसाद बड़े ही ध्यान से बनाया—लड़ाई आदि का पूर्ण ध रखा। शान्तिमाता साहूकार के पुत्र से बड़ी ही प्रसन्न हुईं।

एक दिन शान्तिमाता बुढ़िया का रूप बनाकर हाथ में बच्चे के पहिनने के कपड़े लेकर शहर को चली। सोचा चलो नवजात शिशु को देख आऊँ। उस समय बच्चे को उसका दादा घर के बाहर बैठा खेल खिला रहा था। उसने जो देखा एक बुढ़िया को तो अन्दर चला गया—यह सोच कर कि कहीं बच्चे को नजर न लग जाए। अभी वह भीतर पहुँचा ही था कि बच्चे का पेट दर्द करने लगा। वह मारे दर्द के मरने जैसा हो गया।

सेठ की पुत्र वधू को जब यह पता लगा—एक बुढ़िया को देखकर मेरे ससुर भीतर आ गये थे तो उसे ख्याल आया—हो न हो यह मेरी शान्तिमाता ही होगी। वह दौड़ी-दौड़ी बाहर आई देखा तो माँ हाथ में बच्चे के कपड़े लिए खड़ी है। उसने तुरन्त बच्चे को माँ के श्री चरणों में रखा। बच्चा पूर्ववत प्रसन्न हो गया।

माँ ने बच्चे के कपड़े देते हुए कहा—आज से आगे के लिए तुम्हें जंगल में प्रतिदिन आने की आवश्यकता नहीं। यहीं घर पर बैठे-बैठे मेरा ध्यान कर लेना मुझे यह तुम्हारी सेवा स्वीकार है। यह कहकर शान्तिमाता अन्तर्ध्यान हो गई। तभी दिन से साहूकार का कबीला और उसकी पत्नी बड़े ही आनन्द से रहने लगे।

हे शान्तिमाता! उसे जैसा सुख दिया सभी लोगों को वैसा सुख मिले। उस जिस प्रकार झूठन खानी पड़ी, वैसी किसी को भी खाने को नहीं मिले।

शनिश्चरवार की कथा

एक ब्राह्मण था—वह हमेशा राज-दरबार में पूजा-पाठ करने आया करता था। एक दिन वैसे ही वह ब्राह्मण राजदरबार से अपने घर को लौट रहा था—उसे राह में शनिदेव मिल गए। शनि-भगवान् ने कहा—ब्राह्मण, तुम्हें अब मेरी दशा लगने वाली है। और सिर्फ सात वर्ष तक ही लगी रहेगी।

ब्राह्मण ने जब यह सुना तो वह बड़ा ही घबराया। उसने कहा—भगवन्! मैं तो एक माँगकर खाने वाला ब्राह्मण हूँ। आपकी दशा का कोप मैं तो सात वर्षों तक कदापि नहीं सहन कर सकूँगा।

शनिदेव ने कहा—अच्छा तो मैं तुम्हें पाँच ही वर्षों में लग-कर छोड़ दूँगा। ब्राह्मण ने कहा—नहीं महाराज मैं तो अति ही गरीब और दुर्बल हूँ। आपका यह रूप-तेज मुझसे पाँच वर्षों तक भी नहीं सहन हो सकेगा।

शनिदेव ने कहा—अच्छा तो मैं तुम्हें ढाई वर्ष में ही लग-कर छोड़ दूँगा। ब्राह्मण ने कहा—भगवन्! क्षमा करें मैं तो इतना भी सहन करने में असमर्थ हूँ। मैं तो बहुत ही गरीब हूँ—आप इस गरीब पर तो दया ही रखें।

शनिदेव ने कहा—तो सुनो मैं तुम्हें ढाई महीनों में ही लग कर छोड़ दूँगा। अब तो ठीक है। लेकिन ब्राह्मण तो क्षमा माँगता ही रहा। उसने कहा—कृपानिधान मुझे तो क्षमा ही करें। मैं गरीब मारा जाऊँगा। ढाई महीनों में तो मेरा परिवार और घरबार सभी नष्ट हो जायगा।

राजा साहब ने जब यह सुना, तो बड़े ही चकित हुए। उन्होंने कहा—ब्राह्मण देवता, क्या आप जन्त्र मन्त्र, तन्त्र जानते हैं। यह क्या मामला है।

ब्राह्मण ने आदि से लेकर अन्त तक अपनी रामकहानी कहते हुए राजा साहब से कहा—राजन् मुझे सवा पहर के लिये शनिदेव की दशा लगी थी। यह सब भगवान् शनि की कृपा का चमत्कार था—जन्त्र, मंत्र तंत्र जैसी कोई बात नहीं है। राजा ने क्षमा-याचना करते हुए ब्राह्मण को बहुत सा धन-दौलत देकर, उससे क्षमा माँगते हुए घर को रवाना किया।

हे शनि देवता—जिस प्रकार उस ब्राह्मण को दुःख दिए, वैसे दुःख किसी को भी मत देना।

रविवार की कथा

बड़ी ही प्राचीन समय की बात है—हजारों वर्ष बीत गये होंगे, एक दिन भगवान सूर्य और उनकी पत्नी राणादे आपस में बातें कर रहे थे। राणादे जी ने कहा—'भगवन्! आप कभी दान-पुण्य भी किया करते हैं?

इस पर भगवान् सूर्यदेव ने उत्तर देते हुए कहा—राणादे जी, मैं आवश्यकतानुसार सभी को देता हूँ। हाथी को एक मन खाने को और चींटी को एक कन मैं देता ही रहता हूँ।

समय पाकर एक दिन राणादे जी को भगवान् श्री सूर्यदेव की परीक्षा लेने की सूझी। उन्होंने एक चींटी को एक डिबिया में बन्द कर लिया। इस बात को उन्होंने भगवान से छिपाकर रखा। उन्होंने सोचा—भगवान कहा करते हैं, हाथी को मन और चींटी को कन तो इसे आज इस चींटी को कन कैसे मिल सकता है?

उन्हें भला क्या पता था—भगवान किसी को भी भूखा नहीं रखते। भगवान तो सभी प्राणियों को खाने के लिये दिया करते हैं। इसी प्रकार एक चावल का दाना उनकी बन्द डिबिया में अपने आप आकर गिरा।

जब सन्ध्या में भगवान सूर्यदेव घर को लौटे तो श्रीराणादेजी ने कहा—महाराज आप कहा करते हैं कि मैं सब लोगों को उनके ध्यान के अनुसार दे दिया करता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं मान सकती! मैंने आज चींटी को डिबिया में बन्द कर रखा है। भला वह कहाँ भूखों नहीं मर गई होगी!

ब्राह्मण देवता का तो शनिदेव की दशा लगी हुई थी, फिर भला ब्राह्मण उसे कैसे टाल सकता था। इधर तो मालिन उन्हें रखकर शहर को चली और इधर वे मतीरे एक कटे हुए मनुष्य के सिर बन गये।

उसी दिन वहां के राजा के राजकुमार शिकार करने को गए हुए थे। राजकुमार जब काफी देर तक लौटकर नहीं आये तो राजा को चिन्ता होनी स्वाभाविक ही थी। उसने अपने दूत चारों ओर दौड़ाए राजकुमार की खोज-खबर में।

दूतों ने राजकुमारों की बहुत ही खोज-तलाश की लेकिन उन्हें कोई पग-पता नहीं मिल सका। अतः लाचार होकर जैसे ही दूत वापिस शहर को लौट रहे थे तो उन्होंने एक पीपल के नीचे एक ब्राह्मण को तपस्या करते देखा। पास ही उन्होंने देखा—दोनों राजकुमारों के सिर कटे पड़े हैं।

राज-दूतों ने आकर राजा साहब को खबर दी—एक ब्राह्मण शहर के बाहर पीपल के नीचे आँखें बन्द किए माला फेर रहा है। और उसके गोडों के नीचे हमारे दोनों राजकुमारों के सिर कटे पड़े हैं। अब जैसा आप हुक्म दें।

'राजा तो कानां रा काचा हो हुवै है'—उसने फौरन हुक्म दिया—इस ब्राह्मण को फांसी लगा दो।

आज्ञा पाकर राजा के वे दोनों दूत ब्राह्मण के पास गए और कहने लगे—दुष्ट राजा साहब ने फांसी का हुक्म दिया है।

इन दोनों दूतों में से एक दूत था बड़ा भला और सज्जन स्वभाव का आदमी। और दूसरा बड़ा बुरे स्वभाव का था। ब्राह्मण ने जब यह बात सुनी तो उसने कहा—ज़रा मेरी यह माला समाप्त होने दें फिर भले ही आप मुझे मार सकते हैं। इस बुरे दूत ने कहा—अच्छा ! एक तो राजकुमारों की हत्या करना और फिर ऊपर से इस प्रकार साधुता का स्वांग दिखाना। शर्म नहीं आती है इस प्रकार अब माला फेरते हुए।

दूसरा दूत जो बड़ा ही सज्जन था—उसने कहा—मत छेड़ो बेचारे को ! ज़रा माला पूरी कर भी लेने दो। इसमें अब तुम्हारा क्या बनता-बिगड़ता है।

वैसे ही ब्राह्मण देवता की शनिदेव की दशा उतरी—वे दोनों राजकुमार तत्काल अपने राजमहलों में आन पहुँचे। राजा साहब ने फौरन एक दूसरा घुड़सवार दूत भेजकर इन दोनों दूतों से कहलवाया—यदि इस ब्राह्मण को फांसी लगाकर मार नहीं दिया हो तो फौरन ही उसे मुक्त कर देना राजकुमार दोनों ही सकुशल घर लौट आये हैं। साथ ही राजा साहब ने कहलवाया—उस ब्राह्मण देवता को मेरे पास इसी समय उपस्थित करो।

अभी वैसे ही राजा साहब के दूत ब्राह्मण को राजमहल चलने की प्रार्थना कर रहे थे—उन्होंने देखा कि वे ही मरे हुए लोगों के सिर उसी समय दो बड़े अच्छे मतीरे बन गये हैं।

दूतों ने ब्राह्मण को लेजाकर राजा के दरबार में हाजिर किया और कहा—राजन ! वे दो सिर जो थे दो बड़े ही सुन्दर मतीरों में परिवर्तित होगये।

राजा साहब ने जब यह सुना, तो बड़े ही चकित हुए।
होंने कहा—ब्राह्मण देवता, क्या आप यन्त्र मन्त्र तन्त्र जानते हैं।
ह क्या माजरा है।

ब्राह्मण ने आदि से लेकर अन्त तक अपनी रामकहानी
ते हुए राजा साहब से कहा—राजन् मुझे सवा पहर के लिये
मिवेश की दशा लगी थी। यह सब भगवान् शनि की कृपा
चमत्कार था—यंत्र, मंत्र तंत्र जैसी कोई बात नहीं है। राजा
क्षमा-याचना करते हुए ब्राह्मण को बहुत-सा धन-दौलत देकर,
उससे क्षमा माँगते हुए घर को रवाना किया।

हे शनि देवता—जिस प्रकार उस ब्राह्मण को दुःख दिए वैसे
न किसी को भी मत देना।

रविवार की कथा

यह ही प्राचीन समय की बात है—हजारों वर्ष बीत गये होंगे, एक दिन भगवान् सूर्य और उनकी पत्नी रणादे आपस में बातें कर रहे थे। रणादे जी ने कहा—'भगवन्! आप कभी दान पुण्य भी किया करते हैं?

इस पर भगवान् सूर्यदेव ने उत्तर देते हुए कहा—रणादे जी मैं आवश्यकतानुसार सभी को देता हूँ। हाथी को एक मन खान को और चींटी को एक कन मैं देता ही रहता हूँ।

समय पाकर एक दिन रणादे जी को भगवान् श्री सूर्यदेव की परीक्षा लेने की सूझी। उन्होंने एक चींटी को एक डिबिया में बन्द कर लिया। इस बात को उन्होंने भगवान से छिपाकर रखा। उन्होंने सोचा—भगवान कहा करते हैं हाथी को मन और चींटी को कन तो इन्हें आज इस चींटी को कन कैसे मिल सकता है!

उन्हें भला क्या पता था—भगवान किसी को भी भूखा नहीं रखते। भगवान तो सभी प्राणियों के खान के लिये दिया करते हैं। इसी प्रकार एक चावल का दाना उनकी बन्द डिबिया में अपने आप आकर गिरा।

जब संध्या में भगवान सूर्यदेव घर को लौटे तो श्रीरणादे जी ने कहा—महाराज आप कहा करते हैं कि मैं सब लोगों को उनके खान के अनुसार दे दिया करता हूँ। लेकिन मैं यह नहीं मान सकती! मैंने आज चींटी को डिबिया में बन्द कर रखा है भला वह कहीं भूखों नहीं मर गई होगी!

श्री सूर्य भगवान यह सुनकर बड़े ही हँसे। उन्होंने हँसते हँसते कहा—रांणादे जी ये योग्य हो आपको अभी तक मेरे कहने पर विश्वास नहीं जम सका! ठीक है—आप जरा अपने पास वाली उस डिबिया को खोलकर तो देखें।

रांणादे जी ने जो डिबिया खोली तो उन्हें यह देखकर बड़ा ही ताज्जुब हुआ—वहाँ डिबिया में एक चावल रखा हुआ है और चींटी उसे बड़े ही चाव से मुँह में दबाये बैठी है। वे बड़ी ही लज्जित हो गयीं और भविष्य में उन्होंने कभी भी सूर्यदेव जी की परीक्षा लेने का साहस नहीं किया।

हे सूर्य देवता! जैसा भी रांणादे जी को लज्जित किया, वैसा किसे भी मत करना! जिस प्रकार चींटी को भूखों नहीं मरने दिया—वैसा किसी को भी भूखों मत मरने देना।

यूँ भूखा–सुखी में रात होगी। थका मांदी सोगी अर बेटी नैं भी नींद आयगी। दिन उगतांई मा बेटी जागी। मा, फेरूँ वाई रटन लगादी— "भी म्हारी रोटी दे, रोटा मैंनी ओर दे कोई दे पण लागे दे।" आपकी माने पागलां की तरह भटांई करती देखकर बेटी मनमें मोत दुखी हुई। पाछे हारकर एक दिन वा घरी घर सैं निकलकर वन में चली गई। बावनी उजाड़ में एक घेर–घुमेर बड़ को पेड़ थो वैं के ऊपर चढ़कर बैठगी। एक पाणी को लोटो मांगो आपके कनै धर लियो। सूरज भगवान का ध्यान करवा लागगी। अयां बैठ्यां आठ पहर बीतगा। दूसरे दिन राजा को कँवर शिकार के लैर घोड़ों दौड़ातो हुयो उठे आ पहुंच्यो। ऊँके साथ का आदमी गैलने रहगा। तावड़े की लाय बरस रही थी। भूख–प्यास सैं पिराण तड़पता रह्या था। भूख मे तो आदमी सहलेवी तिसकोनी सही जाय। पण बावनी उजाड़ में रोटी–पाणी को के लीगाड़। उठे घेर–घुमेर बड़ की ठंडी ठंडी छाया देखकर राजा के कँवर आपका घोड़ा नै बाँद दियो अर आप धरती मे मार कर खोट लगावण लागगो। थोड़ी सी देर में ई राजा के कँवर ने नींद आयगी। इतणा में ई बड़ के ऊपर सैं ठंडा पाणी का छांटा राजा के कँवर की छाती पर आयकर पड़्या। राजा के कँवर की आँख खुलगी। राजा के कँवर सोची की उजाड़ में इसो ठंडो पाणी कठे सैं आवो? हो न हो ये पाणी का छांटा तो बड़ मे सैं आया है। राजा को कँवर पायचा टांग-कर बड़ पर चढगो। आगे देखे तो सोना की सी देवली अस्तरी बैठी हुई बैठी है। राजा के कँवर वार्तां परांत पाणी मांग्यो। वण तुरंत पाणी प्या दियो। ठंडो पाणी पीकर राजा का कँवर तिरपत होगो जी मे जी आगो। राजा को कँवर बोल्या — "आज तू मनचीत दान दियो है जो तू कुण है? कोई देवी है क दानवी?"

जद वा बाली—"मैं तो एक महाजन की बेटी हूँ। कुँवारी हूँ। मेरी मा सैं रूसकर चली आई इब पाछी घरां जाण की मेरी मनस्या कोन्यां।" जद राजा के कँवर कही 'मेरे साथ चल। मेरी राणी बणकर रह" जद वा साथ २ बड़ सैं नीचे उतर आई। इतण्या म राजा के कँवर के साथ का आदमी भी पीछै सैं आ पहुँच्या। राजा के कँवर आपकी नगरी में आयकर उसे ब्याह कर लिया। महल में राणी बणकर वा सुख मैं रहे-दुख का दिन भूलगी। उठीनै उकी मा दो एक तो आडोस पाडोस में तू इसी होसी, पण जद वा कोन्या मिली जणा दुरत की मारी बावली होकर घर-गांव छोड़ दिया। गांवां-गांवां डोलण लागगी। दैव सजोग में एक दिन उई नगरी में वा आयगी अर राजा के महल के नीचै बैठगी। जद महल कै मांय में राणी की निजर आपकी मा के ऊपर पड़ी तो उमै तुरत पिछाणली-इसी हो म हो या तो मारी मा है। मा आपकी दासी नै भेजकर ऊपर आप के कनै बुलाली। दोनू मा-बेटी बाथ घालकर मिली। दोनु वा की आख्यां में आसू टपकण लागगा।

राणी आपकी मा नै आपबीती सारी वार्ता सुणाई। अर राणी-माणी की पूछी। जद उँकी मा भइगी कही—"मैं बेटी क घर को अन्न कोन्या खाऊँ। मा-बेटी की बातां-बातां में रात होकर राजा के आवण का वखत होयगो। जद राणी इसी जै राजा नै या बात पत्र ल्यायगा कै या तरीबणी राणी की मा है तो इतणू आदर कोन्या रहगो। जद आपकै महल कै बराबर दूसरे महल दो जै मैं आपकी मा न वह करदी अर अन्न नीर्ई बर्तां की सूपरी सिरदारी। पण राणी की मा रात नै बूढ़ की गाया चीया कोन्या मरज भगवान का ध्यानई करबा करी। दिन उगतां कै साथ राणीजी दूसरे महल का किवाड़ खोलकर

देखै तो मां की तो सोने की देवळी हुई खड़ी है अर गीऊँखड़ों की घूघरियां की जगा हीरा-मोती जगमगाट करै है। राणी देखई रही थी इतणा में राजा की भी चढेई आवकर अचम्भ हो गया अर राणी नै पूछी—"आज के देखो हो ?" जद राणी बोली—"महाराज मेरे गरीब पीहर सैं बीदड़ी आई है मो आप भी देखो।" राजा देखकर बड़ो अचरज करयो अर राणी नै बोल्यो—"थारो पीहर इसो है तो म्हामैं भी दिखाणू पड़ैगो।" जद राणी कही—महाराज ये बात को जबाब पाछै दू गी। राणी का मन में यो डर बड़गो कै इब पीहर कठै सैं दिखाऊंगी ? पण ऊँडा मनमें सूरज भगवान को पूरो आसीरो थो। सूरज नारायण का व्रत करती बरत देकर जीमती। राणी एक दिन या विचारी कै आज रात मै सूरज भगवान कै तो बोल कर कद देवैगा नहीं तो तड़कै मेरो शरीर त्याग दू गी। जद ऊँई रात मै सूरज भगवान सुपना में दरसाव देकर कही कै साहूकार की तू सोच मना करीजे। अठै सैं तीन कोस पर एक पीपल है सो अठै तड़कै राजा कै सारै साथन लेकर आज्यावे नगर बस्योड़ो पावैगो। पण दिन छिपणा में पहलाँ-पहलाँ वठै सै विदा होकर पाछा चल्या आया।

या दरसाव होने पर राणी राजा मैं बोली "तड़कै म्हानै मेरा पीहर दिखाकर ल्याऊँगी" जद राजा मोत राजी हुया। आपकी परगं मै त्यारी करणै का हुकम दे दियो। दिन ऊगतों कै साथ राजा राणी आप को साथ लारकर मंगर चाल पड़या।

तीन कोस पर पीपल को पेड़ सो उठे पूगकर देखें तो एक मोठ देवता लोग सरूप नगर बसरियो है। मोतमा लोग आगे अगुवाणी के तांई लडया बार देख रह्या है। राणी राजा के पहुँचवाई घणा आदर मान के साथ ती ल्याय कर डेरो दिवा दियो। लाड चाव होण लागगा। सांई चवाई बैंटवा लागगी कोई कहै म्हारो जँवाई आयो कोई कहै म्हारो भतीजो आयो। गीत गावे है बाजा बाजे है दिनभर चणाँई हमल्होस मच्यो रह्यो। पाछे मोत सो धन देकर विदा कर दिया। विदा होती बगत राजा जाण बूझकर आपके पग की एक मोजड़ी उठे छोड़ दी अर अर आपकी नगरी के नजीक पाछा पूगगा जणा राजा राणी नै बोल्यो— मैं तो मेरे एक पग की जूती भूल्यायो सो पाछो जाकर ल्याऊँगो।" अर राणी कही— 'महाराज सासरा में पधारै धन-दौलत ल्याती एक जूती को के विचार करा हा ? पण राजा राणी की बात मानी कोन्या अर पाछो जूती ल्यावण के मिस एकलोई पाछ पड़्यो। जा' ल्यायकर देखै तो गांव को गाँव निसाणी कोनी। न सिमर न धिमाण को ठायो। पीपल की एक डाली के राजा की जूती टंगायोड़ी दीखी। जणा राजा के मनमें घणा अचंभो हुवो। बाड़ा बगा र आयकर सीधो राणी के महल में गयो अर तरवार काढ़कर राणी की छाती पर बैठगो अर बोल्यो— या के भर है सा साची बतार नहीं तो तन्ने मारगा अर मैं भी मरूँगो।" अर राणी भोत घणा सुणी करी पण राजा टस बकर लिया—को आ बात है सा बतायाँ सरैगा।

जद राणी हारकर सारी बात कहदी अर बोली महाराजा या मेरे ऊपर सूरज भगवान किरपा करी सूरज नाराण को व्रत करके डोरो लेण सैं यो फल मिल्यो। जद राजा मोत राजी हुयो अर आपका नगर में ढिंढोरो पिटवा दियो कै सरजनाराण को सगळी लुगायां डोरो धारण करियो। हे सरजनाराण माई बाप ठाकरे का धणी ज्यूं उं राजा की राणी नै वीर बासो दिखायो जिसो सबने दिखाये। कहता नै सुणता नै, हुंकारा का भरता नै। सरजनाराण तेरो आसरो मरूपो ओर मरूपो सासरो।

(पं० झाबरमल्ल जी शर्मा संपादित 'मरु-भारती' वर्ष १ अङ्क १ में प्रकाशित)

कार्तिकी वृत कथाएँ

(१) सूरज भगवान् की काणी

सूरज भगवान हा जिको कीड़ी नै कण देवै अर हाथी नै मण देवै। अेक दिन व्यांकी धणियाणी राणादेजी क्यो कै म्हाराज! आप कोमवाने मोड़ा आवो। जद सूरज भगवान् क्यो कै म्हारी सृष्टी नै पूर करों जद आवां। जद राणादेजी पूछियो कै की कोई मही भूखो? तो बोल्या कै नहीं, म्हं ता कीनेई नहीं भूल्या।

अेक दिन राणादेजी अेक कीड़ी नै ले अ'र एक डब्बी में बंद करदी। जद सूरज भगवान् आया तो राणादेजी क्यो कै म्हाराज! सबनै पूर दियो? सूरज भगवान् बोल्या—हाँ राणादेजी! सबनै पूर दिया। राणादेजी फेर पूछ्यो की कोई नहीं भूल्या? बै क्यो-की कोई नहीं भूल्या। जब राणादेजी! थे थाल पुरस्यो। जद राणादेजी बोल्या। कै म्हाराज! आज म्हारो जिनावर भूखो बैठो है। भगवान् क्यो कै आछो राणादेजी! थांका जिनावर नै पैली पूरा पछी ई जीमां। जद राणादेजी क्यो कै म्हाराज! ऊँ डब्बी में कीड़ी है जीनै आप ल्यावो। जद भगवान क्या कै राणादेजी। थेई ल्यावो।

जद राणादेजी डा-भरं ऊँ डब्बी नै ल्याया। खोल भरं देखै तो डब्बी में काची ढीकी का अेक चावल पड्या है अर वा कीड़ी ऊँ चावल कै गोल-गोल चक्कर लगावै मैं जुटी। जद सूरज भगवान क्यो कै देखो राणादेजी! कीड़ी नै कण अर हाथी नै मण देवां, म्हारी सृष्टी नै पूर मैं पछै म्हे जीमां। जद राणादेजी क्यो कै म्हाराज आप साचा।

हे सूरज भगवान्! भूखा जगायाज पर भूखा सुवायाज मत।

—

(३) तिलक महाराज की काणी

एक बूढ़ी बामणी ही। ऊँ के एक बेटो हो। वो आपकी मां कने सैं रोज दिनू गा रोटी मांगतो। जद डोकरी कैती कै बटा! तू की मेम लेलै नेम पूरो करयां बिना रोटी नहीं खावणी। जद वो कयो मां कांई नेम लेऊ। जद डोकरी कयो कै बेटा! राज तिलक महाराज का दरसण कर और पछै रोटी खाया कर।

पछै वो रोज दिनू गा तिलक महाराज का दरसण कर कर रोटी खावतो। एक दिन ऊ नै तिलक महाराज का दरसण कोनी हुआ तो वो केयो मां आज तो तिलक महाराज का दरसण कोनी हुवा और मनै तो जोर की भूक लाग री है। मां कयो बटा! दरसण करयां बिगर रोटी नहीं खाणी चाहीजै।

जद वो दरसण करवां नै जावतो-जावतो जंगल में पूग गयो। ऊनै ऊमै चार चोर दीक्या जका चोरी का माल को बंटवारो कररिया हा। वां मांय से एक के तिलक लागरियो हो तिलक देखतां ही वो खुसी रो मारयो चिल्लायो—दीखग्या! दीखग्या! दीखग्यो!

चार मनख्या कै ओ ग्यान देख लियो है जिण वास्ते वाले है। कठैई पकड़ा नहीं द्यै। मा बोल्या भरे! चिल्ला ना मत अठीनै आव। जद वो वा कनै गयो। जद चोरों चार को बजाय पाँच पाँती करी और एक पाँती ऊँ नै द र वास्या कै ले थारा मा मै द दीजै।

बो गाँठ लेजा'र आपरी मा नै दे दी तो माँ कयो बेटा भो काईं लायो। बेटा बोल्यो मनै तो ठीक कोनी, तिलक म्हाराज दी है तू पछे देखजो कठै मनै तो जोर की भूख लाग री है। पैली रोटी दे दे। मा-बेटा नै रोटी खा'र गाँठ खोली तो ऊँ मे ऊँनै धन धन लख लादमी, अजाह पदार्थ मिल्या। सबै घर के सुख धन-माल हुयो। जद माँ कैयो बेटा आदमी के कोई नेम जरूर राखो।

हे तिलक म्हाराज! ऊँ छोरा ने तूठ्या जिसा सकल ने तूठ्यो, आधी ने पूरी करज्यो पूरी ने परवाण चढ़ाइज्यो।

---

(२) रामबाई और राजबाई की काणी

अेक ही रामबाई और अेक ही राजबाई। वे दोनूं बव्यां व्रत न्हावत्यां ही। रामबाई तो रामजी का नांव को व्रत न्हावती और राजबाई राजाजी के नांव को। जद व्रत पूरो हुयो तो राजबाई राजाजी ने कैवायो के मैं थां का नांव को व्रत न्हायो है। राजाजी आ सुण'र बड़ा राजी हुया और अेक पेठा में रुपिया और मोत्यां भरकर राजबाई के अठै पुगायो। राजबाई ऊं पेठा देख्यो तो बड़ी गुस्से हुयी के देखो मैं तो महिना भर तक राजाजी का नांव को व्रत न्हायी और राजाजी बदला में दो टक्कां को पेठो भेज्यो है। आ गुस्सा में छोर ऊं ने एक बामण नै दो टक्कां में बेचदाई।

उठीनै रामबाई कयो के मैं रामजी का नांव को व्रत न्हायी हूं आ कम से कम पांच बामण तो जिमा द्यूं। आ सोच'र बा बामण रै घरां गयी तो बामण के कनै ऊही पेठो पड्यो हो। बामण बोल्यो के मैं आ पेठो दो टक्कां में लियो है तूं चावै तो चार टक्का में लेल्या।

रामबाई ऊ पेठा नै ले लियो। घरां आ'र ऊ नै बगार्यो तो ऊ में सूं रुपिया और मो'रां निकली। रामबाई बड़ा राजी हुया और बोल्या के म्हनै तो रामजी तूठ्या है। पछ सारी नगरी में नूतो फेरा दियो के सगळा बामण रामबाई के जीमण आइज्यो। सगळा बामण रामबाई के जीमबा गया और जीम जीम'र पाछा आवता 'रामबाई को जै' — 'रामबाई की जै' बोलता गया।

राजाजी तखत बिछाया बैठा हा। जद वै बामणों की 'रामबाई की जै' की धुन सुणी तो बोल्या कै भाई! रामबाई की जै बोलो रामबाई की जै क्यूं ? तो म्हारा बामण बोल्या कै म्हे तो म्हारा जणा रामबाई कै जीम र आया हां जी में रामबाई की जै बोलां हां रामबाई की जै क्यूं बोलां ?

राजाजी रामबाई नै बुलार पूछियो कै म्हू थानै अेक पेटो भेज्यो हो जीकै मांई करयो। तो वा साफ-साफ कै दियो कै मैं तो दो टका में बेच दियो राजाजी बोल्या कै वी में म्हू रुपिया और मोरा भर भर पण थांके जची नहीं ही।

जद पछै राजाजी सारी नगरी में डुंडी पिटारी कै कोई न्हावै तो रामजी का नाव को न्हावी जो और राजाजी का नांव को मती न्हावी जो।

(३) तिलक महाराज की काणी

एक बूढ़ी बामणी ही। ऊंके एक बेटो हो। वो आपकी मां कनै सैं रोज दिनू गा रोटी मांगतो। जद डोकरी कैती कै बेटा! तू की नेम लेलै नेम पूरो करयां बिना रोटी नहीं खावणी। जद वो कयो मां कांई नेम लेऊ। जद डोकरी कयो कै बेटा! रोज तिलक महाराज का दरसण कर और पछै रोटी खाया कर।

अबै वो रोज दिनू गा तिलक महाराज का दरसण कर अर रोटी खावतो। एक दिन ऊ नै तिलक महाराज का दरसण कोनी हुया तो वो केयो मां आज तो तिलक महाराज का दरसण कोनी हुया और मनै तो जोर की भूख लाग री है। मां कयो बेटा! दरसण करयां बिगर रोटी नहीं खाणी चाहीजै।

जद वो दरसण करवां नै जांवतो-जांवतो जंगल में पूग गयो। ऊठै ऊनै चार चोर दीख्या जका चोरी का माल को बंटवारो कररिया हा। वां मांय से एक के तिलक लागरिया हो तिलक देखता ही वो खुसी हो मारयो चिल्लायो—दीसग्या! दीसग्या! दीसग्या!

चार ममम्या कै आ महान देख लिया है जिण वास्ते बोले है। ऊठैई पकड़ा नहीं बचै। मा बोल्या अरे! चिल्ला ना मत अठीनै आव। जद वो वां कनै गया। जद चोरों चार की बजाय पांच पांती करी और एक पांती ऊंनै दे'र बोल्या कै थे म्हारी मा मैं दे दीजै।

बो गोंठ बेटा रै बापरी मां नै दे दी तो मां कयो धन भो कांई लायो। बेटो बोल्यो मनै तो ठीक कोनी, विनायक महाराज दी है तू पछे दरसयो करसी मनै तो जोर की भूख लाग री है। पैली रोटी दे दे। मां-बेटा मै रोटी दुं'र गोंठ खोली तो ऊंमें ऊंनै धन, धन लख लखमी, धमाक पदार्थ मिल्या। बानै बडो सुख धन-माल हुग्यो। अब मां केयो बेटा आदमी के कोई नेम जरूर लेणा।

ए विनायक महाराज! ऊँ छोरा ने तूठ्या जिसा सबकूं मै तूठ्यो, मांडी ने पूरी करज्या पूरी न परवाण चढ़ाइज्यो।

भवना। म्हारी नगरी को योई[३४] बारणु[१] है तूं मेरी गैल[११] भीतर आस्या। पाछै खेप-नेप कर सन्नै[१२] मोटी[१३] ई लेर घरां पहुँचा आस्यूं[१४]। जद बा बोली मोत[१५]-चोखो, अर गैल-गैल आस्यों गई।

भीतर आय कर देखै तो मोत मरूप नगरी बसरी है महल[१६]-माळिया बणया हुया है, आम्बी-झरोखा झुक रया है मोंपा का कुळणा में आयकर साहूकार का बेटा की भू राजी होयगी। कोई कहै म्हारी माय आई, कोई कहै म्हारी भूवा आ: कोई कहै म्हारी मायद आई।

रहतां-रहतां घणा दिन होयगा। मोंपां की मां को यो नेम[१] यो कै तेरीखा[१६] आपका बेटां नै दूध प्यावण[४] को बखत हो: जेमें बदळां ताता दूध नै कूंडा[४१] में मिला[४२] दिया करती दूध थोड़ी तरीं मीठो होज्यातो, जणा वा त्याळी दळा देती टाळी को सुरको सुनतां[१] घरौंन सांप से[४४] भेळा हो ज्या भर कूंडा में ठोड़ी टेक कर चसड़-चसड़ दूध पी लेता।

एक दिन वा साहूकार का बेटा की भू बोली—मां, अ तो मेरा भायां नै दूध मैं प्याल्यूं। मोंपा की मा कह्यो—बे तूं ताता दूध में ताली दलावेगी तो बात बिगड़ ज्यासी। बोली मा मां! नवीनी[४५] रह आज तो सम्मैई भायां नै प्यावण द। जणा मोंपां की मां कह्यो—आछी बात है मह तूं प्यादिय।

साहूकार का बेटा की भू दूध ताता करके कूंडा में मिला दिया, पन बाप-बाप की मारी बोग्या तरीं ठंडो होय न [illegible]

साँप आया उण में कोई की बीम समगी, कोई नो मूढा समगा। जद मगाम्म रीस भरकर बोल्या—म्हैं तो मैं बाई नै दास्यों[४६]।

साँपा की मां देखी, यो तो रंगाई बिगड़यो। जद बोली—ना बेटा, बाई नै खायो मतना। या थारी धरम-माय है। थारी स्याई हुई बाई है, आपणी बदनामी से डरणू चावे। थ तो थैंने सासरै[४७] पहुँचायो। या बात साँपां के भी जचगी। जणा पछे वे पणू[४८] हायभो[४९] देकर ऊँनै[५०] ऊँडै[५१] मासरै—साहूकार के घरां घालगा[५२]।

दान-दायजा नै देखकर घोराणी-जिठाणियाँ के समाई[५३] कोनी रही। सगां आपसरी[५४] में मिलकर मोल[५५] बोल्यो के थैंने भाया स्यावस मैं मेज देणी चावे। उठे एक साँप को वासो है सो बो डस्यों बिना कोनी छोड़ै। यो तोल पकड़कर ऊँनै वास्ते चुगवाबे बजार में भेजदी। रोई[५६] म साँप बदला बैठ्यो हो सो साहूकार का बेटा की बू नै देखता के साथ फूँकार मारी, जणा वा बोली—

> जीवो नाग-मागोलिया[५७]
>
> जीवो भूखो[५८] बाप।
>
> जिण म्हारो ब्याव लडाइयो[५९],
>
> पायस मारी पाय ॥

या सुणतां परौत साँप देवता पायस स्याग कर मूँडा[६०] आगै मेलपी[६१]। साहूकार का बेटा की बू पग म पायस पैर[६२] कर मुलकती हुई आप के घरां मरु मासा को चोखिमो भी भर ल्याई। जणा घोराणी-जिठाणी बणाई के बातो मौत का

जातांई राणी हार मांग्यो। जद बोली-बाली[११] हार आपका गळे में से काढ़कर[१३] राणी नै सूँप[१४] दियो अर बोली मेरे गळे हार, राणी के गळै नाग।

सो राणी के पैरतां ई साथ हार को जिको नाग (साँप) होकर फूँकार मारै लाग्यो। जणा राणी बोली-थूँ बाप[१५]-जुगारी, कामणगारी है। यो हार का साँप क्यों[१६] बणगो-थँ बात को भेद बतायां सरैगो।

जद साहूकार की बेटा की बू बोली-मैं न तो बाप-जुगारी हूँ अर न कामण-गारी। मेरे तो मां-बाप, भाई-भतीजा सब साँपाई हैं, मैं तो साँपा का वियावाण[१७] गहयां पड्यां[१८] हूँ। या कह कर आपकी बीत्योड़ी[१९] पूरी बात सुणाई। जद राणी दखो[२०] फिरा दियो कै सावण की नाग-पाँचें नै सब ठंडो (बासी) खायो अर मायां-पाँचें मानकर नागदेवता की पूजा करियो।

हे नागदेवता! साहूकार का छोटा बेटा की बू नै तूठ्यो जिसा सबने तूठियो। कहतानै, सुणतानै हुँकारा भरतानै, बाँपेरे परवारै सबकी रीफना[२१] करियो महाराज।

नाग पचमी री कथा

१—उसके
२—और
३—पत्नी
४—खड्डा
५—मिट्टी
६—लाने के लिए
७—वहाँ
८—मुझे
९—लेने के लिए
१०—आयेगा
११—पीहर-नैहर
१२—देवरानी-जिठानी
१३—उससे
१४—जब
१५—टोकरा
१६—सीप
१७—अचानक
१८—निकल आया
१९—इसको
२०—मवक
२१—सिखलाने
२२—बहिन को
२३—खाट
२४—बाँबी साँप का बिल
२५—उसमें
२६—घुसने लगा
२७—यहाँ
२८—घुसता है
२९—यही
३०—द्वार
३१—पीछे
३२—तुम
३३—वापिस
३४—जाऊँगा
३५—बहुत सुन्दर
३६—राज समाज
३७—परिवार, कुटुम्ब
३८—नियम
३९—प्रतिदिन
४०—पिलान का
४१—मिट्टी का पात्र विशेष
४२—ठंडा कर दिया करती
४३—सुनने के साथ ही
४४—समस्त
४५—निश्चित
४६—जायेंगे
४७—ससुराल
४८—आत्मा

४६–सन्देश
५०–उसको
५१–उसके
५२–पहुँचा गये
५३–सहनता
५४–परस्पर में
५५–षड्यंत्र रचा
५६–जंगल में
५७–काटा–सर्प
५८–बुड्ढा
५९–घबराया
६०–मुँह
६१–रखवी
६२–पहन कर
६३–अबकी बार
६४–टोकरी, छबड़ा
६५–फावड़ा
६६–फिर
६७–षड्यंत्र रचा
६८–जान मर देंगे
६९–छीन लेगी
७०–निर्यंत्रण
७१–कठलवाई
७२–चुपचाप
७३–निकाल कर, उतार कर
७४–सौंप दिया
७५–जादू टोना यंत्र-मंत्र जानने वाली
७६–कैसे
७७–दिया हुआ
७८–पहनते हुए
७९–बीती हुई
८०–ढँढोरा पिटवा दिया
८१–जैसा
८२–रक्षा करना

जद राणी रस सुणाय कर आपकी भायली सेठाणी कै गई। सेठाणी घणा आदर-भाव बरसायो। गादी-गीदड़ा बैठ्या नै दिया, हीरा-मोती परखण नै दिया, पण पेट की कोनी पूछी। जद राणी उठेसैं पाछी चली आई।

राजा-राणी नै पूछी—किमैं खातर मैं की ल्याई के ? राणी उदास होकर बोली—आव-भगत तो घणीई करी, पण खाण-पीण की पूछीई कोनी। जणा पछै राजा कही—तो इब अठे सैं आपानैं चालणू चाये। अठे निभाव कोन्या होवै।

यो विचार करके राजा राणी अर एक घोड़ो—तीनूं जणा उठे सैं चाल पड़्या। चालतां-चालतां आगै सी गया, जद एक गूजरी छाय-दही लियाँ मिली। राजा बोल्यो—गूजरी! म्हे तिसाया मरां हां, सो म्हानै तूं थोड़ी-सी छाय घालदे। गूजरी आव देख्यो न ताव, भड़ाक सैं बोली—तेरै ल्यारला तीनसै साठ आवै है, कै-कै छाय घालूं ? राजा सांस भरकर बोल्यो—गूजरी था बात तूं कोन्या कह रही, मेरो दिन बुलावै है। जणा करै है दिन करै सो बैरी कोन्या करै।

जणा गूजरी मूंडो मोड़कर बोली—म्हे तो थनै सदा सैं इसोई देखां हां कदे तेरै हाथी झूमता देख्या ना। तेरे साथ कदसीक नोखलो साथ चढ़्यो।

राजा-राणी आपको सो मूंडो लेकर आगै नै चाल पड़्या। एक जोहड़ की पाळ पर आया। राजा तीतर मारकर ल्यायो—अर आपकी राणी नै बोल्यो, तूं तीतर भूंजले, मैं न्हायकर आऊं हूं। आपका घोड़ा नै भी राजा साथ न्हावणनै लै गयो। जोड़ा मैं बरताँई पाणी हो, जिको गार में रूपकर डूबगा। पछीनै राणी तीतर भूंजण लागी तो तीतर भर्रर दणी भी उड़गा।

राजा जोहड़ में पोता के कुन स्याया के तुरत भर मूल को मारयो आयो। आवताँ परोंत राणी ने बोल्यो—ल्याव तीतर, मैं भूखो मरूँ हूँ। राणी बोली के ल्याऊँ! तीतर तो मैं खा लिया। वे खस्या अर मैं मस्या। राजा कही—चालो अठे सैं बी चालो। जणा पाछे उठे सैं बी चाल पड़या।

चालताँ—चालताँ राजा की माया की नगरी में पहुँच्या। जद लोगां जायकर कही—माया, माया! तेरो भाई आवै है। माया बोली—किसैक मेषां आवे है? जणा लोगां कही—ले लाठी माम्यो आवै है। जद माया बोली—उतारयो मेरे छोटरे पीपल के नीचे। नहीं तो मेरी देराणी—जिठाणी बोल बोलैंगी। राजा—राणी उतरगा।

पछे माया हीरा—मोतियाँ को थाल भरकर ल्याई, सो मायाने तो धन दीख्यो अर राजा—राणी ने कोयला दीख्या। जणा राजा—राणी राखो लोपकर कोयला था जिकाँने गाड़ दिया अर आगैने चाल पड़या। आगे सी गया, जद राजा के भायलै ग्वाली को गाँव आगयो। जणा ग्वाली ने जायकर लोगां कही—ग्वाली! ग्वाली!! तेरो भायलो आवे है। ग्वाली पूछी किसैक मेषाँ? जद कही—ले लाठी माम्यो आवै है। ग्वाली बोल्यो—मेरी पुराणली छपोड़ में उतारयो।

सो ग्वाली के आदमियाँ राजा—राणी ने ग्वाली की पुराणी छपोड़ में उतार दिया। उठे ग्वाली का पेरन—बनोला पड़या हा जिकाँ ने धरती निगलगी। जद राणी—राजा ने कही—महाराज अठे बी कलंक लागे है सो अठे सैं बी चालो। जद पाछे उठे सैं चालकर एक साहूकार के आया जो साहूकार बी राजा को भायलो हो। ऊँने बी अगाऊ जायकर लोगां कही—साहूकार, तेरो भायलो आवे है! साहूकार पूछी किसैक मेषाँ आवे है।

भर्यों रहतां-सहतां राजा-राणी ने बारा महीना पूरा होगग्या, जद एक दिन राजा के मौजू दाळद्र भर सम्पत सुपनें आया। सम्पत बोली—मैं तेरे आऊंगी। दाळद्र कही—मैं तेरै सें जाऊँगो। जद सम्पत् ने राजा बोल्यो—तूं तेरी मर्जी है ज्यों रहे। मैं तो मिट्यां सी रातियां रख्यो हूं। जद-जद सम्पत् बोली—मैं के करूँ, थेरी लुगाई सेठाणी मैं देवी। जद राजा कही—आच्छो, इण मैं हम्नै कुण्या बाई आणगो ? सम्पत् बोली—दिन ऊगतांई तूँ थारो सेगो जद सूत को फळको हल्दी की गाठ, जोबां की बाल निकळेगी सो तेरी लुगाई तागो लेयकर बोलियो बेचण चली जायगी।

अर्ज्यों राणी तागा (डोरो) लेयकर पीसण लागी ती बाकी की धूळ आग्न की भरगी—बोलियो बचण गई तो बोलियो मो बिको मार्यूं माजा को भरगो। जद राणी सम्पत् ने बोली—इण तो माता तूं भरे ठोड ठिकाणे ढूठिये। नई तो माजम-माळी के यो बहम हो ज्यायगो क नाज या बीच में राज लिया करती।

जणा पाछै एक राजा की बाई ब्याबण लागै हो रह्यो थी जेके ठाँई घर-घर ढूँढ रह्या था। जद राजा माळी नै बोल्यो—एक टुकड़ो साबण को ल्यावे तो मैं भी मेरा कपड़ा धोल्यूं अर राजा की बाई के सुयंवर का तमाशा देख्याऊँ। साबण तो मैं ल्याय हूँ, पण थम्नै-म्हानै कुण तमाशा म जाण दे है ? राजा कही—भाई, मैं तो जाऊँगो, कोइ रोकैगो तो देखी जायगी।

या विचार कर माळी को धरम भाई वी राजा की बाई के सुयंवर का दरबार में जायकर बैठगो—बठे देश-परदेश का राजा लोग भेळा होरिया था। वो जाणे मैं माळा पहरूँ वो जाणे मैं वरमाळा पहरूँ। पण वा राजा की बाई सबके बीच में चीरती-

चौरसी भागा नै आयकर माळी के रहतो बिरमा के गर्भ में माम्म पालती।

जला सगम्म बोल्या—बाई को भाग फूट्योड़ो है। फेरूं ऊं माळी—बाम्म आदमी नै पकेश कर परैसी कर दियो तो बोमूं ऊँई फेरूं माम्म आ माळी। पण पाछे ऊं आदमी नै—जो हो तो एक राजा, पण आपके बिलै का दिम बोम्म दिखो बो—रूपमों के बटोआ में चिपाणा दियो अर राजा की बाई के हाथ में तीसरी बार फेरूं बर-माम्म दे दीनी।

वा बाई फेरूं सगम्म राजा-महाराजावाँ नै छोड़कर बटोआ के माम्म पालती। जद बाई के बाप राजा आप के मनमें घणू पछतावो करतो अर कही—बाई की तो अक्कल मारी गई! पाछे आपका स्याणा मोम्म सैं सलहा कर वा बात ठहराई के यै आदमी नै इण आपणा बाग में केसरी—सिंघ नै पकड़नै भेजवो सो वो मार आपैई मार गेरैगो।

या मन मे प्यार-विचार के ऊँनै बोल्यो—इण बाग़ो देखां! केसरी सिंघ नै पकड़ो जद मेरी बाई थानै परणाई जायगी। या सुणकर वो राजा की बाई नै बोल्यो—तेरो बाप मन्नै तो केसरी सिंघ पकड़बा मै भेजै है। जद बाई मोत उदास हुई। बोली—म्हा हो! ऊं केसरी सिंघ तो मेरा बाप की सारी परगे जणारी इण बाते के जीवता छोड़ेगा? जद विक्रमादती राजा बोल्यो—तूं चिन्ता मतना करै, रामजी चाया तो तेरा माग सैं जीवता ई आवांगा। या कहकर वो बाग में जायकर केसरीसिंघ का मूं डै आगै रहग्यो होगो अर नार नै बोल्यो—जै मेरे बाप-दादाँ सिंघ मारया होय तो तूं बी मेरै आगी सिर निवावे। जद केसरीसिंघ सिर झुका दियो अर आपकी जीव सँवारण लागगों। जद इण ऊँ नार के कना की अर पूँछ की छोर कतर कर आपका गोम्या

में पाखली भर आप नार नें आपका पग का गूँठा के बाँध कर सोयगो।

मोत पर होयगी, जद बाई के बाप राजा आपके आदमियाँ ने हुक्म दियो के देखो, बाग में जायकर देखो तो सरी, वो आदमी मरे हैक् जीवे है? जद आदमियां जायकर दूर सें देखें तो सिंघर तो पाँची कर राखी है अर आप चादर तारयाँ सूत्यो है। केसरीसिंघ गूँठे के बँद रियो है। आदमियाँ पाछा आयकर राजा ने कही, जद राजा बोल्यो—इणके कैने गवया आँगमी सें कठलाणू घोडो बिराधर कह्यो के यें घोडे पर चढ़कर गाँव के बाहर च्यारूँ-मेर फेरे कर ल्यावैगो, अणा राजी की बाई परणाई जायगी।

जद राजा का आदमियाँ इसो मार कर राजा को हुक्म सुणाया भर आगमी में कठलाणू घोडो बता दियो। जद बिगायती राजा घोडा की पीठ पर हाथ फेरकर बोल्यो—जे मेरा बाप-दादा घोडाँ पर चढ्या होय तो तूँ बी मेरे आगे माद सीदी करद। घोड़ै मस्द नाद पसार दी।

बिगायती राजा सवार होकर पाछा ने गाँव के च्याल-मेर फर फर पाछो लियायो भर राजामें जुहार करी। जमा राजा दगी, पोची कोई तपधारी राजाई है। भर घणा आनन्द उछाव में आपकी बद कँवार बेटी परणा दई। नीचें रिहाम मुसरा की भर ऊपर जँवाई की। यूँ रहताँ-महताँ पयाग दिन होयगा, जद बाई की भाविचाँ बोल-बाखम लागली क्न्यारी-प्यारी, पराय पर की करही—मावी भर म्हारीई दासी पर रही। आप बटी का तो पोइ होय दे क दरें मो समझकर आपरू परॉ जाय। पण म्हारामी बाई के घर को ठिकाणू होय जद जाय? राजा की बाई भाविचाँ का बाम सुणकर घनाहामी मारनी रही।

संजोग की बात, राजा की बाई के आसा रहकर नवें महीने एक कुँवर हो गयो। एक दिन राजा को जँवाई आपका कुँवर नै खिलावे हो—आकाश में बिजली चिमकी। जद बोल्यो—म्हारे देश कानी बीजली चिमके है। जणा राणी बोली—थारे भी देश है के? जद राजा को जँवाई बोल्यो—देश क्यूँ ना! मेरा बाप के तो पाँच से कोस है अर मैं साढे सात से कोस को धणी हूँ। जद राणी बोली—जणा इब आपांनै भी आपणै देश चालणा चाये। राजा कही, ठीक है तेरा बाप सैं सीख मांगले।

जद राजा की बाई आपका बाप नै बोली—बाप जी, म्हानै इब सीख दिरावो। म्हें म्हारै देश जावांगा। जद राजा घणू राजी हुयो अर बोल्यो—बाई, धन-भाग धन-घड़ी, सोना को सूरज ऊग्यो—बे थारे घरां जावो आनन्द सैं खावो-पीवो, सुख पावो।

जणा पाछै शुभ दिन देखकर घणू धन, लाव-लशकर देकर बाई नै विदा करदी। राजा आपकी पहलड़ी राणी अर नई राणी—दोन्युवां नै लेयकर देश नै चाल पड़्यो। वैं मारग— मांही वैं इतना दिन सुख-संतोष सैं चिलै का दिन काट्या था, ज्यांनै बोलसो मन देकर उणीता हुया।

चालतां-चालतां पाछो राजा आपके भायलै साहूकार के शहर में पूग्यो। लोगां जाकर कही—साहूकार, तेरो भायलो आवै है। साहूकार पूछी, कितैक भेळा? कही—गिणना लाम्बो आवै है। साहूकार बोल्या—मेरा नया महल में उतार दो। जद राजा कही—ना भाई म्हे तो पुराणा महल मेई उतरांगा।

जणा पुराणा महल में उतार दिया। पहला जाती बखत सेठ की मोरड़ी साहूकार का नौ किरोड़ का हार निगलगी थी।

सो इब उण मोरड़ी पाछो हार उगल दियो। जद राजा साहूकार नै बोल्यो—देख भायला, तूं तेरा मन में समझ राखी थी कै मेरो नो-किरोड़ को हार राजा ले गयो। इब तूं तेरी आंख्यां देखले। पण कोई बात ना। यो एक हार तो तेरो राख अर दूसरो हार मेरा रानी को दे।

पछै साहूकार सैं सीख मांगकर ग्वाळी कै आया। लोगां कही, ग्वाळी! ग्वाळी!! तेरो भायलो आवै है। जद ग्वाळी पूछी किसैक भेसां आवै है? कही भगू लाव-लश्कर साथ सिपां गिणना लाग्यो आवै है। जद ग्वाळी बोल्यो—आछो हुयो तो मेरा धणाई पेरण-बगोसा ले गयो थो पण इब तो मेरली नयोड़ी ग्वाळोड़ में उतार द्यो। जद राजा कही—भाई, म्हैं तो पुराणी ग्वाळोड़ मैंई उतरांगा।

उणा कही आछी बात है जद पुराणी ग्वाळोड़ में राजा नै उतार दियो। उठै भी मनामण की कराई करके राजा बम्बई। अर बरती साता मगमस पगगा-बमोसा उगम दिया। जणा राजा बोल्या—इग से भायला! तूं म्हारे सिर लगावै हो!! इब तेरा गाय-पोड़ पेरण-बमोसा सब संभाळ ले अर म्हारै रानी का भोर ले ले।

अब बाणीया मैं भी रमीला होकर आगा नै चाल पड़्या। पाछै साख कै पहुंच्या। लोगां जायकर कही—साख! साख!! तेरा भाई आवै है। साख पूछी किसैक भेषां? जद कही-गिणना लाग्यो आवै है। जद साख बाली—मेरा धणाई मोती-हीरा साथां लेगा था, जिको धन करके ल्यायो है सा मेरै पराड़ उतार द्यो। जद राजा बाल्या—ना भाई! म्हैं ना पहलां पधारया जठै उतरांगा। सा पीपल का गोळ्या कै नीचे उतरया।

जद राजा बोल्यो—बाई, तू जिमावै है या बोल सुणावै है ? तेरा हीरा-मोती था, बठेई संभाळले । जणा पाछै धरती खोदकर बोयघाल हीरा-मोतियाँ का निकाळ कर दे दिया अर खोप आपका कनासैं लेकर भाग में भी वणीजा होगया । पाछै बठे सैं चालकर ऊँ घोड़ा की पाळ पर आया । जद राजा को पोतो आयकर खड्यो हो गयो अर बोल्यो—बाबा ! मुन्नै भी जुदा बोली बार हो गई बाट देखताँ ।

रूपाली सैं तीतराँ बोलणू सरु करयो—'सुभान तेरी कुदरत, सुभान तेरी कुदरत' । जद राजा बोल्यो—एक तो वो दिन थो, जिको राम्योड़ा तीतर बकता था । अर एक दिन आज को है जिको तीतर आपकै आप आयकर सूंप देवै हैं । आगै सी गया जद गूजरी मिली । छाप-दही की हाँडी भर राखी थी । बोली—स्योबी ! दही पी ल्यावो । जद राजा कही—आज तो तूँ दही प्यावै है, पण ऊँ दिन छाप नै भी नटगी थी । जणा गूजरी बोली—राज मैं के करूँ ? तेरो वो दिन इसोई हो ।

राजा आपकी नगरी में पहुँचकर आपको राज-पाट संभाळ लियो—राजा राणी मिरजा चैन होगयो । नगरी में उच्छव मनायो गयो । घणा राग-रंग हुआ । मूवाँ पीराँ में आयगी—बेटा चाकरी में आयगा ।

कोट को काँगरो सीदो होगयो । जणा राजा आपकी नगरी में हेलो फिरादियो के संपदा नै सब मानियो । आरती के दिन धोरे लियो अर तीसरे पगवाड़े ग्योल दियो ।

हे संपदै की राणी भवानी ! पहला टूठी जिसी म्हानैं भी सब टूठिय । पछै टूठी जिसी सबनैं टूठिये । कहताने सुणताने, हुँकारा का भरताने ।

आस माता

एक हो साहूकार जिकेरै सात बेटा हा। छः तो हा सपूत, कमावता-कमावता हा अर एक कपूत हो। सगळां मायां कयो— माजो, म्हांनै न्यारा कर दो। ओ तो कई कमावै कोयनी, बैठो-बैठो खावै है। अबै बाप सगळां नै न्यारा कर दिया।

इणैं जो जिको कपूत हो, वे संगळो ही धन बढ़ाय, बरबाद कर मोगियो। वैरी बहू देराणियां जेठाणियां रा कामरा मोंबै, चौका करै।

एक बगत आस माता आई देराणियां जेठाणियां तो साहू बीजा कर आस माता पूजण बैठगी। बापरवी सगळ्योंई जेठाणियां री घटी म्हारक कर आटो लाई। आयपरी देराणियां *जेठाणियां गनै गुड़-घी मांग'र लाई। वेई आसमाता री बार* पीछोमियां करयो।

इणैं साते मायां आस माता पूजण नै बैठगी। छः जणियां तो आपरै खोळै में बेटा लेलिया अर खोपरै में दीवो जगाय लियो, मोतियां रा आगा लेलिया। कपे खोरै में एक हार पोय'र गळै में घालल्यो। इणैं आस माता री पूजा करण बैठगी— हे आस माता म्हारी मनोकामना पूरण करियै।

जिनैई वा देराणी कयी-ईयैरी पूरण करै जिसी म्हारी करै। देराणियां जेठाणियां तो बाळक दिया-धणी ना कपूत है अर म्हारै जिसा संगै दे। वा आपरी पुखळ बैठ गई। जिनै खोरै बटो साल री मारी हार टूट गयो कप मूल गे हो। गमा-गमा मगळियो पैदय लाग गयो। वा बेचारी मूं हो बगर बैठगई। मन में चबन लागी—हे आस माता म्हारी मनाकामना मूं पूरण करै।

या पूछर परे आई-धणी नै क्यौ, भाग भरिया ! बाप री कमाई तो सैन उड़ाय दी। इमें तू कमावण तो आ छठै ! छठै जाऊँ, मनै तो छठै आवणरोई सूमै कोयनी। तो आ तो सरोभास माता आफेई देसी। तो के ठीक है-जाईस मार्ई।

अबै ये एक कोड़ी-एक लाटो टीयौ, एक बींटी एक मोळी में बांध'र वेरी चोटी में बांध दी सैनाणी।

इमें वो घर सू गयो। गयो-चकगयो भार रस्तै में सूवगयो। भास माता री किरपा सु उठैया मगरी रै छनै नींद मैं भाममाता पौंचाय दियो। वेरी छठै आंख खुली-वेनै चार लुगायां दीसियौं। वे हाथ जोड़िया-हाथ जो कर वो वैवण लाग-ग्यो।

इमें चारे बशियां छकण लाग ग्यो-नींद तो कवै, मनै हाथ जोड़िया। तिस कवै-मनै हाथ जोड़िया। भूख कवै-मनै जोड़िया। भास माता कवै-मनै हाथ जोड़िया।

भास माता कयो-बाई लड़ो क्यों ? आपां वेवते बटाऊ नै पूछलाँ-वे केनै हाथ जोड़िया। जणे वाँ कयो, तो आछो।

अरे वैवता बटाऊ! तैं केनै, हाथ जोड़िया! भाई तू कुण है? हूं भूख हूं। मैं तो भूख नै हाथ जोड़िया कोयनी। भूखरो मारियौ तो हूं घर सू निकळियोई हूं।

जितेई नींद पूछियो-के भाई मैं केनै जोड़िया ! तू, कुण है? हूं नींद हूं। नींद नै जोड़िया कायनी। नींद आयजावै तो म्हारे कोई गजोई ऊपर आवै तो ठाई पड़ै कोयनी।

जितै तीसरो पूछियो—भाई मैं कनै हाथ जोड़िया ? तू कुण है? हूं तिस हूं। तिस नै रहूँ जोड़िया कोयनी। इयै रिंद-रोई में तिसी मरता मरजाऊं, तो कोई पाणो पावै कोयनी !

जितैई चोथी पूछियो—माई थें केनै ओदिया ? तू कूण है ? तोके हूं आस। आस माता नै सौ-बार नमस्कार ! सात पीढ़ी नै नमस्कार ! आसा बंधी हूं पर सू निकळियो—थू म्हारी आसा मनसा पूरै।

तोके तू जा ! थारी आसा मनसा पूरी होसी। उजैण नगरी रो राजा मरियो है थनै राज मिळसी।

व चार जिणियाँ तो पछैई अलोप होयगयो—वो उजैण नगरी में गयो। उठै रा राजा मरियोड़ो वो धूम-धाम ही उजैण में राजगदी री। व जाणियां—आव तो मायी है, राजा मरियोड़ो है। वो पछै—पासी चुप-चाप जाय'र ऊभो हुयग्यो।

रजवाड़ै में एक हथणी नै सिणगारी। हथणी नै एक माळा दीवी। हथणी धूमती-धूमती एक लू णै में जाय ऊबै नै माळा पैराई।

इमें रजवाड़ रा लोग कैवण लागग्या—हथणी भूली ! हथणी भूली।

दूसर हथणी नै सजाई। पनै धवम-मार मिरो आपी बाद दिवी। हथणी-धूमती-धूमती पर परैईज गळै में जयमाळा पैराई। रजवाड़ै रा लोग पर कैवण लागग्या-हथीणी भूली ! हथणी भूली !!

इमें तिमरकी—बार वेनै माळ माळा में दब दिवी हथणी नै पर सजाई। हथणी पर धूमती-धूमती मानैई माळा लाद'र जयमाळा वेरैई गळै में जाय पैराई।

के हवणी फेर मूकी ! राज तो हयैरैज सिळीयोडो दीसै है– तीबे छोक पतीजे, जीमे चावल सीजे। इमे जिको चौथी फेर पैरासी वेनैईज राज मिळसी।

वेनै एक रंद–रोई में लाखे खोद'र दूर कियो, मर हवणी नै फेर सजाई। हवणी धूमती–धूमती ठेठ रंद–रोई में गई! जाय'र पगसू जमी खोद'र लाडे मांय सू काढ ऊभे नै, वेरै गळे में जयमाळा पैरादी।

रजबाड़े रै छोकां कयो–राज तो ईंयैरैईज सिळयोडो है। नैवाय–धुवाय ऊणेंनै राज तिलक देदियो। वो राज करण लागग्यो।

बरै मां–बापां रै घर रै मांय नै बर मायाँ–भोजाईयाँ रै नादारी आय गई। वो तो घणा पईसा देवै–थोडो कांम करावै! मां–बापां नै ठा–पडी भाई–भोजाइयाँ नै ठा–पडी। रजैय नगरी म एक नवो राजा हुवो है—थोडो तो काम करावे, घणा पईसा देवै, मपां उठैई हालो नौकरी करलेसाँ।

हमें छ भाई, छ भोजायां, मां–बाप बर बा आपरी बहुवारे साथे। बे मोळ में बैठोडे आपरे कुटम्ब नै ओळखा लियो। मोळ सू नीचो उतरियो, नौकरांनै कयो–जाओ बे वेबता बटाऊ आवै ऊणांनै बुलाय लावो। नौकर गया बर बुलाय लाया।

राजा कयो–भाई, थे नौकरी करसो। हां ईंरावा! म्हे नौकरी करणनैईज आया हाँ। बे आपरै सिगळांनैई नौकरी राग लिया।

छ भायां में तो घोडो मायै राग लिया, बापनै चौकीदार राग दियो माने बिलोवो करणनै राग दी, छ भोजायांनै घर रा सगळा कांम–काज करण नै राग दियाँ। आपरी बहू नै नेवावण री जागा राग दी–मनै तू संपाडो कराया कर। बहू रै जीमें

वछ वारस री कथा

एक ही डोकरी अर एक ही बऊ। डोकरी एक दिन बार
ई। जाँवती बऊने कैय'र गई–म्हारे गवलियो रौंध राखे।

इमें बऊ बापरी पूछियो तो डोकरी सासू ने। बेरे पीरे में
वलियो कैंवावा बछड़े ने। वे बापरी डरते-डरते बछड़े ने
ाढ'र हांडी में रौंधलियो।

इमें सिंझारी सासू आई अर खेती में सूं आई गाय रंभाती
ई घर'र। सासू बऊ ने कयो–बीनणी, बाछड़ियो छोड़!
ाय दू दूं!

इमें बऊ हाथ-जोड़े, पग जोड़े बाछड़ियो तो रौंधलियो
में क्या छोड़ूं?

भगवान सूं अरदास कीवी–हे भगवान! म्हारी परतंगिया
मने तूं ही राखी। जितेही हांडी फूट'र, हांडीरो पौंचो गार्ड में
ाळोवो बापसो निकळ्यो बाछड़ियो आय'र गाय रै हांणमें
ई पहूंचो।

सासू पूछ्यो–बऊ, ओ क्या? बाछड़ियो रैगर्ड में चौंपो
अर बापसा निकळे है। बऊ कयो–सासुजी, म्हारे तो पीरे में
ावलियो–बापड़े ने कवे है। मे ठानी गवलियी कैने क्यो ही?
म्हारी तो परतंम्या भगवान राखी।

सासू कयो–आजरे दिन नातो कोई गेहूं खावे, ना कोई
ाय री खीर खावे ना गायरो दूध-दही खावे-पीवे। भैंसरा
मी खावे भैंसरो दूध दही खावे-पीवे। चाकूरो कतरीयोड़ी
नहीं खावे। बाजरी खावे बटे ही मां बछड़े री गाय नै पूजे।

इ गऊ माता थारी परतंम्या राखी जिसी सबरी राखे।

यो बढायो[२६] से। अब माली की माँ कह्यो-मेरी ओबरी[२७] में मेलयो[२८] छोरियां फल-सापसी ल्यायी थी, जिकी मालण की ओबरी में धर कर आप आपके घरां चलीगी। थोड़ा पाछै सैंवारीसी[२९] माली को आयो अर आपकी माँनै बोल्यो-माँ, मैं तो भूखो मरूं हूँ कि मैं [३०] खाबानै दे। अब ऊंकी[३१] माँ कह्यो बेटा, आज भी भूखो क्यूँ मरै? गाँव की छोरियाँ घणीई फल-सापसी देकर गई हैं, तू आपकर[३२] खाले ओबरी में पड़ी है। अब माली ओबरी खोलकर देखैं तो हीरा मोती जग मगाहट कर रह्या है। अणमेया[३३] को धन है मन पड्यो है।

हे गणगौर माता, माली नै टूटी जिसी सबनैं टूठिये। कहवा नै सुणवानै हुंकारा का भरवा नै, सुहाग-भाग घणू दिवे माता।

---

(२६) पाव (२७) देवता के बढी हुई भेंट (२८) कोठड़ी (२९) रखदी (३०) बड़ा देर से (३१) कुछ (३२) खाने के लिए (३३) उसकी (३४) खुद होकर (३५) अपरिमित।

गवर री कांणी

एक हो सेठ—जैरे सात बेटा अर एक बेटी ही। होळी आई जणै छोरियां गवर पूजण लाग्यौं। जणै बा क्यो—हूं ई गवर पूजसू। भायां घणीई ना क्यो, पिण वा तो जिद कर पूजणी सुरू करदी दीवी। दिन ऊगतैई उठ'र गवर पूजण आवती—फूल लावती, कूंकेला बिखरती, रूपली बिखरती, मोटसी बणै, कांणी केवती सवा-पौर रो दिन चढ आवतो।

जणै भायां पूछियो मां नै—मां म्हारी आ बेन मोडी क्यों आवै है? मां क्यो—गवर पूजै जिकै सूं मोडी आवै है। दिनूगै री उठै, सिनांन करै फूल लावै कूंकला बिखरै, रूपली बिखरै, मोटसी बणै कांणी केवै, जितै सवापौर रो दिन चढ जावै। पछै आ रोटी जीमै, जिकैसूं मोडी आवै।

बैन गई ही फूल लेवण नै। लारै सूं भाई आयरै गवर नै गिट कर नाया। बा पाछी फूल लेय'र आई, गवर पूजण लागी। देखै तो गवर नहीं! मां नै पूछियो—मां म्हारी गवर कठै? बेनी थारै छोटोड़ै भाई नै पूछ। छोटोड़ै भाई नै पूछियो। वो क्यो, हूं तो थेनी भाखरी ऊपर फैंकी आयो।

जणै बा रोवती-रोवती भाखरी ऊपर सूं गवर पाछी ले आई। पाछी लाय'र गवर री पूजा करी। गवर माता जणै बेरै माथै मस्ठ हुय गई। जणै बेनै घर मिलै तो वर नहीं मिलै अर जे वर मिलै तो घर नहीं मिलै। जणै मां छोटोड़ै बेटे नै क्यो—जणै तूं ई जा जायता ईंपैरै लायक कोई जोगतोसो वर।

जणै वो पांणी रो लोटो भर'र, चूरमेरो कचोरो भर'र जाय बैठो पिरोळ में। वो मन में सोचियो—जिको आवैला बैनी बैनै म्हारी आ बेन परणाय देसूं।

पेली-पोत आयो एक माठै रो गळो। बे बेल्यो—गळे नै क्या परणाऊँ! जिकै दूजी बार आयो—एक सांप। माई नै फिकर होयो—भला सांप नै म्हारी बैन कीकर परणाऊं! बो पछै बैठो रह्यो। जिकै तो तीजी बार एक कोढीयो आयो। कोढीयै नै तो हूँ म्हारी बेन कोइमी परणाऊँ! तीजे बाबम सीजे चौथे लोक पतीजै। अबकी बार जिको आयी बेनै हूं म्हारी बेन परणाय देसूं। जिकै तो एक बळो कठै सू निकळियो। जणै बे बळै नैं आपरी बेन परणाय दी। परणाय'र बे आपरी बॅन नैं कयो— हमैं घरै जावो। बा कैवण लागी, हूं तो जणै ईयेरै सागै आसूं— घरै को हासूं नी।

बा परणीज गई जणै बेरी सासू बेनै बधावण नै आई। सोने रो थाळ, भर मोतियां रा आखा, हाथी लेय'र बधावण नै आई। जणै बो हाथी हो बो तो पीळारो हुयग्यो गोबर रो। सोने रा थाळ भर मोतिया री आख्या हा जिकै सगळा ही कठै ही जावता रह्या। सासू-सुसरा रै बा पगै लागी जणै बे आँधा हुयग्या। भरीयै में हाथ घालै तो खाली हुय जावै; बे खाली में हाथ घालै तो फूट जावै।

जणै मां-बापां बेटे ने कयो—बेटा इयै बऊ नै घर सू बारै काढ़ी आ! लेजो गयो जिको एक बाग में बेनै छोड़'र आयो।

बाग में रोजी नै तो सोने रा फूल बरसबा करता। बे दिन बो बाग समूळो सूक गयो। माळी बोलियो—

कयो अभागियो मांणस आयो, बाढ़ीरे बाढ़ीरे।

बे कयो—थारे बीरा आजोकी आसो की,
सुखारे म्हारे घरै आईम।

अठै गइ वा कुंभार रै अठै । कातो वेरै सोने-चांदी री म्यारी पवरती ही । वे दिन ठीकरी कोनी वतरी ।

अठै कुंभार कयो—कयो अभागियो मांणस आयो
अठोरे बाठोरे ।

वे कयो —ना रे वीरा, भाभोजी, भला की
सुभारे म्हारे घरे आईस ।

चालती-चालती अठै सू वा एक वेस्या रै गई । वेस्या रै सूं‍ने हार टंग्योडो हो अर पीपे में एक बालक हो । वे दोनोंई अठैई गुम हुय गया । अठै वेस्या कयो—

कयो अभागियो मांणस आयो अठोरे बाठोरे ।

वे कयो—ना रे वीरा भाभोजी, भलो की,
सुभारे] म्हारे घरे आईस ।

अबै वा अठै सूं हाली । अठै सूं वारै अग्गो ऊपर एक सिप गाजतो हो । वे सोच्यो—सिप रै हाने जाऊं ! ना-सेसी तो गेलाई छूटसी । सिप रै हाथ लगावतेई, वो माठै रो एक गडो हुयग्यो ।

सिप कयो—किसो अभागियो मांणस आयो अठोरे, बाठोरे ।

व कयो—ना रे वीरा भाभो की, भलो की,
सुभारे म्हारे घरे आईस ।

अबै वा आगे चाली। एक समुन्दर हो। वे सोच्यो—समुन्दर में डूब मरणोईज ठीक है। वे समुन्दर में डूबण खातिर पग घाल्यो—समुन्दर सगळोई सूकग्यो।

समुन्दर बोल्यो—कियो अभागियो माणस आयो अठैरे, बारैरे।

वे कह्यो—ना रे बीरा, आजो की कालो की
सुवारे म्हारे मरे जाईस।

अबै वा आगे चाली। चालती-चालती वेनै एक बावेजी री मठ दीसी। वे सोच्यो—आ ठीक है-मठ रै ऊपर सूं कूद'र मर जासूं।

जितै में वा मठ रै मांय जाय पड़ गई। वे जिन बावेजी नै मिच्छ्या मिळी कोयनी, कूवे मारो आयो। जणै वो पाछो दौड़तो दौड़तो आयो। आगे देखे तो मठ में, मांय सूं कूटो हकियोड़ो! जणै वे कह्यो—म्हारी मठ में कुण है? भूत है, पलीत है, मिनख है, कै मानवी है।

वे कह्यो, हूं तो मिनख हूं। तो कह्यो बारणो खोल—बारणो खोलूं कोयनी! वचन दे।

वे कह्यो—वचन बाचा वै वचन चूकूं
तो बोबीरी कूड में सूकूं।

जणै वे बारणो खोल्यो। 'तूं म्हारी धरम री बेटी है' वाने जी कह्यो।

आवै बाबे जी कयो—बेटी, कूं'डो तो ला। वा कूंडो लाई। देखै तो वेमें बिछू! बाबे जी कयो—बेटी घोटो तो ले आव! वा घोटो ले आई; घोट में देखे तो सांप लपटीम गयो है। कयो बाबे जी कयो—बेटी, पाणी तो ले आव! वा पांणी ले आई। बाबो जी दखै तो पांणी में जीव ई जीव। जणी बाबाजी कयो—बेटी थनै तो गवर माता प्रसन्न होवोडी है। होळी आवै जणी सर-माळिया बणाय'र, म्हारै माथे अर म्हारी मांग माथे घोळै! दिन ऊगी गवर री पूजा करे।

बे सोळै दिन, दिन ऊगी उठ'र गवर री पूजा करी, जणै गवर माता बेनै तुष्टमांन हुय गई।

इणीं बेरे धणीरै मन में विचार आयो कै देख तो आऊं आय कठै। वे आठ लाडू बणाया—च्यार मीठा अर च्यार खारा। बो चालतो-चालतो तळाव रै किनारै आयो। बठै पनिहारियां पांणी भरवियौं ही। बो उठै बैठ'र लाडू खावण लागो। खारा खारा तो आप खावै अर मीठा-मीठा चिड़िया नै नोखै। पनिहारिया देख्यो—टाग हिलावै लाडू खावै। है तो होसलदे रोईज भरतार।

जणी य बाबेजी नै कयो—बाबाजी, बाबाजी मनै अबै छुटी देवो। हूं म्हारै घरै जासू। बाबे जी घणो सारो दत-दायजो देय'र बनै रवानै करी। बे जावता जावती बाबाजी नै पूछियो—बाबाजी थे बै मरजावो तो मनै कीकर ठापड़ै। बाबेजी कयो – बेटी ओ घड़ो देती जा। घड़ो जद फूट जावै तो समझजे कि बाबाजी आज मरग्या है।

अबे वा बाबेजी सू सीख लेय'र आपरै घर रवानी वहीर हुई। आगे जावतै-जावतै दो रास्ता मिळिया। धणी कैवण लागो

मठी नै सू हाखसां । वा कवै नहीं । मठी नै सू नहीं, हखगी सू हाखसा । मीड करता-करता वो घड़ो फूट गयो । जणै वा रोवण लाग गई—रोवण लागी, म्हारा बाबाजी मर गया ! हूं तो पाछी मठ ऊपर जासू ।

अबै वा रोवती-रोवती घणी नै सागै लेय'र पाछी मठ ऊपर आई । आगै देखै तो बाबोजी तो जीवता-जागता बैठा है । वे कयो—बाबाजी, थां कयोहोक कै ओ घड़ो फूट जावै तो समझ ले हूं मरगयो । बाबेजी हंस अर कयो—बेटी, हूं थारी परीख्या लेवतो हो । ले, आ म्हारी डोंग ले जाव । आ डोंग जद फूट जावै तो समझ लिए हूं मर गयो ।

पाछी आवती-आवती वे समुदर में पग वाळियो । इतै समुदर पाणी सू भरीज गयो । वे कयो—कयो समागियो मांनस आयो, आवरे, बैठ रे ।

वे कयो—ना रे बीरा, रावण रै दिन तो राती कोयनी, अबै म्हारे घरै जासू ।

जणै आवती-आवती आगे आय'र गडे रै हाथ लगायो । हाथ लगावतई गडे रा सिंघ बण गयो, सिंघ वारै कोसां में गूंजण लागग्यो । व कयो—कयो समागियो मांनस आयो, आव रे, बैठ रे ।

वे कयो—ना रे बीरा, रावण रै दिन तो राती कोयनी, अबै म्हारै घरै जासू ।

उठै सू सीधी आगई वेस्या रे घरै । वस्या रै पीर्य में आम रावण लागग्यो अर मूटी ऊपर हार लाग गयो । वस्या बोली—कयो समागियो मांनस आयो, आवरे, बैठरे ।

व कया—ना रे बीरा रावण रै दिन तो राती कोयनी, अबै म्हारे घरै जासू ।

अबै या अठै सू सीधी गई कुमार रै कनै। कुमार रै सोनै री म्याई उतरन लाग गई। कुमार बोल्यो—क्यो समागियो मांणस आयो, आव रै बैठ रै।

बे क्यो—ना रै बीरा, रामण रै दिन तो रानी कोयनी, अबै म्हारै घरै जासू।

अबै वा बाग में गई। बाग हरीयो टॉच हुय गयो। माळी भो देख'र कैवण लागो—क्यो समागियो मांणस आयो, आवरै बैठ रै।

बे क्यो—ना रै बीरा रामण रै दिन तो रानी कोयनी, अबै म्हारै घरै जासू।

आगे घरै आई। सोनै रा हार, सोनै रा थाळ अर मोत्यां रा आरता पाछा हुयग्या। पीळा रै सू हाथी हुय गयो। सासू-सुसरां रै पगै लागी—कै बोमें दीमण लाग गयो। लाली में हाथ घालै तो मरीज आवै—मरियै म हाथ घालै तो बुळण लाग जावै।

सासू उठ'र बहू रै पगै लागी—बहू कम जांणै, कामण जांणै ! हूं तो कम जांणू ना कामण जांणू। मा-बापां रै आई, सासू-सुसरां रै आई। म्हारै माथै तो गवर माता अस्ठ हुय गई ही।

ह गवर माता बरै माथै अस्ठ हुई बिसी कैनै मती अस्ठीयै बेनै सस्ठी बिसी सकळ नै सस्ठीयै।

महिलाव्रत–सोमवती अमावस्या की कहानी

एक साहूकार थो। ऊँकै सात बेटा हा अर एक ही बेटी। साहूकार कै घरां एक जोगीर [1]सासतो [2]भिच्छा लेण नै आव तो। वो जोगी साहूकार कै बेटा की बू–भिच्छा दीयनैं आवी जद तो कहतो "स्याव सुहागण भिच्छा अर साहूकार की बेटी भिच्छा घालती जद कहतो "स्याव [3]दुहागण भिच्छा"। एक दिन साहूकार की बेटी आपकी मा नै बोली, मा, आपणै जोगी आवै है जिको मन्नै तो "दुहागण" अर भाबियां नै 'सुहागण' क्यूं कहवै ?

बेटी की बात सुण कै मा कै चिन्त्या लागगी। दूसरे दिन जोगी आयो जद साहूकारणी हाथ जोड़कर बोली महाराज! थे बाई नै 'दुहागण' कहकर भीख मांगो सो के बात है ? जद जोगी बोल्यो, [5]मन्नै तो दीखै जिसी कहबूं हूं। या बाई फेर भई विधवा हो जायगी। साहूकारणी बोली—महाराज, [6]कैंई तरह बाई को सुहाग बच्यो रहै, इसो थे उपाय बताओ। जद जोगी बोल्यो—उपाय तो एक है। समदर पार एक सोमा धोबण रहवे है, जे उँनै स्याय कर मैं बाई का ब्याह मैं फेरा होती बखत बहाली जाय तो वा [7]मारग दुयोड़ा [8]धीवनैं [9]फेर [10]सरजीवण कर सकै है।

साहूकारणी आपका [11]घणी मैं कही। जद साहूकार बड़ै बगनै पूछी पण कोई सोमी समदर पार जायकर सोमा धोबण नै

(१) शाश्वत–हमेशा (२) भिक्षा (३) सौभाग्यवती (४) दुर्भाग्यवती (५) मुझे (६) किसी प्रकार (७) मृतक (८) वर को (९) पुन (१०) सजीवित (११) स्वामी को।

स्याणा की [12]हांसल कोनी [13]भरी । सातवां बेटा नैं कही जद यो बोल्यो—बापूजी थे सोच मता करो । मैं भाई नैं साथ लेकर सीख लेवण नै स्याणप नै चाल्यो जास्यूं । जणा पाछै दोन्यूं भाण भाई घर सैं चाल पड्या । चालतां-चालतां समदर के किनारै पहूंच्या । वठे एक पुराणू पीपल को [14]घेरघुमेर [15]रूंख [16]ऊभो थो जिका में एक गीध [17]घूंसलो [18]घालकर बचियों के साथ रह्या करतो । एक बडो काळो सांप घूंसला में डील[19] थो जिको गैल सैं[20] गीध के बचिया नै मार कर खाज्याया करतो । जिके दिन भी गीध चुग्गो पाणी करण नै चल्यो गयो थो जद ये दोन्यूं भाण भाई ऊंई पीपल के पेड के नीचै ठहरगा । भाण की तो आँख लागगी[21] पण भाई जागतो बाठो[22] हो रह्यो थो । देखै तो पीपल पर सांप चढण लाग रह्यो है, जिका की फूंकार नैं सुणतांई गीध के बचियां चूंधा[23] मचादी । साहूकार को बेटो बचिया की चूंधा सुणकर पीपल पर चढगो अर सांप नै सेल की अणी सैं मार गेरयो । सांप के मरतांई गीध का बचियां के जी में जी आयगो[24] । साहूकार को बेटो पीपल सासूं नीचै उतर कर सांप नै आपकी ढाल के तळै[25] दाबकर सोयगो[26] । थोडी देर हे गीध चुग्गो-पाणी करकै आपकै घूंसला में पाछो आयो । आगै देखै तो दो मायस[27] पीपल के तळै सूत्या पड्या है । गीध मन में विचारी हो न हो यांई हूं जा बचिया नै मार ख्याया करै है सो आज बदलो लेलेणू[28] । बाप नै आयो देख बचियां

---

(१२) स्वीकृति (१३) की (१४) छतरीदार (१५) वृक्ष (१६) खड़ा (१७) घोंसला (१८) डालकर (१९) [illegible] के आने की आदत थी (२०) पीछे से (२१) सोगई (२२) बैठा हुआ (२३) अनुकरण शब्द चिल्लाहट (२४) आ गया (२५) नीचे (२६) सो गया (२७) आदमी (२८) ले लेना चाहिये ।

कही—म्हानै तो आज जीवदान दीयणवाळो थो मारणस है। थांका उपगार नै म्हैं तो कदेई कोन्यां भूलां। पहलां आप नै खाणू-दाणू करावोगा जद म्हे चुग्गो-पाणी करस्यां। जणा गीध साहूकार के बेटा नै कह्यो—पहलां थे खाणू-दाणू करल्यो, पाछै बात करांला। जद दोनूं भाई भैणा खाय-पीयकर मगीता[१०] होयगा अर गीध व बचियां भी चुग्गो पाणी कर लियो। जद गीध बोल्यो—साहूकार का बेटा, इब बताय तू के चावै है। तू मेरा बचियां नै जीव दान दियो है। मैं तू कहै सो करण नै तैयार हूं। जद साहूकार कै बेटे कही—म्हानै समदर पार सोमा धोबण कै घर आगै पहुंचादे। जद गीध भाण अर भाई नै आपकी पांखां पर बैठाकर उडग्यो। सो समदर कै परलै पार सोमा धोबण कै घर कै आगै एक बड़ थो जैंके नीचे लेज्याय कर उतार दिया। दोनूं भाण भाई बड़ कै नीचै रहवा लागगा। सोमा धोबण कै सात बेटा सात बेटां की बहू अर सातइ बेटियां। धणी बेटा धम-धम सब बातां का ठाठ लाग रह्या।

साहूकार की बेटी के काम करैक[११] दिन ऊग्यां पहल्यां मुंह अंधेरे उठकर सोमा धोबण को आंगण लीप्यावै। झाड़ी-बुहारी दिखावै अर पाछी बड़ में आयर आपकी जगा बैठ ज्याय। घण-घणा दिन होयगा जद सोमा धोबण आपकी बहू-बेटियां नै पूछियो क आपणै इतिनी सुविधा[१२] कुण झाड़ी-बुहारी[१३] अर लीपा-पोती[१४] को काम कर ज्याय है। जद सगळीजणी नटगी बोली म्हानै तो बेरो कोनी। म्हे तो सूता उठां जणा यो सगळो काम हुयोड़ो[१५] त्यार पावै। सोमा धोबण बोली—देखां-परेखो

---

(१०) निश्चिंत (१) भोर (११) सदा काम करती थी (१२) सवेरे (१३) बुहारना-झाड़ना (१४) लिपाई-पुताई (१५) हुए हुआ

पाछनू जावे—यो काम करयो कुण आपकर कर ज्याय है। एक दिन सोमा आप तड़कळ[३६] उठकर बैठगी—देखै तो साहूकार की बेटी बड़ मांय सै उतर कर चोक बाळी[३७] आपकर मारो मारो काम लाग रही है। जद सोमा बोली—धिय[३८], तनै इसी मेरी के चाय[३९] है जिको तू रोजीना[४०] दिन ऊग्यां पहलां मेरा घर को धंधो कर ज्याय है? जद साहूकार की बेटी बोली—तू मनै वाचा[४१] देवे जणा मैं मेरे मन की बात बताऊं। जद सोमा वाचा दे दिया। जणा साहूकार की बेटी बोली—मेरा भाग में सुहाग[४२] लिख्यो है जिको तू मेरा ब्याह में चाली चालै तो मेरा पति की रिच्छा[४३] हो जाय। मन्ने तो सुहाग तेरे दियोड़ो मिलैगो। मैं तो तेरी शरण आयगी। जद सोमा बोली—"तू सोच मतां करै, मैं थारै सागै चली चालस्यूं तू मन्नै पहलाईं कहती होती, जिको मैं थारै सागै चली चालती। मेरे धोबी के घरां सगम[४४] है। इतना दिन सेवा करके मन्नै पाप की भागण क्यूं बणाई? साहूकार की बेटी बोली—मैं बात को तू विचार मतां करै। पाप को के मोका होय है। मन्नै तेरी चाय थी जद आई हूँ घर पा सेवा तेरी नहीं तेरा गुण की है।" जणा पाछै सोमा, धोम्यू माथ—माया के सागै चाल पड़ी। चालता लागी जद आपका बेटां नै बोली—थारो बाप मागर[४५] हो ज्याय जद तेल का कूपा में धर दियो। चालियो मतना। बेटा बोल्या—आछी बात है।

सोमा धोबण—साहूकार का बेटा बेटी कै सागै साहूकार कै घरां आ पहुँची। साहूकार—साहूकारणी राजी होयगा। बेटी को

---

(३६) प्रातःकाल (३७) झाड़ बुहार (३८) बाई (३९) चाह (४०) रोज (४१) वचन (४२) सौभाग्य (४३) रक्षा (४४) साम्य (४५) मृतक।

बोको सावो दिखाकर ब्याह मण्डे मांड[४६] दियो। धूम-धाम सैं बरातआई सुदेलो[४७] अर दुकाव[४८] होकर फेरां के बींद-बींदणी[४९] बैठगा। ऊँ बखत सोमा धोबण बोली—कुम्हार कै स एक करवो ल्यावो, एक काचा सूत की आंटी[५०] ल्यावो अर एक ल्यावणू[५१] ल्यावो। ये तीनू चीजां आपकै कन्नै लेकर सोमा बा मांडे तळै[५२] बैठगी। जोशी पण्डित आपकी पोथी बांचण लाग्या। तीन फेरा हो चुक्या अर बींद नाग गेरदी मागर होकर आ पड़यो। मांडे तळै रोवणू-पीटणू माचगो। ऊँ बखत सोमा धोबण आपकी मींडी मामसू[५३] तो सैण काढ्यो[५४]। कोर्यां आपसैं काजल काढ्यो टीका मापसैं[५५] रोळी काढी, नूवां मापसे मेंहदी काढी अर आपकी चिटली सैं[५६] साहूकार का जवाई (बींद) कै छांटो देकर बोली—पाचली सोमोती मावसां का फल तो मैं साहूकार का जवाई मैं घाल्यो[५७] अर आगे को फल मेरा धणी-बेटां मैं घाल्यो। इतनी कहतां परांत[५८] मागर हुयोड़ो बींद बैठ्यो होयगो। साहूकार की बेटी को ब्याह आनन्द उछावसैं होयगो बनड़-बींदणी बिदा होयगी। अर सोमा धोबण बी साहूकार सैं सीख मांगकर आपकै घरां जाण कै ताईं चाल पड़ी। पठीनें ऊँ बगत साहूकार को जवाई मरजीवण हुयो ऊँई बगत सोमा को धणी मागर होकर आ पड़यो जो जो ऊँका बेटा तेल का कूपा मैं मेल दियो बो। सोमा आपकै घरां आवण लाग रही थी जद गैलां[५९]

---

(४६) निश्चित कर दिया (४७) बरात के स्वागतार्थ दुकाव के पहले का रस्म (४८) लड़की की ओर से वर माला पहनाने और लड़के की ओर से तोरण पर छड़ी मारने की रस्म (४९) वर-वधू (५) अटेरन पर से उतारा सूत (५१) कांसे का टुकड़ा (५२) मण्डप के नीचे (५३) सरावों में से (५४) निकाला (५५) निकाल (५६) कनिष्ठिका (५७) डाल दो (५८) कहने के साथ ही (५९) मार्ग में।

मोमोती मावस आई सो सोमा पीपळ के तळै बैठकर १ ८ माटी की ठेकरिया घरकर कराणी करी अर पाछै ठेकरिया नै भेळी[१०] करके पीपळ के तळै गाडगी अर आपका घरां कानी चाल पड़ी। घर पर आय कर देखै तो धणी मागर दुपीड़ो तस कर कूपा में पड़्यो है। अब इनै भी चंदिरा[११] तिरली सें बांन्यो अर सोमाती माम को आपको फल देकर सरजीवण कर लियो। सोमोती मावस की दिछणा जोशी आयकर मागी जद सोमा बोली—गैला में किसी थैली घरी थी। जो इके कांकरी ठेकरी पाई जिकी भेळी करकै मैं तो पीपळ के तळै गाडआई थी, जिको खोदकर लियायो। जणा जोशी आयकर उं जगा नै खोदकर देखै तो मोहर ही मोहर मिली सो सोमा जोशण नै आसीस[१२] देतो देतो जोशी आपकै घर आयगो। जोशणणी[१३] राजी होयगी। ई सोमाती माता ! इनै टूठी[१४] जिसी सब नै टूठियै। कहतानै, सुणतानै हुंकारा भरतानै।

---

(१०) इकट्ठी (११) इसी प्रकार (१२) आशीर्वाद (१३) जोशी की स्त्री भी (१४) प्रसन्न हुई।

सूरज रोटो

एक बार दो मां-बेटया ही । दोयोंई रै तावड़ो आदीतवार आयो, जदी मां तो गई बार अर बेटी नै कैय गई, थू म्हारै दो रोटा कर रखिये । बेटी एक रोटो कर'र दूसरो रोटो करीयोई हो—जितै में एक साधु आयो अर कैवण लागो—माई भिक्षा घाल ! मोटो रोटो तो करियोड़ो हो अर आपरो हो जकै मांवै । जदी वे साधु नै कयो—रोटो तो मां रो है म्हारो तो म्हैं हाल-ताईं करियो कोयनी । जदी साधु बोलियो—मोटो देदे ! वे आपरी मोटै रोटे रो टुकड़ो तोड़'र साधु ने देदियो ।

जितै में मां आई । कयो—बेटी म्हांको रोटो कठै अर थांको कयो ? जदी वे कयो—छोटो मोटो अर माड़ो म्हारो । जदी बेटी सू मां लड़न लागी अर कयो—

'घी कोर मोटी कोर सागी रोटै री कोर ला ।'

बेटी कयो—मां, सागी रोटै री कोर कठै सू लावूं । थू म्हारो रोटो लेले । थारो मनै देदे । मां तो मांनी कोयनी । वे सागी बात कई—

घी कोर मोटी कोर सागी रोटै री कोर ।

बेटी धकलगी—वे आपरै रोटै रो चूरमो कर लियो । पांणी रो लोटो भर, घर सू निकल्गी अर एक दरखत रै ऊपर जाय बैठगी । नीचे एक राजा री असवारी उतरी ।

राजा री असवारी तिसीं मरती, भूखीं मरती ही । वे ऊपर बैठी-बैठी पांणी पियो । जद पांणी रोट अबे पड़ियो जिकै सू

एक तळाव भरीजग्यो । चूरमो आयो—चूरमे रो मूंको पड़ियो । बठै चूरमैरा बड़ा-बड़ा ढिग हुयग्या । राजरी असवारी खूब चूरमो ग्याय लियो । पाणी पी'र खूब पेट भर लियो ।

राजा कामदारां ने कयो के ऊपर जाय'र देखो ! इसो कुण बैठ्यो है जिके रै एक मौरै सूं ढिग लाग ग्या अर एक निजरै सूं पाणी रो तळाव भरीजग्यो ।

जदै कोमदार ऊपर गया । कोमदार ने ऊपर कोई कोनी दीसियोनी । ए कयो—महाराज ऊपर तो कोई कोयनी । राजा बोल्यो—हूं आप जाईस ।

राजा गयो ऊपरलनै । जदै राजा नै दो पांनां में अर दो फूलां रै बीच म एक छोरी बैठी दीसी । राजा पूछ्यो—तूं भूत है कि भेत ! इ कुण ! ये कयो—हूं भूत हूं ना भेत । हूं तो मादूसर री बेटी हूं । राजा पूछ्यो—तूं कुंवारी या परनोड़ी । जदै वे कयो—हूं कुंवारी हूं ।

जदै राजा येनै सीधी उतार अर चार पूड़ री डिगम्यां कर'र वे सूं परनीज गयो । परनीज पन वो परै लेग्यो ।

जदै छोरी रै लारला पर आदीसवार आयो । जदै वे सवामण रो राग करियो; मूरत जी री पूजा करी । दूसरियां रांणियां राजा नै कयो—राजा, रांणी लायो—चांमण गारी लायो । सदा—सदा मरूरा गोटा करै जातो ।

राजा रांणी कनै आयो । रांणी राजा सूं करनी-करनी गेटो आपरे गाढ सीप दबाय लियो । राजा रांणी नै कयो—रांणीजी,

गोडे नीचे क्या है ? रांणी डरती-डरती गोडो ऊँचो करियो। वै रोटे रा सोने रो चक्कर होयग्यो।

राजा क्यो—ओ क्या है ? वो क्यो—ओ म्हारे सूबके पीरे सू मेंट आई है।

हमें एक दिन वा गोडे में बैठी ही, जितेई वेरी मां लकड़ियों री भारी लेय'र आई। बेटी ने बैठोडी वेरी मां ओळखली। लकड़ियां नै फळे ही पकड्'र वा कैवण लागी—

मी कोर, मोटी कोर म्हारै सागी रोटे री कोर हा।

बेटी मन में जाणग्यो—मीत्रो छोडाय र आई ही पण आवो कारेई आय गई। वै उठ'र मांनै मार'र सात कोरां में डकदी अर कूंचियां आप लेय'र बैठगी।

रांणियां फेर दोडियीं राजा कनै अर क्यो—महाराज, इता दिन तो वा रोटा करती ही ! आज तो मिनख नै मार'र डक दियो है।

अबै राजा आयो रांणी कनै मनै सात कोररी कूंचियां दे ! हमें वा मनई मन में डरण लागी के नईं तो ईयै मांय म्हारी मां नै मार'र डकी है। अर ओ सात ओरां री चाबियां मांगे है !

वै सूरज भगवांन नै अरदास कर'र कूचयां राजा नै दे दियी। राजा ६ वीं ओरा खोल अर सातवीं ओरो खोल्यो। वेरै मांय मैं मरियोडी मां रो सरीर तो सोने रो होय गयो। कोई-रत्ती रा हीरा-पन्ना मांणक-मोती बणगया। राजा पूछ्यो—रांणी जी ओ क्या है ? रांणी जी क्यो—म्हारै सूबके पीरै सू मेंट आई है।

के इमें थांरो इसो कूकड़ो पीरो है, जद्दे आपां हालसां थांरै कूकड़े पीरै नै देखण नै।

इमें वा मांय-री-मांय सोच करै—इमें म्हारो पीरो किसो है जिको राजा देखण नै जासी! न्हाय-धोय, माथो धोय'र सूरज भगवान सूं अरदास कीवी—ह सूरज भाईसा, म्हारी लाज तूं राखै।

सूरज भगवान दरसन दिया। कह्यो—सवा पौर रो पीर-वासो हूं दीस। सवा-पौर होयतेई तूं उठै सूं आजाये।

इमें राजा असवारी लेय'र, घोड़ा रथ, पालकी लेय'र सासरै गयो। उठै इमें कोई कवै—बैन आई। कोई कवै मासी आई। कोई कवै मासड़ली आया। कोई कवै बैनोई जी आया। उठै नवी नगरी बसियोड़ी कठैई रसोई हुवै तो कठैई गीत गाईजै। इमें सवा-पौर रो दिन चढ़ियो रांणी कह्यो—राजा जी घरै हालो। जदै राजा कह्यो—रांणी जी इसो फूठरो सासरो अर इतरी ताळ में ही हालण री बात! अपां तो अठै दस-सात दिन रैसां।

जितेई रांणी आपरै डोरे रै डूंगी में एक भुरट बाल दियो। अबै डोरो रोवण लागग्यो। रांणी कह्यो—राजाजी, आपरो देस तावो होसाळ कर दियो—बेगा हालो।

इमें राजाजी राजधानी में रवाने हुय गया। आवता-आवता एक ठाम अर एक ताकणी कठैई भूल गया। आधी दूर गया, अर याद आई! ताकणो अर ठाम तो उठै ही भूल आया! नौकरां नै कह्यो—जावो भई, म्हारी ठाम अर ताकणो तो लेता आवो।

नौकर भाथै लेयाय नै गया। उठै तो भूत-भूतणियां नाचै, कोई-रसी री नदियां वैवै। एक कोरटी माथै वाचको भर डाल पड़िया। नौकर डरता-डरता वाचको भर डाल लेय'र दौड़ता-दौड़ता आय'र राजानै क्यो—महाराज, उठै तो नवी नगरी बसियोड़ी ही। भवार तो उठै भूत-भूतणी नाचै है। कोई-रसी री नदियां वहै है।

राजा उठ'रै राणी कनै गयो। क्यो—कम आंणी, कांमण आंणी। राणी क्यो—महाराज, कम-जोणू ना कांमण जोणू। मां-बापां रै बाई, सासू सुसरां रै भाई म्हारै पी'र-बासो किसो हो। म्हारै तो एक मां भी जिके नै गई मार'र भोरै मैं छप्पी। म्हारै तो सवा-पोर रो पीरवासो देयर सूरज भगवान परतेम्या राखी।

हे सूरज भगवान, जेनै पीरवासो बतायो जिसो सबनै बतावे।

अथ चतुर्थी री कथा लिख्यते

एक समै रै विषै राजा कृतवीर्य जी श्री पूछै है—भगवन ! गणेश चतुर्थी रो व्रत कै कीयो ? इणै पृथ्वी रै विषै कै प्रकारा कीयो ? तिणै रो पुन्य कांसु ? फल कांसु ? थे दयाकर कहो । तद श्री महाराजी राजा सू कृपाकर प्रसन हुय कहै छ । हे राजन् ! पुरा पूर्व स्वामी कार्तिक जी तथा श्री महादेव जी रै वचन पार्वती मास च्यार व्रत कीयो । तद पुत्र प्रीत हुई । पंचमै मास स्वांम कार्तिक जी श्री सहित आया । फेर राजा अगस्तजी रै समुद्र पीवण री वांछा हुई । तद रिषा री आग्या सू अगस्तजी व्रत कीयो । तिणै सू समुद्र पीगया । फेर नल दमयंती मै बिरगो पडीयो । तद नल दमयंती रो वियोग हुवो । तद नल दमयंती व्रत कीयो । तद राजा नल आय मिल्यो । मास च्यार पूर्वे श्री कृष्ण रो पोतरो अनुरुध प्रद्युम्न रो पुत्र चित्र लेखा ले गई । तद श्री रुकमणी जी और सर्व जादव चिंतातुर हुवा । अनेक प्रकारा रा जतन कीया । पिण खबर कांई नही । तद रुकमणीजी कह्यो—हमारो पिण पुत्र सु दिन दसै माहि मन ले गया था तद ई पिण शाबाहृति हुई थी । लोकां रा बालक इण कहसी—इसा पुत्र हमारा था । इयै तरै चिंतातुर थकी सोक करावी । तिणै समै लोमसजी आया । पगी भूमुका कीयो । आपरी करुणा घणी । तद लोमसजी कह्यो—रुकमणी जो था तनै उपदेश कहु, जिण सू थारा सर्व मनोरथ पूर्ण होसी । पुत्र री पिण प्राप्त होसी । तद कह्यो—संकट चौथ रो व्रत कर । चंद्रोदय व्यापनी व्रत करै । चंद्रोदय रै समै गणेशजी री पूजा कीज, चंद्रमा मै अरग दीजै व्रत कीजै । पूनम सू व्रत कीजै । इसै पापी, पाखंडी सू मित्रा-चरण न कीजै । तद गणेशजी री आग्या सू माहा वदि चाथ रा मास बारे व्रत कीया । तद व्रत रै प्रताप गणेशजी रा प्रसाद सू

दैत्य संबर मार रति स्त्री परणी थी। प्रद्युम्न उठे आयो। तद रुक्मणी जी रै कह्यो—प्रद्युम्न जी! पण म्हु सोमशजी, जिको विधान पूजा व्रत कीयो थो, विधान सू कीयो। तद बाणासुर रै बंध मांहि पुत्र री खबर पाई। तद युधकर ले आया। यो व्रत गणेशजी रै सतोषि रो करणहार छै। सिध बुध दैण हार छै अनेक संकट रै मारणो करणहार छै। इयै व्रत रै प्रताप सू प्रद्युम्न अनुरुधजी नू पचा बाणासुर रो बेटी सहित पायो। फेर ब्रह्माजी कहै—हे राजन् कृतवीज! मैं पिण सृष्ट रचण समर्थ वास्तै व्रत कीयो तैसु सृष्ट री सामर्थ्यां पाई और पिण रिषीस्वर, देवता, मनुष्यां विघ्न शांतरै वास्तै व्रत कीयो। और पिण दानवा यक्षा किन्नरी, सर्पा रीक्षसां आपणा रै विघे शांत रै वास्तै कीयो।

इयै व्रत समान इह लोक रै विषै सर्व सिध रो करता और नहीं। कोजो तपस्या, दान, यह तीर्थ मंत्र-विद्या नहीं। सारां सू श्रेष्ठ छै। हे राजा! इयै कथा सुणी, उठै भोजन कर इयै गणेशजी रै ध्यान करै। ब्रह्मा नू भोजन कराया पछै आप कुटंब सहित भोजन इयै तरै थोड़ा महिनां मांह करै। मनोरथ सिध हुवै। हे राजन्! पणो कासु ण कहूं। ततकाल सिध रो करण-हार छै। यो व्रत अभक्त नू नास्तक नू ठगो नू उपदेश न कीजै। परमेस्वर रो भक्त हुवै। आपरै सेवक नू, पुत्र नू आप नू उपदेश दीजै। ब्रह्माजी कहै—राजा तू हमारो भक्त छै, धर्म श्रेष्ठ छै। राजीयां रै विषे श्रेष्ठ छै। लोकां रो कार्य रो कर्ता छै। पसु मैं व्रत उपदेस कीयो छै। जिणरै वास्तै यदि संसार विषै करण योग छै। तिडै सू मारा कार्य सिध हुवै। हारै पुत्र मू आदीज मन बंछत। अवर नर नारी रो कार्य रो उपम हुवै तद और व्रत करै। ततकाल सिध हुवै। सर्व विघ्न मिट जावै।

माहीत कथा व्रत पीरायो शौनकादिक सू कही छै। ऐसो बचन सुण राजा कृतवीर्य व्रत कीया। तिके प्रताप सू अरजस पुत्र संपन्न संपत राजा भोग भोगवीयो। अन्त समै परम पद पायो और पिण नर-नारी और व्रत करै, गणेशजी री पूजा करै तो सारा मनोरथ रा फल पावै। जीजो इणै माहातम नै आपरी भाव कर सुणै, तिको सारां व्रता रो फल पावै। इति गणेशजी री चतुर्थी व्रत कथा सम्पूर्ण। लिखतं देवसर्वद, सवाई मध्ये० लि० ॥

पत्र ९ बृहद्-ज्ञान-भण्डार, अबीर संग्रह, पोथी नं० १६ प्रति नं० २७१ बीकानेर।